सुलभं सर्व-लोकानां कुक्षिस्थं सर्वसिद्धिदम्। श्रीमद्बटुकपंचांगं तनोतु नितरां मुदम् ॥

श्री शंकरः शं करोतु।



भीमाय व्योमरूपाय शब्दमात्राय ते नमः।
महादेवाय सोमाय अमृताय नमोऽस्तु ते॥



पंचांग-प्रवर्तकः



दैवज्ञरत्न राजज्योतिषी
स्व० पं० श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य

विक्रम संवत् २०५६ शकः संवत् १९२१ सन् १९९९-२०००

श्री बटुक पञ्चांगम्

राजा गुरु

मंत्री बुध

पञ्चांगप्रवर्तक — अनेक ग्रंथों के यशस्वी लेखक स्व० पं० श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य

सम्पादक मण्डल —
श्री प्रियव्रत शर्मा, M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), साहित्याचार्य,
डॉ० शक्तिधर शर्मा M.Sc, Ph.D., M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), तीन स्वर्ण पदक प्राप्त
ज्योतिर्भूषण श्री इन्दुशेखर शर्मा शास्त्री, M.A., ज्योतिषाचार्य,

गौरवशाली 72 वाँ प्रकाशन वर्ष
स्थापित संवत् १९८४

प्रकाशक: रुचिका पब्लिकेशन्स
7/6411 देवनगर, आर्य समाज रोड, करौल बाग, नई दिल्ली-110005 दूरभाष:(O) 2943254, (R) 5721403

मूल्य १२.५०

अब प्रकाशित है **ग्रहयोग एवम् दाम्पत्य जीवन** अब प्रकाशित है

मिलान सम्बन्धी प्रत्येक समस्या का परिपूर्ण समाधान करने वाला चिरप्रतीक्षित यह अद्वितीय ग्रन्थ अब प्रकाशित हो गया है।

(लेखक :- प्रियव्रत शर्मा एम.ए., सिद्धांत ज्योतिषाचार्य, साहित्याचार्य)

विवाह-सम्बन्ध के निर्णय के लिए लड़के ओर लड़की के अष्टकूटों के गुणों की गणना और उनकी कुण्डलियों के मिलान पर आज तक कोई प्रामाणिक पुस्तक नहीं लिखी गई है। ''ग्रहयोग एवम् दाम्पत्य जीवन'' पुस्तक इस अभाव की पूरी तरह पूर्ति करती है। यह पुस्तक पांच अध्यायों में विभाजित है- प्रथम अध्याय में अष्टकूट का सांगोपांग विवेचन, द्वितीय अध्याय में मङ्गली दोष पर विस्तृत विमर्श, तृतीय अध्याय में विवाहमुहूर्त्त के साधन की सुबोध प्रक्रिया दी गई है। चतुर्थ अध्याय में ऐसे बीसों मौलिक कोष्ठक दिए गए हैं, जिनकी मदद से १९७० से २००० ई. तक (३१ वर्षों में) पैदा हुए वर-कन्याओं का जन्मलग्न, जन्मनक्षत्र, जन्मनवांश और जन्मकुण्डली बिना पुराने पंचांगों की सहायता के १०-१५ मिनटों में ही जानकर दैवज्ञ उनकी ग्रहस्थितियों का मिलान तथा अष्टकूटों के गुण आदि का निर्णय सरलता से कर सकता है। पंचम अध्याय में ज्योतिषसम्बन्धी अनेक विषयों पर अनेक वैदुष्यपूर्ण ज्ञानवर्धक मौलिक निबन्ध दिए गए हैं, जो ज्योतिष के चौंका देने वाले अज्ञात रहस्य उद्घाटित करते हैं। इस पुस्तक में दिए अनेक महत्त्वपूर्ण विषयों में से इन कुछ विषयों पर दृष्टिपात कीजिए:-

(१) **लड़का-लड़की के नक्षत्र चरणों के आधार पर बनाई गई विस्तृत गुणमिलान-सारणी ३६ बड़े पृष्ठों पर फैली है, जिसमें सभी अष्टकूटों के गुण और दोष तथा उनके अपवाद एक ही दृष्टि में तुरन्त देखे जा सकते हैं। इस प्रकार की परमोपयोगी विलक्षण महान् मिलानसारणी का निर्माण सचमुच एक ऐतिहासिक प्रयास है।**

(२) वर्ण, गण, नाड़ी आदि सभी दोषों के परिहार- वाक्यों का सोपपत्तिक सप्रमाण विवेचन तथा उनका वैज्ञानिक, मौलिक विश्लेषण तथा ''नाड़ीदोषस्तु विप्राणाम्'' और ''एक-नक्षत्र-जातानां नाड़ीदोषो न विद्यते'' - आदि अनेक निराधार परिहार वाक्यों का सप्रमाण निराकरण।

(३) मंगलदोष के अनेक परिहार वाक्यों की प्रामाणिकता पर विस्तृत सप्रपञ्च विचार-विमर्श एवं मंगली दोष के अनेक परिहार-वाक्यों का विश्लेषण-पूर्वक सप्रमाण खण्डन-मण्डन।

(४) मंगलीदोष का प्रतिशत बल बतलाने वाली अद्भुत मौलिक सारणी, जिसकी सहायता से लड़का-लड़की के मंगलीदोष का बल सूक्ष्मतापूर्वक बिना गणित के मिनटों में जाना जा सकता है। स्पष्टता के लिए अनेकों उदाहरण दिए गए हैं।

(५) मिलान में उपयोगी अन्य बीसों मौलिक सारणियां, जो लेखक के विस्तृत गंम्भीर अध्ययन एवं अथक परिश्रम का परिणाम हैं।

(६) मिलान पर मिलने वाले विभिन्न मत-मतान्तरों का विश्लेषण।

इसके अलावा इस पुस्तक में अनेक ऐसे विषय आपको मिलेंगे, जो गुणमिलान और कुण्डलीमिलान पर आपकी विशेष ज्ञान वृद्धि करेंगे। ''नाड़ी दोष होने पर भी सम्बन्ध किया जा सकता है'', ''वर कन्या की कुण्डलियों का मिलान न होने पर भी सम्बन्ध करने का ज्योतिषशास्त्र में निर्दिष्ट शास्त्रीय विधान क्या है ?'' - इस प्रकार की अनेक मिलान-सम्बन्धी समस्याओं का शास्त्र-प्रतिपादित समाधान विस्तारपूर्वक इस पुस्तक में सप्रमाण प्रस्तुत किया गया है। विषकन्या योग और मंगलीक दोष के उद्गम तथा विकास पर विशेष ऐतिहासिक विवेचन दिया गया है।

यह पुस्तक आपको वह सब कुछ बतलाएगी जो मिलान के लिए अपेक्षित है। इसे पढ़कर आपको आश्चर्य होगा. कि मिलान में अनेक मूर्धन्य दैवज्ञ भी कितनी अक्षम्य त्रुटियां करते हैं और इस विषय में उनका ज्ञान कितना अधूरा है।

पुस्तक छप चुकी है। इसका पूरा मूल्य ३२५ रु. (डाक व्यय सहित) मनीआर्डर द्वारा नीचे लिखे पते पर भेजें। V.P.P. नहीं की जाएगी। पंचकूला में पोस्टल सुविधाएं सीमित हैं, प्रतिदिन एक व्यक्ति से अधिक से अधिक २०-२५ रजिस्टर्ड पार्सल ही पोस्ट आफिस द्वारा स्वीकार किए जाते हैं और हम भी उसी क्रम में पुस्तकें ग्राहकों को भेजेंगे, जिस क्रम में हमें उनके मनीआर्डर प्राप्त होंगें। इसलिए मनीआर्डर भेजने के बाद पुस्तक प्राप्त करने के लिए दो-तीन सप्ताह तक आपको प्रतीक्षा करनी पड़ सकती है-यह ध्यान रखें।

मूल्य ३०० रु. + डाक व्यय २५ रु.

प्रो. प्रियव्रत शर्मा
[illegible] P.O. पंचकूला-134109 (हरियाणा)

प्रमुख-प्रमुख व्रतपर्व (१ जनवरी सन् १९९९ ई. से सन् २००० ई. तक)

व्रतपर्व	तारीख	वार	व्रतपर्व	तारीख	वार	व्रतपर्व	तारीख	वार	व्रतपर्व	तारीख	वार
इंग्लिश नववर्ष प्रारम्भ	१ जन, '९९	शु.	भद्रकाली एकादशी (पं.)	११मई '९९	मं.	सिद्धि विनायक व्रत	१३सितं '९९	चं.	अक्षय नवमी	१७नव. '९९	बु.
माघस्नान प्रारम्भ	२ "	श.	शनैश्चरी अमावस	१५ "	श.	ऋषि पञ्चमी	१४ "	मं.	कूष्माण्ड नवमी	१७ "	बु.
संकट चतुर्थी	५ "	मं.	वट सावित्री व्रत (अमा पक्ष)	१५ "	श.	सूर्य षष्ठी	१६ "	गु.	भीष्मपञ्चक प्रारम्भ	१९ "	शु.
लोहड़ी (पंजाब)	१३ "	बु.	भावुका अमावस	१५ "	श.	श्री महालक्ष्मी व्रत प्रारम्भ	१७ "	शु.	तुलसी विवाह	२० "	श.
मकर संक्रान्ति	१४ "	गु.	मल (अधिक) मास प्रारम्भ	१६ "	र.	श्री राधाष्टमी	१८ "	श.	वैकुण्ठ चतुर्दशी	२१ "	र.
मौनी अमावस	१७ "	र.	**श्री गंगा दशहरा**	२४ "	चं.	श्रीचन्द नवमी	१९ "	र.	भीष्मपञ्चक समाप्त	२३ "	मं.
गौरी तृतीया(गौतरी)	२० "	बु.	मल (अधिक)मास समाप्त	१३ जून	र.	श्री वानम जयन्ती	२२ "	बु.	कार्त्तिकस्नान समाप्त	२३ "	मं.
वरदा, तिल चतुर्थी,	२१ "	गु.	रम्भा तृतीया	१६ "	बु.	श्रवण द्वादशी	२२ "	बु.	कार्त्तिक-पूर्णिमा	२३ "	मं.
कुन्द चतुर्थी	२१ "	गु.	**निर्जला एकादशी**	२४ "	गु.	अनन्त चतुर्दशी	२४ "	शु.	**श्री गुरुनानक जयन्ती**	२३ "	मं.
श्री पंचमी, बसन्त पंचमी	२२ "	शु.	वटसावित्री व्रत (पूर्णिमा पक्ष)	२८ "	चं.	**श्राद्ध प्रारम्भ**	२६ "	र.	श्री कालाष्टमी (भैरवाष्टमी)	३० "	मं.
रथ सप्तमी	२४ "	र.	रथयात्रा (पुरी)	१४ जुला.	बु.	श्री महालक्ष्मी व्रत समाप्त	१ अक्तू.	शु.	गुहषष्ठी, चम्पाषष्ठी	१४ दिस.	मं.
आरोग्य सप्तमी	२४ "	र.	कुमार षष्ठी	१८ "	र.	**श्राद्ध समाप्त**	९ "	श.	मित्र सप्तमी	१५ "	बु.
श्री भीष्माष्टमी	२५ "	चं.	विवस्वत् सप्तमी	१९ "	चं.	शनैश्चरी अमावस	९ "	श.	श्री गीता जयन्ती	१९ "	र.
भीष्म द्वादशी	२८ "	गु.	चातुर्मास्य व्रत नियमादि प्रारम्भ	२८ "	बु.	**शारद नवरात्र प्रारम्भ**	१० "	र.	श्री दत्त जयन्ती	२२ "	बु.
माघस्नान समाप्त	३१ "	र.	**गुरु पूर्णिमा**	२८ "	बु.	उपाङ्ग ललिता व्रत	१४ "	गु.	**सन् २००० ई. प्रारंभ**		
श्री महाशिवरात्रि	१४ फर. "	र.	(व्यास पूजा)	२८ "	बु.	श्री दुर्गाष्टमी, महाष्टमी	१८ "	चं.	इंग्लिश नववर्ष प्रारम्भ	१ जन.	शु.
होलाष्टक प्रारम्भ	२३ "	मं.	हरियाली अमावस	११अग.	बु.	महानवमी(पूजा, उपवास)	१८ "	चं.	लोहड़ी (पं.)	१३ "	गु.
गोविन्द द्वादशी	२७ "	श.	**खग्रास सूर्य ग्रहण**	११ "	बु.	महानवमी (बलिदान)	१९ "	मं.	मकर संक्रान्ति	१४ "	शु.
होलिका दहन,	१ मार्च"	चं.	मधुश्रवा तृतीया	१४ "	श.	**नवरात्र समाप्त**	१९ "	मं.	माघस्नान प्रारम्भ	२१ "	शु.
होलाष्टक समाप्त	२ "	मं	**संधारा तीज**	१४ "	श.	विजया दशमी (दशहरा)	१९ "	मं.	संकष्ट चतुर्थी	२४ "	चं.
सं.२०५५ वि. पूर्ण	१७ "	बु.	भारत स्वतंत्रता दिवस	१५ "	र.	भरत मिलाप	२० "	बु.	मौनी अमावस	५ फर.	श.
नवरात्र प्रारम्भ	१८ "	गु.	नाग-पञ्चमी	१६ "	चं.	शरत्पूर्णिमा	२४ "	र.	शनैश्चरी अमावस	५ "	श.
गौरी तृतीया (गणगौर)	२० "	श.	**श्री दुर्गाष्टमी**	१९ "	गु.	कोजागर व्रत	२४ "	र.	गौरी तृतीया(गोंतरी)	८ "	मं.
श्री लक्ष्मी पञ्चमी	२१ "	र.	दूर्वाष्टमी	१९ "	गु.	कार्त्तिक स्नान प्रारम्भ	२४ "	र.	तिलचतुर्थी	९ "	बु.
स्कन्दषष्ठी	२२ "	चं.	ऋग्वेदियों का उपाकर्म	२५ "	बु.	महर्षि वाल्मीकि जयन्ती	२४ "	र.	वरदा, कुन्दचतुर्थी	९ "	बु.
श्री दुर्गाष्टमी	२४ "	बु.	यजु- उपाकर्म	२६ "	गु.	करक चतुर्थी (करवा चौथ)	२७ "	बु.	श्री पंचमी,बसंत पंचमी	१० "	गु.
श्री रामनवमी	२५ "	गु.	**रक्षा बन्धन (राखी)**	२६ "	गु.	अहोई अष्टमी (पं.)	३१ "	र.	रथसप्तमी,आरोग्य सप्तमी	१२ "	श.
नवरात्र समाप्त	२५ "	गु.	संकष्ट-चतुर्थी	३० "	चं.	गोवत्स द्वादशी	४ नवं.	गु.	भीष्माष्टमी	१३ "	र.
अनङ्ग त्रयोदशी	२९ "	चं.	श्री कृष्ण जन्माष्टमी (स्मा.)	२ सितं.	गु.	धन त्रयोदशी	५ "	शु.	भीष्मद्वादशी	१६ "	बु.
वैशाखस्नान प्रारम्भ	३१ "	बु.	श्री कृष्ण जन्माष्टमी (वै.)	३ "	शु.	नरक चतुर्दशी	७ "	र.	माघस्नान समाप्त,माघी पूर्णिमा	१९ "	श.
वैशाखी (पं.)	१४अप्रै.	बु.	श्री गुग्गा नवमी	४ "	श.	श्री हनुमान् जयन्ती	७ "	र.	**श्री महाशिवरात्रि व्रत**	४ मार्च	श.
श्री परशुराम जयन्ती	१८ "	र.	कुशोत्पाटिनी	९ "	गु.	दीपावली	७ "	र.	होलाष्टक प्रारंभ	१३ "	चं.
अक्षय तृतीया	१८ "	र.	पिठोरी अमा	९ "	गु.	अन्नकूट, बलि पूजा	८ "	चं.	गोविन्द द्वादशी	१६ "	गु.
श्री गंगा जन्म	२२ "	गु.	हरितालिका-गौरी तृतीया	१२ "	र.	गोवर्धन पूजा	८ "	चं.	होलिका दहन	१९ "	र.
श्री जानकी जयन्ती	२४ "	श.	कलंक चतुर्थी	१३ "	चं.	यम द्वितीया (भाई दूज)	१० "	बु.	होलाष्टक समाप्त	२० "	चं.
बुद्ध पूर्णिमा, वैशाखी पूर्णिमा	३० "	शु.	हरितालिका चतुर्थी	१३ "	चं.	श्री विश्वकर्मा पूजा	१० "	बु.	वारुणी पर्व	२ अप्रै.	र.
वैशाखस्नान समाप्त	३० "	शु.				गोपाष्टमी	१६ "	मं.	संवत् २०५६ वि.पूर्ण	४ "	मं.

वर्गीकृत व्रत-पर्व (१ जनवरी सन् १९९९ ई. से ४ अप्रैल सन् २०००ई. तक)

एकादशी व्रत

(सन् १९९९ ई.)	
माघ कृष्ण	१३ जन.
माघ शुक्ल (स्मा.)	२७ जन.
फाल्गुन कृष्ण	१२ फर.
फाल्गुन शुक्ल	२६ फर
चैत्र कृष्ण (स्मा.)	१३मार्च
चैत्र शुक्ल	२७ मार्च
वैशाख कृष्ण	१२ अप्रै.
वैशाख शुक्ल	२६ अप्रै.
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण (स्मा.)	११ मई
प्र.ज्येष्ठ शुक्ल	२५ मई
द्वि. ज्येष्ठ कृष्ण	१० जून
द्वि. ज्येष्ठ शुक्ल	२४ जून
आषाढ़ कृष्ण	९ जुला.
आषाढ़ शुक्ल	२४ जुला.
श्रावण कृष्ण(स्मा.)	७ अग.
श्रावण शुक्ल	२२ अग.
भाद्रपद कृष्ण	६ सितं.
भाद्रपद शुक्ल	२१सितं.
आश्वि. कृष्ण	५ अक्तू.
आश्विन शुक्ल	२१अक्तू.
कार्तिक कृष्ण	३ नवं.
कार्तिक शुक्ल	१९ नवं.
मार्गशीर्ष कृष्ण	३ दिसं.
मार्गशीर्ष शुक्ल	१९ दिसं.
(सन् २००० ई.)	
पौष कृष्ण	२ जन.
पौष शुक्ल	१७ जन.
माघ कृष्ण	१ फर.
माघ शुक्ल (स्मा.)	१५ फर.
फाल्गुन कृष्ण	१ मार्च
फाल्गुन शुक्ल	१६ मार्च
चैत्र कृष्ण	३१ मार्च

(स्मा.=स्मार्तों का व्रत)

वैष्णवों का व्रत स्मार्तों के व्रत के दिन से दूसरे दिन होता है। जिसके आगे "(स्मा.)" नहीं लिखा है वह व्रत तिथि स्मार्त्त और वैष्णव दोनों के लिए है।

पक्षों का प्रारम्भ

(सन् १९९९ ई.)	
माघ कृष्ण	२ जन.
माघ शुक्ल	१८ जन.
फाल्गुन कृष्ण	१ फर.
फाल्गुन शुक्ल	१७ फर.
चैत्र कृष्ण	३ मार्च
चैत्र शुक्ल	१८मार्च
वैशाख कृष्ण	१ अप्रै.
वैशाख शुक्ल	१७ अप्रै.
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण	१ मई
प्र.ज्येष्ठ शुक्ल	१६ मई
द्वि.ज्येष्ठ कृष्ण	३१मई
द्वि. ज्येष्ठ शुक्ल	१४ जून
आषाढ़ कृष्ण	२९ जून
आषाढ़ शुक्ल	१४ जुला.
श्रावण कृष्ण	२९ जुला.
श्रावण शुक्ल	१२ अग.
भाद्रपद कृष्ण	२७ अग.
भाद्रपद शुक्ल	१० सितं.
आश्विन कृष्ण	२६ सितं.
आश्विन शुक्ल	१० अक्तू.
कार्तिक कृष्ण	२५ अक्तू.
कार्तिक शुक्ल	९ नवं.
मार्गशीर्ष कृष्ण	२४ नवं.
मार्गशीर्ष शुक्ल	८ दिसं.
पौष कृष्ण	२३ दिसं.
(सन् २००० ई.)	
पौष शुक्ल	७ जन.
माघ कृष्ण	२२ जन.
माघ शुक्ल	६ फर.
फाल्गुन कृष्ण	२० फर.
फाल्गुन शुक्ल	७ मार्च.
चैत्र कृष्ण	२१ मार्च

उत्तरी भारत में कृष्णादि एवं दक्षिणी भारत में शुक्लादि मासों का प्रचार है। ऊपर दिए गए पक्ष कृष्णादि हैं।

श्री सत्यनारायण व्रत

(सन् १९९९ ई.)	
पौष	१ जन.
माघ	३१ जन.
फाल्गुन	१ मार्च
चैत्र	३१मार्च
वैशाख	३०अप्रै.
प्र.ज्येष्ठ	२९ मई
द्वि. ज्येष्ठ	२८ जून
आषाढ़	२७ जुला.
श्रावण	२६ अग.
भाद्रपद	२४ सितं.
आश्विन	२४ अक्तू.
कार्तिक	२२ नवं.
मार्गशीर्ष	२२ दिसं.
(सन् २००० ई.)	
पौष	२० जन.
माघ	१९ फर.
फाल्गुन	१९ मार्च

अमावस्याएं(स्नान-दानार्थ)

(सन् १९९९ ई.)	
माघ	१७ जन.
फाल्गुन (भौमवती)	१६ फर.
चैत्र	१७ मार्च
वैशाख	१६ अप्रै.
प्र.ज्येष्ठ (शनैश्चरी)	१५ मई
द्वि. ज्येष्ठ	१३ जून
आषाढ़(भौमवती)	१३जुला.
श्रावण	११ अग.
भाद्रपद	९ सितं.
आश्विन(शनैश्चरी)	९ अक्तू.
कार्तिक (सोमवती)	८ नवं.
मार्गशीर्ष (भौमवती)	७ दिसं.
(सन् २००० ई.)	
पौष	६ जन.
माघ(शनैश्चरी)	५ फर.
[illegible]	[illegible]
चैत्र (भौमवती)	४ अप्रै.

श्री गणेश चतुर्थी व्रत

(सन् १९९९ ई.)	
माघ	५ जन.
फाल्गुन	४ फर.
चैत्र	५ मार्च
वैशाख	४ अप्रै.
प्र.ज्येष्ठ	४ मई
द्वि.ज्येष्ठ	३ जून
आषाढ	२ जुला.
श्रावण	३१ जुला.
भाद्रपद	३० अग.
आश्विन	२८ सितं.
कार्तिक	२७ अक्तू.
मार्गशीर्ष	२६ नवं.
पौष	२५ दिसं.
(सन् २००० ई.)	
माघ	२४ जन.
फाल्गुन	२२ फर.
चैत्र	२३ मार्च

संक्रान्तियां

(सन् १९९९ ई.)	
माघ	१४ जन.
फाल्गुन	१२ फर.
चैत्र	१४ मार्च
वैशाख	१४ अप्रै.
ज्येष्ठ	१५ मई
आषाढ	१५ जून
श्रावण	१६ जुला.
भाद्रपद	१७ अग.
आश्विन	१७ सितं.
कार्तिक	१७ अक्तू.
मार्गशीर्ष	१६ नवं.
पौष	१६ दिसं.
(सन् २००० ई.)	
[illegible]	[illegible]
फाल्गुन	१३ फर.
चैत्र	१४ मार्च

दशावतार जयन्तियां

(सन् १९९९ ई.)	
श्री मत्स्य जयन्ती	२० मार्च
श्री रामनवमी	२५ मार्च
श्री परशुराम जयन्ती	१८ अप्रै.
श्रीनृसिंह जयन्ती	२८ अप्रै.
श्री कर्म जयन्ती	३० अप्रै.
श्री बुद्ध जयन्ती	३० अप्रै.
श्री कल्कि जयन्ती	१६ अग.
*श्री कृष्ण जन्माष्टमी(स्मा	२ सितं.
श्री कृष्ण जन्माष्टमी (वै.	३ सितं.
श्री वराह जयन्ती	१२ सितं.
श्री वामन जयन्ती	२२सितं.

* अर्धरात्रि व्यापिनी अष्टमी के ही दिन श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का व्रत करना चाहिए। श्रीमद् भागवत एवं स्कन्द-विष्णु पुराण आदि इसी का समर्थन करते हैं। स्मार्तों वाली जन्माष्टमी अर्धरात्रिव्यापिनी होती है।

आश्विन कृष्ण पक्ष के श्राद्ध

(सन् १९९९ ई.)	
पूर्णिमा	२५ सितं.
प्रतिपदा	२६ सितं.
द्वितीया	२६ सितं.
तृतीया	२७ सितं.
चतुर्थी	२८ सितं.
पंचमी	२९ सितं.
षष्ठी	३० सितं.
सप्तमी	१ अक्तू.
अष्टमी	२ अक्तू.
नवमी	३ अक्तू.
दशमी	४ अक्तू.
एकादशी	५ अक्तू.
द्वादशी	६ अक्तू.
त्रयोदशी	७ अक्तू.
[illegible]	९ अक्तू.
अमावस	९ अक्तू.
सर्वपितृ	९ अक्तू.

प्रदोष व्रत

(सन् १९९९ ई.)	
माघ कृष्ण	१५ जन.
माघ शुक्ल	२९ जन.
फाल्गुन कृष्ण (शनि)	१३ फर.
फाल्गुन शुक्ल (शनि)	२७ फर.
चैत्र कृष्ण (सोम)	१५ मार्च
चैत्र शुक्ल(सोम)	२९ मार्च.
वैशाख कृष्ण(भौम)	१३ अप्रै.
वैशाख शुक्ल (भौम)	२७ अप्रै.
प्र. ज्येष्ठ कृष्ण	१३ मई
प्र. ज्येष्ठ शुक्ल	२७ मई
द्वि. ज्येष्ठ कृष्ण	११ जून
द्वि. ज्येष्ठ शुक्ल(शनि)	२६ जून
आषाढ़ कृष्ण(शनि)	१० जुला.
आषाढ़ शुक्ल	२५ जुला.
श्रावण कृष्ण (सोम)	९ अग.
श्रावण शुक्ल (भौम)	२४ अग.
भाद्रपद कृष्ण भौम	७ सितं.
भाद्रपद शुक्ल	२३ सितं.
आश्विन कृष्ण	६ अक्तू.
आश्विन शुक्ल	२२ अक्तू
कार्तिक कृष्ण	५ नवं
कार्तिक शुक्ल	२१ नवं.
मार्गशीर्ष कृष्ण	५ दिसं.
मार्गशीर्ष शुक्ल(सोम)	२०दिसं.
(सन् २००० ई.)	
पौष कृष्ण (भौम)	४ जन.
पौष शुक्ल	१९ जन.
माघ कृष्ण	२ फर.
माघ शुक्ल	१७ फर.
फाल्गुन कृष्ण	३ मार्च
फाल्गुन शुक्ल	१७ मार्च
चैत्र कृष्ण (सोम)	२अप्रै.

सोम = सोम प्रदोष व्रत
भौम = भौम प्रदोष व्रत
शनि = शनि प्रदोष व्रत

वर्गीकृत व्रत-पर्व (१ जनवरी सन् १९९९ ई. से ४अप्रैल सन् २००० ई. तक)

सिक्ख पर्व अवतार दिन (प्राचीन परम्परा के अनुसार)*

(सन् १९९९ ई.)	
श्री गुरु हरराय जी	२९ जन.
श्री गुरु तेग बहादुर जी	६ अप्रै.
श्री गुरु अर्जुन देव जी	८ अप्रै.
श्री गुरु अंगददेव जी	१७ अप्रै.
श्री गुरु अमरदास जी	२९ अप्रै.
श्री गुरु हरगोबिन्द जी	२९ जून
श्री गुरु हरकिशन जी	६ अग.
श्री गुरु रामदास जी	२६ अक्तू.
श्री गुरु नानकदेव जी	२३ नवं.
(सन् २०००ई)	
श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी	१४ जन.

गुरयाई मिली

(सन् १९९९ ई.)	
श्री गुरु हरराय जी	१५ मार्च
श्री गुरु अमरदास जी	१८ मार्च
श्री गुरु तेग बहादुर जी	३० मार्च
श्री गुरु हरगोबिन्द जी	९ मई
श्री गुरु अर्जुन देव जी	११ सितं.
श्री गुरु रामदास जी	२३ सितं.
श्री गुरु अंगददेव जी	२९ सितं.
श्री गुरु हरकिशन जी	१ नवं.
श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी	११ दिसं.

जोती जोत समाए

(सन् १९९९ ई.)	
श्री गुरु अंगद देव जी	२१ मार्च
श्री गुरु हरगोबिन्द जी	२२ मार्च
श्री गुरु हरकिशन जी	३० मार्च
श्री गुरु अर्जुन देव जी	१७ जून
श्री गुरु रामदास जी	१२ सितं.
श्री गुरु अमरदास जी	२५ सितं.
श्री गुरु नानकदेव जी	४ अक्तू.
श्री गुरु हरराय जी	१ नवं.
श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी	१३ नवं.
श्री गुरु तेग बहादुर जी	१३ दिसं.

*नानकशाही कैलेण्डर के अनुसार सिक्ख पर्व पृष्ठ 8 पर दिए गए हैं।

जैन व्रत-पर्व

(सन् १९९९ ई.)	
श्री मेरुत्रयोदशी	१५ जन.
मर्यादा महोत्सव	२४ जन.
आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण	२५ मार्च
श्री जैन महावीर जयन्ती	२९ मार्च
श्री महावीर केवल ज्ञान	२५ अप्रै.
श्री महावीर च्यवन	१८ जुला.
तेरापन्थ स्थापना	२८ जुला.
चातुर्मास्य प्रारंभ	२८ जुला.
श्री जयाचार्य निर्वाण	७ सितं.
पर्युषण पर्व प्रारंभ	८ सितं
संवत्सरी महापर्व	१५ सितं.
श्री कालू निर्वाण	१६ सितं.
आचार्य श्री तुलसी पट्टारोहण	१९ सितं.
आचार्य भिक्षु निर्वाण	२३ सितं.
श्री महावीर निर्वाण	८ नवं.
आचार्य श्री तुलसी जन्म	१० नवं.
ज्ञान पंचमी	१३ नवं.
चातुर्मास्य समाप्त	२३ नवं.
श्री महावीर दीक्षा	२ दिसं.
आचार्य श्री तुलसी दीक्षा	२७ दिसं.
(सन् २००० ई.)	
जन्म श्री पार्श्वनाथ	१ जन.
श्री मेरुत्रयोदशी	३ फर.
मर्यादा महोत्सव	१२ फर.

क्रिश्चियन त्योहार

(सन् १९९९ई.)	
नया साल प्रारंभ	१ जन.
गुड फ्राईडे	२ अप्रै.
ईस्टर सण्डे	४ अप्रै.
क्रिस्मस डे	२५ दिसं.
(सन् २००० ई.)	
नया साल प्रारंभ	१ जन.

मासिक शिवरात्रि व्रत

(सन् १९९९ ई.)	
माघ	१५ जन.
फाल्गुन	१४ फर.
चैत्र	१६ मार्च
वैशाख	१४ अप्रै.
प्र.ज्येष्ठ	१४ मई
द्वि. ज्येष्ठ	१२ जून
आषाढ़	११ जुला.
श्रावण	९ अग.
भाद्रपद	८ सितं.
आश्विन	७ अक्तू.
कार्तिक	६ नवं.
मार्गशीर्ष	६ दिसं.
(सन् २००० ई.)	
पौष	४ जन.
माघ	३ फर.
फाल्गुन	४ मार्च.
चैत्र	३ अप्रै.

मासिक कालाष्टमी व्रत

सन् १९९९ ई	
माघ	९ जन.
फाल्गुन	८ फर.
चैत्र	१० मार्च
वैशाख	९ अप्रै.
प्र.ज्येष्ठ	८ मई
द्वि. ज्येष्ठ	७ जून
आषाढ़	६ जुला.
श्रावण	४ अग.
भाद्रपद	३ सितं.
आश्विन	२ अक्तू.
कार्तिक	३१ अक्तू.
मार्गशीर्ष	३० नवं.
पौष	२९ दिसं.
सन् २००० ई.	
माघ	२८ जन.
फाल्गुन	२७ फर.
चैत्र	२८ मार्च

महापुरुषों के जन्मदिन

(सन् १९९९ ई.)	
स्वामी विवेकानन्द जी	८ जन.
श्री रामानन्दाचार्य	८ जन.
बाबा श्री लाल दयाल जी	१९ जन.
नेताजी सुभाष	२३ जन.
लाला लाजपतराय	२८ जन.
श्री गुरु रविदास जी	३१जन.
महर्षि दयानन्द सरस्वती	११ फर.
श्री रामकृष्ण परमहंस	१८ फर.
श्री चैतन्य महाप्रभु	२ मार्च
श्री बल्लभाचार्य	१२ अप्रै.
डा. अम्बेडकर	१४ अप्रै.
श्री छत्रपति शिवाजी	१७ अप्रै.
आद्य जगद्गुरु श्री शंकराचार्य	२० अप्रै
श्री रामानुजाचार्य	२१ अप्रै
श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर	९ मई
श्री महाराणा प्रताप	१६ जून
लो.मा.बाल गंगाधर तिलक	२३ जुला.
गो.स्वा. श्री तुलसीदास	१८ अग.
स्वामी शिवानन्द जी	८ सितं.
श्री महात्मा गांधी	२ अक्तू.
श्री लाल बहादुर शास्त्री	२ अक्तू.
महाराज अग्रसेन जयन्ती	१० अक्तू.
श्री माध्वाचार्य	२०अक्तू.
स्वामी रामतीर्थ	२२ अक्तू.
श्री जवाहर लाल नेहरू	१४ नवं.
श्री वीर वैरागी	२१ नवं.
भगवान् श्री सतसाईं बाबा	२३ नवं.
(सन् २००० ई.)	
श्री नेताजी सुभाष	२३जन.
स्वामी विवेकानन्द	२७ जन.
श्री रामानन्दाचार्य	२७ जन.
लाला लाजपत राय	२८जन.
बाबा श्री लाल दयाल जी	७ फर.
श्री गुरु रविदास जी	१९ फर.
महर्षि दयानन्द सरस्वती	२९ फर
श्री रामकृष्ण परमहंस	८ मार्च
श्री चैतन्य महाप्रभु	२० मार्च

मुस्लिम त्योहार

(सन् १९९९ई.)	
शहादत-ए-हज़रतअली	१०जन.
जमतुल विदा	१५ जन.
शब-ए-कद्र	१६ जन.
इदुल फित्र	२० जन.
इदुलज्जुहा	२९ मार्च
मुहर्रम (ताज़िया)	२७ अप्रै.
चेहल्लुम	५ जून
आखिरी चहार शम्बा	९ जून
ईद-ए-मिलाद	२७ जून
ईद-ए-मौलाद	२ जुला.
फतिहायज़दहुम	२५ जुला.
जन्म श्री हज़रत अली	२३ अक्तू.
शब-ए-मिराज	६ नवं.
शब-ए-बारात	२४ दिसं.
रमज़ान का पहला दिन	१० दिसं.
शहादत-ए-हज़रतअली	३० दिसं.
(सन् २००० ई.)	
शब-ए-कद्र	५ जन.
जमतुल विदा	७ जन.
इदुल फित्र	९ जन.
इदुलज्जुहा	१७ मार्च

सूचना

सभी मुस्लिम-त्योहार चन्द्र-दर्शन (नया चाँद दिखाई देने)पर ही निर्भर करते हैं। कई बार स्थान-भेद या आकाशीय वातावरण के कारण चन्द्रदर्शन की तारीख आगे- पीछे हो जाने पर इन मुस्लिम त्योहारों के दिन में एक दिन का अंतर संभव है।

भारत सरकार के अवकाश (१ जनवरी सन् १९९९ ई. से ४ अप्रै. सन् २००० ई. तक)

(सूचना : अवकाश की इस सूची को भारत सरकार के गज़ट की सूची से मिला लेना चाहिए)

इंग्लिश नववर्षारम्भ (१९९९ ई.)	१ जन.	श्री महावीर जयंती	२९मार्च	श्री कृष्णजन्माष्टमी (वैष्णव)	३सितं.	क्रिसमस डे	२५ दिसं.
मकर संक्रान्ति	१४ जन.	गुड फ्राईडे	२अप्रै.	श्री गणेश चतुर्थी	१३सितं.	(सन् २००० ई.)	
पोंगल	१४ जन.	वैशाखी	१४अप्रै.	जन्म श्री महात्मा गांधी	२ अक्तू.	इंग्लिश वर्षारम्भ (२००० ई.)	१ जन.
जमतुल विदा	१५ जन.	विशु (केरल)	१५ अप्रै.	श्री दुर्गाष्टमी	१८ अक्तू.	इदुल फित्र	९ जन.
इदुल फित्र	२०जन.	मुहर्रम	२७ अप्रै.	दशहरा	१९ अक्तू.	अवतार दिन श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी	१४ जन.
भारत गणतंत्र दिवस	२६ जन.	श्री बुद्ध जयन्ती	३० अप्रै.	जन्म श्री हजरत अली	२३अक्तू.	मकर संक्रान्ति	१४ जन.
जन्मदिन श्री गुरु रविदास जी	३१जन.	ईद -ए- मिलाद	२७ जून	महर्षि वाल्मीकि जयन्ती	२४ अक्तू.	पोंगल	१५ जन.
श्री महाशिवरात्रि व्रत	१४ फर.	रथयात्रा (पुरी)	१४ जुला.	दीपावली	७ नवं.	भारत गणतंत्र दिवस	२६ जन.
गुडी पड़वा	१८ मार्च	भारत स्वतन्त्रता दिवस	१५ अग.	भाई दूज	१० नवं.	जन्म श्री गुरु रविदास	१९ फर.
श्री रामनवमी	२५मार्च	ओनम (केरल)	२५अग.	श्रीगुरु नानक जयन्ती	२३ नवं.	श्री महाशिवरात्रि व्रत	४ मार्च
इदुलजुहा	२९ मार्च	रक्षाबन्धन	२६ अग.	बलिदान दिन श्रीगुरु तेगबहादुर जी	१३दिसं.		

पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश व जम्मू-काश्मीर, उ.प्र. के मेले (१ जन.१९९९ ई. से ४ अप्रै. सन् २००० ई. तक)

सन् १९९९ ई.

लोहड़ी (दांऊ, बिन्दरख)रोपड़	१४ जन.
मुक्तसर (पं.)	१४ जन.
बसंत पंचमी	२२ जन.
मस्तुआणा (पं.)	१ फर.
श्री महाशिवरात्रि,मण्डी(हि.प्र.)प्रा.	१४ फर.
श्री नीलकण्ठ महादेव (पौड़ी,गढ़वाल)	१४ फर.
माणकपुर शरीफ (रोपड़)प्रा.	३ मार्च
होला श्री आनन्दपुर साहिब (पं.)	३ मार्च
श्री गुरु रामराय(देहरादून)	७ मार्च
श्री वीरमदास, बधौछी (पटियाला)	९ मार्च
शीतला माता, कुराली (पं.)	११ मार्च
पिहोवा (हरि.)	१६ मार्च
जन्म बाबा अतरसिंह जी,नानकसर चीमा	१८ मार्च
माईसर खाना (पं.)	२३ मार्च
श्री मनसा देवी (हरि.)	२४ मार्च
बहुफोर्ट (जम्मू-काश्मीर)	२४ मार्च
ज्वालामुखी(हरचोवाल,गुरदासपुर,पं.)	२४मार्च
माता कांसा देवी(कांसल,रोपड़)प्रा.	२९ मार्च
देवी मेला, थीहरा (कैथल)	३० मार्च
कशाधा, नहयाणी सह (कुल्लू) प्रा.	१६ अप्रै.
पिंजौर(हरि.)	१६ अप्रै.
समागम (८ दिन,हरिहर घाट) मणिकर्ण (कुल्लू)प्रा.	२४ अप्रै.
पीपल जातर (कुल्लू) प्रा.	२९ अप्रै.
आनी आउटर सिराज (कुल्लू) प्रा.	७ मई
ढूंगरी जातर (मनाली) प्रा.	१५ मई
बंजार (कुल्लू) प्रा.	१५ मई
शाढ़ी जातर (नगर, हि.प्र.) प्रा.	१९ मई
श्री गंगादशहरा	२४ मई
भून्तर (कुल्लू) प्रा.	१५ जून
क्षीर भवानी काश्मीर	२१ जून
सपोर यात्रा, धारलदा (ऊधमपुर)	२३जून
नमाणी एकादशी, नौमे गुरु बरहे, (बठिण्डा)	२४ जून
पिपलू (ऊना, हि. प्र.)	२४ जून
शुद्धमहादेव यात्रा(ऊधनपुर)	२८ जून
बरसी- बाबा सन्तोख सिंह जी नान केसरी(चीना)प्रारम्भ	९ जुला.
शरीक भवानी (जम्मू कश्मीर)	२१ जुला.
गुरुपूर्णिमा,नदीपार आश्रम, कुराली	२८जुला.
बाबा.प्यारा सिंह-झाड़.साहिब गु. अमराला चमकौर साहिब	५-७ अग.
श्री नैनादेवी (हि. प्र.)	१९ अग.
श्री चिन्तपूर्णी	१९ अग.
श्री अमरनाथ यात्रा (काश्मीर)	२६ अग.
कैलाश यात्रा (काश्मीर) प्रा.	७ सितं.
श्री गुसाई आंणा,कुराली (पं.)	११ सितं.
श्री गणेशोत्सव (मण्डी,हि. प्र.)प्रा.	१३ सितं.
मेला पट (काश्मीर) प्रारम्भ	१४ सितं.
श्री वामन द्वादशी (अम्बाला, पटियाला)	२२सितं.
बाबा सोढल (जालन्धर)	२४ सितं.
मेला छपार(पंजाब)	२४ सितं.
मेला श्री गोईंदवाल (पं.)	२५ सितं.
श्री आशापति यात्रा (काश्मीर) प्रा.	८ अक्तू.
श्री ज्वालामुखी (हि.प्र.)	१८ अक्तू.
श्री तारा देवी (हि. प्र.)	१८ अक्तू.
हरचोवाल (गुरादासपुर, पं.)	१८ अक्तू.
दशहरा (कुल्लू) प्रारम्भ	१९ अक्तू.
श्री शाकम्भरी देवी (उ.प्र.)	२३ अक्तू.
देवी मेला, थीहरा (कैथल)	२३ अक्तू.
दीपावली (अमृतसर)	७ नवं.
बाल मेला	१४ नवं.
बाबा रुद्रानन्द, नारी (ऊना,हि.प्र.)प्रा.	१८ नवं.
रेणुका (नाहन,हि.प्र.)	१९ नवं.
जन्म श्री मीर बैरागी [illegible]	[illegible] नवं.
श्रीरामतीर्थ अमृतसर (पं.)	२३ नवं.
कपालमोचन (हरि.)	२३ नवं.
श्री पुष्करराज(राज.)	२३ नवं.
पुरमण्डल देवि का स्नान,(जम्मू)	६ दिसं.
जोड़मेला फतेहगढ़ साहिब(पं)प्रा.	२६दिसं.
संगीत मेला बाबा हरवल्लभ(जालंधर)प्रा.	२८दिसं.

सन् २००० ई.

लोहड़ी (दाऊं, बिन्दरख,रोपड़)	१४ जन.
मुक्तसर (पंजाब)	१४ जन.
नस्तुआणां (पंजाब)	१ फर.
वसन्त पंचमी	१० फर.
माणकपुर शरीफ (रोपड़) प्रारम्भ	२१ फर.
श्री महाशिवरात्रि(मण्डी,हि.प्र.) प्रा.	४ मार्च
नीलकण्ठ महादेव (पौड़ी,गढ़वाल)	४ मार्च
होला, श्री आनन्दपुर साहिब(पं.)	२१ मार्च
श्रीवीरमदास, बधौछी,(पटियाला)	२१ मार्च
शीतला माता(कुराली,पंजाब)	२३ मार्च
श्री गुरु रामराय (देहरादून)	२५ मार्च
पिहोवा(हरियाणा)	३ अप्रै.

अपने नगर के प्रसिद्ध मेलों की तिथि, तारीख आदि का स्पष्ट विवरण लिखकर भेजिए हम उसे इस सूची में समाविष्ट करेंगे।

– सम्पादक

गण्डमूल नक्षत्रों का प्रारम्भ एवं समाप्तिकाल (भा० स्टैं० टा०)

(१ जनवरी सन् १९९९ ई० से ४ अप्रैल सन् २००० ई० तक)

सन १९९९ई.	प्रारम्भ घं. मि.	सन् १९९९ ई.	समाप्त घं. मि.	सन् १९९९ ई.	प्रारम्भ घं. मि.	सन् १९९९ ई.	समाप्त घं. मि.	सन् १९९९-२०००ई.	प्रारम्भ घं. मि	सन् १९९९-२०००ई.	समाप्त घं. मि	सन् 2000 ई.	प्रारम्भ घं. मि.	सन् २००० ई.	समाप्त घं. मि.
४ जन.	१० १६	६ जन.	१० ३७	१२मई	१९ ५४	१४ मई	१४ ४८	१६ सित.	२१ १८	१९सितं.	३ ९	२२ जन.	२ २८	२३ जन.	२२ ४६
१४''	३ ५०	१६''	७ ४६	२०''	२२ २७	२२''	२३ ०८	२६''	६ ५२	२८''	३ १२	३१ ''	७ ०४	२ फर.	१३ १४
२३''	८ ०४	२५ ''	५ ३२	३०''	१६ २०	१ जून	२१ ५७	४ अक्तू.	१७ १५	६ अक्तू.	१७ १२	१०फर.	० ५९	१२ ''	० २९
३१''	२० ०९	२ फर.	२० १८	९जून	४ ४४	११''	० ५३	१४''	५ ००	१६''	११ ०७	१८ ''	१३ ०१	२० ''	९ ३०
१० फर.	१२ १३	१२ ''	१६ ३२	१७''	७ २६	१९''	६ ४४	२३''	१६ ५६	२५''	१२ ३०	२७ ''	१४ ४५	२९ ''	२० ५१
१९''	१४ १९	२१ ''	११ ००	२६''	२२ ३५	२९ ''	३ ५९	३१''	२२ ४०	२ नवं.	२२ ४६	८ मार्च	७ १५	१० मार्च	६ ००
२८''	४ ०३	२ मार्च	४ ५३	६जुला.	११ २४	८ जुला.	८ ५५	१० नवं.	११ ५६	१२ ''	१८ ०७	१६ ''	२१ ०४	१८ ''	१८ ४०
९ मार्च	२० २९	१२''	१ २९	१४''	१७ ३२	१६''	१५ ५३	२०''	३ ३४	२१''	२३ ३२	२५ ''	२३ ०४	२८ ''	०४ ५७
१८''	२२ ५८	२०''	१८ १७	२४''	५ ३२	२६''	१० ५३	२८ ''	५ ३६	३०''	४ ३७	४ अप्रै.	१५ २६	०६ अप्रै.	१३ १०
२७''	९ ५७	२९ ''	११ ३६	२अग.	१६ ५०	४अग.	१४ ५५	७ दिसं.	१८ १२	१०दिसं.	० १९				
६ अप्रै.	३ ५३	८ अप्रै.	९ २६	११''	३ १३	१३''	१ ३१	१७''	१२ ४६	१९''	१० १३				
१५ ''	९ २५	१७ ''	३ ५८	२०''	१३ १६	२२ ''	१८ ४७	२५''	१५ १३	२७''	१२ ३४				
२३ ''	१५ २८	२५ ''	१७ ०९	२९''	२२ ५१	३१''	२० २१	४जन.	० २०	६जन.	६ २७				
३ मई	१० २१	५ मई	१६ ०५	७ सितं.	११ १२	९ सितं.	१० १५	१३''	१९ ३२	१५''	१८ ३३				

पंचकों का प्रारम्भ एवं समाप्तिकाल (भा० स्टैं० टा०)

(१ जनवरी सन् १९९९ ई० से ४ अप्रैल सन् २००० ई० तक)

सन् १९९९ई.	प्रारम्भ घं. मि.	सन् १९९९ ई.	समाप्त घं. मि.	सन् १९९९ ई.	प्रारम्भ घं. मि.	सन् १९९९ ई.	समाप्त घं. मि.	सन् १९९९-२०००ई.	प्रारम्भ घं. मि.	सन् १९९९ ई.	समाप्त घं. मि.	सन् २००० ई.	प्रारम्भ घं. मि.	सन् २००० ई.	समाप्त घं. मि.
१९जन.	२२ ०६	२४ जन.	६ ५४	५ जून	१६ ५३	१०जून	३ ०६	२० अक्तू.	६ ३२	२४ अक्तू.	१४ ५५	४ मार्च	१७ १४	९ मार्च	६ ४७
१६फर.	६ १८	२० फर.	१२ ४०	२ जुला.	२२ २८	७ जुला.	१० २४	१६ नवं.	१५ ०६	२१ नवं.	९ ५२	१ अप्रै.	१ ५९	५ अप्रै.	१४ ३०
१५मार्च	१६ ०८	१९ मार्च	२० ३९	३० ''	४ २९	३ अग.	१६ ०२	१३ दिसं.	२१ ४६	१८ दिसं.	११ ५१				
१२अप्रै.	१ ५९	१६अप्रै.	६ ४९	२६ अग.	१२ ००	३० ''	२१ ४२	१० जन.	३ २५	१४ जन.	१९ २१				
९ मई	१० २१	१३मई	१७ ३५	२२ सित.	२१ ०२	२७ सितं.	५ ०९	६ फर.	९ ३९	११ फर.	० ५६				

पंचकों में घास, लकड़ी का संग्रह एवं खाट आदि का बुनना निषिद्ध है। दक्षिण दिशा की यात्रा भी पंचकों में नहीं करनी चाहिए ।

रविवार कैलेण्डर (१ जनवरी सन् १९९९ ई. से ३० अप्रैल सन् २००० ई .तक)

सन् १९९९ई.	रविवार की तारीखें					सन् १९९९ई.	रविवार की तारीखें					सन् १९९९ई.	रविवार की तारीखें					सन् २०००ई.	रविवार की तारीखें				
जनवरी	३	१०	१७	२४	३१	मई	२	०९	१६	२३	३०	सितम्बर	५	१२	१९	२६	-	जनवरी	२	९	१६	२३	३०
फरवरी	७	१४	२१	२८	-	जून	६	१३	२०	२७	-	अक्तूबर	३	१०	१७	२४	३१	फरवरी	६	१३	२०	२७	-
मार्च	७	१४	२१	२८	-	जुलाई	४	११	१८	२५	-	नवंबर	७	१४	२१	२८	-	मार्च	५	१२	१९	२६	-
अप्रैल	४	११	१८	२५		अगस्त	[illegible]	०८	१५	२२	२९	दिसम्बर	५	१२	१९	२६	-	अप्रैल	२	९	१६	२३	३०

ग्रहण विवरण (सं. २०५६ वि.)

इस वर्ष (सं. २.०५६ वि.) में भूमण्डल पर निम्नलिखित चार ग्रहण होंगें:-

(१) खण्डग्रास चन्द्र ग्रहण (२८ जुला. '९९ई.)

(२) खग्रास सूर्य ग्रहण (११ अग. '९९ ई.)

(३) खग्रास चन्द्र ग्रहण (२१ जन. २००० ई.)

(४) खण्डग्रास सूर्य ग्रहण (५ फर.२००० ई.)

इनमें से नं. (३) और नं. (४) वाले ग्रहण भारत में नहीं दिखाई देंगे । भारत में दृश्य शेष ग्रहणों का विवरण निम्नलिखित है:-

(१) खण्डग्रास चन्द्रग्रहण :- (२८ जुला. '९९ ई.) यह ग्रहण आषाढ़शुक्ल-पूर्णिमा-बुधवार को सायं चन्द्रोदय के समय अरुणाचल, नागालैण्ड, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, त्रिपुरा और आसाम के पूर्वी भाग में थोड़े समय के लिए दिखाई देगा । इन स्थलों पर चन्द्रमा ग्रस्त ही उदय होगा और उदय के कुछ मिनट बाद ही ग्रहण समाप्त हो जाएगा। भारत के अन्य किसी भी प्रान्त में यह ग्रहण दिखाई नहीं देगा।

(२) खग्रास सूर्यग्रहण:- (११ अग. '९९ ई.) यह ग्रहण श्रावण-कृष्ण-अमा-बुधवार को सायं ४ बजकर ४० मिनट से प्रारम्भ होकर सूर्यास्त तक सारे भारत में दिखाई देगा । गुजरात, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, आन्ध्रपेदश और उड़ीसा में इसका खग्रास रूप दीखेगा। भारत के शेष प्रान्तों में यह ग्रहण खण्डग्रास के रूप में ही दिखाई देगा । भारत के कुछ नगरों में इस ग्रहण का स्पर्श-मोक्ष काल इसी पृष्ठ पर दाईं ओर दिया जा रहा है ।

(३) ग्रहण का सूतक:- इस ग्रहण का सूतक ११ अग. '९९ को प्रातः ४ घं. ४० मि. (भा.स्टैं. टा.) पर ही शुरू हो जाएगा । सूतक के समय बाल,वृद्ध और रोगियों को छोड़कर अन्य किसी को खाना-पीना नहीं चाहिए ।

(४) ग्रहण का अन्य फल :- यह ग्रहण कर्क,मकर राशि वाले देशों, प्रान्तों के लिए अशुभ है ।

उत्तर भारत के प्रमुख-प्रमुख शहरों में ११ अग.'९९ ई. को दिखाई देने वाले सूर्यग्रहण का स्पर्श मोक्ष काल (भा.स्टैं.टा.)

नगर	स्पर्श		मोक्ष		नगर	स्पर्श		मोक्ष	
	घं.	मि.	घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.
अमृतसर	१६	४६	१८	४६	पटियाला	१६	४९	१८	४८
अम्बाला	१६	४९	१८	४८	पठानकोट	१६	४६	१८	४५
अर्को (हि.प्र.)	१६	४८	१८	४६	पानीपत	१६	५०	१८	४९
उधमपुर (का.)	१६	४४	१८	४४	पालमपुर	१६	४७	१८	४५
ऊना (हि.प्र.)	१६	४७	१८	४६	पुंछ (का.)	१६	४३	१८	४३
कठुआ	१६	४६	१८	४५	फरीदकोट	१६	४७	१८	४७
कपूरथला	१६	४७	१८	४६	फाज़िल्का	१६	४७	१८	४८
करनाल	१६	५०	१८	४८	फिरोजपुर	१६	४७	१८	४७
कांगड़ा	१६	४६	१८	४५	बठिण्डा	१६	४८	१८	४८
कालका(हरि.)	१६	४९	१८	४७	मण्डी(हि.प्र.)	१६	४७	१८	४५
कुराली(पं.)	१६	४८	१८	४७	मालेरकोटला	१६	४८	१८	४७
कुरुक्षेत्र	१६	५०	१८	४८	मोगा(पं.)	१६	४७	१८	४७
कुल्लू	१६	४७	१८	४५	रोपड़ (पं.)	१६	४८	१८	४७
कैथल	१६	५०	१८	४९	रोहतक	१६	५१	१८	५०
खन्ना (पं.)	१६	४८	१८	४७	लुधियाना	१६	४७	१८	४७
गुड़गांव	१६	५२	१८	५०	शिमला	१६	४८	१८	४६
गुरदासपुर	१६	४६	१८	४५	श्रीनगर (का.)	१६	४३	१८	४२
चण्डीगढ़	१६	५१	१८	४७	संगरुर	१६	४८	१८	४८
चम्बा	१६	४६	१८	४५	सरहिंद	१६	४८	१८	४७
जम्मू	१६	४५	१८	४५	सिरसा	१६	४९	१८	५०
जालंधर	१६	४७	१८	४७	हिसार	१६	५०	१८	५०
जीन्द	१६	५०	१८	४९	होशियारपुर	१६	४७	१८	४६
थानेसर	१६	५०	१८	४८					
दिल्ली	१६	५२	१८	५०					
धर्मशाला	१६	४६	१८	४५					
धूरी(पं.)	१६	४८	१८	४८					
नाभा (पं.)	१६	४९	१८	४८					
नारनौल	१६	५१	१८	५१					
नालागढ़	१६	४८	१८	४९					
नाहन	१६	४९	१८	४७					
पंचकूला	१६	४८	१८	४७					

- ग्रहण का राशि फल -

यह ग्रहण कर्क राशि और आश्लेषा नक्षत्र में हो रहा है, अतः कर्क राशि एवं आश्लेषा नक्षत्र वालों के लिए विशेष अशुभ होगा । मेषादि द्वादश राशि वालों के लिए इसका भिन्न भिन्न फल नीचे कोष्ठक में दिया गया है।

-ग्रहण-राशि फल कोष्ठक-

राशि	फल	राशि	फल	राशि	फल
मेष	कष्ट	सिंह	हानि	धनु	महाकष्ट
वृष	धन लाभ	कन्या	लाभ	मकर	स्त्री/पति कष्ट
मिथुन	हानि	तुला	सुख	कुंभ	सुख
कर्क	दुर्घटना	वृश्चिक	अपमान	मीन	विपत्ति

शनि की साढ़ेसाती (बृहत्कल्याणी), ढैया (लघुकल्याणी) और गुरु-राहु का गोचरफल (सं. २०५६ वि.)

जन्म कुण्डली में शनैश्चर का शुभग्रह से संबंध हो अथवा महादशा का अंतर शुभ चल रहा हो, तो ढैया और साढ़ेसाती का अशुभफल कम होता है । यदि चन्द्र, शनि जन्म में अशुभ ग्रहों से युक्त हों तो साढ़ेसाती व ढैया महान् अशुभ, चिन्ता, अवनति, धनहानि, झगड़ा, कार्य में विघ्न ,रोजगार में कमी, व्यर्थ कलह एवं रोग, पशु-पीड़ा आदि का कारण बनती है । यदि जन्म-कुण्डली में शनि अष्टमेश या मारकेश भी हो तो भी ढैया, साढ़ेसाती विशेष अनिष्ट फलप्रद होती है । यदि जन्म में शनि लग्नेश, पंचमेश, नवमेश होकर ३, ६, ११ में स्थित हो तो सुख-सम्पत्ति मिलती है, व्यापारादि में लाभ होता है । शनि के अष्टकवर्ग में अधिक रेखाएं हों तो शुभ, कम रेखाएं हों तो अशुभ फल निश्चित होता है। शान्त्यर्थ-सतनाजा को तेल का हाथ लगाकर पक्षियों को डालना चाहिए या शनिवार को तेल में मुख देखकर उसमें मिष्ठान्न, गुलगुले आदि बनाकर, गरीबों को, भैंसे या कुत्ते को दें या बन्दरों को गुड़-चने डालते रहें । अष्टगंध से शुभ मुहूर्त में बना हुआ शनि यंत्र धारण करना विशेष शान्तिप्रद है ।

साढ़ेसाती में प्रत्येक राशि के लिए शनि का अशुभ फल इस प्रकार है :-

मेष राशि वालों को बीच के अढाई वर्ष खराब है । वृष को पहिले अढाई वर्ष, मिथुन को अंत के अढ़ाई वर्ष, कर्क को बीच के अढ़ाई वर्ष, सिंह को पहिले ५ वर्ष, उसमें भी मध्य के अढ़ाई वर्ष खराब हैं । कन्या को पहिले ५ वर्ष,उसमें भी मध्य के अढ़ाई वर्ष विशेष अशुभ हैं । तुला को आखिर के अढ़ाई वर्ष वृश्चिक को अंतिम ५ वर्ष नेष्ट हैं, उसमें भी पहले अढ़ाई वर्ष विशेष अशुभ हैं । धनु को प्रारंभ के अढ़ाई वर्ष, मकर को पहिले ५ वर्ष, उसमें भी पहिले अढ़ाई वर्ष विशेष खराब हैं । कुंभ को आदि एवं अंत के अढ़ाई वर्ष, विशेषत: अंत के अढ़ाई वर्ष अधिक अशुभ हैं। मीन को पूरे साढ़ेसात वर्ष नेष्ट हैं, उनमें भी अंत के अढ़ाई वर्ष विशेष अशुभ फल वाले होते हैं ।

इस वर्ष (सं. २०५६वि.में) शनि मेष राशि में ही रहेगा , जिसकी ढैया आदि का फल विभिन्न राशिवालों के लिए नीचे बाईं और कोष्ठक में दिया गया है।

नोट:- जिन राशियों का इस कोष्ठक में निर्देश नहीं है उन राशि वालों के लिए मेषस्थित शनि के काल में ढैया या साढेसाती नहीं हैं ।

मेष राशिस्थ शनि की साढ़ेसाती, ढैया

(पूरे सं. २०५६ वि. के लिए)

राशि	ढैया या साढ़ेसाती	पाद	साढ़ेसाती		फल
			किस अंग पर	चढ़ती या उतरती	
मेष	साढ़ेसाती	चाँदी	हृदय	....	व्यापार में वृद्धि, राज सम्मान,यश प्रताप बढ़े , मांगलिक कार्य हों।
वृष	साढ़ेसाती	लोहा	मस्तक	चढ़ती	रोगभय, रक्त विकार,पति/स्त्री को कष्ट, व्यापार में हानि, सन्तान कष्ट।
कन्या	ढैया	लोहा	.....	.....	रोगभय, रक्त विकार,पति/स्त्री को कष्ट, व्यापार में हानि, सन्तान कष्ट।
मकर	ढैया	लोहा	.....	.....	रोगभय, रक्त विकार,पति/स्त्री को कष्ट, व्यापार में हानि, सन्तान कष्ट।
मीन	साढ़ेसाती	तांबा	पैर	उतरती	सुख सम्पत्ति, व्यापार अच्छा, शारीरिक सुख, सन्तान सुख।

"गुरु के संचार का फल"

गुरु इस वर्ष २५ मई १९९९ ई. तक मीन राशि में संचार करेगा। और यह २६ मई को मेष में प्रविष्ट होकर वर्षान्त तक मेष में ही रहेगा। मीन और मेष राशि के गुरु का फल भिन्न-भिन्न राशि वालों के लिए अलग-अलग दो कोष्ठकों में नीचे दिया गया है ।

मीन राशि के गुरु का शुभाशुभ फल

(वर्षारम्भ से २५ मई' ९९ तक के लिए)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	आधि व्याधि	प्रगति	धनहानि	धन लाभ	धननाश	सम्मान	रोग	सुख	धनहानि	शरीरकष्ट	धनलाभ	भय

मेष राशि के गुरु का शुभाशुभ फल

(२६ मई '९९ से वर्षान्त तक के लिए)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	भय	आधि व्याधि	प्रगति	धनहानि	धनलाभ	धननाश	सम्मान	रोग	सुख	धनहानि	शरीर कष्ट	धन लाभ

राहु के संचार का फल

राहु इस वर्ष प्रारम्भ से अन्त तक कर्क राशि में ही संचार करेगा, जिसका भिन्न-भिन्न राशि वालों के लिए शुभाशुभ फल नीचे कोष्ठक में दिया गया है।

कर्क राशि के राहु का शुभाशुभ फल

(पूरे संव. २०५६ वि. के लिए)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	नकर	कुम्भ	मीन
फल	अपमान	सौभाग्य	कलह	भय	विनाश	धन लाभ	कलह	दुःख	धननाश	राजभय	महासुख	धनक्षय

अथनवग्रह स्तोत्रम्

जपाकुसुम संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्॥
दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसंभवम्।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्॥
धरणीगर्भसंभूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं च मंगलं प्रणमाम्यहम्॥
प्रियङ्गु कलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्॥
देवानां च ऋषीणां च गुरुं काञ्चनसन्निभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्॥
हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्॥
नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्त्तण्डसंभूतं तं नमामि शनैश्चरम्॥
अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्।
सिंहिकागर्भसंभूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्॥
पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्॥
इति व्यासमुखोद्गीतं यः पठेत्सुसमाहितः।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशांतिर्भविष्यति॥
नर नारी नृपाणां च भवेत् दुःस्वप्ननाशनम्।
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम्॥

सिक्ख पर्व

('शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी, अमृतसर' की ओर से जारी किए गए 'नानकशाही कैलेण्डर' के अनुसार)

नाम गुरु साहेबान	अवतार दिन	गुरुयाई मिली	जोती जोत समाए
श्री गुरुनानक देव जी	कार्त्ति. पूर्णिमा	—	२२ सितं.
श्री गुरु अंगद देव जी	१८ अप्रै.	१८ सितं.	१६ अप्रै.
श्री गुरु अमरदास जी	२३ मई	१६ अप्रै.	१६ सितं.
श्री गुरु राम दास जी	९ अक्तू.	१६ सितं.	१६ सितं.
श्री गुरु अर्जुन देव जी	२ मई	१६ सितं.	१६ जून
श्री गुरु हरगोबिन्द जी	५ जुला.	११ जून	१९ मार्च
श्री गुरु हरराय जी	३१ जन.	१४ मार्च	२० अक्तू.
श्री गुरु हरकिशन जी	२३ जुला.	२० अक्तू.	१६ अप्रै.
श्री गुरु तेगबहादुर जी	१८ अप्रै.	१६ अप्रै.	२४ नवं.
श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी	५ जन.	२४ नवं.	२१ अक्तू.
श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी	१ सितं.	२० अक्तू.	—

नोट :-नानकशाही कैलेण्डर के अनुसार गुरुपर्वों की ये ऊपर दी गईं अंग्रेजी तारीखें हर साल यही रहेंगी।

हम हृदय से इनके आभारी हैं

हमारे परममित्र ज्ञानी श्री करतार सिंह जी, मालिक ''कंवल वीडियो एण्ड फोटोस्टेट,कुराली'' पिछले ७ वर्षों से हमारी 'श्रीमार्त्तण्ड आलम जन्त्री' (उर्दू) और 'शिरोमणि तिथ पत्रिका' (पंजाबी)के अनुवाद, प्रूफ रीडिंग आदि का पूरा कार्य गहन आत्मीय भाव एवं तन्मयता से करते आ रहे हैं, जिसके लिए उनके प्रति हम हार्दिक आभार प्रकट किए बिना नहीं रह सकते। अपने व्यस्त जीवन के क्षणों में से वे हमारे लिए प्रचुर पर्याप्त समय सहर्ष निकाल लेते हैं, इसके लिए हम अपने आपको उनका सचमुच ऋणी मानते हैं।

अपिच ''श्रीमार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय, कुराली'' के प्रबन्धक हमारे अनुजस्वरूप चि. प्रेमचन्द शर्मा तथा इनके सहकर्मचारी चि. श्रीकृष्ण शर्मा, शास्त्री, वेदाचार्य और चि.दिलबाग शर्मा 'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग' (हिन्दी) की प्रूफरीडिंग, पाण्डुलिपिलेखन आदि का कार्य बड़ी तत्परता, सावधानी, अपनापन और आदरभाव से करते हैं। इनके निरंतर प्रगतिमय उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारा इन्हें सस्नेह हार्दिक आशीर्वाद है।

सम्पादक —मार्त्तण्ड पंचांग

ग्रहदृष्ट्यादिविवरणचक्र

	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
एकपाददृष्टि स्थान	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	०	३।१०	३।१०
द्विपाददृष्टि स्थान	५।९	५।९	५।९	५।९	०	५।९	५।९	५।९	५।९
त्रिपाददृष्टि स्थान	४।८	४।८	०	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८
पूर्णदृष्टि स्थान	७	७	४।७।८	७	५।७।९	७	३।७।१०	७	७
मित्रग्रह	चं.मं.गु.	र.बु.	र.गु.चं.	र.रा.शु.	र.चं.मं.	बु.रा.श.	बु.रा.शु.	बु.श.शु.	बु.शु.श.
समग्रह	बु.	मं.श.गु.शु.	शु.श.	मं.श.गु.	रा.श.	मं.गु.	गु.	गु.	गु
शत्रुग्रह	श.रा.शु.	रा.	बु.रा.	चं.	बु.शु.	र.चं.	र.चं.मं.	र.चं.मं.	र.चं.मं.
उच्चराशि	मेष	वृष	मकर	कन्या	कर्क	मीन	तुला	मिथुन	धनु
परमोच्चांश	१०	३	२८	१५	५	२७	२०	१५	१५
नीचराशि	तुला	वृश्चिक	कर्क	मीन	मकर	कन्या	मेष	धनु	मिथुन
परमनीचांश	१०	३	२८	१५	५	२७	२०	१५	१५
स्वराशि	सिंह	कर्क	मे. वृश्चिक	मि.कन्या	ध. मी.	वृष. तु.	म. कु.	कन्या	मीन
ग्रह की तुष्टि के लिए धारणार्थ रत्न	माणिक्य	मुक्ता (मोती)	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
ग्रहशान्त्यर्थ जपनीय मन्त्र	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्राय नमः	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः

नक्षत्रराशि-ज्ञान-चक्र

राशि	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
नक्षत्र	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू. फा.	उ. फा.	उ. फा.	हस्त	चित्रा
प्रथम चरण	चू	ली	अ	०	ओ	वे	०	कु	के	०	हु	डी	मा	मो	टे	०	पू	पे
द्वितीय चरण	चे	लू	०	ई	वा	वो	०	घ	को	०	हे	डू	मी	टा	०	टो	ष	पो
तृतीय चरण	चो	ले	०	उ	वी	०	का	ङ	ह	०	हो	डे	मू	टी	०	पा	ण	०
चतुर्थ चरण	ला	लो	०	ए	वु	०	की	छ	०	हि	डा	डो	मे	टू	०	पी	ठ	०

राशि	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर				कुम्भ			मीन		
नक्षत्र	चित्रा	स्वाती	विशाखा	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पू. षा.	उ. षा.	उ. षा.	अभिजित्	श्रवण	धनिष्ठा	धनिष्ठा	शतभिषा	पू. भा.	पू. भा.	उ. भा.	रेवती
प्रथमचरण	०	रु	ती	०	ना	नो	ये	भू	भे	०	जू	खी	गा	०	गो	से	०	दु	दे
द्वितीय चरण	०	रे	तू	०	नी	य	यो	ध	०	भो	जे	खू	गी	०	सा	सो	०	थ	दो
तृतीय चरण	रा	रो	ते	०	नू	यी	भा	फ	०	जा	जो	खे	०	गू	सी	दा	०	झ	चा
चतुर्थ चरण	री	ता	०	तो	ने	यू	भी	ढ	०	जी	खा	खो	०	गे	सू	०	दी	ञ	चि

विशेष :—नक्षत्र व राशि के विचार में श और स, ब और व, ह्रस्व और दीर्घ स्वर, ए और ऐ तथा ओ और औ में कोई भेद नहीं होता । जिसके नाम का पहला अक्षर संयुक्त हो, वहां प्रथमाक्षर ग्रहण करें ।

॥ नक्षत्रयोनि-नाड्यादि चक्र ॥

नक्षत्र*	राशि	योनि	नाडी	गण	वर्ण	तत्त्व	राशीश	पंचशलाका में विद्ध	सप्तशलाका में विद्ध
अश्वि. भर. कृ. १	मेष	अश्व गज मेष	आदि मध्य अन्त्य	देव मनुष्य राक्षस	क्षत्रिय ,, ,,	अग्नि ,, ,,	मंगल ,, ,,	पू.फा. अनु. विशा.	पू.फा. मघा श्रव.
कृ. २,३,४ रोहि मृग. १,२	वृष	मेष सर्प सर्प	अन्त्य अन्त्य मध्य	राक्षस मनुष्य देव	वैश्य ,, ,,	भूमि ,, ,,	शुक्र ,, ,,	विशा. अभि. उ.षा.	श्रव. अभि. उ.षा.
मृग. २,३ आर्द्रा पुन. १,२,३	मिथुन	सर्प श्वान मार्जार	मध्य आदि आदि	देव मनुष्य देव	शूद्र ,, ,,	वायु ,, ,,	बुध ,, ,,	उ.षा. पू.षा. मूल	उ.षा. पू.षा. मूल
पुन. ४ पुष्य आश्ले.	कर्क	मार्जार मेष मार्जार	आदि मध्य अन्त्य	देव देव राक्षस	ब्राह्मण ,, ,,	जल ,, ,,	चन्द्र ,, ,,	मूल ज्येष्ठा अनु.	मूल ज्येष्ठा अनु.
मघा पू.फा. उ.फा. १	सिंह	मूषक मूषक गौ	अन्त्य मध्य आदि	राक्षस मनुष्य मनुष्य	क्षत्रिय ,, ,,	अग्नि ,, ,,	सूर्य ,, ,,	श्रव. अश्वि रेव.	भर. अश्वि रेव.
उ.फा. २,३,४ हस्त चित्रा, १,२	कन्या	गौ महिष व्याघ्र	आदि आदि मध्य	मनुष्य देव राक्षस	वैश्य ,, ,,	भूमि ,, ,,	बुध ,, ,,	रेव. उ.भा. पू.भा.	रेव. उ.भा. पू.भा.
चित्रा ३,४ स्वाती विशा. १,२,३	तुला	व्याघ्र महिष व्याघ्र	मध्य अन्त्य अन्त्य	राक्षस देव राक्षस	शूद्र ,, ,,	वायु ,, ,,	शुक्र ,, ,,	पू.भा. शत. कृत्ति.	पू.भा. शत. धनि.
विशा. ४ अनु. ज्येष्ठा	वृश्चिक	व्याघ्र मृग मृग	अन्त्य मध्य आदि	राक्षस देव राक्षस	ब्राह्मण ,, ,,	जल ,, ,,	मंगल ,, ,,	कृति. मघा पुष्य	धनि. आश्ले. पुष्य
मूल पू.षा. उ.षा. १	धनु	श्वान वानर नकुल	आदि मध्य अन्त्य	राक्षस मनुष्य मनुष्य	क्षत्रिय ,, ,,	अग्नि ,, ,,	गुरु ,, ,,	पुन. आर्द्रा मृग.	पुन. आर्द्रा मृग,
उ.षा. २,३,४ अभि. श्रव. धनि. १,२	मकर	नकुल — वानर सिंह	अन्त्य — अन्त्य मध्य	मनुष्य — देव राक्षस	वैश्य ,, ,, ,,	भूमि ,, ,, ,,	शनि ,, ,, ,,	मृग. रोहि मघा. आश्ले.	मृग. रोहि कृत्ति. विशा.
धनि ३,४ शत. पू.भा. १,२,३	कुम्भ	सिंह अश्व सिंह	मध्य आदि आदि	राक्षस राक्षस मनुष्य	शूद्र ,, ,,	वायु ,, ,,	शनि ,, ,,	आश्ले. स्वा. चित्रा	विशा. स्वा. चित्रा
पू.भा. ४ उ.भा. रेवती	मीन	सिंह गौ गज	आदि मध्य अन्त्य	मनुष्य मनुष्य देव	ब्राह्मण ,, ,,	जल ,, ,,	गुरु ,, ,,	चित्रा हस्त उ.फा.	चित्रा हस्त उ.फा.

*नक्षत्रों के आगे लिखी १, २, ३, ४ संख्याएं उनके चरण बतलाती हैं।

मेलापकसारणी देखने की रीति

अगले पृष्ठ पर मेलापकसारणी दी गई है। सारणी की दूसरी पंक्ति में (बाएं से दाएं) वर के नक्षत्र और पहले स्तम्भ (कालम) में (ऊपर से नीचे) कन्या के नक्षत्र हैं। वर के नक्षत्र के नीचे कन्या के नक्षत्र के आगे मिलान के गुण देखें। जैसे—वर का नक्षत्र पुन. और कन्या का नक्षत्र रोहिणी हो तो सारणी में पुन. के नीचे रोहिणी के आगे २६ गुण मिले। मिलान में कम से कम १८ गुण जरूर मिलने चाहिएं।

नाडीदोष—इसी पृष्ठ पर "नक्षत्रयोनिनाड्यादिचक्र" दिया गया है। इस से मिलान में नाडीदोष जाना जा सकता है। यदि वर और कन्या के नक्षत्र की एक ही नाड़ी हो तो नाड़ी दोष माना जाएगा। जैसे—वर का नक्षत्र अश्विनी और कन्या का हस्त हो तो चक्र में दोनों की नाड़ी आदि होने से नाडी दोष होगा।

नाडीदोष का परिहार—नाडीदोष हो और नक्षत्रपाद (चरण) वेध न हो तो नाडी दोष का परिहार हो जाता है। नीचे "नक्षत्रपादवेध कोष्ठक" दिया गया है। इस कोष्ठक में ऊपर नीचे दिए गए जन्मनक्षत्र के चरण (पाद) एक दूसरे को वेधते हैं।

नक्षत्रपाद (चरण)वेधकोष्ठक

जन्म नक्षत्र का यह चरण हो तो	१	२	३	४
जन्म नक्षत्र के इस चरण का वेध होता है	४	३	२	१

यदि पाद वेध हो तो पूरा नाडी दोष समझना चाहिए, नहीं तो नाडी दोष बहुत कम प्रभाव करता है। जैसे—स्वाती नक्षत्र वाले वर और रोहिणी नक्षत्र वाली कन्या को नाडी दोष है। यदि वर का जन्म स्वाती के दूसरे चरण में और कन्या का जन्म रोहिणी के चौथे चरण में हुआ तो नक्षत्र पाद वेध कोष्ठक के अनुसार दूसरे और चौथे पाद का वेध नहीं है अतः यहां नाड़ी दोष का परिहार समझना चाहिए।

गण दोष— "नक्षत्रयोनिनाड्यादि-चक्र" से ही गणदोष का ज्ञान कीजिए। यदि वर के नक्षत्र का गण मनुष्य और कन्या के नक्षत्र का राक्षस हो तो गण दोष होता है। इसी प्रकार कन्या के नक्षत्र का गण मनुष्य और वर के नक्षत्र का राक्षस हो तो भी गण दोष है।

सामान्य परिहार— यदि वर-कन्या की राशियों के स्वामी ग्रह परस्पर मित्र हों तो १६ गुण मिलने पर भी सम्बन्ध किया जा सकता है।

मेलापकसारणी

(✻१, २, ३, ४ संख्याएं नक्षत्रों के चरण बतलाती हैं।)

राशि वर→	मेष			वृषभ			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुंभ			मीन		
✻↓ नक्षत्र	अश्वि	भर	कृत्ति	कृत्ति	रोहि	मृग	मृग	आर्द्रा	पुन	पुन	पुष्य	आश्ले	मघा	पूर्वा	उत्त	उत्त	हस्त	चित्रा	चित्रा	स्वा	विशा	विशा	अनु	ज्ये	मूल	पूषा	उषा	उषा	श्रव	धनि	धनि	शत	पूभा	पूभा	उभा	रेव
वधू चरण	४	४	१	३	४	२	२	४	३	१	४	४	४	४	१	३	४	२	२	४	३	१	४	४	४	४	१	३	४	२	२	४	३	१	४	४
मेष अश्वि ४	२८	३३	२७	१७	२३	२२	२५	१६	१७	२२	३०	२७	२०	२४	१४	०	१०	१२	२२	२८	२२	१८	२४	१३	२२	२४	२३	२५	२६	२०	१९	१४	१५	१४	२३	२६
भर ४	३३	२८	२८	१८	२३	१४	१७	२५	२५	३०	२२	२४	१९	१७	२४	१९	१८	३	१३	२८	२१	१८	१७	१९	१९	१७	२५	२७	२६	१०	९	१०	२३	२२	१६	२५
कृत्ति १	२६	२८	२८	१८	१०	१६	१९	१९	१९	२४	२६	२२	१५	१९	२०	१५	१४	१७	२७	१४	१९	१६	१९	२५	२५	१९	११	१३	१३	२५	२४	२०	१८	१७	१०	२०
वृषभ कृत्ति ३	१८	१९	१९	२८	१८	२६	१७	१७	१७	२१	२३	१०	१०	२१	२२	२०	२०	२३	२२	९	१४	२१	२४	३०	२२	१५	७	१२	१०	२३	२९	३०	२३	२०	२२	१३
रोहि ४	२३	२३	११	२०	२८	३६	२६	२३	२२	२६	२७	१२	१०	२४	२७	२५	२५	१८	१७	१५	८	१४	२९	२३	१३	१९	११	१६	१८	१९	२४	२४	२०	२६	२७	१०
मृग २	२३	१४	१८	२७	३५	२८	१८	२३	२२	२६	१०	२१	१९	१५	२४	२३	२५	११	१०	२४	१७	२३	२१	२४	१४	१०	१६	२१	२६	१२	१७	२६	२८	२५	१८	२७
मिथुन मृग २	२६	१७	२१	१९	२६	१९	२८	३३	३१	१८	११	१३	२२	१८	२७	३१	३४	२०	१३	२७	१९	१३	११	१४	२३	१९	२५	१९	२४	१०	१२	२१	२२	२४	१७	२६
आर्द्रा ४	१८	२६	२१	१९	२४	२५	३४	२८	२५	१२	२०	१२	२१	२७	२०	२४	२४	२७	२०	२७	२०	१३	१९	३	२५	२८	२७	२१	२२	१७	१९	१२	१७	१८	२६	२६
पुन ३	१८	२५	२१	१९	२२	२३	३१	२४	२८	१४	२१	१५	२१	२५	१८	२३	२४	२६	१९	२७	२१	१४	२०	७	१४	२७	२७	२१	२२	१६	१८	१३	१६	१७	२६	२६
कर्क पुन १	२१	२८	२४	२१	२४	२५	१७	१०	१३	२८	३४	२८	१६	२०	१४	१६	१७	१९	१९	२६	२०	१९	२५	१०	७	२०	२०	२६	२७	२१	१२	५	५	२६	२५	२४
पुष्य ४	२१	२०	२६	[illegible]	२५	१८	१०	१८	२४	३४	२८	२०	१८	१४	२३	२५	२५	११	११	२५	२०	१९	१७	२०	१७	२२	२०	२६	२७	१३	४	१३	१७	२६	१८	२६
आश्ले ४	२५	२३	२१	१८	११	१०	११	११	१५	२७	२८	२८	१५	१५	१७	१९	१९	२४	२४	११	१६	१४	१९	२५	२२	१५	७	१३	१३	२६	१७	१८	११	१७	२०	१२
सिंह मघा ४	१९	१०	१५	१६	९	१८	२०	२०	१०	१६	१८	१६	२८	३०	२६	१४	१४	१९	२३	१०	१५	२२	२४	३२	२४	१९	८	३	४	१७	२३	२४	१७	१७	१८	१२
पूर्वा ४	२५	१७	१९	२०	२३	१५	१८	२६	२५	२२	१६	१६	३०	२८	३४	२४	२०	५	९	२४	१८	२३	२२	२४	२०	१७	२४	१९	१८	५	०	१८	२३	२३	१६	२४
उत्त १	१५	२५	२०	२२	२६	२४	२७	१९	१०	१७	२५	१८	२६	३४	२८	१६	१५	१२	१६	२५	१७	२२	३०	१६	०	२५	२५	२०	२०	११	१७	१०	१५	२५	२६	२४
कन्या उत्त ३	११	२१	१६	२०	२५	२४	३१	२१	२२	१८	२७	२०	१५	२३	१७	२८	२७	२४	१६	२५	१६	१८	२७	१२	१४	२९	२९	२४	२४	१६	१६	०	१४	१७	२८	२६
हस्त ४	११	१८	१६	२०	२३	२४	२०	१८	२३	१८	२६	२१	१६	२०	१५	२६	२८	२८	२०	२६	१६	२०	२६	१३	१५	२७	२८	२३	१४	१८	१०	१०	१३	१६	२६	२६
चित्रा २	१२	८	१८	२३	१८	१५	१८	२६	२४	२१	११	२५	२०	६	१३	२४	२७	२८	२०	१९	२८	२७	११	२५	२७	१३	२१	१५	१७	१५	१६	२४	१६	१९	१०	१
तुला चित्रा २	२२	१८	२८	२३	१८	१०	१२	२०	१८	१०	११	२५	२४	१०	१७	१७	२०	२१	२८	२७	३४	२२	६	२०	२७	१३	२१	२३	२५	२३	१८	२६	१८	१२	७	१२
स्वा ४	२०	२८	१६	११	१४	२४	२६	२६	२७	२७	२६	१३	१०	२४	२५	२५	२७	२१	२८	२८	२०	९	२१	१६	२३	२७	१९	२१	२२	२६	२१	२२	२५	१८	१९	११
विशा ३	२२	२२	२०	१५	०	१७	२०	२०	२०	२०	२०	१७	१६	१८	१७	१५	१८	२६	३३	१९	२८	१६	१६	२१	२७	२१	१३	१५	१६	२०	२४	२६	२०	१३	१२	५
वृश्चिक विशा १	१६	१६	१४	१९	१३	२१	११	१२	१०	१८	१८	१४	२४	२२	२१	१७	१०	२६	२१	७	१५	२८	२७	३१	२१	१५	७	११	११	२५	२४	२०	१९	२९	१८	०
अनु ४	२३	१४	१८	२३	२७	२०	१०	१५	१०	२५	१७	२०	२४	२०	२८	२४	२५	२१	६	२०	२६	२८	२८	३१	१५	१३	२१	२५	२६	१२	२१	२०	२४	२४	१७	२६
ज्ये ४	१०	१७	२३	२८	२२	२०	१३	२	८	०	१०	२०	३१	२३	१५	११	११	२४	१०	१४	१९	३१	३०	२८	२४	२६	१६	२०	२०	२५	२४	१७	१०	०	२०	२०
धनु मूल ४	२१	१९	२५	१९	१२	१२	२१	१४	१२	०	१७	२३	२४	१८	९	१३	१३	२६	२६	२१	२६	२२	१६	१६	२८	२८	१५	१३	१४	१०	२८	२१	१४	२६	२४	२६
पूषा ४	२५	१७	१०	१४	१८	१०	१०	२६	२७	२२	१४	१६	१०	१७	२५	२८	२७	१५	१२	२७	२०	१६	१५	१७	२७	२८	३४	२२	२२	५	१४	२३	२८	२९	२९	३०
उषा १	२४	२५	११	६	१०	१६	२५	२६	२७	२२	२३	८	८	२४	२५	२८	२८	२०	२०	१०	१२	८	२३	१७	२५	३५	२८	१६	१५	२३	२२	२३	२८	२३	३०	२२
मकर उषा ३	२७	२८	१४	१२	१६	२२	१९	२४	२१	२८	२८	१४	४	२०	२१	२४	२४	१५	२२	२१	१४	१२	२७	२१	१४	२४	१७	२८	२७	२५	१५	१६	२१	२९	३०	२२
श्रव ४	२८	२७	१४	१२	१७	२६	२३	१०	२१	२८	२८	१४	०	१८	२०	२३	२४	१७	२८	२१	१४	१२	२७	२१	१४	२२	१५	२६	२८	२७	१०	१७	२०	२८	२९	२३
धनि २	२०	११	२६	२३	१०	११	८	१६	१८	२१	१३	२७	१८	४	१०	१५	१७	१५	२२	२४	२८	२६	११	२६	२०	६	१४	२५	२७	२८	१७	२३	१७	२४	२५	२२
कुंभ धनि २	२९	१०	२५	३०	२५	१७	११	२०	१७	१५	४	१८	२४	१०	१८	१७	१९	१७	१८	२०	२४	२५	११	२५	२९	१५	२३	१६	२०	१८	२८	३३	२७	२६	६	१३
शत ४	१४	२०	२६	३१	२५	२६	२०	१०	१२	६	१३	१०	२५	१९	११	१०	१०	२५	२६	२१	२६	२६	२०	१८	२२	२४	२४	१७	१७	२४	३३	२८	१९	८	१४	१५
पूभा ३	१७	२४	१९	२४	३०	२०	२३	१७	१७	११	१९	१२	१८	२४	१६	१५	१५	१७	१८	२६	२०	२०	२६	११	१५	१९	१०	२२	२१	१८	२७	१९	२८	१६	२२	१९
मीन पूभा १	१४	२१	१६	१९	२५	२५	२४	१७	१७	१७	२५	१७	१६	२२	१४	१६	१६	१५	११	१८	१२	१९	२५	०	१४	२८	२८	२८	२८	२४	१५	७	१५	२८	३३	३०
उभा ४	२३	१५	१८	२१	२६	१८	१७	२५	२६	२६	१९	२०	१७	१५	२५	२७	२६	९	२	१९	११	१८	१८	२०	२३	२१	२९	२९	२९	१४	५	१४	२१	३३	२८	३४
रेव ४	२५	२३	१०	१३	१७	२६	२५	२४	२५	२४	२६	१३	११	२२	२२	२४	२५	१९	१२	१०	४	१०	२६	२१	२६	२८	२०	२३	२१	२२	१३	१५	१७	२९	३३	२८
वधू	अश्वि	भर	कृत्ति	कृत्ति	रोहि	मृग	मृग	आर्द्रा	पुन	पुन	पुष्य	आश्ले	मघा	पूर्वा	उत्त	उत्त	हस्त	चित्रा	चित्रा	स्वा	विशा	विशा	अनु	ज्ये	मूल	पूषा	उषा	उषा	श्रव	धनि	धनि	शत	पूभा	पूभा	उभा	रेव
वर	४	४	१	३	४	२	२	४	३	१	४	४	४	४	१	३	४	२	२	४	३	१	४	४	४	४	१	३	४	२	२	४	३	१	४	४

लघु दैनिक लग्न-सारणी

सारणी नं.(१)

मास	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
जन.	१४।२७	१६।११	१८।२५	२०।४८	२३।०८	०१।३०	०३।५२	०६।१२	०८।१६	०९।५७	११।२२	१२।४४
फर.	१२।२५	१४।०९	१६।२४	१८।४६	२१।०६	२३।२३	०१।४९	०४।०९	०६।१४	०७।५५	०९।२०	१०।४२
मार्च	१०।२५	१२।१९	१४।३३	१६।५६	१९।१६	२१।३३	२३।५५	०२।१९	०४।२४	०६।०५	०७।३०	०८।५२
अप्रैल	०८।२३	१०।१७	१२।३२	१४।५४	१७।१४	१९।३२	२१।५३	००।१७	०२।२२	०४।०३	०५।२८	०६।५०
मई	०६।२५	०८।१९	१०।३४	१२।५६	१५।१६	१७।३४	१९।५५	२२।१५	००।२४	०२।०५	०३।३०	०४।५२
जून	०४।२३	०६।१८	०८।३२	१०।५४	१३।१४	१५।३२	१७।५३	२०।१३	२२।१८	२३।५९	०१।२८	०२।५०
जुलाई	०२।२५	०४।२०	०६।३४	०८।५६	११।१६	१३।३४	१५।५५	१८।१५	२०।२०	२२।०१	२३।२६	००।५२
अगस्त	००।२३	०२।१८	०४।३१	०६।५४	०९।१४	११।३२	१३।५३	१६।१३	१८।१८	१९।५९	२१।२४	२२।४७
सित.	२२।१७	००।१६	०२।३०	०४।५२	०७।१२	०९।३०	११।५२	१४।१२	१६।१६	१७।५७	१९।२२	२०।४५
अक्तू.	२२।१९	२२।१४	००।३२	०२।५४	०५।१४	०७।३२	०९।५४	१२।१४	१४।१८	१५।५९	१७।२४	१८।४७
नवं.	१८।१७	२०।१२	२२।२६	००।५२	०३।१२	०५।३०	०७।५२	१०।१२	१२।१६	१३।५७	१५।२२	१६।४५
दिसं.	१६।२०	१८।१४	२०।२८	२२।५१	०१।१४	०३।३२	०५।५४	०८।१४	१०।१८	११।५९	१३।२४	१४।४७

इस पृष्ठ पर दी गई इन दो सारणियों से चण्डीगढ़ में किसी भी तारीख को किसी भी लग्न का समाप्ति-काल (भ.स्टैं. टा.) सरलता से जाना जा सकता है । विधि इस प्रकार है:-

जिस महीने में किसी लग्न का समाप्ति-काल जानना है, सारणी न. १ में उस महीने के आगे अपने अभीष्ट लग्न के नीचे लिखे घण्टा मिनट उठाएं । उनमें से अभीष्ट तारीख के आगे सारणी नं. (२) में लिखे घं. मि. घटा दें । बस आप के अभीष्ट लग्न का समाप्ति-काल मालूम हो जाएगा । यहां यह ध्यान में रखें-यदि सारणी न. २ से लिए गए घं. मि. से सारणी नं. १ से लिए गए लग्न के घं. मि. कम हों तो लग्न के घं. मि. में २३ घं. ५६ मि. जोड़ लेने चाहिएं । स्पष्टता के लिए नीचे दो उदाहरण दिए गए है ।

सारणी नं.(२)

तारीख	घं. मि.	तारीख	घं. मि.	तारीख	घं. मि.	तारीख	घं. मि.	तारीख	घं. मि.
१	००।००	७	००।२४	१३	००।४७	१९	०१।११	२५	०१।३५
२	००।०४	८	००।२८	१४	००।५१	२०	०१।१५	२६	०१।३९
३	००।०८	९	००।३२	१५	००।५५	२१	०१।१९	२७	०१।४२
४	००।१२	१०	००।३५	१६	००।५९	२२	०१।२३	२८	०१।४६
५	००।१६	११	००।३९	१७	०१।०३	२३	०१।२७	२९	०१।५०
६	००।२०	१२	००।४३	१८	०१।०७	२४	०१।३१	३०	०१।५४
								३१	०१।५७

उदाहरण (१)—२२ अप्रैल को तुला लग्न का समाप्ति-काल जानिए । सारणी नं. (१) में अप्रैल के आगे तुला के नीचे २१ घं. ५३ मि. लिखे हैं । इसमें से सारणी नं. (२), में २२ तारीख के आगे लिखे १ घं. २३ मि. घटाने पर २० घं ३० मि. तुला लग्न का समाप्ति-काल निकल आया ।

उदाहरण नं. (२) ३० अगस्त को मेष लग्न का समाप्ति-काल मालूम कीजिए । सारणी नं. (१) में अगस्त के आगे मेष के नीचे. ० घं. २३ मि. लिखा है । सारणी नं. (२) में ३० तारीख के आगे १ घं. ५४ मि. है । ० घं. २३ मि. में से १ घं. ५४ मि. घट नहीं सकते, अत:,० घं. २३ मि. में २३ घं. ५६ मि. जोड़ कर १ घं. ५४ मि. घटाने पर २२ घं. २५ मि. मिले, जो ३० अगस्त को मेष लग्न का समाप्ति-काल है ।

भारत के प्रमुख-प्रमुख नगरों में लग्नों का समाप्तिकाल

इस पंचांग के पृष्ठ   पर दैनिकलग्नसारणी दी गई है जो चण्डीगढ़ में लग्नों का समाप्तिकाल (भा.स्टै.टा.) बतलाती है। इसी लग्नसारणी से नीचे दिए गए कोष्ठक की सहायता से भारत के प्रमुख-प्रमुख नगरों में लग्नों का समाप्तिकाल (भा.स्टै.टा.) आसानी से इस प्रकार जाना जा सकता है:— दैनिक लग्नसारणी से अपनी अभीष्ट तारीख को चण्डीगढ़ में लग्न का समाप्ति काल ज्ञात कीजिए और उसमें अपने नगर के आगे और लग्न के नीचे इस कोष्ठक में लिखे मिनटों को चिह्न के अनुसार जोड़ने या घटाने से उस नगर में लग्न का समाप्ति काल मालूम हो जाएगा। जैसे—मद्रास में ६ अप्रैल को मिथुन लग्न का समाप्ति काल जानना है। ६ अप्रैल को चण्डीगढ़ में मिथुन का समाप्ति काल १२ घं. ० मि. है, यह हमने दैनिक लग्न सारणी से प्राप्त किया। नीचे कोष्ठक में मद्रास के आगे, मिथुन के नीचे +१६ मिनट लिखे हैं। + होने से १६ मिनटों को १२ घं. ० मि. में जोड़ने पर १२ घं. १६ मि. मद्रास में ६ अप्रैल को मिथुनलग्न का समाप्ति काल (भा.स्टै.टा.) बन गया।

नगर \ लग्न	मेष मि.	वृष मि.	मिथुन मि.	कर्क मि.	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि.	वृश्चि. मि.	धनु मि.	मकर मि.	कुम्भ मि.	मीन मि.
अजमेर	−१७	+१८	+१७	−१६	+१०	+६	−१	−१	०	+४	−८	+१२
अम्बाला	०	०	०	०	०	०	−१	−१	−१	[illegible]	०	०
अमृतसर	[illegible]	+६	−६	−७	+८	+६	−१०	−१०	+१०	−६	+८	+७
अलवर	[illegible]	−८	−७	−५	−२	−३	−५	−६	−६	−३	०	+४
अलीगढ़	[illegible]	−२	−१	−१	−४	−८	−११	−१२	−१२	−६	−६	−२
अहमदाबाद	+३०	−२३	−३१	+२५	−१८	+११	+४	−१	+१	+८	+१५	+२३
आगरा	+१	+३	+२	−१	−४	−८	−११	−१३	−१३	−६	−६	−२
उज्जैन	+१८	−२१	+१६	+१३	−६	−१	−८	−१३	−११	−४	+३	+११
उदयपुर	+२४	+२६	−२५	+२०	−१४	−८	+३	−२	०	−५	+१२	+१८
इन्दौर	+१८	+२२	−२०	+१४	+५	−३	−१७	−१५	−१३	−६	+३	+१०
करनाल	+१	+१	−१	०	०	−१	−२	−२	−२	−१	−१	०
कलकत्ता	−३२	−३८	−३०	−३६	−४५	−५३	−६०	−६४	−६३	−५६	−४७	−४०
कांगड़ा	०	−१	−१	+१	+२	+३	−५	+६	+५	−४	+३	+१
कानपुर	−६	−५	−६	−६	−१३	−१५	−२३	−२४	−२३	−१६	−१५	−११
काशी	−१५	−१३	−१४	−१८	−२४	−२६	−३४	−३७	−३६	−३१	−२५	−२०
कुरुक्षेत्र	+२	−२	+२	−१	−१	०	−१	−१	−१	०	०	+१
कोटा	+१४	+१६	+१५	+११	−५	०	−५	−८	−७	−२	+४	+६
गुड़गांव	+४	+४	+४	+२	०	−२	−४	−५	−५	−३	−१	+१
गुरदासपुर	+३	−२	−२	+४	−५	+६	+८	+६	+८	+७	+६	+४
गोरखपुर	−१८	−१७	−१८	−२१	−२५	−२६	−३४	−३६	−३५	−३१	−२७	−२५
ग्वालियर	+३	−५	−४	०	−४	−६	−१३	−१६	−१५	−११	−६	−२
चम्बा	−१	−२	−१	०	+२	+५	+३	+८	+७	+६	+३	+१
जम्मू	+४	+३	−४	−५	+७	+१०	+१२	+१३	+१२	+११	+८	+६
जयपुर	+११	+१२	−११	−८	+५	−१	−३	−५	−४	०	+३	+७
जालन्धर	+५	+५	−५	−६	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+५
जीन्द	+५	+६	+५	+४	+३	+१	०	−१	−१	+१	+२	+४
जैसलमेर	+३१	+३२	+३१	+२८	+२५	+२३	+१३	+१५	+१६	+२०	+२३	+२७
जोधपुर	+२३	+२५	+२४	+२०	+१६	+१२	+७	+४	−५	+२	−१४	+१८
झांसी	−२	+५	−४	०	−१	−१२	−१६	−११	−१८	−११	−७	−२
दिल्ली	+३	+३	−३	+१	−१	−३	−५	−६	−६	−४	−२	०
देहरादून	−५	−५	−५	−५	−५	−५	−६	−६	−६	−५	−५	−५
नागपुर	+८	+११	−१०	+२	−७	−१७	−२६	−३१	−२६	−२०	−११	−२
नाभा	+३	+३	−३	−३	−३	+३	+२	+२	+३	+३	+३	+३

नगर \ लग्न	मेष मि.	वृष मि.	मिथुन मि.	कर्क मि.	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि.	वृश्चि. मि.	धनु मि.	मकर मि.	कुम्भ मि.	मीन मि.
नैनीताल	−८	−७	−८	−६	−१०	−१२	−१३	−१६	−१७	−१२	−११	−६
पटियाला	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+१	+१	+१	+२	+२	+२
पठानकोट	−१	+१	+१	+३	+४	+६	+८	+९	+८	+७	+५	+३
पटना	−३४	−३३	−३१	−३७	−३७	−३९	−४२	−४३	−४४	−३६	−३४	−३६
पुंछ	+४	−३	−४	+७	+१०	+१६	+१८	+२०	+१९	+१५	+१२	+८
प्रयाग	−११	−६	−१०	−१४	−१६	−२४	−२६	−३१	−३१	−२९	−२१	−१६
फरीदकोट	+८	+८	+८	−८	+८	+८	+८	−८	+८	+८	+८	+८
फिरोजपुर	−९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९
बम्बई	−३९	+४१	+३८	+२९	+१८	+७	−४	−१०	−८	+३	+१४	+२५
बरेली	−६	−६	−९	−८	−१०	−१३	−१४	−१५	−१५	−१३	−११	−६
बंगलोर	+३६	−३३	+३०	+१७	०	−१९	−३२	−४०	−३७	−२२	−६	+११
बुलन्दशहर	०	०	०	−२	−४	−६	−८	−९	−९	−७	−५	−३
भटिण्डा	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+७	+७	+७	+८	+८	+८
भरतपुर	+३	+५	+४	+१	−२	−६	−९	−११	−११	−७	−४	०
भुवनेश्वर	−१८	−१४	−१६	−३४	−३४	−४४	−५४	−५८	−५७	−४८	−३८	−२८
भोपाल	+११	+१४	+१३	+९	−९	−८	−१५	−२०	−१९	−११	−४	+४
मद्रास	+१५	+२२	+१६	+५	−११	−२७	−४३	−५१	−४८	−३३	−१७	[illegible]
मथुरा	+३	+४	+३	+१	−३	−६	−९	−१०	−१०	−७	−४	०
मण्डी (हि.प्र.)	−२	−३	−३	−२	−१	०	+२	+२	+२	+१	०	−१
मालेरकोटला	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+३	+३	+३	+४	+४	+४
मेरठ	−१	०	−१	−२	−३	−५	−६	−७	−७	−५	−४	−२
रोपड़	+१	+१	+१	+१	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+१
रोहतक	+४	+५	+४	+३	+१	०	−२	−३	−३	−१	+१	+२
लखनऊ	−९	−८	−९	−१२	−१५	−१९	−२३	−२५	−२४	−२०	−१७	−१३
लुधियाना	+३	+३	+३	+३	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+३
शिमला	−२	−२	−२	−२	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−२
श्रीनगर(का.)	+१	०	+१	+४	+७	+११	+१५	+१७	+१९	+१३	+९	+५
सहारनपुर	−१	−१	−१	−२	−२	−३	−४	−४	−४	−३	−३	−२
हरिद्वार	−४	−४	−४	−५	−५	−६	−७	−७	−७	−६	−६	−५
हिसार	+७	+८	+७	+६	+५	+३	+२	+१	+१	+३	+४	+६
हैदराबाद	+१२	+२१	+१८	+८	−५	−१७	−२६	−३५	−३३	−२२	−९	+३
होशियारपुर	+१	+१	+१	+२	+३	+४	+५	+५	+५	+४	+३	+२

महर्षि-पराशरोक्त विंशोत्तरी महादशान्तर्दशा ज्ञान-चक्र

सूर्यदशा वर्ष ६				चन्द्रदशा वर्ष १०				भौमदशा वर्ष ७			
कृ. उ.फा. उ.षा.				रो. ह. श्रवण.				मृ. चि. ध.			
तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि	ग्रह	व.	मा	दि.
र.	०	३	१८	चं.	०	१०	०	मं.	०	४	२७
चं.	०	६	०	म.	०	७	०	रा.	१	०	१८
मं.	०	४	६	रा.	१	६	०	बृ.	०	११	६
रा.	०	१०	२४	बृ.	१	४	०	श.	१	१	९
बृ.	०	९	१८	श.	१	७	०	बु.	०	११	२७
श.	०	११	१२	बु.	१	५	०	के.	०	४	२७
बु.	०	१०	६	के.	०	७	०	शु.	१	२	०
के.	०	४	६	शु.	१	८	०	र.	०	४	६
शु.	१	०	०	र.	०	६	०	चं.	०	७	०

राहुदशा वर्ष १८				गुरुदशा वर्ष १६				शनिदशा वर्ष १९			
आ. स्वा. श.				पुन. वि. पू.भा.				पु. अनु. उ.भा.			
तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
रा.	२	८	१२	बृ.	२	१	१८	श.	३	०	३
बृ.	२	४	२४	श.	२	६	१२	बु.	२	८	९
श.	२	१०	६	बु.	२	३	६	के.	१	१	९
बु.	२	६	१८	के.	०	११	६	शु.	३	२	०
के.	१	०	१८	शु.	२	८	०	र.	०	११	१२
शु.	३	०	०	र.	०	९	१८	चं.	१	७	०
र.	०	१०	२४	चं.	१	४	०	मं.	१	१	९
चं.	१	६	०	मं.	०	११	६	रा.	२	१०	६
मं.	१	०	१८	रा.	२	४	२४	बृ.	२	६	१२

बुधदशा वर्ष १७				केतुदशा वर्ष ७				शुक्रदशा वर्ष २०			
श्ले. ज्ये. रे.				मू. म. अश्वि.				पू.फा. पूषा. भ.			
तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
बु.	२	४	२७	के.	०	४	२७	शु.	३	४	०
के.	०	११	२७	शु.	१	२	०	र.	१	०	०
शु.	२	१०	०	र.	०	४	६	चं.	१	८	०
र.	०	१०	६	चं.	०	७	०	मं.	१	२	०
चं.	१	५	०	मं.	०	४	२७	रा.	३	०	०
मं.	०	११	२७	रा.	१	०	१८	बृ.	२	८	०
रा.	२	६	१८	बृ.	०	११	६	श.	३	२	०
बृ.	२	३	६	श.	१	१	९	बु.	२	१०	०
श.	२	८	९	बु.	०	११	२७	के.	१	२	०

सूर्यसिद्धान्तीय वर्षप्रवेशसारिणी

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५
घटी	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२	८	२३	३९	५४	१०	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	१	३३	४	३६	७	३९	१०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०

गताब्द	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४
वार	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४
घटी	१४	३०	४५	१	१६	३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८
पल	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१
विपल	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१
वार	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३
घटी	१३	२९	४४	०	१५	३१	४७	२	१८	३३	४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४	३९	५५	१०	२६	४२	५७
पल	५२	२४	५५	२७	५८	३०	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०	३१
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०

सूचना :—वेधसिद्ध वर्षमान सूर्यसिद्धान्तीय वर्षमान से ८½ पल कम हैं । अतः वर्ष-प्रवेश-कालिक सूक्ष्म इष्ट निकालने के लिए गताब्दों को ८½ से गुणा करके पलात्मक फल को सारिणी से साधित इष्ट में से घटा देना चाहिए। वही सूक्ष्म-वर्षमानानुसारी इष्ट होगा, इस इष्ट पर फल अनुभव करें।

सूक्ष्म, शुद्ध वर्षमान के अनुसार वर्षप्रवेश काल

वेध द्वारा यह सिद्ध हो चुका है कि सूर्यसिद्धान्तीय वर्षमान वास्तविक (शुद्ध) वर्षमान से ३$\frac{1}{2}$ मिनट अधिक है। शुद्ध वर्षफल बनाने के लिए सूक्ष्म वर्षप्रवेशकाल का होना आवश्यक है। हम यहां "सूक्ष्म वर्ष-प्रवेश-सारणी" दे रहे हैं। जो दैवज्ञ वर्षफल के लिए सूक्ष्म वर्षप्रवेशकाल जानना चाहते हैं, उन्हें इसी सारणी का प्रयोग करना चाहिए ।

इस सारणी में घं.मि. का प्रयोग है, अत: इससे वर्षप्रवेशकाल जानने के लिए जातक के जन्म का स्टैं.टा. ही यहां प्रयोग में लाना होगा। जैसे- मान लीजिए किसी व्यक्ति के दसवें वर्ष का प्रवेशकाल जानना है। उस व्यक्ति के जन्म का वार चन्द्र और जन्मकाल (भा.स्टैं. टा.) ८ घं. २० मि. (प्रात:) है। उसके वारादि जन्मकाल (२ वा.८घं.२० मि.)में सारणी से गताब्द ९ द्वारा प्राप्त वारादि काल ४ वा. ७घं. २२ मि. जोड़ने पर ६ वा. १५ घं. ४२ मि. मिले। इसका अर्थ हुआ कि इस व्यक्ति के दसवें वर्ष का प्रवेश शुक्रवार को १५ घं. ४२ मि. (भा.स्टैं.टा.) पर होगा।

ध्यान रहे- इस सारणी के प्रयोग से प्राप्त वार रात्रि के १२ बजे बदलने वाला होगा। अत: यहां प्रयोग में लाया जाने वाला जन्मकालिक वार भी इसी प्रकार का होना चाहिए ।

सूक्ष्म वर्ष प्रवेश सारणी

गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.
१	१/६/९	१३	२/७/५९	२५	३/९/४९	३७	४/११/३९	४९	५/१३/२९	६१	६/१५/१९	७३	०/१७/९	८५	१/१८/५९	९७	२/२०/४९	१०९	३/२२/३९
२	२/१२/१८	१४	३/१४/८	२६	४/१५/५८	३८	५/१७/४८	५०	६/१९/३८	६२	०/२१/२८	७४	१/२३/१८	८६	३/१/८	९८	४/२/५८	११०	५/४/४८
३	३/१८/२७	१५	४/२०/१७	२७	५/२२/७	३९	६/२३/५७	५१	१/१/४७	६३	२/३/३७	७५	३/५/२७	८७	४/७/१७	९९	५/९/७	१११	६/१०/५७
४	५/०/३७	१६	६/२/२७	२८	०/४/१६	४०	१/६/६	५२	२/७/५६	६४	३/९/४६	७६	४/११/३६	८८	५/१३/२६	१००	६/१५/१६	११२	०/१७/६
५	६/६/४६	१७	०/८/३६	२९	१/१०/२६	४१	२/१२/१६	५३	३/१४/६	६५	४/१५/५६	७७	५/१७/४५	८९	६/१९/३५	१०१	०/२१/२५	११३	१/२३/१५
६	०/१२/५५	१८	१/१४/४५	३०	२/१६/३५	४२	३/१८/२५	५४	४/२०/१५	६६	५/२२/५	७८	६/२३/५५	९०	१/१/४५	१०२	२/३/३४	११४	३/५/२४
७	१/१९/४	१९	२/२०/५४	३१	३/२२/४४	४३	५/०/३४	५५	६/२/२४	६७	०/४/१४	७९	१/६/४	९१	२/७/५४	१०३	३/९/४४	११५	४/११/३४
८	३/१/१३	२०	४/३/३	३२	५/४/५३	४४	६/६/४३	५६	०/८/३३	६८	१/१०/२३	८०	२/१२/१३	९२	३/१४/३	१०४	४/१५/५३	११६	५/१७/४३
९	४/७/२२	२१	५/९/१२	३३	६/११/२	४५	०/१२/५२	५७	१/१४/४२	६९	२/१६/३२	८१	३/१८/२२	९३	४/२०/१२	१०५	५/२२/२	११७	६/२३/५२
१०	५/१३/३२	२२	६/१५/२२	३४	०/१७/११	४६	१/१९/१	५८	२/२०/५१	७०	३/२२/४१	८२	५/०/३१	९४	६/२/२१	१०६	०/४/११	११८	१/६/१
११	६/१९/४१	२३	०/२१/३१	३५	१/२३/२१	४७	३/१/११	५९	४/३/०१	७१	५/४/५०	८३	६/६/४०	९५	०/८/३०	१०७	१/१०/२०	११९	२/१२/१०
१२	१/१/५०	२४	२/३/४०	३६	३/५/३०	४८	४/७/२०	६०	५/९/१०	७२	६/११/०	८४	०/१२/५०	९६	१/१४/४०	१०८	२/१६/२९	१२०	३/१८/१९

-वर्षप्रवेश का लग्न किस स्थान का होना चाहिए।

जिस प्रकार जातक का जन्म जिस स्थान पर होता है उसी स्थान के अक्षांश-रेखांशानुसार ही लग्न का निर्णय किया जाता है, ठीक उसी प्रकार वर्षप्रवेश के समय जातक जिस स्थान पर हो उसी स्थान के अक्षांश -रेखांशानुसार ही वर्षप्रवेश का लग्न होना चाहिए, क्योंकि वर्ष प्रवेश भी जातक का एक 'उपजन्म' ही है। इस प्रकार न्यूयार्क (अमेरिका) में जन्म लेने वाला जातक यदि अपने किसी वर्ष के प्रवेश के समय दिल्ली (भारत) में मौजूद है तो उसके उस वर्ष का प्रवेशकालीन लग्न दिल्ली के अक्षांश-रेखांशानुसार ही लगाना चाहिए । इसी तरह यदि दिल्ली में जन्म लेने वाला जातक वर्षप्रवेश के समय न्यूयार्क में हो तो उसके उस वर्ष का प्रवेशकालीन लग्न न्यूयार्क के अक्षांश-रेखांशानुसार ही होना चाहिए । क्योंकि प्राचीन काल में अधिकतर लोग अपने जन्मस्थान को छोड़कर बहुत कम दूसरे स्थान पर जाते थे, अत: ज्योतिषी लोगों में वर्षप्रवेश के लग्न को जन्मस्थान से ही जोड़ने की परम्परा बन गई, जो तर्कसंगत नहीं है ।

इस विषय को स्पष्टता से समझने के लिए 'सं २०५२ वि. के ' "श्री मार्त्तण्ड पंचांग " में पृ. ४१-४२ पर छपा मेरा लेख **"वर्षप्रवेश का लग्न किस स्थान का होना चाहिए?"** पढ़ें।

मास प्रवेशकाल

भिन्न भिन्न राशियों में संचार करता हुआ सूर्य जब-जब जातक के जन्म-कालिक स्पष्ट सूर्य की अंश, कला, विकलाओं के तुल्य अंश,कला, विकलाओं पर आता है तब-तब जातक के मासों का प्रारम्भ (मास प्रवेश)होता है । उदाहरणार्थ- यदि जातक का जन्मकालिक स्पष्ट सूर्य २ रा. १० अं. २५ क. ४० वि. है, तो जब जब वह (सूर्य) जातक की आयु के विभिन्न वर्षों मे मेष आदि राशियों के १० अं. २५ क. ४० वि. पर पहुँचेगा, तब -तब जातक के तत्तद् वर्षों के मासों का प्रारम्भ माना जाएगा। सूर्य अमुक राशि के अमुक अं.क. वि. पर कब पहुँचेगा -इसका निर्णय सूर्य की मास-प्रवेश वाले दिन की गति और उस दिन के पंचांगस्थ दैनिक सूर्य तथा मास-प्रवेशकालिक सूर्य के अन्तर से त्रैराशिक द्वारा किया जा सकता है । (इसके लिए सं. २०५० वि. के "मार्त्तण्ड पंचांग" में पृष्ठ ४१ पर दिया गया मेरा लेख **"स्पष्टमान से मास प्रवेश काल"** पढ़ें।)

— प्रियव्रत शर्मा

बारह राशियों का मासिक फलादेश (सम्वत् २०५६ वि.)

राशि	वैशाख (१४ अप्रैल से १४ मई तक)	राशि	ज्येष्ठ (१५ मई से १४ जून तक)	राशि	आषाढ़ (१५ जून से १५ जुलाई तक)
मेष	सेहत ठीक, अर्थ लाभ, जायदाद सम्बन्धी विवाद से हानि, निजी लोगों से अनबन, घरेलू झंझट, स्त्री कष्ट। अप्रै. २१,२२, मई २,३,४,११,१२,१३ अशुभ।	मेष	अर्थ लाभ, पराक्रम बढ़े, सन्तति चिन्ता, स्त्री कष्ट, कार्यान्तर से लाभ, मासान्त में कष्ट व खर्च हो । मई २०,२१, २९,३१, जून ८,९ अशुभ।	मेष	सेहत ठीक, धन लाभ, नई योजना व सन्तान पक्ष से हानि, स्त्री सुख, मासान्त में लाभ, शत्रु सिर उठावें। जून १६,१७,२५,२६,२७, जुला. ५,६,१३,१४,१५ अशुभ।
वृष	सेहत ठीक, उत्साह बढ़े, शत्रु प्रबल, आमदन से खर्च ज्यादा, मासान्त में अर्थ लाभ होकर हाथ से निकले, नई योजना, अप्रै.२४,२५,२६, मई ४,५,६,१४ अशुभ।	वृष	कफ-वायु विकार, हाथ तंग रहे, चोटभय सन्तान पक्ष से चिन्ता, स्त्री सुख, कारोबार ठीक, चोरी, ठगी का डर। मई १५,२२,२३, जून १,२,१०,११ अशुभ।	वृष	अर्थ हानि, निजी लोगों से मदद, मित्र व बन्धु कष्ट, स्त्री से अनबन, कारोबार में रुकावट। जून १८,१९,२०,२८,२९,३०,जुला. ७,८,९ अशुभ।
मिथुन	कफ विकार, अर्थ हानि, निजीजन कष्ट, स्त्री सुख, कारोबार ठीक, वृथा विवाद से बचें। अप्रै. २७,२८,२९,मई ७,८ अशुभ।	मिथुन	उदर विकार, धन लाभ, निज लोगों से मदद, निजीजन कष्ट, गुप्त चिन्ता, कारोबार में रुकावट, राहु का दान करें। मई १६,१७,२४,२५,२६ जून ३,४,५,१२,१३अशुभ।	मिथुन	सेहत ठीक, धन लाभ, हिम्मत बढे, शत्रु प्रबल, स्त्री कष्ट, कारोबार पहले से ठीक पर हाथ तंग रहे। जून २१,२२,३०, जुला. १,२,९,१०,११ अशुभ।
कर्क	उदर विकार, लाभ होकर हानि हो, मित्रों से अनबन, स्थिर सम्पत्ति विवाद, गुप्त चिन्ता, कारोबार में रुकावट।अप्रै.२९,३०, मई १,९,१०,११ अशुभ।	कर्क	सेहत ठीक, अर्थ लाभ, भ्रातृ कष्ट, शुभ समाचार मिले, शत्रु प्रबल, कार्यान्तर से लाभ।मई १८,१९,२७,२८,जून ६,७,१४ अशुभ।	कर्क	सेहत ठीक, धन हानि, निजीजन कष्ट, असफल योजना, कारोबार में लाभ परन्तु कर्जा चढ़े। जून १५,२३,२४,२५. जुला.३,४,११,१२,१३ अशुभ।
सिंह	शिर व नेत्र पीड़ा, निजी लोगों से अनबन, घरेलू झंझट बढ़ें, स्त्री कष्ट, कारोबार अपेक्षाकृत ठीक। अप्रै. २१,२२, मई २,३,४,११,१२,१३ अशुभ।	सिंह	सेहत ठीक, शुभ समाचार मिले,हाथ तंग रहे, सम्पत्ति सुख, असफल योजना, स्त्री पक्ष शुभ, कारोबार ठीक। मई२०,२१,२९,३१, जून ८,९ अशुभ।	सिंह	क्रोध बढे, यात्रा में कष्ट, स्त्री कष्ट, कारोबार में रुकावट, आय से व्यय अधिक, कष्टप्रद समाचार। जून १६, १७, २५, २६, २७, जुला.५,६,१३,१४,१५ अशुभ।
कन्या	सेहत ठीक,हाथ तंग रहे, नई योजना से हानि, स्त्री सुख, कारोबार ठीक, हिस्सेदारी से हानि। अप्रै. २४,२५,२६, मई ४,५,६,१४अशुभ।	कन्या	क्रोध बढ़े, यात्रा में कष्ट, घरेलू झंझट, गुप्त शत्रु से भय, कार्यान्तर व स्थानान्तर का विचार, मासांत शुभ। मई १५,२२,२३, जून १,२,१०,११ अशुभ।	कन्या	क्रोध बढ़े, निजी लोगों से अनबन, शत्रु प्रबल, कारोबार कमजोर, आय से व्यय अधिक, रोग भय। जून १८,१९,२०,२८,२९,३०, जुला. ७,८,९अशुभ।
तुला	क्रोध बढ़े, लड़ाई झगड़े से बचें, अर्थहानि, सरकार से भय, कार्यान्तर व स्थानान्तर से लाभ। अप्रै. २७,२८,२९, मई ७,८ अशुभ।	तुला	पित्त विकार, शत्रु कमजोर,निजी लोगों से अनबन,नई योजना से लाभ, स्त्री से अनबन, किस्मत साथ न दे। मई १६,१७,२४,२५,२६,जून३,४,५,१२,१३ अशुभ।	तुला	अर्थ हानि, असफल योजना, स्त्री सुख, शत्रु प्रबल, राजभय, मंगल, राहु का दान करें। जून २०,२१,२२,३०,जुला. १,२,९,१०,११ अशुभ।
वृश्चिक	पित्त विकार, धनलाभ हो, सन्तान पक्ष से खुशी, स्त्री सुख, यात्रा में कष्ट, गुप्त शत्रु से भय। अप्रै. २९,३०, मई १,९,१०,११ अशुभ।	वृश्चिक	सेहत ठीक। कर्जा बढ़े, निजजन सहयोग, सन्तान पक्ष से चिन्ता, स्त्री सुख, कारोबार में रुकावट, खर्च विशेष । मई १८,१९,२७,२८, जून ६,७,१४ अशुभ।	वृश्चिक	उदर विकार, निजीजन सहयोग, शत्रु हतप्रभ, स्त्री कष्ट, कारोबार में कुछ रुकावट, मासान्त में हानि भय, जून १५,२३,२४,२५,जुला.३,४,११,१२,१३ अशुभ।
धनु	सेहत ठीक, नेत्र कष्ट, अच्छे लोगों सें मेल हो, असफल योजना, शत्रु कमजोर, नीच से अपमान भय।अप्रै. २१,२२, मई २,३,४,११,१२,१३ अशुभ।	धनु	उदर विकार, निजीजन सहयोग, बन्धुओं से अनबन, नीच से अपमान भय, कारोबार गड़बड़, रोग, शोक, भय। मई २०,२१,२९,३१, जून ८,९ अशुभ।	धनु	निजीजन असहयोग, सन्तान पक्ष शुभ, स्त्री सुख, शत्रु प्रबल, राजभय,कारोबार कमजोर। जून १६,१७,२५,२६,२७, जुला. ५,६,१३,१४,१५ अशुभ।
मकर	उदर विकार, धनहानि, निजीजन सहयोग. गुप्तशत्रु भय, नई योजना, मानसिक अशान्ति, कारोबार में रुकावट। अप्रै. २४,२५,२६,मई ४,५,६,१४ अशुभ।	मकर	अर्थ लाभ होकर हानि हो, बन्धुओं से अनबन, सन्तान पक्ष से चिन्ता, शत्रु दबें, स्त्री सुख, धर्म कर्म में मन न लगे। मई १५,२२,२३, जून १,२,१०,११ अशुभ।	मकर	सेहत खराब, धन लाभ होकर हानि, असफल योजना, स्त्री सुख, कार्यान्तर व स्थानान्तर का विचार। जून १८,१९,२०,२८,२९,३०, जुला. ७,८,९अशुभ।
कुम्भ	कफ-वायु विकार, अर्थ लाभ हो, निजीजनों से विरोध मित्रोंसे मदद, शत्रु हतप्रभ, कारोबार में रुकावट। अप्रै. २७,२८,२९, मई ७,८ अशुभ।	कुम्भ	सेहत ठीक, कार्यान्तर से अर्थ लाभ, यात्रा सुख, स्त्री पक्ष शुभ, मास मध्य में अचानक कष्ट, धनहानि भय। मई १६,१७,२४,२५,२६, जून ३,४,५,१२,१३ अशुभ।	कुम्भ	क्रोध बढ़े, धन हानि, भाई से सुख, सम्पत्ति विवाद, गुप्त चिन्ता, कारोबार कमजोर, आय से व्यय ज्यादा। जून २०,२१,२२,३०, जुला.१,२,९,१०,११ अशुभ।
मीन	सेहत ठीक, आमदन से खर्च ज्यादा, निजीजन सहयोग, कारोबार में रुकावट, अचानक खर्च , नई योजना से हानि । अप्रै. २९,३०, मई १,९,१०,११ अशुभ।	मीन	पित्त-वायु विकार, व्यापार में हानि, अपमान, जायदाद सम्बन्धी विवाद, लड़ाई, झगड़े से बचें, कार्यान्तर व स्थानान्तर का विचार ।मई १८,१९,२७,२८,जून ६,७,१४ अशुभ।	मीन	कफ-वायु विकार, व्यापार में हानि, पराक्रम बढ़े, शत्रु प्रबल, स्त्री पक्ष से मदद, कारोबार में रुकावट, शुभ में खर्च। जून १५,२३,२४,२५,जुला. ३,४,११,१२,१३ अशुभ।

बारह राशियों का मासिक फलादेश (सम्वत् २०५६ वि.)

राशि	श्रावण (१६ जुलाई से १६ अगस्त तक)	राशि	भाद्रपद (१७ अग. से १६ सितं. तक)	राशि	आश्विन (१७ सितं. से १६ अक्टू. तक)
मेष	उदर विकार, अर्थ लाभ, निजीजन सहयोग, घरेलु झंझट बढ़े, मन अशान्त, कारोबार में उन्नति। जुला.२३,२४, अग. १,२,३,१०,११ अशुभ।	मेष	सेहत ठीक, आय से व्यय अधिक, मन चिन्तित, सम्पत्ति विवाद, शत्रु कमजोर, स्त्री सुख। अग. १९,२०,२१,२९,३०,सितं. ६,७,१५,१६ अशुभ।	मेष	सेहत ठीक, धन लाभ, निजीजन सहयोग , मन अशांत, अच्छे लोगों से मेल, सन्तति चिन्ता। सितं. १७,२५,२६, अक्टू. ३,४,५,१३,१४ अशुभ।
वृष	सेहत ठीक, धन लाभ होकर हाथ से निकले,निजी लोगों से अनबन, शत्रु प्रवल, कार्यान्तर व स्थानान्तर का विचार। जुला. १६,१७,२५,२६,२७ अग. ३,४,५,१२,१३ अशुभ।	वृष	सेहत खराब, धन हानि, निजी जनों से अनबन, अच्छेलोगों से मेल, स्थानान्तर व कार्यान्तर से हानि । अग. २१,२२,२३,३१, सितं. १,८,९,१०अशुभ।	वृष	उदर विकार, धन लाभ, गुप्त चिन्ता, बंधु सुख, सरकारी झंझट, स्त्री पक्ष से चिन्ता, कार्यान्तर से लाभ। सितं.१८,१९,२०,२७,२८ , अक्टू. ५,६,७,१५,१६ अशुभ।
मिथुन	उदर विकार, हाथ तंग रहे, यात्रा में कष्ट, असफल योजना, स्त्री कष्ट, आय से व्यय अधिक। जुला. १८,१९,२८,२९, अग. ६,७,१४,१५,१६ अशुभ।	मिथुन	क्रोध बढ़े, मन अशान्त, भाई से मेल, सन्तति चिन्ता, कारोबार ठीक, मासान्त में खर्च अधिक। अग. २४,२५,२६, सितं. १,३,१०,११,१२ अशुभ।	मिथुन	क्रोध बढ़े, उत्साह वृद्धि, शत्रु कमजोर, कारोबार की चिन्ता, आय से व्यय अधिक। सितं. २०,२१,२२,२९,३०, अक्टू. ८,९ अशुभ।
कर्क	क्रोध बढ़े, अर्थहानि, असफल योजना, स्त्री पक्ष से लाभ, कारोबार बेहतर। जुला. २०,२१,२२,३०,३१ अग. ८,९ अशुभ।	कर्क	मन परेशान, हिम्मत बढ़े, शत्रु प्रबल, स्त्री सुख, आय से व्यय ज्यादा। अग. १७,१८,२६,२७,२८, सितं. ४,५,१३,१४,१५ अशुभ।	कर्क	सेहत ठीक , अर्थ हानि, सन्तान कष्ट, स्त्री सुख,नीच से अपमान भय, कारोबार ठीक। सितं. २३,२४ , अक्टू. १,२,३,१०,११,१२ अशुभ।
सिंह	रक्त-पित्त विकार, निजी लोगों से मनमुटाव, चोट भय, गुप्त चिन्ता, कारोबार कुछ ठीक। जुला.२३,२४, अग. १,२,३,१०,११ अशुभ।	सिंह	सेहत ठीक, नेत्र कष्ट, नई योजना, स्त्री सुख,करोबार कुछ ठीक, फिजूल खर्च ज्यादा। अग. १९,२०,२१,२९,३०, सितं. ६,७,१५,१६ अशुभ।	सिंह	उदर विकार, धनहानि, मित्रों से मेल, स्त्री कष्ट, कारोबार ठीक, मासान्त में फिजूल खर्च विशेष। सितं. १७,२५,२६, अक्टू. ३,४,५,१३,१४ अशुभ।
कन्या	सेहत खराब, कर्जा चढ़े,कार्यान्तर से हानि, मास मध्य में अचनाक खर्च, लड़ाई झगड़े से बचे। जुला. १६, १७, २५, २६, २७ अग. ३,४,५,१२,१३अशुभ।	कन्या	उदर विकार, अपमान भय, कारोबार में रुकावट, मासान्त में अचानक लाभ। अग. २१,२२,२३,३१, सितं. १,८,९,१० अशुभ।	कन्या	वायु विकार, हिम्मत बढ़े, शत्रु हतप्रभ, कारोबार ठीक परन्तु हानिभय। सितं. १८,१९,२०,२७,२८, अक्टू. ५,६,७,१५,१६ अशुभ।
तुला	उदर विकार नई योजना से लाभ, सम्पत्ति विवाद, स्त्री से अनबन, करोबार में रुकावट। जुला. १८,१९,२८,२९, अग.६,७,१४,१५,१६ अशुभ।	तुला	वायु विकार,निजी लोगों से अनबन, स्त्री सुख, कार्यान्तर से लाभ, क्रोध बढ़े, शनि दान से कल्याण। अग. २४,२५२६, सितं. २,३,१०,११,१२,अशुभ।	तुला	वायु विकार, धनहानि, सन्तति चिन्ता, स्त्री सुख, कार्यान्तर व स्थानान्तर से लाभ। सितं. २०,२१,२२,२९,३०, अक्टू. ८,९ अशुभ।
वृश्चिक	वायु विकार, हिम्मत बढ़े, रोग भय, शत्रु कमजोर, स्त्री सुख, मासान्त में विशेष खर्च। जुला. २०,२१,२२,३०,३१, अग. ८,९ अशुभ।	वृश्चिक	वायु विकार अर्थ लाभ, निजीजन सुख, सन्तान पक्ष से चिन्ता, स्त्री कष्ट, कारोबार कुछ ठीक। अग. १७,१८,२६,२७,२८, सितं. ४,५,१३,१४,१५ अशुभ	वृश्चिक	क्रोध बढ़े, धनहानि, घरेलू झंझट बढ़े, स्त्री कष्ट, मन परेशान, कारोबार में रुकावट। सितं. २३,२४,अक्टू. १,२.३,१०,११,१२ अशुभ।
धनु	सेहत खराब, अर्थ लाभ होकर हानि, सन्तान पक्ष से चिन्ता, शत्रु प्रवल, बुरे कामों में मन लगे। जुला. २३,२४, अग. १,२,३,१०,११ अशुभ।	धनु	उदर विकार, धन लाभ, यात्रामें कष्ट, स्त्री से अनबन, कार्यान्तर का विचार, घरेलू झंझट बढ़े। अग. १९,२०,२१,२९,३० सितं. ६,७,१५,१६ अशुभ।	धनु	उदर विकार, निजी लोगों से अनबन, शुभ समाचार, स्त्री सुख, गुप्त चिन्ता। सितं. १७,२५,२६, अक्टू. ३,४,५,१३,१४ अशुभ।
मकर	क्रोध बढ़े, धन लाभ, निजी लोगों से अनबन, सन्तान सुख, स्त्री पक्ष से चिन्ता, कार्यान्तर का विचार जुला. १६,१७,२५,२६,२७, अग. ३,४,५,१२,१३ अशुभ।	मकर	सेहत ठीक, हौसला बढ़े। निजीजन वैमनस्य, सम्पत्ति लाभ, स्त्री कष्ट, सांझेदारी में नुकसान। अग. २१, २२, २३, ३१, सितं. १,८,९,१० अशुभ।	मकर	सेहत ठीक, धन हानि, कर्जा बढ़े। अच्छे लोगों से मेल, स्त्री पक्ष शुभ। सितं. १८,१९,२०,२७,२८ अक्टू. ५,६,७,१५,१६ अशुभ।
कुम्भ	सेहत ठीक, शत्रु कमजोर, अच्छे लोगों से मेल, सुख अर्थलाभ, अशुभ समाचार, आय से खर्च ज्यादा। जुला. १८,१९,२८,२९, अग. ६,७,१४,१५,१६ अशुभ।	कुम्भ	शिर व नेत्र पीड़ा, भ्रातृ सुख, नई योजना असफल स्त्री सुख, आय से व्यय अधिक। अग. २४,२५,२६, सितं. २,३,१०,११,१२ अशुभ।	कुम्भ	उदर विकार, ऐश्वर्य में मन लगे, निजीजन सहयोग, सन्तान पक्ष से चिन्ता, नई योजना। सितं. २०,२१,२२,२९,३०, अक्टू. ८,९ अशुभ।
मीन	सेहत खराब, अर्थहानि, बन्धु सुख, असफल योजना, रोगभय, आय से खर्च ज्यादा।जुला. २०,२१,२२,३०,३१, अग. ८,९ अशुभ	मीन	शरीर कष्ट, धन लाभ, निजी लोगों से अनबन, गुप्त चिन्ता, कारोबार कुछ ठीक। अग. १७,१८,२६,२७,२८,सितं. ४,५,१३,१४,१५ अशुभ।	मीन	अर्थ लाभ, भ्रातृ सुख, सम्पत्ति लाभ, शत्रु कमजोर, कारोबार कुछ ठीक। सितं. २३,२४, अक्टू.१,२,३,१०,११,१२ अशुभ।

बारह राशियों का मासिक फलादेश (सम्वत् २०५६ वि.)

राशि	कार्तिक (१७ अक्तू. से १५ नवं. तक)	राशि	मार्गशीर्ष (१६ नवं. से १५ दिसं. तक)	राशि	पौष (१६ दिसं. से १३ जन. सन् २००० ई. तक)
मेष	सेहत खराब,धन लाभ होकर हानि, निजी लोगों से अनबन, घरेलू झंझट, स्त्री कष्ट, कारोबार कमजोर। अक्तू. २२,२३,२४,३१,नवं. १,९,१०,११ अशुभ।	मेष	कर्जा सिर चढ़े, वायु विकार, हिम्मत बढ़े, शत्रु परास्त, कारोबार ठीक, मासान्त में लाभ। नवं. १९,२०,२७,२८, दिसं. ६,७,८ अशुभ।	मेष	सेहत ठीक, अर्थ लाभ, अच्छे लोगों से मेल, सन्तति सुख, मासान्त में विशेष व्यय। दिसं. १६,१७,१८,२४,२५,२६ जन. (२०००ई.)२,३,४,१२,१३ अशुभ।
वृष	क्रोध बढ़े, अर्थ लाभ, शत्रु कमजोर, सन्तान सुख, शत्रु परास्त, स्त्री सुख, नए कार्य का विचार। अक्तू. १७,२४,२५,२६, नवं.२,३,११,१२,१३ अशुभ।	वृष	क्रोध बढ़े, अर्थ हानि, मन परेशान,सन्तति पक्ष शुभ, कारोबार ठीक, मासान्त में कष्ट भय। नवं. २१,२२,२९,३०, दिसं. १,९,१० अशुभ।	वृष	सेहत ठीक, धन हानि भय, निजीजन सहयोग, स्त्री कष्ट, कारोबार की नई रूप रेखा बने। दिसं. १८,१९,२०,२६,२७,२८,जन. (२०००ई.)५,६,७ अशुभ।
मिथुन	क्रोध बढ़े, करजा चढ़े, यात्रा में सुख, अचानक कष्ट, कारोबार में हानि, आय से व्यय अधिक। अक्तू. १८,१९,२६,२७,२८, नवं.४,५,६,१४,१५ अशुभ।	मिथुन	उदर विकार, कर्जा चढ़े, निजी लोगों से मदद, अच्छे लोगों से मेल, स्त्री को रोगभय, कारोबार ठीक। नवं. १६,२३,२४ , दिसं.१,२,३,११,१२,१३ अशुभ।	मिथुन	वायु विकार, अर्थ लाभ हो, निजीजन विरोध, नई योजना, गुप्त चिन्ता, आय से व्यय अधिक। दिसं. २०,२१,२२,२९,३०,जन.(२०००ई.)८,९ अशुभ।
कर्क	मन अशान्त, रोग भय, निजीजनों से अनबन,सम्पत्ति विवाद, गुप्त चिन्ता, कारोबार में लाभ। अक्तू. २०,२१,२२.२८,२९,३०, नवं.६,७,८ अशुभ।	कर्क	मन परेशानी, अर्थ लाभ होकर हाथ से निकले, निजीजन विरोध, असफल योजना। नवं. १७,१८,२५,२६, दिसं. ४,५,१४,१५ अशुभ।	कर्क	सेहत ठीक, अर्थ चिन्ता, नई योजना, स्त्री सुख, कारोबार मध्यम, आय से व्यय अधिक। दिसं. २२,२३,२४,३१, जन.(२०००ई.)१,२,१०,११,१२ अशुभ।
सिंह	मन शान्त, निजी लोगों से मदद, शत्रु दबे, स्त्री सुख, कारोबार कमजोर। अक्तू. २२,२३,२४,३१ ,नवं. १,९,१०,११ अशुभ।	सिंह	अर्थ हानि, सेहत खराब, यात्रा में चोट भय, स्त्री सुख, कारोबार कुछ ठीक। नवं. १९,२०,२७,२८, दिसं. ६,७,८ अशुभ	सिंह	क्रोध बढ़े, सम्पत्ति विवाद, घरेलू झंझट, स्त्री सुख, कार्यान्तर सेलाभ, मासान्त में खर्च ज्यादा। दिसं. १६, १७, १८, २४, २५, २६जन. (२०००ई.)२,३,४,१२,१३ अशुभ।
कन्या	अर्थ हानि, सन्तान व नई योजना से परेशानी स्थानान्तर व कार्यान्तर से लाभ। अक्तू. १७,२४,२५,२६, नवं. २,३,११,१२,१३ अशुभ।	कन्या	वायु विकार, अर्थपक्ष कमजोर, बन्धुकष्ट, स्त्री सुख, कार्यान्तर व स्थानान्तर का विचार नवं. २१,२२,२९,३०,दिसं. १,९,१० अशुभ।	कन्या	सेहत ठीक, उत्साह बढ़े, निजीजनों से वैमनस्य, लड़ाई, झगड़ों से बचे,कर्जा चढ़े। दिसं. १८,१९,२०,२६,२७,२८,जन.(२०००ई.)५,६,७ अशुभ।
तुला	अचानक नुकसान, यात्रा में कष्ट, स्त्री से अनबन कारोबार में अड़चन से मन अशान्त। अक्तू. १८,१९,२६,२७,२८,नवं. ४,५,६,१४,१५अशुभ।	तुला	सेहत ठीक, हिम्मत बढ़े, नई योजना, स्त्री से अनबन, कारोबार कमजोर, मासांत में अचानक कष्ट। नवं. १६,२३,२४, दिसं. १,२,३,११,१२,१३ अशुभ।	तुला	सेहत खराब, आर्थिक संकट, स्त्री से अनबन, रोगभय, कारोबार ठीक, परन्तु खर्च ज्यादा। दिसं.२०,२१,२२,२९,३०, जन.(२०००ई.)८,९ अशुभ।
वृश्चिक	सेहत ठीक, अर्थ लाभ, हिम्मत बढे, नई योजना से हानि, स्त्री कष्ट, कारोबार कमजोर। अक्तू. २०,२१,२२,२८,२९,३० नवं. ६,७,८ अशुभ।	वृश्चिक	वायु विकार, अर्थ हानि, मित्रों से मदद, सन्तति चिन्ता, क्रोध बढ़े, कारोबार ठप्प। नवं. १७,१८,२५,२६, दिसं. ४,५,१४,१५ अशुभ।	वृश्चिक	उदर विकार, क्रोध बढ़े, मित्रों से मेल, कारोबार पहले से अच्छा, शनि एवं बुध का दान करें। दिसं. २२,२३,२४,३१, जन.(२०००ई.)१,२,१०,११,१२ अशुभ।
धनु	वायु विकार, धनहानि, निजीजन विरोध , सन्तान पर व्यय अधिक, क्रोध बढ़े, कारोबार ठीक। अक्तू. २२,२३,२४,३१, नवं. १,९,१०,११ अशुभ।	धनु	उदर विकार, बन्धु सुख, असफल योजना, स्त्री कष्ट, कारोबार से लाभ। नवं. १९,२०,२७,२८,दिसं. ६,७,८ अशुभ।	धनु	सेहत मध्यम, निजीजनों से मेल मिलाप, धन लाभ, सन्तति पक्ष से चिन्ता, कारोबार खराब। दिसं. १६,१७,१८, २४,२५, २६,जन.(२०००ई.)२,३,४,१२,१३अशुभ।
मकर	उदर विकार, धन हानि, मित्रों से अनबन, स्त्री पक्ष से चिन्ता, कारोबार बेहतर। अक्तू. १७,२४,२५,२६, नवं. २,३,११,१२,१३ अशुभ।	मकर	रक्त-पित्त विकार, नेत्र कष्ट, सम्पत्ति विवाद बन्धुओं से अनबन, सन्तति कष्ट, शत्रु कमजोर, स्त्री चिन्ता, नवं. २१,२२,२९,३०, दिसं. १,९,१० अशुभ।	मकर	सुख धन लाभ, गुप्त शत्रु से भय, निजी जन सहयोग, लड़ाई-झगड़े से बचें। दिसं. १८,१९,२०, २६,२७, २८,जन. (२०००ई.)५,६,७ अशुभ।
कुम्भ	सेहत खराब, अर्थ लाभ होकर हानि हो, नई योजना से नुकसान, शत्रु प्रबल। अक्तू. १८,१९,२६,२७,२८ नवं. ४,५,६,१४,१५ अशुभ।	कुम्भ	कफ-वायु विकार, धन-लाभ, भ्रातृ कष्ट, यात्रा में चोट भय, सन्तान पक्ष से चिन्ता, स्त्री सुख। नवं. १६,२३,२४, दिसं. १,२,३,११,१२,१३ अशुभ।	कुम्भ	सेहत ठीक, शत्रु भय, बन्धुसुख लाभ, अचानक कष्टभय, स्त्री से अनबन, कार्यान्तर व स्थानान्तर का विचार। दिसं. २०,२१,२२,२९,३०, जन.(२०००ई.)८,९ अशुभ।
मीन	अर्थ हानि, व्यापार में विशेष हानि भय, बुरी खबर मिले, आय से व्यय अधिक। अक्तू. २०,२१,२२,२८,२९,३०, नवं. ६,७,८ अशुभ।	मीन	उदर विकार, व्यापार में हानि, हिम्मत बढ़े, मित्रों से अनबन, गुप्त चिन्ता, कार्यान्तर का विचार, नवं. १७,१८,२५,२६, दिसं.४,५,१४,१५ अशुभ।	मीन	राजपक्ष से भय, व्यापार में हानि, हिम्मत बढ़े। निजीजन सहयोग, बनते कार्य में रुकावट। दिसं. २२,२३,२४,३१जन. (२०००ई.)१,२,१०,११,१२ अशुभ।

बारह राशियों का मासिक फलादेश (सम्वत् २०५६ वि.)

राशि	माघ (१४ जन.(२०००ई.) से १२ फर. तक)	राशि	फाल्गुन (१३ फर. से १३ मार्च तक)	राशि	चैत्र (१४ मार्च से १२ अप्रैल तक)
मेष	रोग भय, स्थान हानि, नेत्र कष्ट, शत्रु बढ़े, धनहानि भय, गृहकलह, मासान्त में आय से व्यय अधिक। जन. १४,२१,२२,३०,३१,फर.९,१० अशुभ।	मेष	स्थान हानि, बन्धन भय, नेत्र कष्ट, हिम्मत बढ़े, शत्रु कमजोर, अच्छे लोगों से मेल. शत्रु हतप्रभ। फर. १७, १८, १९, २६,२७,२८ मार्च, ७,८ अशुभ।	मेष	स्थानान्तर व कार्यान्तर का विचार, नेत्र कष्ट व चोट भय, शत्रु बढ़े, असफल योजना, कारोबार में हानि। मार्च १६,१७,२४,२५,२६ अप्रै. ३,४,१२ अशुभ।
वृष	भय, पीड़ा, सुख, अर्थलाभ, अचानक हानि भय, व्यापार में नुकसान, वायुपीड़ा। जन. १५,१६,२३,२४, फर. १,२,३,११,१२अशुभ।	वृष	क्रोध बढ़े, शरीर में पीड़ा धन लाभ होकर हानि, निजी लोगों से मदद, सन्तान पक्ष से चिन्ता। फर. १९,२०,२१,२९,मार्च १,९,१०,११ अशुभ	वृष	दुर्घटना भय, अर्थ संकट, लड़ाई-झगड़े से बचें। यात्रा में कष्ट, स्त्री पक्ष से अशान्ति, कारोबार कमजोर। मार्च १८,१९,२७,२८,२९, अप्रै. ५,६,७ अशुभ।
मिथुन	धन लाभ होकर हानि हो, असफल योजना, स्त्री सुख, कारोबार कमजोर, कर्जा चढ़े। जन. १७,१८,२५,२६,२७,फर. ४,५अशुभ।	मिथुन	भय, कष्ट, अर्थ-लाभ हो, स्थानान्तर व कार्यान्तर का विचार, यात्रा में कष्ट, मासान्त में व्यय अधिक। फर. १३,१४,२१,२२,२३,मार्च२,३,४,११,१२,१३ अशुभ।	मिथुन	क्रोध बढ़े, उत्साह कम न हो, कारोबार ठप्प, राजभय, चोरी, ठगी की घटना से सावधान , नेत्र व शिर पीड़ा। मार्च २०,२१,२९,३०,३१ , अप्रै. ८,९ अशुभ।
कर्क	पीड़ा, कष्ट, शत्रु बढ़े, यात्रा में कष्ट, कारोबार कमजोर, मन अशान्त, शनि, राहु का दान करें। जन. १९,२०,२७,२८,२९, फर. ६,७,८ अशुभ।	कर्क	सेहत ठीक,हिम्मत बढ़े, मास मध्य में अचानक हानि,कारोबार कमज़ोर, कारोबार सम्बन्धी झगड़े। फर. १५,१६,२४,२५, मार्च ५,६,१३ अशुभ।	कर्क	सुख लाभ , धन हानि हो, निजी लोगों से अनबन, कारोबार कमजोर, स्त्री सुख- व्यापार में कुछ लाभ संभव। मार्च १४,१५,२२,२३,२४ , अप्रै. १,२,१०,११ अशुभ।
सिंह	सेहत ठीक, धन लाभ, हिम्मत बढ़े, स्त्री सुख मासांत में हानि भय, कारोबार कमजोर। जन. १४,२१,२२,३०,३१, फर. ९,१० अशुभ।	सिंह	वायु विकार नेत्र व शिरपीड़ा , स्त्री सुख, व्यर्थ का व्यय, कारोबार गड़बड़, कर्जा चढ़े। फर. १७,१८,१९,२६,२७,२८ मार्च, ७,८ अशुभ।	सिंह	उदर विकार, धन लाभ, निजी लोगों से कुछ मन मुटाव, मित्र बन्धु कष्ट, स्त्री कष्ट, कारोबार कमजोर। मार्च १६,१७,२४,२५,२६ अप्रै. ३,४,१२ अशुभ।
कन्या	सेहत ठीक, कर्जा चढ़े, शत्रु बढ़े, घरेलू झगड़े, रोग भय, कारोबार कुछ ठीक। जन.१५,१६,२३,२४, फर.१,२,३,११,१२ अशुभ।	कन्या	उदर विकार, हानि भय, शत्रु बढ़ें, पाप कार्य में मन लगे, धन हानि, कर्जा सिर चढ़े, गुप्त चिन्ता। फर. १९,२०,२१,२९, मार्च १,९,१०,११अशुभ।	कन्या	सेहत ठीक, धन लाभ, निजीजन सहयोग, स्त्री सुख, शत्रुपक्ष कमजोर, भाग्य साथ न दे। मार्च १८,१९,२७,२८,२९, अप्रै. ५,६,७ अशुभ।
तुला	उदर विकार, स्त्री से अनबन, अर्थ संकट, सन्तान सुख, कारोबार पहले से ठीक। जन. १७,१८,२५,२६,२७, फर. ४,५ अशुभ।	तुला	सेहत ठीक, धन हानि, सन्तान पक्ष शुभ, स्त्री से अनबन, क्रोध बढ़े, वृथा व्यय। फर. १३,१४,२१,२२,२३, मार्च २,३,४,११,१२,१३ अशुभ।	तुला	वायु विकार, वृथा व्यय, राजपक्ष से चिन्ता, नई योजना से हानि लड़ाई झगड़े से बचें, कर्जा चढ़े। मार्च २०,२१, २९, ३०, ३१,, अप्रै. ७,८ अशुभ।
वृश्चिक	धन लाभ, शत्रु कमज़ोर, अचानक धन लाभ मास मध्य में पाप कार्य में मन लगे। जन. १९,२०,२७,२८,२९, फर ६,७,८ अशुभ।	वृश्चिक	धन लाभ, निजी लोगों से मदद,असफल योजना, यात्रा का प्रोग्राम बने, शत्रु कमजोर, अचानक धन हानि भय। फर. १५,१६,२४,२५, मार्च ५,६,१३ अशुभ।	वृश्चिक	शत्रु पक्ष से चिन्ता, अच्छे लोगों से मदद मिले, गुप्त चिन्ता, व्यापार में हानि, स्त्री कष्ट व अपमान भय, मार्च १४, १५, २२,२३,२४, अप्रै. १,२,१०,११ अशुभ।
धनु	सुख-अर्थ लाभ, बुरा समाचार, कारोबार ठीक, नए कार्य का विचार, मासान्त में विशेष व्यय । जन. १४,२१,२२,३०,३१, फर. ९,१० अशुभ।	धनु	सुख, अर्थ लाभ, शरीर में वायु विकार, सन्तान पक्ष से चिन्ता, शत्रु कमजोर, स्त्री सुख, मासांत में कष्ट भय । फर. १७,१८,१९,२६,२७,२८, मार्च ७,८ अशुभ।	धनु	वायु विकार, धन लाभ की उम्मीद होने पर भी हानि हो, हिम्मत बढ़े, मित्रों से मदद, शत्रु प्रबल, परन्तु दबे रहें। मार्च १६,१७,२४,२५,२६, अप्रै. ३,४,१२ अशुभ।
मकर	धन सुख लाभ, गुप्त शत्रु से भय, अपमान भय, अचानक खर्चा आ पड़े, स्त्री सुख। जन. १५,१६,२३,२४ फर. १,२,३,११,१२ अशुभ।	मकर	सुख धन लाभ, मान हानि भय, वृथा व्यय, शत्रु बढ़े, स्त्री सुख, कार्यान्तर से हानि। फर. १९,२०,२१,२९, मार्च १,९,१०,११ अशुभ।	मकर	धन हानि , बन्धु सुख, अपमानभय, रोगभय ,धन नाश, सन्तान पक्ष से चिन्ता, कारोबार में हानि। मार्च १८,१९,२७,२८,२९, अप्रै. ५,६,७ अशुभ।
कुम्भ	शत्रु नाश, धन लाभ होकर हानि हो, रोग भय, पाप कार्य में मन लगे, शनि, राहु का दान करें। जन. १७,१८,२५,२६,२७, फर. ४,५ अशुभ।	कुम्भ	शत्रु नाश, धन हानि भय, शत्रु कमज़ोर, निजी लोगों से अनबन, सन्तान कष्ट, रोगभय, कारोबार ठीक। फर. १३,१४,२१,२२,२३, मार्च. २,३,४,११,१२,१३ अशुभ।	कुम्भ	उदर विकार, धन लाभ, शत्रु बढ़ें, सम्पत्ति विवाद, स्त्री कष्ट, कारोबार कुछ ठीक रहे। मार्च २०,२१,२९,३०,३१, अप्रै. ८,९ अशुभ।
मीन	बन्धनभय, व्यापार में हानि, हिम्मत बढ़े, सन्तान पक्ष से चिन्ता, रोगभय, कारोबार कुछ ठीक। जन. १९,२०,२७,२८,२९, फर. ६,७,८अशुभ।	मीन	रोगभय, धन हानि, उत्साह बढ़े, वृथा व्यय, नई योजना से लाभ वृथा कलह से बचें। फर. १५,१६,२४,२५ , मार्च ५,६,१३ अशुभ।	मीन	बन्धन भय, अर्थहानि, शत्रु कमजोर हो, परन्तु निजी लोगों से अनबन,सन्तान सुख, कारोबार में लाभ होकर नुकसान हो। मार्च१४,१५,२२,२३,२४,अप्रै. १,२,१०,११अशुभ

अथ वर्षराजादि फल विचार(सं. २०५६वि.)
(सन् १९९९-२००० ई. की ग्रहपरिषद् का विवेचन)

कल्पादि से गतवर्ष १९७२९४९१००, सृष्टि संवत् १९५९८८५१००, **श्री विक्रम संवत् २०५६,** शक संवत् १९२१, श्रीकृष्ण जन्म संवत् ५२३५, कलिसंवत् ५१००, श्री जैन महावीर निर्वाण संवत् २५२४-२५, श्री बुद्ध संवत् २६२२-२३, हिजरी सन् १४१९-१४२०, फसली सन् १४०६-१४०७, **ईस्वी सन् १९९९ एवं सन् २००० ई.**

वर्षारम्भ से गुरुमान से विष्णु विंशति का '**नन्दन**' नामक संवत्सर है; इसका फल शास्त्रों में इस प्रकार लिखा है ;-

''सुभिक्षं सुखिनो लोकाः व्याधि-शोक विवर्जिताः।
नन्दनं च धनैर्धान्यैर्नन्दने वत्सरे भवेत्॥''

अर्थात्- प्रजा में आनन्द मंगल रहे, प्रजा रोगभय से मुक्त रहे। धन-धान्य समृद्धि हो।

किञ्च- ''नन्दने भौमः स्वामी, प्रजासुखं सर्वधान्य समता, चैत्र मध्ये करकाः पतन्ति। वैशाखे धान्यं महर्घं, प्रचण्डो वायुवेगः, ज्येष्ठेऽपि तथैव महर्घम्। आषाढे महामेघः। श्रावणेऽल्पवर्षा, भाद्रपदे महावृष्टिः, आश्विने सुभिक्षम्, राजा राज्यसुस्थः, प्रजा सुखम्। कार्तिके सुभिक्षमत्र समता, मार्गशीर्षदि मास चतुष्टये महर्घता। मंजिष्ठा लवंग- मरिचादिषु महर्घता॥''

इस वर्ष राजा (ग्रहपरिषद के प्रधान) **गुरु,** मंत्री, **बुध,** सस्येश (चौमासी फसलों के स्वामी)**शुक्र,** धान्येश (शीतकालीन फसलों के स्वामी)**गुरु,** मेघेश (मौसम वर्षा पानी के स्वामी) **मंगल,** रसेश(गुड़, खाण्ड, रसकस आदि के स्वामी) **सूर्य,** नीरसेश (सर्वविध धातु आदि व्यापार के स्वामी) **शुक्र,** फलेश (फल-फूल आदि के स्वामी) **मंगल,** धनेश (धन-दौलत एवं खजाना आदि के स्वामी)**शुक्र एवं दुर्गेश,** (सुरक्षा किंवा प्रतिरक्षा के स्वामी)**मंगल** हैं।

इस वर्ष प्रत्येक पदाधिकारी का फल निम्नलिखित है :-

(१) राजा गुरु का फल—

''गुरौ नृपे वर्षति कामदं जलं महीतले कामदुधाश्च धेनवः।
यजन्ति विप्रा बहवोऽग्निहोत्रिणो महोत्सवः सर्वजनेषु वर्तते।''

अर्थात् —वर्षा आशानुरूप पर्याप्त हो, रस-दूध आदि काफी हो, धर्म-कर्म में जन-मन लगे, अनेकत्र यज्ञादि सम्पन्न हो। जनता द्वारा अन्य प्रकार के अनेक उत्सवों का आयोजन हो।

(२) मन्त्री बुध का फल-

'' शशि सुते शुभ मन्त्रिपदं गते स्वपतिना रमते मदनक्रियाम्।
बहुधनं बहुवारि समन्वितं यव-मसूर- चणान्न महर्घताम्॥ ''

अर्थात्- जनता में ऐशो इशरत की भावना प्रबल रहे, वर्षा काफी हो, जनता का स्तर ऊँचा उठे, जौ, मसरी, चना आदि अनाज महंगे हों।

(३) सस्येश-शुक्र का फल-

''शुक्रो यदा धान्यपतिर्धरायां मेघो जलं वर्षति शोभनं प्रियम्।
गोधूम-शालीक्षुधनं प्रियंगु वृक्षेषु पुष्पाणि सुखप्रदानि॥''

अर्थात्— उचित समय पर पर्याप्त वर्षा हो, गेहूं, चावल, ईख आदि की फसलें उत्तम हों, फल फूल बहुत हों, फूलदार वृक्ष पौधे सुखप्रद वातावरण बनाएं।

(४) धान्येश गुरु का फल-

'' गुरौ धान्यपतौ याते यव गोधूमशालयः।
पच्यन्ते सर्वदेशेषु यज्वानो ब्राह्मणादयः॥''

अर्थात्— गेहूं चावल आदि की फसल उत्तम हो, ब्राह्मण लोग यजन याजन करने में तत्पर रहें।

(५) मेघेश मंगल का फल-

''अवनिजे जलदस्य पतौ भुवि श्रुतिविचार विहीन धरामराः।
क्वचिदपि प्रचुरं जलमल्पकं क्वचिदपि प्रशमं बहुतापदम्॥''

अर्थात् — मेघेश-मंगल हो तो उत्तम वर्ण के लोग धर्म कर्म एवं अपने कर्त्तव्य से विहीन हो जाएं। कहीं बाढ़ की स्थिति बने, कहीं वर्षा की कमी अनुभव हो।

(६) रसेश सूर्य का फल-

''रसपतौ तरणौ धरणी तदा विरस भागरताल्प-पयोधरा:।

वसन तैल घृतप्रिय मानवा: सुखरसं न भुनक्ति महीपति:॥''

अर्थात्- सूर्य के रसेश होने पर दूध, रस,गुड़ आदि कम हों, वर्षा कम (अपर्याप्त) हो, घी, तेल, वस्त्र आदि की कमी रहे, शासकों को अनेक विध- चिन्ताओं से ग्रस्त रहना पड़े।

(७) नीरसेश शुक्र का फल

''कर्पूरागरगन्धानां हेम-मौक्तिक वाससाम्।

अर्घवृद्धि: प्रजायेत नीरसेशोभृगुर्यदि॥''

अर्थात् — शुक्र नीरसेश हो तो कपूर-अगर आदि सुगन्धित वस्तुएं, सोना, मोती वस्त्र, ये सब महंगे हों।

(८) फलेश मंगल का फल-

''फलपतिर्यदि भूतनयोभवेन्नबहुपुष्प फलान्वित पादपा:।

गदभयान्वित देश जनास्तदा नृपतयो बहु विग्रहकारका:॥''

अर्थात् — मंगल फलेश हो तो वृक्षों में फल-फूल कम लगें। जनता में नानाविध भयंकर रोग हों, शासकों में परस्पर वैमत्य एवं देशों में युद्धभय व्याप्त हो।

(९) धनेशशुक्र का फल —

'' द्रविणपो भृगुजो द्रविणैर्युता: समधना सकला ननु मानवा:।

समसुखा क्रय-विक्रय जीविनो नृपतयो जनपालन तत्परा:॥''

अर्थात् — शुक्र धनेश हो तो गरीबी उन्मूलन पर सरकार का विशेष ध्यान रहे, कुछ समाजवादी वर्ग प्रभावी हों, व्यापारी वर्ग क्रय विक्रय से समानरूप से सुखभागी हों, शासक वर्ग जन-सेवा, जन हितार्थ तत्पर रहें।

(१०) दुर्गेश 'मंगल का फल'-

''अवनिजो गढ़ नायकतां गतो विविध दु:ख वियोग समन्विता:।

जनपदेषु जना: क्रय विक्रये भय विशेषतया न फलं क्वचित्॥''

अर्थात् — दुर्गेश-मंगल होने पर (रोग, महर्घता, शासन सत्ता के व्यवहार से किंवा राष्ट्र पर किसी प्रकार की आपत्ति आने से) जनता में दु:ख का वातावरण बने। व्यापरी वर्ग को क्रय-विक्रय में (विशेष सरकारी नीति से) भयव्याप्त रहे, व्यापारी वर्ग विशेष रूप से लाभान्वित न हो।

सूचना-यद्यपि वर्ष के इन दशाधिकारियों का फल सर्वत्र होता है। किन्तु विशेषत: राजा का फल काश्मीर, अफगानिस्तान एवं वराड़ देश में, मंत्री का फल आन्ध्र, वाल्हीक, उज्जैन एवं मालवा में, सस्येश का पौण्ड्र, विदर्भ में, धान्येश का गुजरात, नर्मदा के तटवर्ती प्रदेश एवं मध्यप्रदेश में मेघेश का मगध एवं बंगाल में, रसेश का कोंकण एवं गोआ में नीरसेश का मालवा व बिहार में, धनेश का राजस्थान एवं बाड़मेर मे, फलेश-दुर्गेश एवं राजा का फल सब जगह विशेष होता है।

वर्षा आदि के विश्वासान-

वर्षाविश्वा ९, धान्य १५, तृण १७, शीत १५, तेज ९, वायु ११, वृद्धि १३, क्षय १५, विग्रह १५ क्षुधा १३, तृषा १५, निद्रा १३, आलस्य ३, उद्यम ११ शान्ति ७, क्रोध १३, दम्भ ५, लोभ ३, मैथुन १५, रस ९, फल १३, उत्साह ११, उग्रता ११, पाप ७, पुण्य ९, व्याधि ५, व्याधिनाश १७, आचार १५, अनाचार १, मृत्यु १३, जन्म ३, देशोपद्रव ७, देश-स्वास्थ्य ११, चौर १७, चौरनाश ९, अग्नि ५, अग्नि शान्ति ७, उद्भिज्ज ५, जरायुज ३, अण्डज १५,स्वेदज १३, टिड्डी ५, तोता ३, मूषक १७, सोना ९, तांबा ३, स्वचक्र १५, परचक्र १७,वृष्टि १९, वृष्टिनाश ९ एवं संबत् विश्वा १८ है।

आवर्तकादि चतुर्मेघ- चतुर्मेघो में 'आवर्तक' नामक मेघ का फल:- जौ, चना, तेल आदि की फसल को हानि पहुंचे। घी, तेल कपास एवं अनाज तेज रहें, वर्षा भी कम हो।

नवमेघ विचार- नौ मेघों में 'पुष्कर' नामक मेघ है। उसका फल चित्र विचित्र रूप से वर्षा हो। कहीं बाढ़, कहीं सूखा रहे। पाप कर्म अधिक हों, रोगों से परेशानी रहे।

अनन्तादि अष्टनाग- 'अनन्तादि अष्ट नागों में 'सुतक्षक' नामक नाग है।

फल- हस्त-शिल्पी एवं मकैनिक आदि कारीगरों को विशेष सुविधाएं उपलब्धहों, जनता में विष एवं नशे आदि का प्रचलन अधिक हो। वर्षा पर्याप्त न हो।

सुबुध्नादि बारहनाग- सुबुध्नादि द्वादशनागों में 'ककेटिक' नाग है।

फल- वर्षा की बहुत कमी रहे। राजा व कुछ प्रतिष्ठित व्यक्तियों की मृत्यु से शोक व्याप्त हो।

इस वर्ष के चार स्तम्भ

(१) जलस्तम्भ-(चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को रेवती नक्षत्र) का अभाव है।

(२) वायुस्तम्भ- (ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा को मृग.-नक्षत्र)६३ प्रतिशत है।

(३) तृणस्तम्भ- (वैशाख शुक्ल प्रतिपदा को भरणी नक्षत्र) ६ प्रतिशत है।

(४) **अन्नस्तम्भ-** (आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा को पुन. नक्षत्र) ५३ प्रतिशत है।

इन चार स्तम्भों का अपना विशेष महत्त्व है, क्योंकि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड जल, वायु ,अन्न एवं तृण (जड़ी बूटियों) आदि पर ही निर्भर है। अत: संवत् का शुभाशुभ भी इन्हीं स्तम्भों के आधार पर विचारा जाता है। जनता एवं देश की खुशहाली के मूल ये स्तम्भ ही हैं। **उल्लिखित चार स्तम्भों का फल प्रतिशतता के आधार पर इस प्रकार है : —**

इस वर्ष **जलस्तम्भ** एवं **अन्नस्तम्भ** के अधिमान के अनुसार वर्षा पर्याप्त होगी, कुछ स्थानों पर खड़ी फसलों को हानि भी होगी। अनाज भी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हो सकेगा। **वायुस्तम्भ एवं तृणस्तम्भ** विचार से इस वर्ष में कहीं वायु प्रकोप से भयंकर हानि, कहीं वायु प्रदूषण से जनहानि भी हो। चारा की कमी से पशुधन को परेशानी हो। कृषक वर्ग चिन्तित रहे। इस वर्ष जल स्तम्भ के अनुसार कुछ क्षेत्रों में बाढ़-वर्षा से हानि भी होगी, कुछ दक्षिणी क्षेत्रों में वर्षा की भारी कमी अनुभव होगी। कुछ क्षेत्रों में अन्न समस्या भी पैदा हो ।

आर्षमान विचार (वर्ष रक्षा के लिए चार दुर्ग)

(१) **प्रथम आर्ष-** अक्षय तृतीया को रोहिणी नक्षत्र केवल ३ प्रतिशत है।

(२) **द्वितीय आर्ष-** सं. २०५५ वि. में पौष अमा को मूल नक्षत्र २३ प्रतिशत है।

(३) **तृतीय आर्ष-** श्रवण पूर्णिमा को श्रवण नक्षत्र का अभाव है।

(४) **चतुर्थ आर्ष-** कार्तिक पूर्णिमा को कृत्तिका नक्षत्र ७७ प्रतिशत है।

फल— आर्षमान विचार से यह वर्ष विशेष शुभ प्रतीत नहीं होता। क्योंकि अक्षय तृतीया को रोहिणी नक्षत्र केवल ३ प्रतिशत है, श्रावण पूर्णिमा को श्रवण नक्षत्र का अभाव ही है। द्वितीय आर्ष भी २३ प्रतिशत (क्षीण) ही है। केवल चतुर्थ आर्ष प्रबल है। अत: यह वर्ष केवल एक ही प्रबल आर्ष पर स्थित है। भारत को अनेक कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा। धार्मिक - राजनैतिक एवं आर्थिक विषम समस्याओं से घिरा हुआ भारतवर्ष २० वीं सदी की पूर्णता को प्राप्त करेगा, लेकिन आगे पूर्ण आत्मनिर्भरता की ओर उन्मुख रहेगा। राजनीतिक -अस्थिरता से स्थिति डांवाडोल होगी। कहीं युद्ध की बिगुल बजेगी, जिससे एकता की भावना बढ़ेगी।

दोहा- ''अखैतीज रोहिणी न होई, पौष अमावस मूल न जोई।
राखी श्रवणो हीन विचारो, कार्तिक पुण्या कृत्तिका टारो।
महीमाह खलबली प्रकाशै कहै भड्डली साख विनाशै ॥''

रोहिणी का वास- इस वर्ष रोहिणी का वास 'तट' पर है। **फल - 'तटे वृष्टि : सुशोभना'** वर्षा पर्याप्त है। इस वर्ष बहुजलीय अन्न चावल आदि की फसल अधिक होगी। न्यून वर्षा वाले बागड़ादि प्रान्तों में भी आगे पीछे वर्षा होने से कृषक लोगों को सहारा मिलेगा।

समय का वास- इस वर्ष समय का वास धोबी के घर है। तालाब, नदी नाले एवं बावड़ियां सब जल से परिपूर्ण रहें।

अधिक मास फल— इस वर्ष **ज्येष्ठ अधिक मास** है। **फल- ''ज्येष्ठ द्वये नृपध्वंसो धान्यनिष्पत्तिरुत्तमा। ''** किसी विशिष्ट -राजनीतिज्ञ व गणयमान्य व्यक्ति के निधन से शोक व्याप्त हो। अनाजों की फसल अच्छी हो।

शनि की दृष्टि- सं. २०५६ में (सारा संवत्) **शनि मेष राशि में** ही रहेगा । मेष-राशिस्थ शनि की दृष्टि पूर्व की तरफ ही रहती है।

फल- पूर्वी गोलार्ध स्थित देशों एवं प्रान्तों में कहीं राजनैतिक -अस्थिरता,समुद्री तूफान, सत्ता परिवर्तन, कहीं दो देशों में युद्ध-ज्वाला से बड़े देश चिन्तित हो, आन्दोलन, हत्याकाण्ड, भयंकर रोग से मृत्युदर बढ़े, कहीं भूकम्प, तूफान आदि प्राकृतिक प्रकोप से भारी जनधन हानि हो। मेष राशि का शनि मेष, मिथुन, वृष, मकर, कन्या, तुला नाम राशि वाले देशों में विशेषत: मुस्लिम देशों में अघटित घटनाचक्र को जन्म देगा ।

शरत्सस्य जातक

इस वर्ष प्रथम ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष अमावस शनिवार तदनुसार १५ मई १९९९ ई. को प्रात: ८ घं. ४ मि. (६घड़ी २०पल) पर सूर्य देव वृष राशि में प्रविष्ट होंगे।

शरत्सस्य जातक कुण्डली

भाव	राशि	ग्रह
लग्न	२	सू.
द्वितीय	३	शु.
तृतीय	४	रा.
चतुर्थ	५	
पंचम	६	
षष्ठ	७	मं.
सप्तम	८	
अष्टम	९	
नवम	१०	के.
दशम	११	
एकादश	१२	गु.
द्वादश	१	चं. श. बु.

फल— यहां वृष राशि को लग्न मानकर चलें तो चन्द्र से चतुर्थ राहु, खड़ी फसलों में रोग फैलने से हानि का संकेत देता है। लग्न से छठे (शुक्र की राशि का) मंगल शनि से दृष्ट होकर अनेकत्र अकाल की स्थिति से मूंग, मोठ, बाजरा आदि शारद् धान्यों में हानि का कारण बन सकता है। कहीं बाढ़ से भी भयंकर हानि से शासन चिन्तित रहे। वृषस्थ-सूर्य से द्वादशस्थ-नीच-शनि एवं शनियुत बुध चन्द्र भी शुभ नहीं। शरद् ऋतु के अनाजों के लिए ग्रहस्थिति खराब ही है, सर्वज्ञ प्रभु हैं ।

ग्रीष्म सस्य जातक

ग्रीष्म सस्य जातक कुण्डली

५ ३ ४ रा. २ शु. ६ श. १ गु. ७ बु सू. ८ १० के. १२ ९ मं ११ चं.

इस वर्ष कार्तिक शुक्ल अष्टमी मंगलवार तदनुसार १६ नवम्बर १९९९ ई. को भा.स्टैं.टा. के अनुसार २१घं. ३७ मिनट पर (३६घड़ी ५० पल) पर सूर्य देव वृश्चिक -राशि में प्रविष्ट होंगे।

फल— ग्रीष्म सस्य कुण्डली में वृश्चिकस्थ-सूर्य से दूसरे मंगल पर गरु की दृष्टि है, सूर्य से बारहवें बुध भी गुरु दृष्ट है अत: गेहूं, जौ आदि अनाजों की फसल अच्छी होगी। लेकिन सूर्य से छठे शनि-गुरु कहीं कटाई के समय फसलों का नुकसान करेंगे। ग्रीष्मसस्य कालीन कुण्डली में राहु-शनि-मंगल की स्थिति से संकेत मिलता है कि -फसलों के अच्छा होने पर भी किसी प्राकृतिक प्रकोप व शासकीय नीति विशेष से जौ, चना, सरसों, गेहूं आदि अनाजों में काफी तेजी आ सकती है, जिससे जनता में अशान्ति पनपेगी एवं शासन को स्टाक पर अंकुश लगाने पर विवश होना पड़ेगा ।

नव वर्ष प्रवेश

नव वर्ष प्रवेश कुण्डली

९ ७ मं ६ १० के. ८ ११ ५ चं. १२गु. सू.बु. २ शु. ४ रा. १श. ३

गत वर्ष सं. २०५५ वि. में चैत्र -कृष्ण अमावस बुधवार तदनुसार १७ मार्च सन् १९९९ ई. को अर्धरात्रि के बाद १८ मार्च को २४ घं. ४८ मिनट पर पू.भा. नक्षत्र, शुभयोग एवं मीनस्थ चन्द्र के समय वृश्चिक लग्न में नए संवत् २०५६ का शुभारम्भ हुआ है

फल— संवत् २०५६ विक्रमी का उदय वृश्चिक लग्न में हुआ है। पश्चिमी गोलार्ध के देशों व प्रान्तों में नौ मास तक (या प्रारम्भिक नौ महीनों में) कहीं भयंकर अकाल की स्थिति बने। उत्तर दिशा के प्रान्तों में भी कहीं फसलों को हानि पहुंचे। पूर्वी देश व प्रान्तों में सत्ता हस्तान्तरण व युद्धमय वातावरण बने। जनता में रोगभय व अन्य प्राकृतिक प्रकोप से कष्ट बने, दक्षिण दिशा में देश भंग भय रहे।

''वृश्चिके पश्चिमे देशे दुर्भिक्षं नवमासिकम्।
उदीच्यामर्द्ध निष्पत्तिः महर्घा धातवस्तथा।।
पूर्वस्यां विग्रहो राज्ञां दुःखं मासत्रयं जने।
दक्षिणस्यां देशभंगो भावि वर्षे प्रजायते।।''

नव वर्ष प्रवेश कालीन ग्रह स्थिति के अनुसार लग्नेश-मंगल व्यय स्थान में होने से केन्द्रीय शासन सत्ता में परिवर्तन हो, यान दुर्घटना व अग्निकाण्ड, भूकम्प आदि से कहीं जन धन हानि भी हो । लेकिन भारतवर्ष में नए कार्यक्रम,नए आयाम, नई योजनाएं शीघ्र ही कार्यान्वित होंगी;क्योंकि वर्ष लग्न में पंचम भाव बलवान है ।

वर्षेश (जगत्) लग्न

वर्षेश (जगत्) लग्न कुण्डली

४ रा. २ शु. ३ सू. १ श. ५ बु. गु. १२ चं. ६ मं. ७ ९ ११ ८ १० के.

संवत् २०५६ वि. में वैशाख कृष्ण त्रयोदशी बुधवार तदनुसार १४ अप्रैल सन् १९९९ ई. को ११ घं. १६ मिनट (१३ घड़ी १० पल) पर उ.भा. नक्षत्र ऐन्द्र योग एवं मीनस्थ चन्द्र के समय मिथनु लग्न में सूर्यदेव मेष राशि में प्रविष्ट होंगे ।

फल- जगत् लग्न कुण्डली का लग्न मिथुन है। लग्नेश बुध, गुरु चन्द्र के सन्निकर्ष में है, लेकिन लग्न पर नीच शनि की दृष्टि है, जो कि कुछ समृद्ध एवं यावन राष्ट्रों के लिए कई तरह की समस्याओं को उपस्थित करे ।

'' मिथुने बहुलं युद्धं पूर्वस्यां धान्य विक्रयः ।
पश्चिमायां स्वल्पमेघाः छत्रभंगश्च विग्रहः ।।''

पूर्व-पश्चिमी गोलार्ध के देश विशेष रूप से संकट ग्रस्त होंगे । कहीं नाटकीय ढंग से सत्ता परिवर्तन होगा । अमेरिका, ब्रिटेन, आयरलैण्ड, पाकिस्तान, अफगानिस्तान इराक-ईरान में कहीं आन्तरिक अशान्ति व कहीं भयंकर युद्ध का सूत्रपात होगा। ज्येष्ठ, भाद्रपद, मार्गशीर्ष एवं फाल्गुन मास विशेष घटनापूर्ण होंगे ।

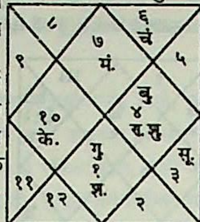
जगत् लग्न से व्यक्तिगत फल विचार

जन्म कुण्डली में लग्न बलवान हो तो जन्म राशि से जगत् लग्न जिस राशि पर आए वह भाव शुभग्रह या भावेश से दृष्ट या युक्त हो तो उस वर्ष में उस भाव की वृद्धि कहनी चाहिए। यदि पापी ग्रह की दृष्टि या योग हो तो उस भाव की हानि कहें। जन्म लग्न, जन्म राशि एवं अपने वर्षलग्न से वर्षेश (जगत) लग्न आठवें या बारहवें हों तो वर्ष उस व्यक्ति के लिए शुभ नहीं होगा। इसी प्रकार देश एवं ग्राम के शुभाशुभ विचार के लिए भी समझना चाहिए।

आर्द्रा प्रवेश लग्न

संवत् २०५६ वि. में द्वितीय (शुद्ध) ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष नवमी मंगलवार तदनुसार २२ जून सन् १९९९ ई० को चित्रा नक्षत्र, परिघ योग एवं कन्यास्थ चन्द्र के समय १४ घं. १३ मिनट (२२ घडी २ पल पर) सूर्यदेव आर्द्रा नक्षत्र में प्रविष्ट होंगे।

आर्द्रा प्रवेश लग्न कुण्डली



फल- नवमी तिथि मंगलवार एवं चित्रा नक्षत्र में सूर्य का आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश कष्टप्रद कहा है। शस्त्र व विस्फोट से किसी नेता की मृत्यु हो। अनेकत्र वर्षा की कमी अनुभव हो, कहीं ऋतु विपर्यय अनुभव हो, क्योंकि आर्द्रा प्रवेश दिन में हुआ है अत: अनेकत्र वर्षा के अभाव से कृषक वर्ग चिन्तित रहेगा,'दिवार्द्रा याति चेद्भानुर्जल भक्षण-कारकः।' खेती का नाश, धान्य महंगा तथा चोर की कमी अनुभव हो।

गुर्रा फल

गत संवत् २०५५ वि. में २८ अप्रैल १९९८ ई. को मंगलवार से हिजरी सन् १४१९ प्रारम्भ हुआ है।

फल— विश्व के पूर्वी एवं उत्तरी भूभाग पर कहीं भंयकर अकाल की स्थिति बने। खाद्य वस्तुओं में भारी तेजी से जनता परेशान हो। कहीं भयंकर युद्ध का सूत्रपात हो। पशु एवं जनता में रोग बढ़े। गुड़, खाण्ड, घी एवं गेहूं आदि में मंहगाई रहे। कहीं भयंकर अग्निकाण्ड से हानि हो। खड़ी फसल को प्राकृतिक प्रकोप से हानि हो ।

वर्तमान संवत् २०५६ वि. में वैशाख शुक्ल तृतीया रविवार को हिज़री सन् १४२० प्रारम्भ होगा।

फल— बादल वर्षा अधिक हो, धान सस्ते रहें। राजा प्रजा में अमन चैन रहे। स्त्री-वर्ग को बहुधा कुच (स्तन) रोगों से कष्ट रहें। गेहूं आदि की फसल बहुत हो। लेकिन किन्हीं दो तीन मुस्लिम राष्ट्रों में युद्ध हो, और कहीं सत्ता हस्तान्तरण हो।

लाभ-व्यय चक्र (विंशेत्तरी मतानुसार)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
लाभ	१४	८	१४	८	११	१४	८	१४	११	५	५	११
व्यय	२	११	८	५	२	८	११	२	८	११	११	८

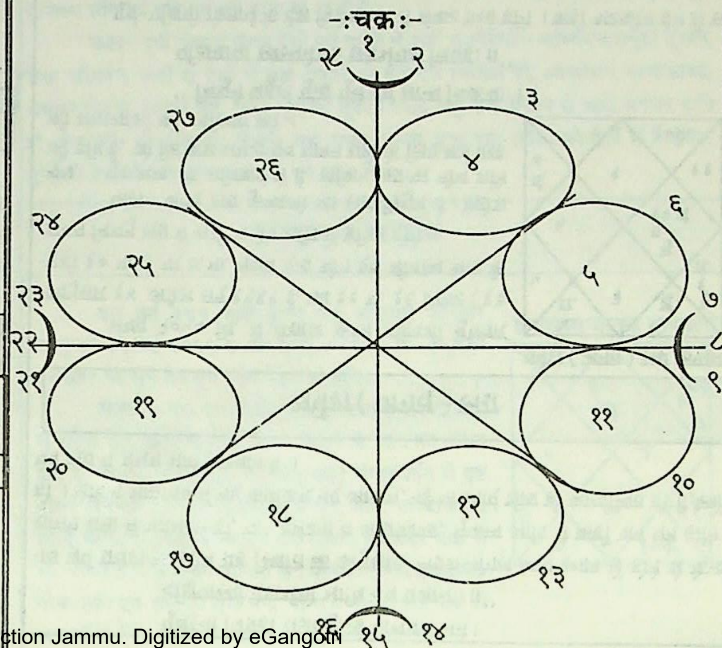
लाभ व्यय देखने की रीति- अपनी राशि के लाभ व्यय अंकों को जोड़कर उस में से१ घटाकर शेष को ८ से भाग देने पर यदि १, २ ,६ ,७ बचे तो वर्ष में उत्तम लाभ होगा, ३,४,५,० बचे तो लाभ बहुत कम हो, चिन्ता भी रहे।

''इतीदं वत्सर फलं वत्सरादि - तिथौ शुभम् ।
यः शृणोति नरो भक्त्या स सुखी[illegible] भवेत्॥''

आज का दिन कैसे बीतेगा

प्रात: ठठकर पंचांग से ज्ञात करो कि उस समय कौन-सा नक्षत्र है। फिर नीचे दिए गये चक्र के समान एक चक्र बनाओ । इस चक्र में जहाँ १ लिखा है, वहां उस दिन के प्रात:कालीन नक्षत्र को लिखकर ठससे आगे के नक्षत्रों को २-३-४ आदि अंकों के स्थान पर लिखते हुए अभिजित् सहित २८ नक्षत्रों को चक्र में लिख डालो । अब देखो कि आपके नाम का नक्षत्र कहां पड़ा है । यदि वह चक्र के भीतर है तो वह दिन सुख-शान्ति से व्यतीत होगा, उस दिन कोई शुभ समाचार मिलेगा। यदि नाम-नक्षत्र चक्र के बाहर पड़े तो दिन का आधा भाग प्रसन्नता से बीते ओर शेष भाग में चिन्ता, दु:ख-शोक से चित्त खिन्न हो। यदि नाम नक्षत्र पर पड़े तो वह पूरा दिन विवाद, हानि, दुर्घटना आदि से चित्त की अशान्ति का कारण यने ।

-:चक्र:-



श्री वि.सं.२०५६, शाक १९२१, **चैत्र-शुक्ल पक्ष १** | तारीखें | चन्द्र राशि | चण्डीगढ़ | उदय-कालिक | (१८ से ३१ मार्च तक, सन् १९९९ ई.) उत्तरायण, दक्षिण उत्तर गोल, वसन्त ऋतु।

ग्रह दर्शन - बुध २६ मार्च को पूर्व में दीखने लगेगा। २२ मार्च को गुरु अदृश्य हो जाएगा। प्रातः शुक्र एवं शनि पश्चिम में होंगे। प्रातः मंगल पश्चिम की ओर जा रहा होगा।

दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	प.	योग	समाप्ति काल घ.	प.	करण	समाप्ति काल घ.	प.	प्र. चैत्र	अं. मार्च	श. फाल्गु.	मु. ज़िलका.	चन्द्र राशि	प्रवेश काल घ.	प.	भा.स्टैं.टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
२९	४८	१	गु.	३७	४५	उ.भा	३९	१८	शु.	३९	१०	किं.	११	३१	५	१८	२७	२९	मीन			६	३३	६	२८	११	३	८	३६	सूर्य उ.भा.में ११/२५, मंगल वक्री ३१/३२,वासन्त (A)
२९	५२	२	शु.	२९	४५	रे.	३५	१८	ब्र.	३०	२	बा.	३	४५	६	१९	२८	३०	मे.	३५	१८	६	३२	६	२९	११	४	८	१८	पञ्चक समाप्त ३५/१८,चन्द्र दर्शन मु३० वक्री वेंकटेश (B)
२९	५८	३	श.	११	५५	अ.	२९	२२	ऐं.	२०	४०	ग.	२१	५५	७	२०	२९	ज़िल.१	मेष			६	३१	६	३०	११	५	७	५६	भ.४८/७ बाद,श्री मत्स्य जयन्ती, गौरी तृतीया (गण गौर), (C)
३०	०	४	र.	१४	२०	भ.	२३	४५	वै.	११	३०	वि.	१४	१०	८	२१	३०	२	वृ.	३७	२७	६	३०	६	३०	११	६	७	३०	भ.१४/२० तक, वक्री बुध पू.भा. में २७/८, सूर्य सायन मेष में (D)
३०	७	५	चं.	७	१५	कृ.	१८	३५	वि. प्री.	२ ५४	४५ ४०	बा.	७	१५	९	२२	चै.१	३	वृष			६	२८	६	३१	११	७	७	१	शक चैत्र प्रारम्भ, नागपञ्चमी, स्कन्दषष्ठी,
३०	१२	६	मं.	०	५५	रो.	१४	२८	आ.	४७	२५	तै.	०	५५	१०	२३	२	४	मि.	४२	५०	६	२७	६	३२	११	८	६	३१	भ.५५/३५ बाद,नेपच्यून श्रव. १ में४६/१०,
अवम		७	मं.	५५	३५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	सप्तमी तिथिक्षय,
३०	१५	८	बु.	५१	३०	मृ.	११	१५	सौ.	४१	२	वि.	२३	३२	११	२४	३	५	मिथुन			६	२६	६	३२	११	९	५	५९	भ.२३/३२ तक, शुक्र भरणी में १९/२५,श्री दुर्गाष्टमी,अशोकाष्टमी,
३०	२०	९	गु.	४८	३५	आ.	९	१५	शो.	३५	४०	बा.	२०	२	१२	२५	४	६	क.	५३	४१	६	२५	६	३३	११	१०	५	२७	व. बुध कुम्भ में २५/२०,श्री राम नवमी (पुनर्वसु युता) (E)
३०	२८	१०	शु.	४७	०	पुन.	८	३०	अ.	३१	२०	तै.	१७	४८	१३	२६	५	७	कर्क			६	२३	६	३४	११	११	४	५०	बुध पूर्व में उदित १४/१८,
३०	३०	११	श.	४६	१४	पु.	८	५८	सु.	२७	५२	व.	१६	३७	१४	२७	६	८	कर्क			६	२२	६	३४	११	१२	४	१३	भ. १६/३७ से ४६/१४तक, कामदा एकादशी (स.),
३०	३५	१२	र.	४७	१०	आश्ले.	१०	३०	धृ.	२५	२२	ब.	१६	४२	१५	२८	७	९	सिं.	१०	३०	६	२१	६	३५	११	१३	३	३३	
३०	४०	१३	चं.	४८	५५	म.	१३	१२	शू.	२३	४५	कौ.	१८	२	१६	२९	८	१०	सिंह			६	१९	६	३५	११	१४	२	५०	गुरु रेव.१ में ५३/१२,अनंग त्रयोदशी, श्री महावीर जयन्ती (F)
३०	४५	१४	मं.	५१	३२	पू.फा.	१९	४५	गं.	२२	४८	ग.	२०	१३	१७	३०	९	११	क.	३२	५३	६	१८	६	३६	११	१५	२	५	भ.५१/३२ बाद, दमनक चतुर्दशी,
३०	४८	१५	बु.	५५	५	उ.फा.	२१	१५	वृ.	२३	०	वि.	२३	१९	१८	३१	१०	१२	कन्या			६	१७	६	३६	११	१६	१	१८	भ. २३/१९ तक, सूर्य रेवती में ३९/७,ओली समाप्त (जैन) (G)

गुरु अस्त (२१ मार्च)

(A) नवरात्र प्रारम्भ, चान्द्र संवत्सर प्रारम्भ, गुरु वार्द्धक्य प्रारम्भ ५४/५३, कलशस्थापन, वर्षफल श्रवण, तैलाभ्यंग, प्रपादान, (B)(प्लूटो)अनु४ में, (C)आन्दोलन तृतीया,जिल्हिज मु.प्रा.,(D) १/५५,उत्तर गोल प्रारम्भ, महाविषुव दिन, गुरुअस्त ५१/००,श्री (लक्ष्मी) पञ्चमी, (देखें पृष्ठ 27), हयव्रत, (E) नवरात्र समाप्त,(F) (जैन),सोम प्रदोष व्रत.(G)चैत्रीपूर्णिमा, श्री सत्यनारायण व्रत, वैशाख स्नान प्रारम्भ

चैत्र शु. ८ बुध, इष्ट ५७/४२

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	२	६	११	११	०	०	३	९
१०	१७	१८	०	१५	१४	८	२६	२६
३	२१	६	२०	२८	५	४४	९	९
१२	२७	९	३६	३२	५३	४६	३३	३३
५९	८१४	५	४३	१४	७२	७	३	३
२७	७	१३	२४	३०	५	४	११	११
-	-	व.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
३	३	४	४	४	१	३	३	१
उ.भा.	आर्द्रा	स्वा.	पू.भा.	उ.भा.	भर.	अश्वि.	आश्ले.	उ.षा.

कुण्डली सूर्योदये

श.१ शु.
सू.१२ बु. गु.
११
२
१० के.
३चं.
९
रा.४
६
८
५
मं. ७

लोक भविष्य-इस संवत् का राजा गुरु है। २१ मार्च को गुरु अस्त होकर शुभ एवं शासकीय गतिविधि में बाधा का संकेत देता है। यह समय राजनैतिक गतिरोध का होने पर भी जन सामान्य के लिए ठीक ही प्रतीत होता है। विश्व के कुछ देश शनि-मंगल के समसप्तक योग के कारण युद्ध-भय का कारण बनेंगे। मंगल का वक्री होना खाद्य वस्तुओं में भयंकर तेजी से जनता में अशान्ति पैदा करे।

<u>ग्रहचाल और बाजार का रुख</u>- पक्षारम्भ में ही मंगल वक्री होकर रुई, सोना, चांदी, अलसी, गेहूं एवं लाल रंग की चीजों में आगे तूफानी तेजी करेगा। राजनैतिक उथल-पुथल की खबरों से भी बाजारों में अफरा तफरी मचेगी। २१ मार्च के लगभग रुई एवं शेयर बाजारों में जोरदार तेजी बनेगी, २६ मार्च के लगभग रुई में मन्दे के बाद तेजी, गेहूं, चना आदि अनाजों, तिल,घी,एवं लाल मिर्च, गुड़ में तेजी का प्रभाव रहे।

कुण्डली सूर्योदये

शु.१ श.
गु. १२ सू.
बु. ११
२
१० के.
३
९
रा.४
चं. ६
८
५
७ मं.

चैत्र शुक्ल १५ बुध, इष्ट ५८/०५

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	५	६	१०	११	०	०	३	९
१६	१७	१७	२७	१७	२२	९	२५	२५
५८	३१	१३	७	१०	२८	३४	४७	५७
३७	२८	३६	९	८	४६	५८	१८	१८
५९	७३०	१०	५	१४	७१	७	३	३
११	३७	३३	२	३१	३०	१८	११	११
-	-	व.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
१		४	३	१	३	३	३	१
रेवती	हस्त ३	स्वा.	पू.भा.	रेवती	भर.	अश्वि.	आश्ले.	धनि.

आकाश लक्षण- मार्च १८,१९,२१,२३,२५,२६ एवं २९ को पूर्वी आसाम, पूर्वी बिहार, बंगाल, बर्मा, हि.प्र. एवं मध्यप्रदेश के कुछ भागों में बादलचाल एवं खण्डवृष्टि के योग हैं। उत्तरी भारत में मौसम साफ रहे एवं तापमान बढ़ने लगे।

शुकुन विचार- यदि चैत्र शुक्ल पंचमी को वर्षा सहित दक्षिण-पूर्व की वायु चले तो उस वर्ष अनाजों में भयंकर तेजी बनती है.-'चैत्रस्य शुक्ल पञ्चम्यां वायुर्दक्षिण-पूर्वयोः। वृष्ट्या सह तदा वर्षे धान्ये त्रिगुणता भवेत् ॥'

श्री वि.सं.२०५६, शाक १९२१,							वैशाख कृष्ण पक्ष २								तारीखें				चन्द्र राशि			चण्डीगढ़				उदय-कालिक				(१ से १६अप्रैल तक, सन् १९९९ ई.) उत्तरायण, उत्तर गोल, वसन्त ऋतु।
दि. मा.		तिथि	वार	समाप्ति काल		नक्षत्र	समाप्ति काल		योग	समाप्ति काल		करण	समाप्ति काल		प्र.	अं.	श	मु	प्रवेश काल			भा.स्टैं.टा.				स्पष्ट सूर्य				ग्रह दर्शन - १६ अप्रैल को बुध प्रातः परम अन्तर (२७°) पर होगा। गुरु अस्त है। मंगल सूर्यास्त समय पूर्व में उदित होकर सारी रात दीखेगा । ९ अप्रैल को शनि पश्चिम में अस्त होगा। सायं शुक्र को पश्चिम में देखें।
															चैत्र	अप्र.	चैत्र.	जिल्हि.				सूर्योदय		सर्यास्त						
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घं.	प.	घं.	मि.	घ.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३०	५०	१	गु.	५९	२५	ह.	२६	३२	ध्रु.	२३	०	बा.	२७	१५	१९	१	११	१३	तु.	५९	३६	६	१६	६	३६	११	१६	०	३०	अप्रैल प्रारम्भ,
३०	५५	२	शु.	६०	००	चि.	३२	४०	व्या.	२४	५	तै.	३२	०	२०	२	१२	१४	तुला			६	१५	६	३७	११	१७	५९	३९	बुध मार्गी २१/४०,
३१	०	२	श.	४	३५	स्वा.	३९	२५	ह.	२५	४२	ग.	४	३५	२१	३	१३	१५	तुला			६	१४	६	३८	११	१८	५८	४५	भ. ३७/३० बाद,
३१	५	३	र.	१०	२५	वि.	४६	४५	व.	२७	४८	वि.	१०	२५	२२	४	१४	१६	वृ.	२९	५५	६	१२	६	३८	११	१९	५७	५०	भ. १०/२५ तक, शुक्र कृत्तिका में २९/२०, शनि अश्वि. (A)
३१	१०	४	च.	१६	३५	अनु.	५४	१५	सि.	३०	५	बा.	१६	३५	२३	५	१५	१७	वृश्चिक			६	११	६	३९	११	२०	५६	५३	
३१	१५	५	मं.	२२	४८	ज्ये.	६०	००	व्य.	३२	२०	तै.	२२	४८	२४	६	१६	१८	वृश्चिक			६	१०	६	४०	११	२१	५५	५४	
३१	२०	६	बु.	२८	३५	ज्ये.	१	३५	व.	३४	१८	व.	२८	३५	२५	७	१७	१९	ध.	१	३५	६	९	६	४१	११	२२	५४	५४	भ. २८/३५बाद, शुक्र वृष में १८/१२,
३१	२८	७	गु.	३३	३५	मू.	८	१८	प.	३५	३२	वि.	१	५	२६	८	१८	२०	धनु			६	७	६	४२	११	२३	५३	५२	भ. १/५ तक,
३१	३०	८	शु.	३७	८	पू.षा.	१३	४८	शि.	३५	४२	बा.	५	२१	२७	९	१९	२१	म.	२९	४७	६	६	६	४२	११	२४	५२	४८	शनि अस्त ९/२,
३१	३५	९	श.	३८	५२	उ.षा.	१७	४५	सि.	३४	३२	तै.	८	०	२८	१०	२०	२२	मकर			६	५	६	४३	११	२५	५१	४२	बुध मीन में ४७/०५,
३१	४०	१०	र.	३८	३८	श्र.	१९	४८	सा.	३१	४८	व.	८	४५	२९	११	२१	२३	कुं.	४९	४८	६	४	६	४४	११	२६	५०	३४	भ. ८/४५ से ३८/३८ तक, पञ्चक प्रारम्भ ४९/४८,
३१	४५	११	च.	३६	१८	ध.	१९	४८	शु.	२७	२५	ब.	७	२४	३०	१२	२२	२४	कुम्भ			६	३	६	४४	११	२७	४९	२५	गुरु रेवती २ में ४१/५२,श्री वल्लभाचार्य जयन्ती, (B)
३१	५०	१२	मं.	३१	५५	श.	१७	४५	शु.	२१	२२	कौ.	४	७	३१	१३	२३	२५	मी.	५९	५४	६	२	६	४५	११	२८	४८	१५	भौम प्रदोष व्रत,
३१	५२	१३	बु.	२५	५०	पू.भा.	१३	५८	ब्रं.	१३	५५	व.	२५	५०	वै.१	१४	२४	२६	मीन			६	०	६	४६	११	२९	४७	३	भ.२५/५० से ५२/८ तक,सं. सूर्य अश्विनी मेष (C)
३१	५८	१४	गु.	१८	१८	उ.भा.	८	३५	ऐं. वै.	५ ५५	११ २७	श.	१८	१८	२	१५	२५	२७	मीन			५	५९	६	४६	०	०	४५	४८	बुध उ.भा. में ०/४२, शुक्र रोहि. में ४८/४५ , विशु (केरल),
३२	३	३०	शु.	९	४२	रे. अ.	२ ५५	८ ०	वि.	४५	१०	ना.	९	४२	३	१६	२६	२८	मे.	२	८	५	५८	६	४७	०	१	४४	३२	पञ्चक समास २/८, मेला पिञ्जौर (हरि.),

(A) ४ में २३/०, श्री गणेश चतुर्थी व्रत, (B) वरुथिनी एकादशी व्रत (स.), (C) में १३/१०, मु३०, पुण्यकाल सारा दिन, वैशाखी (पंजाब), डा. अम्बेदकर जयन्ती,

वैशाख कृष्ण ८ शुक्र, इष्ट ५८/३०

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	९	६	१०	११	१	०	३	९
२५	५	१५	२९	१९	३	१०	२५	२५
५०	५६	१२	२९	२०	९	४१	१८	१८
१७	६	३१	२	३९	२	३३	४२	४२
५८	७६६	१६	३८	१४	७०	७	३	३
५५	१२	५३	३७	२८	४१	३१	११	११
-	-	व.	मा.	मा	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.	अ.
३	३	३	३	१	१	४	३	१
रेवती	उ.षा.	स्वा.	पू.भा.	रेवती	कृत्तिका.	अश्वि.	आश्ले.	धनि.

कुण्डली सूर्योदये

१ श.
१२ सू.गु.
११बु.
१० के.
शु. २
३
९चं.
रा. ४
६
८
५
मं. ७

लोक भविष्य- इस चान्द्रमास में पांच गुरुवार एवं पांच शुक्रवारों का होना पश्चिमी देशों में कहीं युद्धाग्नि को प्रज्वलित करेगा। भारत में सुख-समृद्धि रहे.- **'यत्र मासे पंचवाराः जायन्ते च बृहस्पतेः। विग्रहः पश्चिमे देशे खड्गयुद्धं च जायते॥'** पक्ष मध्य में वृष राशि का शुक्र सुभिक्ष, प्रजा में सुख का संकेत देता है, लेकिन शनि-मंगल का समसप्तक कहीं राजनैतिक-स्थिति को पेचीदा बनाए एवं कहीं राजनैतिक अशान्ति किंवा राजनैतिक हत्याकाण्ड से वातावरण क्षुब्ध हो।

ग्रहचाल और बाजार का रुख- रुई में पहले मन्दी, बाद में तेजी बने. चांदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी, गेहूं, जौ, चना आदि अनाज एवं अलसी एरण्ड, गुड़, बिनौला, मूंगफली आदि तिलहन, तेलों एवं सुगन्धित चीजों में तेजी बनेगी। ७ से १२ अप्रैल तक रुई,कपास, एवं शेयर बाजार मन्दे हों, तेल तिलहन एवं अनाज तेज रहें। १४ अप्रैल के लगभग तेल, तिलहन, सुपारी हींग, मेथी, लौंग, इलायची बादाम, ...

आकाश लक्षण- अप्रैल २,४,७,१०,१४ को सिक्किम, आसाम, राजस्थान, एवं हि.प्र. के कुछ भागों में बादलचाल व बूंदाबांदी के योग हैं। अप्रैल ७,९,१० को हवा का जोर रहे। उत्तरी भारत में तापमान बढ़े।

शकुन विचार- वैशाख कृष्ण एकादशी को यदि आकाश मेघाछन्न रहे, तो अन्नाजों का स्टाक निकाल दें,अन्यथा हानि होगी ।

कुण्डली सूर्योदये

२शु.
१ सू. श.
च.१२ बु. गु.
११
३
४ रा.
१० के.
५
७ मं.
९
६
८

वैशाख कृष्ण ३० शुक्र, इष्ट ५८/५३

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श	रा	के.
०	०	६	११	११	१	०	३	९
२	१४	१३	५	२१	११	११	२४	२४
४२	१६	२	१२	१	२१	३४	५६	५६
८	५६	२२	३९	३६	४२	२९	२६	२६
५८	९१०	२०	६१	१४	६९	७	३	३
४२	६	३४	३१	२१	५७	३८	११	११
-	-	व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	..	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.	अ.
१	१	३	१	३	१	४	३	१
अश्वि.	भर.	स्वा.	उ.भा.	रेवती	रो.	अश्वि.	आश्ले.	धनि.

श्री वि.सं.२०५६, शाक १९२१, **वैशाख शुक्ल पक्ष ३** — तारीखें — चन्द्र राशि — चण्डीगढ़ — उदय-कालिक — (१७ से ३० अप्रैल तक, सन् १९९९ ई.) उत्तरायण, उत्तर गोल, वसन्त ग्रीष्म ऋतु।

ग्रह दर्शन -२१ अप्रैल को गुरु सूर्योदय से पहिले पूर्व में दृश्य हो जाएगा। सायं मंगल पश्चिम में होगा। इस समय शुक्र को पश्चिम में और सूर्योदय से पहिले बुध को पूर्व में देखें। शनि अस्त है।

दि. मा. घ.	दि. मा. प.	तिथि	वार	समाप्ति घ.	काल प.	नक्षत्र	समाप्ति घ.	काल प.	योग	समाप्ति घ.	काल प.	करण	समाप्ति घ.	काल प.	तारीखें प्र. वैशा.	अं. अप्रै.	श. चैत्र	मु. जिलहि.	चन्द्र राशि प्रवेश काल	घ.	प.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सर्यास्त घं.	सर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
३२	८	१	श.	०	३५	भ.	४७	४८	प्री.	३५	४५	ब.	०	३५	४	१७	२७	२९	मेष			५	५७	६	४८	०	२	४३	१४	चन्द्र दर्शन मु. १५, श्री शिवाजी जयन्ती,
अवम		२	श.	५१	१८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	द्वितीया तिथिक्षय,
३२	१३	३	र.	४२	२५	कृ.	४०	५२	आ.	२४	३०	तै.	१६	५२	५	१८	२८	१मु	वृ.	१	४	५	५६	६	४८	०	३	४१	५३	श्री परशुराम जयंती, अक्षय तृतीया, केदार बद्रीनाथ (A)
३२	१५	४	चं.	३३	५५	रो.	३४	४२	सौ.	१४	४५	व.	८	१०	६	१९	२९	२	वृष			५	५५	६	४९	०	४	४०	३१	भ.८/१०से ३३/५५तक,अगस्त्य अस्त,
३२	१७	५	मं.	२७	२२	मृ.	२९	४२	शो.	५	५०	ब.	०	३९	७	२०	३०	३	मि.	२	१२	५	५४	६	४९	०	५	३९	७	सूर्य सायन वृष में ३०/५५,ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ, (B)
									अ.	५८	२																			
३२	२२	६	बु.	२१	५०	आ.	२६	१०	सु.	५१	३०	तै.	२१	५०	८	२१	वै.१	४	मिथुन			५	५३	६	५०	०	६	३७	४१	शक वैशाख प्रारम्भ,गुरु उदित २५/०३,(C)
३२	२८	७	गु.	१७	५८	पुन.	२४	१८	धृ.	४६	२२	व.	१७	५८	९	२२	२	५	क.	९	४६	५	५२	६	५१	०	७	३६	१४	भ.१७/५८से ४६/५२ तक,श्री गंगा जन्म,
३२	३०	८	शु.	१५	४५	पु.	२४	२	शू.	४२	३५	ब.	१५	४५	१०	२३	३	६	कर्क			५	५१	६	५१	०	८	३४	४३	
३२	३५	९	श.	१५	१५	आश्ले.	२५	२८	गं.	४०	५	कौ.	१५	१५	११	२४	४	७	सिं.	२५	२८	५	५०	६	५२	०	९	३३	१०	गुरु बाल्य-समाप्त २५/०७, श्री जानकी जयन्ती, [गुरु उदित २१ अप्रैल]
३२	४०	१०	र.	१६	१५	म.	२८	२०	वृ.	३८	४२	ग.	१६	१५	१२	२५	५	८	सिंह			५	४९	६	५३	०	१०	३१	३५	भ.४७/२४ बाद,
३२	४५	११	चं.	१८	३२	पू.फा.	३२	२५	ध्रु.	३८	१८	वि.	१८	३२	१३	२६	६	९	क.	४८	४१	५	४८	६	५३	०	११	२९	५७	भ.१८/३२ तक,बुध रेव. में ३१/५०,गुरु रेव. ३ में (D)
३२	४७	१२	मं.	२१	५८	उ.फा.	३७	३०	व्या.	३८	४०	बा.	२१	५८	१४	२७	७	१०	कन्या			५	४७	६	५४	०	१२	२८	१७	सूर्य भर. में ५३/८, शुक्र मृग. में २०/१८, भौम प्रदोष व्रत,
३२	५२	१३	बु.	२६	१५	ह.	४३	२५	ह.	३९	४२	तै.	२६	१५	१५	२८	८	११	कन्या			५	४६	६	५५	०	१३	२६	३६	श्री नृसिंह जयन्ती(प्रदोष व्यापिनी चतुर्दशी),
३२	५५	१४	गु.	३१	१२	चि.	४९	५५	व	४२	१	व.	३१	१२	१६	२९	९	१२	तु.	१६	४०	५	४५	६	५५	०	१४	२४	५३	भ. ३१/१२ बाद
३३	०	१५	शु.	३६	४०	स्वा.	५६	५२	सि.	४३	२	वि.	३	५६	१७	३०	१०	१३	तुला			५	४४	६	५६	०	१५	२३	८	भ. ३/५६ तक, शनि भर. में ४६/२०(E)

(A) यात्रा प्रारम्भ, मुहर्रम (हिजरी सन् १४२०) प्रारम्भ,(B), आद्य जगद्गुरु श्री शंकराचार्य जयंती,(C)श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती (उत्तर भारत),(D)४२/१२, मोहिनी एकादशी व्रत (स.),(E) वैशाखी पूर्णिमा, बुद्ध पूर्णिमा, श्री सत्यनारायण व्रत, श्री कूर्मजयन्ती, वैशाख स्नान समाप्त,

वैशा. शु. ८ शुक्र, इष्ट ५८।१०

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	३	६	११	११	१	०	३	९
९	२४	१०	१३	२२	१९	१२	२४	२४
३२	१८	३१	१६	४१	२८	२७	३४	३४
२०	३९	४५	२१	३२	५७	५९	११	११
५८	७७१	२२	७८	१४	६९	७	३	३
२८	४४	२२	२३	१०	६	४०	११	११
-	-	व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
३ कृ.	३ आर्द्रा	२ स्वा.	३ उ.भा.	२ रेवती	३ रे.	४ आश्ले.	३ आर्द्रा	१ धनि.

कुण्डली सूर्योदये

२ शु. | १ सू. श. | गु.१२ बु | ११ | १० के. | ९ | ८ | ७ मं. | ६ | ५ | ४ रा. चं. | ३

लोक भविष्य- मीन राशि में गुरु का उदय एवं शनि-मंगल का परस्पर दृष्टि सम्बन्ध कहीं युद्ध,भय, सत्तासंघर्ष एवं राजनैतिक-अस्थिरता का संकेत देता है : -'मीनेऽल्पवृष्टिरवनीश्वर-युद्ध योगः पीड़ा जनस्य मकरान्नरकानुरूपा ॥' पक्षान्त में भरणी नक्षत्र का शनि जलयात्रा करने वाले व्यक्तियों के लिए कष्टप्रद है। कहीं अकस्मात् समुद्री तूफान से हानि हो।

ग्रहचाल और बाजार का रुख- पक्षारम्भ में रुई, सूत, सोना-चांदी, सरसों, मूंगफली आदि में अच्छी तेजी बने। २१ अप्रैल के लगभग व्यापारिक-वस्तुओं में तेजी बने। २६ अप्रैल के लगभग रुई में विशेष घटाबढ़ी हो। लाल चन्दन, कुसुम्भ, गेरु, लाल मिर्च में तेजी बने। पक्षान्त में गुड़, खाण्ड, शक्कर तेज रहें।

कुण्डली सूर्योदये

२ शु. | १ सू. श. | बु.१२ गु. | ११ | १० के. | ९ | ८ | ७ चं.मं. | ६ | ५ | ४ रा. | ३

वैशा. शु. १५ शुक्र, इष्ट ५९/२५

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	६	६	११	११	१	०	३	९
१६	२०	७	२३	२४	२७	१३	२४	२४
२०	२९	५४	८	२०	२९	२१	११	११
४९	२२	५३	७	३	४७	३९	५६	५६
५८	७१३	२२	९२	१३	६८	७	३	३
१४	४९	३	२६	५६	७	३९	११	११
-	-	व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
१ भर.	१ विशा.	१ स्वा.	२ रेवती	३ रेवती	२ मृग.	१ भर.	३ आर्द्रा	१ धनि.

आकाश लक्षण- अप्रैल २६,२७ एवं ३० को राजस्थान, उत्तर प्रदेश, आसाम, महाराष्ट्र के किसी भाग एवं हि.प्र. में कहीं बादलचाल व वर्षा के योग हैं।

शुकन विचार- बैशाख शुक्ल पंचमी को यदि दिनभर बादल रहें, एवं मेघ गरजें तो भाद्रपद में धान्य महंगा हो। तुरन्त लाभ लें।

श्री वि.सं.२०५६, शाक १९२१,	प्र. ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष ४	तारीखें	चन्द्र राशि	चण्डीगढ़	उदय-कालिक	(१ से १५ मई तक, सन् १९९९ ई.) उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतु।

दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति घ.	काल प.	नक्षत्र	समाप्ति घ.	काल प.	योग	समाप्ति घ.	काल प.	करण	समाप्ति घ.	काल प.	प्र.	अं.	श.	मु.	प्रवेश काल	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	ग्रह दर्शन - १४ मई को बुध पूर्व में दीखना बन्द हो जाएगा। १५ मई को शनि पूर्व में दीखने लगेगा। सायं मंगल पूर्व में होगा। सायं शुक्र पश्चिम कपाल में देदीप्यमान, प्रात: शनि एवं गुरु पूर्व में होंगे ।
३३	५	१	श.	४२	३०	वि.	६०	००	व्य.	४५	३७	बा.	९	३५	१८	१	११	१४	वृ.	४७	२२	५	४३	६	५७	०	१६	२१	२१	मई दिवस, मई प्रारम्भ,
३३	७	२	र.	४८	३५	वि.	४	१२	व.	४७	३२	तै.	१५	३२	१९	२	१२	१५	वृश्चिक			५	४२	६	५७	०	१७	१९	३३	
३३	१२	३	चं.	५४	४०	अनु.	११	४०	प.	४९	५२	व.	२१	३७	२०	३	१३	१६	वृश्चिक			५	४१	६	५८	०	१८	१७	४१	भ.२१/३८ से ५४/४० तक, शुक्र मिथुन में ११/५८,
३३	१५	४	मं.	६०	००	ज्ये.	१९	२	शि.	५२	५	ब.	२७	३६	२१	४	१४	१७	ध.	१९	२	५	४०	६	५९	०	१९	१५	४८	वक्री मंगल चित्रा में २६/८,श्री गणेश चतुर्थी व्रत,
३३	२०	४	बु.	०	३२	मू.	२६	५	सि.	५३	५०	बा.	०	३२	२२	५	१५	१८	धनु			५	३९	६	५९	०	२०	१३	५५	बुध अश्वि. मेष में १८/०५,
३३	२२	५	गु.	३	१५	पू.षा.	३२	१८	सा.	५४	४८	तै.	३	१५	२३	६	१६	१९	म.	४८	३४	५	३९	७	०	०	२१	१२	०	नेपच्यून वक्री ५६/२८,
३३	२८	६	शु.	९	५५	उ.षा.	३७	२५	शु.	५४	४८	ब.	९	५५	२४	७	१७	२०	मकर			५	३८	७	१	०	२२	१०	४	भ.९/५५ से ४१/१८ तक,
३३	३०	७	श.	१२	४०	श्र.	४१	०	शु.	५३	२८	व.	१२	४०	२५	८	१८	२१	मकर			५	३७	७	१	०	२३	८	६	
३३	३५	८	र.	१३	३५	ध.	४२	४२	ब्र.	५०	३८	कौ.	१३	३५	२६	९	१९	२२	कुं.	११	५१	५	३६	७	२	०	२४	६	७	पञ्चक प्रारम्भ ११/५१, शुक्र आर्द्रा में ८/२५,जन्मदिन (A)
३३	३७	९	चं.	१२	३२	श.	४२	२२	ऐं.	४६	८	ग.	१२	३२	२७	१०	२०	२३	कुम्भ			५	३५	७	३	०	२५	४	८	भ.४०/५६ बाद,
३३	४२	१०	मं.	९	२२	पू.भा.	४०	०	वै.	३९	५८	वि.	९	२२	२८	११	२१	२४	मी.	२५	३६	५	३५	७	३	०	२६	२	७	भ ९/२२ तक, सूर्य कृत्तिका में ३९/८, गुरु रेवती ४ में (B)
३३	४५	११	बु.	४	१५	उ.भा.	३५	५०	वि.	३२	१८	बा.	४	१५	२९	१२	२२	२५	मीन			५	३४	७	४	०	२७	०	५	बुध भरणी में ४७/४०, अपरा एकादशी व्रत (वै.) (C)
अवम		१२	बु.	५७	२२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	द्वादशी तिथिक्षय
३३	४८	१३	गु.	४९	८	रे.	३०	५	प्री.	२३	२०	ग.	२३	१५	३०	१३	२३	२६	मे.	३०	५	५	३३	७	५	०	२७	५८	०	भ. ४९/८ बाद, पञ्चक समाप्त ३०/५, प्रदोष व्रत,
३३	५३	१४	शु.	३९	५०	अ.	२३	८	आ.	१३	१८	वि.	१४	२९	३१	१४	२४	२७	मेष			५	३३	७	५	०	२८	५५	५५	भ. १४/२९ तक,बुध पूर्व में अस्त १०/२०,
३३	५५	३०	श.	३०	५	भ.	१५	३२	सौ. शो.	२ ५१	४२ ५०	च.	४	५७	ज्ये.१	१५	२५	२८	वृ.	२८	३३	५	३२	७	६	०	२९	५३	४९	सूर्य वृष में ६/२०, मु. १५, पुण्यकाल २२/२०तक ,(D)

(A) श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर,(B)१०/२५, अपरा एकादशी व्रत(स्मा.), भद्रकाली एकादशी (पंजाब),(C) त्रिस्पृशा महाद्वादशी,(D) शनि उदित ३८/४०, वट सावित्री व्रत (अमा पक्ष),भावुका अमावस, शनैश्चरी अमा,

प्र.ज्येष्ठ कृष्ण ८ रवि, इष्ट ५९/४५

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	१०	६	०	११	२	०	३	९
२५	१०	४	८	२६	७	१४	२३	२३
३	२४	४७	८	२४	३७	३०	४३	४३
५६	४४	४१	३५	०	५	१९	२०	२०
५८	८१२	१८	१०१	१३	६६	७	३	३
१	५१	३९	३५	३४	३८	३४	११	११
-	-	व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
४	२	४	३	३	१	१	३	१
भर.	मृग.	चित्रा	अश्वि.	चित्रा	आर्द्रा	भर.	आर्द्रा	मूल

कुण्डली सूर्योदये

२ | १२गु. | ३ शु. | बु.१ सू.श. | ११ | ४ रा. | १०चं. के. | ५ | ७ मं. | ९ | ६ | ८

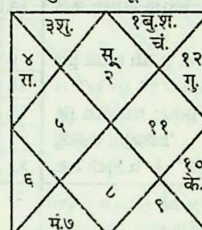
लोक भविष्य- इस पक्ष में मिथुन राशि का शुक्र खाद्य एवं अन्य दैनिक जनजीवनोपयोगी वस्तुओं में मंहगाई से जनता में रोष करे। चित्रा नक्षत्र का मंगल जनता में विशेष प्रकार के रोगों से कष्ट का संकेत देता है। इस मास में ५ शनिवार होने से कहीं भूकम्प से भारी हानि , कहीं भयंकर अग्निकाण्ड से जनधन हानि का संकेत मिलता है- **'शनैश्च पंचकं दृष्ट्वा पाताले कम्पते फणी। ईशानदेश-भंगश्च वह्निदाहो महर्घता॥'**

ग्रहचाल और बाजार का रुख- पक्षारम्भ में रुई, कपास, सूत, वारदाना, एरण्ड, तिल, तेल, सरसों, अरहर गुआर आदि में काफी मन्दा बने। अनाज तेज रहें। ४ मई के लगभग चांदी, तांबा, पीतल, सोना तेज हों। ९ मई के लगभग अनाजों में अचानक मन्दा आ सकता है। वायदा व्यापारी १४ मई को सावधानी से काम करें अन्यथा हानि रहे।

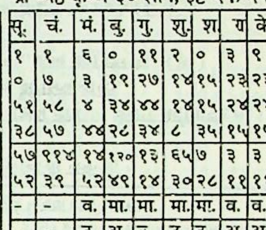
आकाशलक्षण- [illegible] ऊँचा रहे। १४ मई के लगभग कहीं वायुवेग के साथ वर्षा हो।

शुकन विचार- ज्येष्ठ कृष्ण द्वितीया को यदि दक्षिण की हवा चले तो घी, तिल, तेल के स्टाक से आश्विन में लाभ रहे ।

कुण्डली सूर्योदये



प्र. ज्येष्ठ कृष्ण ३० शनि, इष्ट ५९/५५



सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१	६	०	११	२	०	३	९
०	७	३	१९	२७	१४	१५	२३	२३
५१	५८	४	३४	४४	१४	१५	२४	२४
३८	५७	४४	२८	३४	८	३५	१५	१५
५७	११४	१४	१२०	१३	६५	७	३	३
५२	३९	५२	४९	१४	३०	२८	११	११
-	-	व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
२	४	३	२	४	३	१	३	१
कृ.	कृ.	चित्रा	भर.	चित्रा	आर्द्रा	भर.	आर्द्रा	मूल

श्री वि.सं.२०५६, शाक १९२१,	प्र.(अधि.) ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष ५	तारीखें	चन्द्र राशि	चण्डीगढ़	उदय-कालिक	(१६से ३० मई तक, सन् १९९९ ई.) उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतु।

दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति घ.	काल प.	नक्षत्र	समाप्ति घ.	काल प.	योग	समाप्ति घ.	काल प.	करण	समाप्ति घ.	काल प.	प्र. ज्येष्ठ	अं. मई	श. ज्येष्ठ	मु. मुहर्रम	चन्द्र राशि प्रवेश काल	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	ग्रह दर्शन - बुध अस्त है। सायं मंगल पूर्व में होगा। प्रातः शनि एवं गुरु पूर्व में होंगे। शुक्र को सायं पश्चिम में देखें ।
३३	५८	१	र.	२०	१८	कृ.	७	४८	अ.	४१	८	ब.	२०	१८	२	१६	२६	२९	वृष			५	३१	७	७	१	०	५१	४१	चन्द्र दर्शन मु.४५,पुरुषोत्तम(मल,अधिक)मासारम्भ,
३४	०	२	चं.	१०	५५	रो. मृ.	० ५३	१८ ३८	सु.	३०	५२	कौ.	१०	५५	३	१७	२७	स.१	मि.	२६	५८	५	३१	७	७	१	१	४९	३३	राहु आश्ले. २,केतु श्रव.४में २०/२५, सफर मु.प्रारम्भ,
३४	५	३	मं.	२	२५	आ.	४८	१५	धृ.	२१	३५	ग.	२	२५	४	१८	२८	२	मिथुन			५	३०	७	८	१	२	४७	२२	भ.२८/४८ से ५५/१२ तक,
अवम		४	मं.	५५	१२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्थी तिथिक्षय,
३४	७	५	बु.	४९	३५	पुन.	४४	२२	शू.	१३	२५	ब.	२२	२४	५	१९	२९	३	क.	३०	२०	५	३०	७	८	१	३	४५	१०	बुध कृति. में २७/४२,
३४	१०	६	गु.	४५	५२	पु.	४२	२५	गं.	६	४२	कौ.	१७	४३	६	२०	३०	४	कर्क			५	२९	७	९	१	४	४२	५५	
३४	१२	७	शु.	४४	५	आश्ले.	४२	२०	वृ. धु.	१ ५७	३० ५२	ग.	१४	५८	७	२१	३१	५	सिं.	४२	२०	५	२९	७	१०	१	५	४०	३९	भ.४४/५बाद, बुध वृष में २/२०,यूरेनस वक्री ५४/३०, (A)
३४	१५	८	श.	४४	१५	म.	४४	१०	व्या	५५	४८	वि.	१४	१०	८	२२	ज्ये.१	६	सिंह			५	२८	७	१०	१	६	३८	२२	भ. १४/१० तक, शक ज्येष्ठ प्रारम्भ,
३४	१८	९	र.	४६	८	पू.फा.	४७	४०	ह.	५५	०	बा.	१५	१२	९	२३	२	७	सिंह			५	२८	७	११	१	७	३६	३	
३४	२०	१०	चं.	४९	२८	उ.फा.	५२	३८	व.	५५	२०	तै.	१७	४८	१०	२४	३	८	क.	३	५४	५	२७	७	१२	१	८	३३	४३	श्री गंगादशहरा,
३४	२२	११	मं.	५३	५५	ह.	५८	३८	सि.	५६	३०	व.	२१	४१	११	२५	४	९	कन्या			५	२७	७	१२	१	९	३१	२१	भ. २१/४२से ५३/५५ तक, सूर्य रोहि. में २९/४५,बुध (B)
३४	२५	१२	बु.	५९	१२	चि.	६०	००	व्य.	५८	१८	ब.	२६	२८	१२	२६	५	१०	तु.	३२	२	५	२६	७	१३	१	१०	२८	५७	गुरु अश्विनी १ मेष में २७/३०,
३४	२८	१३	गु.	६०	००	चि.	५	२५	व.	६०	००	कौ.	३२	०१	१३	२७	६	११	तुला			५	२६	७	१३	१	११	२६	३२	शनि भर. २ में २९/२, प्रदोष व्रत,
३४	३०	१३	शु.	५	२	स्वा.	१२	३५	व.	०	२५	तै.	५	२	१४	२८	७	१२	तुला			५	२६	७	१४	१	१२	२४	६	
३४	३२	१४	श.	१०	५२	वि.	१९	५८	प.	२	४५	व.	१०	५२	१५	२९	८	१३	वृ.	३	१०	५	२५	७	१५	१	१३	२१	३९	भ.१०/५२ से ४३/५१ तक,श्री सत्यनारायण व्रत,
३४	३५	१५	र.	१६	५०	अनु.	२७	१८	शि.	५	५	ब.	१६	५०	१६	३०	९	१४	वृश्चिक			५	२५	७	१५	१	१४	१९	११	शुक्र कर्क में ४९/१५,

(A) सूर्य सायन मिथुन में २९/४२,शुक्र पुन. में १९/५, (B) रोहि. में ३८/५५,पुरुषोत्तमा एकादशी व्रत (स.),

प्र.(अधि.)ज्येष्ठ शुक्ल,८ शनि,इष्ट०/६

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१ ६ ३८ २६	४ ३ ३० ३८	६ १ ४६ ४६	१ २ ३ २६	११ २९ ३ ७	२ २० ४३ ४९	० १६ ० ७	३ २३ ५ ११	९ २३ ५ ११
५७ ४२	७९० ३०	१० १७	१२१ ३८	१२ ५२	६४ ७	७ २०	३ ११	३ ११
-	-	व.	मा.	मा	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
३ कृ.	२ मघा	३ चित्रा	२ कृ.	४ रेवती	१ पुन.	१ भर.	२ आश्ले.	४ श्रव.

कुण्डली सूर्योदये

भाव	ग्रह
४	रा.
२	सू. बु.
३	शु.
१	श.
१२	गु.
११	
५	चं.
१०	के.
६	
८	
७	मं.
९	

लोक भविष्य-ज्येष्ठ अधिक मास होने से कहीं विशिष्ट राजनीतिज्ञ के अपदस्थ होने व मृत्यु से शोक व्याप्त हो-
'ज्येष्ठ द्वये नृपध्वंसो धान्यनिष्पत्तिरुत्तमा।' धान की उत्पत्ति अच्छी हो। पक्षान्त में मेष राशि का गुरु प्रजा में सुभिक्ष, क्षेम आरोग्य करता है-
'यदा सुरगुरुर्मेषे सुखं सर्वजनेषु च। सुभिक्षं क्षेममारोग्यं सुखिनी मेदिनी भवेत्।।' परन्तु शनि के साथ मंगल का दृष्टि संबंध होने से रोग, एवं महंगाई विशेष मालूम देती है।

ग्रहचाल और बाजार का रुख- पक्षमध्य में (२१ मई के लगभग) प्रायः सभी वस्तुओं में घटावढ़ी चले। गेहूं, जौ, चना, चावल, कपास, सूत, तिलहन एवं तेलों में तेजी रहे। २६ मई के लगभग गुरु के मेष राशि में आने पर ६०/७० रूपये की घटावढ़ी रई में बनेगी। सोना-चांदी,तांबा, गुड़ आदि में भी मन्दे के आसार बन कर बाजार ऊपर नीचे रहे। मन्दे में खरीदें, तेजी में बेचें।

कुण्डली सूर्योदये

भाव	ग्रह
४	रा.
३	शु.
२	सू. बु.
१	गु. श.
१२	
११	
५	
१०	के.
८	चं.
६	
७	मं.
९	

प्र.(अधि.)ज्येष्ठ शुक्ल१५ रवि, इष्ट ०/१२

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१ १४ १९ २२	७ ११ १६ ५५	६ ० ४७ ९	१ १९ ३२ १६	० ० ४४ १२	२ २९ ९ २०	० १६ ५७ ५९	३ २२ ३९ ४४	९ २२ ३९ ४४
५७ ३२	७१३ २४	३ ४८	१२९ ५२	१२ १९	६१ ५३	७ ६	३ ११	३ ११
-	-	व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
२ रो.	३ अनु.	३ चित्रा	३ रो.	१ अश्वि.	३ पुन.	२ भर.	२ आश्ले.	४ श्रव.

आकाश लक्षण- मई १७,१९,२१,२६,२७,३० को महाराष्ट्र(बम्बई),बंगाल, आसाम, आदि में कहीं भारी वर्षा हो। कहीं भारी वायुवेग से हांनि भी संभव है।

शकुन विचार- यदि टटीहरी पक्षी सूखे गोबर, सूखा घास या हड्डियों के ढेर में अण्डे दे तो पशुओं का नाश हो, अकाल, महामारी से जनता कष्ट पाए ।

श्री वि.सं.२०५६, शाक १९२१, द्वि.(अधि.)ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष ६ | तारीखें | चन्द्र राशि | चण्डीगढ़ | उदय-कालिक | (३१मई से १३ जून तक,सन् १९९९ ई.) उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतु।

ग्रह दर्शन - ७ जून को बुध सायंकाल पश्चिम में दीखने लगेगा। २१ जून के लगभग सायं शुक्र सूर्य से परमाधिक अन्तर (लगभग ४६°)पर होगा। सायं मंगल खमध्य की ओर आता दीखेगा। प्रातः गुरु एवं शनि पूर्व में होंगे।

दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	प.	योग	समाप्ति काल घ.	प.	करण	समाप्ति काल घ.	प.	प्र. ज्येष्ठ	अं. मई	श. ज्येष्ठ	मु. सफर	चन्द्र राशि प्रवेश काल	घ.	प.	भा.स्टैं.टा. सूर्योदय घं.	मि.	सर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
३४	३५	१	चं.	२२	४०	ज्ये.	३४	३०	सि.	७	२२	कौ.	२२	२८	१७	३१	१०	१५	ध.	३४	३०	५	२५	७	१५	१	१५	१६	४२	बुध मृग. में ४५/४२,
३४	३८	२	मं.	२८	८	मू.	४१	२०	सा.	९	२५	ग.	२८	८	१८	जून	११	१६	धनु			५	२५	७	१६	१	१६	१४	११	जून प्रारम्भ,
३४	३८	३	बु.	३३	२	पू.षा.	४७	३५	शु.	११	२	व.	०	३५	१९	२	१२	१७	धनु			५	२५	७	१६	१	१७	११	३९	भ.०/३५ से ३३/२ तक,
३४	४२	४	गु.	३७	१०	उ.षा.	५३	२	शु.	१२	१०	ब.	५	६	२०	३	१३	१८	म.	३	५७	५	२४	७	१७	१	१८	९	७	बुध मिथुन में ५६/१८, शुक्र पुष्य में ५/१० (A)
३४	४२	५	शु.	४०	१०	श्र.	५७	१८	ब्र.	१२	३२	कौ.	८	४०	२१	४	१४	१९	मकर			५	२४	७	१७	१	१९	६	३४	मंगल मार्गी १६/०,
३४	४५	६	श.	४१	४५	ध्र.	६०	००	ऐं.	११	५५	ग.	१०	५७	२२	५	१५	२०	कुं.	२८	४२	५	२४	७	१८	१	२०	४	०	भ. ४१/४५ बाद, पञ्चक प्रारम्भ २८/४२,
३४	४५	७	र.	४१	४५	ध.	०	८	वै.	१०	५	वि.	११	४५	२३	६	१६	२१	कुम्भ			५	२४	७	१८	१	२१	१	२५	भ.११/४५ तक,
३४	४८	८	चं.	३९	५५	श.	१	२०	वि.	६	५५	बा.	१०	५०	२४	७	१७	२२	मीं.	४५	५३	५	२४	७	१९	१	२१	५८	५०	बुध आर्द्रा में १६/५२, बुध पश्चिम में उदित ५२/१५,
३४	४८	९	मं.	३६	१८	पू.भा. उ.भा.	० ५८	४५ २०	प्रीं. आ.	२ ५६	१८ १०	तै.	८	७	२५	८	१८	२३	मीन			५	२४	७	१९	१	२२	५६	१५	सूर्य मृग. में २४/४५,
३४	५२	१०	बु.	३०	५५	रे.	५४	१८	सौ.	४८	४२	व.	३	३६	२६	९	१९	२४	मे.	५४	१८	५	२३	७	२०	१	२३	५३	३९	भ. ३/३६ से ३०/५५ तक, पञ्चक समाप्त ५४/१८,
३४	५२	११	गु.	२४	०	अ.	४८	४५	शो.	४०	२	बा.	२४	०	२७	१०	२०	२५	मेष			५	२३	७	२०	१	२४	५१	२	पुरुषोत्तमा एकादशी व्रत (स॰),
३४	५५	१२	शु.	१५	५०	भ.	४२	१२	अ.	३०	२५	तै.	१५	५०	२८	११	२१	२६	वृ.	५५	२३	५	२३	७	२१	१	२५	४८	२५	प्रदोषव्रत,
३४	५५	१३	श.	६	४८	कृ.	३४	५८	सु.	२०	१०	व	६	४८	२९	१२	२२	२७	वृष			५	२३	७	२१	१	२६	४५	४७	भ.६/४८से ३२ / ४ तक, गुरु अश्वि.२ में १०/१८,
अवम		१४	श.	५७	२०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्दशी तिथिक्षय,
३४	५५	३०	र.	४७	५२	रो.	२७	३२	धृ. शू.	९ ५९	३८ १२	च.	२२	३६	३०	१३	२३	२८	मि.	५३	५९	५	२३	७	२१	१	२७	४३	९	पुरुषोत्तम (मल) मास समाप्त,

(A) श्री गणेश चतुर्थी व्रत,

द्वि.(अधि.) ज्येष्ठ कृ.८चन्द्र,इष्ट०/१५

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१०	६	२	०	३	०	३	९
२१	१९	०	६	२	७	१७	२२	२२
५९	४४	३९	७	२०	१५	५३	४	४
६	५६	४	४१	३३	९	४१	१८	१८
५७	८०७	२	११५	११	५९	६	३	३
२५	४८	३१	२७	४१	७	४७	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

कुण्डली सूर्योदये

बु. ३ | १ गु. श. | शु.४ रा. | सू.२ | १२ | ५ | ११ चं. | ६ | ८ | १० के. | ७ मं. | ९

लोक भविष्य-मंगल मार्गी होकर वर्षा से कहीं भारी हानि करे लेकिन बहुत से क्षेत्र वर्षा के अभाव से आगे सूखाग्रस्त भी घोषित हो सकते हैं। पक्षमध्य में बुध का मिथुन में उदय अनावृष्टि का संकेत देता है। फिर भी इस मास में पांच चन्द्रवार होने से जनता में विशेष निराशाजनक स्थिति न बने, शासन समुचित प्रवन्ध करे।- **'सोमस्य पंचवारास्तु यत्र मासे भवन्ति हि। धनधान्य समृद्धिःस्यात्सुखं भवति सर्वदा॥'**

ग्रहचाल और बाजार का रुख- ४जून के लगभग (तीन दिन के बाद) रुई में बहुत मन्दा संभावित है, तेल, चांदी में तेजी बने। वायदा बाजार का रुख बदले, यदि पहले मन्दा है तो तेजी, यदि बाजार तेज हैं तो मन्दा आएगा। ७ जून के लगभग रुई व शेयर बाजार में १५ दिन में भारी मन्दा संभावित है। पक्षान्त में रुई में तेजी, सोना चांदी में घटाबढ़ी के बाद मन्दा बने।

कुण्डली सूर्योदये

३ बु. | १ गु. श. | शु.४ रा. | सू. २ चं. | १२ | ५ | ११ | ६ | ८ | १० के. | ७ मं. | ९

द्वि.(अधि.)ज्येष्ठ कृ.३०रवि, इष्ट०/१७

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१	६	२	०	३	०	३	९
२७	१६	१	१७	३	१३	१८	२१	२१
४३	२४	५	४	२९	३	३३	५५	५५
२६	३३	२५	१०	१८	४५	४३	१३	१३
५७	१११	६	१००	११	५६	६	३	३
२१	१३	५८	४०	८	३५	३०	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

आकाश लक्षण- जून ४,५,७,८,१२ को सिक्किम, भूटान, शिलांग, आसाम, एवं महाराष्ट्र में कहीं बाढ़ की स्थिति बने, उत्तरी भारत में कहीं बूंदाबांदी व बादलचाल से तापमान गिरे।

शकुन विचार- टटीहरी पक्षी यदि अपने अण्डे ऊंची भूमि पर धरे तो वर्षा बहुत हो, नीचे धरे तो वर्षा बहुत कम हो, यदि अण्डे नदी, तालाब

श्री वि.सं.२०५६, शाक १९२१,	द्वि- (शुद्ध) ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष ७	तारीखें	चन्द्र राशि	चण्डीगढ़	उदय-कालिक	(१४ से २८ जून तक, सन् १९९९ ई.) उत्तर-दक्षिणायन ,उत्तर गोल, ग्रीष्म-वर्षा ऋतु।

दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति काल ध.	प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	प.	योग	समाप्ति काल घ.	प.	करण	समाप्ति काल घ.	प.	प्र. ज्येष्ठ	अं. जून	श. ज्येष्ठ	मु. सफर	प्रवेश काल	घ.	प.	भा.स्टैं.टा. सूर्योदय घं.	मि.	सर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	ग्रह दर्शन - सायं मंगल खमध्यासन्न होगा, प्रातः शनि एवं गुरु पूर्व में होंगे । सायं बुध एवं शुक्र को पश्चिम में देखें ।
३४	५८	१	चं.	३८	५५	मृ.	२०	२५	गं.	४९	१५	किं.	१३	२४	३१	१४	२४	२९	मिथुन			५	२३	७	२२	१	२८	४०	३१	बुध पुन. में ४६/०२,
३४	५८	२	मं.	३०	४८	आ.	१४	०	वृ.	४०	८	बा.	४	४६	आषा१	१५	२५	३०	क.	५५	३	५	२३	७	२२	१	२९	३७	५२	चन्द्र दर्शन मु.४५ ,सं.सूर्य मिथुन में २३/८,मु.४५, पुष्यकाल ७/७बाद,
३४	५८	३	बु.	२३	५८	पुन.	८	४५	ध्रु.	३२	५	ग.	२३	५८	२	१६	२६	र.उ. अ१	कर्क			५	२४	७	२२	२	०	३५	११	भ. ५१/२२ बाद, शुक्र आश्ले. में ५२/२०,रम्भाव्रत (A)
३४	५८	४	गु.	१८	४५	पु.	५	५	व्या.	२५	२८	वि.	१८	४५	३	१७	२७	२	कर्क			५	२४	७	२३	२	१	३२	३०	भ. १८/ ४५ तक, बलिदान दिन गुरु श्री अर्जुन देव जी,
३४	५८	५	शु.	१५	२८	आश्ले.	३	१५	ह.	२०	२२	बा.	१५	२८	४	१८	२८	३	सिं.	३	१५	५	२४	७	२३	२	२	२९	४९	
३४	५८	६	श.	१४	८	म.	३	२०	व.	१६	५२	तै.	१४	८	५	१९	२९	४	सिंह			५	२४	७	२३	२	३	२७	७	अरण्यषष्ठी, विन्ध्यवासिनी पूजा,
३५	०	७	र.	१४	४५	पू.फा.	५	२५	सि.	१४	५८	व.	१४	४५	६	२०	३०	५	क.	२१	२३	५	२४	७	२४	२	४	२४	२४	भ.१४/४५ से ४५/५९ तक
३५	०	८	चं.	१७	१२	उ.फा.	९	१५	व्य.	१४	२८	ब.	१७	१२	७	२१	३१	६	कन्या			५	२४	७	२४	२	५	२१	४०	सूर्य सायन कर्क में ४९/४८, (B)
३५	०	९	मं.	२१	८	ह.	१४	३५	व.	१५	८	कौ.	२१	८	८	२२	आ.१	७	तु.	४७	४७	५	२४	७	२४	२	६	१८	५५	सूर्य आर्द्रा में २२/२,शक आषाढ़ प्रारम्भ,
३४	५८	१०	बु.	२६	८	चि.	२१	००	प.	१६	४०	ग.	२६	८	९	२३	२	८	तुला			५	२५	७	२४	२	७	१६	१०	भ. ५८/५९ बाद,
३४	५८	११	गु.	३१	५०	स्वा.	२८	८	शि.	१८	४५	वि.	३१	५०	१०	२४	३	९	तुला			५	२५	७	२४	२	८	१३	२५	भ.३१/५० तक, बुध पुष्य में १०/५०,निर्जला एकादशी व्रत (स.),
३४	५८	१२	शु.	३७	४८	वि.	३५	३२	सि.	२१	८	ब.	४	४९	११	२५	४	१०	वृ.	१८	४१	५	२५	७	२४	२	९	१०	३९	चम्पक द्वादशी,
३४	५८	१३	श.	४३	३८	अनु.	४२	५५	सा.	२३	५	कौ.	२०	४३	१२	२६	५	११	वृश्चिक			५	२५	७	२५	२	१०	७	५२	शनि प्रदोष व्रत,
३४	५८	१४	र.	४९	१२	ज्ये.	४९	५२	शु.	२५	४०	ग.	१६	२५	१३	२७	६	१२	ध.	४९	५२	५	२६	७	२५	२	११	५	५	भ. ४९/१२ बाद,शनि भर.३ में ०/५५,
३४	५८	१५	चं.	५४	१२	मू.	५६	२२	शु.	२७	२८	वि.	२१	४२	१४	२८	७	१३	धनु			५	२६	७	२५	२	१२	२	१८	भ.२१/४२तक,श्री सत्यनारायण व्रत, वटसावित्री व्रत (पूर्णिमा पक्ष),

(A) (देखें पृ.97) , प्रताप जयंती (राजस्थान),रवी उल अव्वल मु.प्रा.,(B),दक्षिणायन, वर्षा ऋतु प्रारम्भ,बुध कर्क में ३२/३०, नेपच्यून उ.षा. ४ में ४३/८,

द्वि-(शुद्ध) ज्येष्ठ शुक्ल ८ चन्द्र, इष्ट ०/१५

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	५	६	२	०	३	०	३	९
५	८	२	२९	४	२०	१९	२१	२१
२१	७	२०	१६	५५	२२	२४	१६	१६
५४	४०	३३	४८	३४	४	१९	४७	४७
५७	७३७	१२	७९	१०	५२	६	३	३
१५	१४	२२	३५	१९	१४	५	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
४	४	३	३	२	२	२	२	४
मृग.	उ.फा.	चित्रा	पुन.	आश्ले.	आर्द्रा	भर.	आर्द्रा	श्रव.

कुण्डली सूर्योदये

४ रा. शु.
२
सू. ३ बु.
गु.१ श.
५
६ चं.
१२
७ मं.
९
११
८
१० के.

लोक भविष्य- मिथुन राशि के सूर्य पर शनि की विशेष दृष्टि है। किसी राजनीतिज्ञ को विशेष कठिन परिस्थिति का सामना करना पड़े। कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति बने, कहीं बाढ़ आदि प्राकृतिक प्रकोप से हानि भी हो । ध्यान दें- शनि मंगल का दृष्टि-सम्बन्ध मेष, मिथुन, तुला एवं मकर प्रभाव राशि वाले राष्ट्रों में विशेष कठिन सामाजिक, धार्मिक एवं राजनैतिक परिस्थितियों को जन्म देगा।

ग्रहचाल और बाजार का रुख- पक्षारम्भ में वारदाना, रेशम, सूत, कपास, रुई, सरसों, लोहा, तिल, तेल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चीनी, घी, मूंग, उड़द, चना, गेहूं, चावल आदि प्रत्येक जाति के अनाज तेज हों । सोना चांदी में भी तेजी का रुख रहे। पक्षमध्य में रुई में मन्दे का झटका आए। गुड़, तेल, मूंगफली एवं सरसों में कुछ तेजी के बाद मन्दा आए। पक्षान्त में कपास, गुड़ , खाण्ड, घी एवं तेल तेज होंगे ।

कुण्डली सूर्योदये

बु.४शु. रा.
२
सू. ३
गु.१ श.
५
६
१२
७ मं.
९ चं.
११
८
१० के.

द्वि. (शुद्ध)ज्येष्ठ शुक्र १५चन्द्र, इष्ट ०/१०

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	८	६	३	०	३	०	३	९
१२	२	३	७	६	२६	२०	२१	२१
२	२	५९	३३	५	१३	५	७	७
२७	३६	४४	२९	२६	३०	३८	३१	३१
५७	७२३	१६	५८	८	४७	५	३	३
१२	४३	२७	४९	५१	१५	३९	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
२	२	४	२	२	३	३	२	४
आर्द्रा	मूल.	चित्रा	पुष्य	आश्ले.	आर्द्रा	भर.	आर्द्रा	श्रव.

आकाश लक्षण- जून १४,१५,२१,२२,२७ को भूटान, शिलांग एवं बंबई के कुछ भागों में जोरदार वर्षा हो। उत्तरी भारत पंजाब, हरियाणा एवं हि.प्र. में भी अनेकत्र बादल चाल व वायु वर्षा के योग हैं।

शकुन विचार- ज्येष्ठ शुक्ल सप्तमी को यदि बादल गरजें, दक्षिण की वायु चले, तो तिलहन के स्टाक से कार्तिक में लाभ हो ।

श्री वि.सं.२०५६, शाक १९२१,						आषाढ़ कृष्ण पक्ष ८									तारीखें				चन्द्र राशि			चण्डीगढ़				उदय-कालिक				(२९जून से १३ जुलाई तक, सन् १९९९ ई.) दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा ऋतु।
दि. मा.		तिथि	वार	समाप्ति काल		नक्षत्र	समाप्ति काल		योग	समाप्ति काल		करण	समाप्ति काल		प्र.	अं.	श.	मु.	प्रवेश काल			भा.स्टैं.टा.				स्पष्ट सूर्य				ग्रह दर्शन - २ जुलाई को बुध का सायं पश्चिम में सूर्य से परम अन्तर होगा। सायं शुक्र पश्चिम में चमकता दीखेगा। इस समय मंगल पूर्व में होगा। सूर्योदय से पहिले शनि एवं गुरु पूर्व में देखे जा सकेंगे ।
															आषा.	जून.	आषा.	र.उल.				सूर्योदय		सर्वास्त						
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३४	५८	१	मं.	५८	३०	पू.षा.	६०	००	ब्र.	२८	४८	बा.	२६	२१	१५	२९	८	१४	धनु			५	२६	७	२५	२	१२	५९	३१	
३४	५५	२	बु.	६०	००	पू.षा.	२	८	ऐं.	३०	११	तै.	२९	१५	१६	३०	९	१५	म.	१८	२२	५	२७	७	२५	२	१३	५६	४३	
३४	५५	२	गु.	१	५२	उ.षा.	७	५	वै.	२९	२५	ग.	१	५२	१७	जु.१	१०	१६	मकर			५	२७	७	२५	२	१४	५३	५४	भ.३३/६बाद, गुरु अश्विनी ३ में ४१/१८,जुलाई प्रारम्भ,
३४	५५	३	शु.	४	२०	श्र.	११	२	वि.	२८	३५	वि.	४	२०	१८	२	११	१७	कु.	४२	२९	५	२७	७	२५	२	१५	५१	५	भ.४/२० तक, पञ्चक प्रारम्भ ४२/२९, शुक्र मघा सिंह (A)
३४	५२	४	श.	५	३८	ध.	१३	५५	प्री.	२६	४८	बा.	५	३८	१९	३	१२	१८	कुम्भ			५	२८	७	२५	२	१६	४८	१७	
३४	५२	५	र.	५	४२	श.	१५	३०	आ.	२४	२	तै.	५	४२	२०	४	१३	१९	कुम्भ			५	२८	७	२५	२	१७	४५	२९	
३४	५०	६	च.	४	२५	पू.भा.	१५	५०	सौ.	२०	१०	व.	४	२५	२१	५	१४	२०	मी.	०	४५	५	२९	७	२५	२	१८	४२	४१	भ. ४/२५ से ३३/५ तक
३४	५०	७	मं.	१	४५	उ.भा.	१४	४८	शो.	१५	१०	ब.	१	४५	२२	६	१५	२१	मीन			५	२९	७	२५	२	१९	३९	५४	सूर्य पुनर्वसु में २१/०, मंगल स्वाती में ४०/५५,
अवम		८	मं.	५७	४२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०			०	०	०	०	०	०	०	०	अष्टमी तिथिक्षय,
३४	४८	९	बु.	५२	१८	रे.	१२	१५	अ.	९	०	तै.	२५	०	२३	७	१६	२२	मे.	१२	१५	५	३०	७	२५	२	२०	३७	७	पञ्चक समाप्त १२/१५
३४	४५	१०	गु.	४५	४८	अ.	८	३२	सु. धृ.	१ ५३	५० ४५	व	१९	३	२४	८	१७	२३	मेष			५	३०	७	२४	२	२१	३४	२०	भ. १९/३ से ४५/४८ तक,
३४	४२	११	शु.	३८	१८	भ. कृ.	३ ५८	४२ २	शू.	४४	५५	ब.	१२	३	२५	९	१८	२४	वृ.	१७	१७	५	३१	७	२४	२	२२	३१	३४	योगिनी एकादशी व्रत (स.),
३४	४२	१२	श.	३०	१५	रो.	५१	५५	ग.	३५	३५	कौ.	४	१७	२६	१०	१९	२५	वृष			५	३१	७	२४	२	२३	२८	४८	शनि प्रदोष व्रत,
३४	४०	१३	र.	२१	५२	मृ.	४५	३८	वृ.	२६	२	व.	२१	५२	२७	११	२०	२६	मि.	१८	४६	५	३२	७	२४	२	२४	२६	३	भ., २१/५२ से ४७/४६ तक,
३४	४०	१४	च.	१३	४०	आ.	३९	३८	ध्रु.	१६	४०	श.	१३	४०	२८	१२	२१	२७	मिथुन			५	३२	७	२४	२	२५	२३	१८	बुध वक्री ५८/३५,
३४	३५	३०	मं.	५	५२	पुन.	३४	१५	व्या. ह.	७ ५९	३८ २०	ना.	५	५२	२९	१३	२२	२८	क.	२०	३६	५	३३	७	२३	२	२६	२०	३३	भौमवती अमावस,

(A) में ५८/२०, श्री गणेश चतुर्थी व्रत

आषा.कृ. ७ मंगल, इष्ट ०/२

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	११	६	३	०	४	०	३	९
१९	१३	६	१३	७	२	२०	२०	२०
३९	७	२५	४५	१८	६	४९	४२	४२
५८	३१	५४	५९	१२	४७	०	६	६
५७	८३९	२०	२९	८	३९	५	३	३
१२	२९	३०	२३	३१	४६	७	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

कुण्डली सूर्योदये

४ बु. रा.
२
५ शु.
सू.३
गु.१ श.
६
१२ चं.
७ मं.
९
११
८
१० के.

लोक भविष्य- इस मास में पांच मंगलवार हैं;-कहीं युद्धाग्नि से अशान्त वातावारण बने, किसी देश विशेष की सरकार में विशेष परिवर्तन आएं। कहीं राजनीतिज्ञ की हत्या वा कहीं विशिष्ट व्यक्ति के निधन से शोक व्याप्त हो, - 'यत्रमासे महीसूनोर्जायन्ते पञ्चवासराः।रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्र भंगस्तदा-भवेत्।।' गुरु-शनि का मंगल के साथ समसप्तक योग अयोध्या, लंका किंवा मध्य प्रदेश में कहीं अशांति का संकेत देता है ।

ग्रहचार और बाजार का रुख- २ जुलाई को सोना, ताँबा, जौ, चना, गेहूं, लाल चन्दन, मजीठ, लाल मिर्च व लाल रंग की चीजों में तेजी बने। घी में भी तेजी बने। ६ जुलाई के लगभग रुई, सोना, चांदी, गुड़, खांड, कपास, बिनौला, एरण्ड, अलसी, सरसों, तिल, ज्वार, बाजरा, उड़द, चावल, नमक में तेजी बनेगी। पक्षान्त में बुध के वक्री होने पर घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी, अनाजों में मन्दी एवं रुई में झटके के साथ तेजी आकर मन्दी बने।

कुण्डली सूर्योदये

४ रा. बु.
२
५ शु.
सू.चं. ३
श.१ गु.
६
१२
७ मं.
९
११
८
१० के.

आषा. कृ. ३० मंगल,इष्ट ५९/५३

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	३	६	३	०	४	०	३	९
२७	९	९	१५	८	६	२१	२०	२०
१७	९	२२	३६	२२	५२	२७	१६	१६
४४	२३	३०	७	३२	०	४९	४०	४०
५७	८७४	२४	७	७	३९	४	३	३
१५	३२	१	१५	२४	४५	३०	११	११
-	-	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

आकाश लक्षण- इस पक्ष में पंजाब, हि.प्र., हरियाणा, भूटान, शिलाग ,आसाम, मे अनेकत्र बादल चाल व वर्षा के योग हैं। लेकिन शुक्र भी वर्षा में रुकावट का संकेत देता है ।

शकुन विचार- यदि आषाढ़ कृष्ण प्रतिपदा को बिजली चमके, वर्षा हो तो अनाजों म तेजी आती है ।

श्री वि.सं.२०५६, शाक १९२१, आषाढ़ शुक्ल पक्ष ९

(१४ से २८ जुलाई तक, सन् १९९९ई.) दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा ऋतु ।

ग्रह दर्शन १८ जुलाई को बुध पश्चिम में दीखना बन्द हो जाएगा। सायं मंगल पूर्व में होगा, प्रातः गुरु और शनि को पूर्व में देखें। सायं शुक्र पश्चिम में चमकता दीखेगा ।

दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	प.	योग	समाप्ति काल घ.	प.	करण	समाप्ति काल घ.	प.	तारीखें प्र. आषा.	अं. जुला.	श. आषा.	मु. र.उ.अ.	चन्द्र राशि प्रवेश काल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा.स्टैं.टा. सूर्योदय घं.	मि.	सर्यास्त घं.	मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
अवम		१	मं.	५८	५८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प्रतिपदा तिथिक्षय,
३४	३५	२	बु.	५३	१५	पु.	२९	५८	व.	५२	५	बा.	२६	६	३०	१४	२३	२९	कर्क			५	३३	७	२३	२	२७	१७	४९	चन्द्र दर्शन गु.१५, रथ यात्रा (पुरी) (पुष्य योग),
३४	३२	३	गु.	४९	०	आश्ले.	२७	२	सि.	४६	०	तै.	२१	३७	३१	१५	२४	र.उ.१	सिं.	२७	२	५	३४	७	२३	२	२८	१५	६	रवी उस्सानी मु. प्रा.,
३४	३०	४	शु.	४६	३२	म.	२५	४८	व्य.	४१	२२	व	१७	४६	आ.१	१६	२५	२	सिंह			५	३४	७	२२	२	२९	१२	२२	भ.१७/४६ से ४६/३२ तक, सं॰ सूर्य कर्क में ४९/५०,मु.३०(A)
३४	२८	५	श.	४५	५५	पू.फा.	२६	२०	व.	३८	१२	ब.	१६	१३	२	१७	२६	३	क.	४१	५७	५	३५	७	२२	३	०	९	४०	
३४	२८	६	र.	४७	१२	उ.फा.	२८	४८	प.	३६	३५	कौ.	१६	३४	३	१८	२७	४	कन्या			५	३५	७	२२	३	१	६	५७	बुध पश्चिम में अस्त ६/४५, कुमार षष्ठी,
३४	२३	७	चं.	५०	१०	ह.	३२	५५	शि.	३६	१५	ग.	१८	४१	४	१९	२८	५	कन्या			५	३६	७	२१	३	२	४	१३	भ. ५०/१० बाद, विवस्वत् सप्तमी,राहु आश्ले.१, केतु (B)
३४	२३	८	मं.	५४	४०	चि.	३८	३२	सि.	३७	८	वि.	२२	२५	५	२०	२९	६	तु.	५	४४	५	३६	७	२१	३	३	१	३०	भ. २२/२५ तक, सूर्य पुष्य में १९/२०,
३४	१८	९	बु.	५९	५८	स्वा.	४५	१०	सा.	३८	५०	बा.	३२	५३	६	२१	३०	७	तुला			५	३७	७	२०	३	३	५८	४९	
३४	१५	१०	गु.	६०	००	वि.	५२	२५	शु.	४१	०	तै.	२९	५९	७	२२	३१	८	वृ.	३५	३७	५	३८	७	२०	३	४	५६	६	
३४	१२	१०	शु.	५	४८	अनु.	५९	४०	शु.	४३	२२	ग.	५	४८	८	२३	श्रा.१	९	वृश्चिक			५	३८	७	१९	३	५	५३	२४	शक श्रावण प्रारम्भ,भ.३८/४३ बाद,सूर्य सायन सिंह में १६/२८,
३४	१०	११	श.	११	३८	ज्ये.	६०	०	ब्र.	४५	३०	वि.	१०	५२	९	२४	२	१०	वृश्चिक			५	३९	७	१९	३	६	५०	४१	भ. ११/३८तक,हरिशयनी एकादशी व्रत(स.),
३४	८	१२	र.	१७	८	ज्ये.	६	४५	ऐं.	४७	१२	बा.	१७	८	१०	२५	३	११	ध.	६	४५	५	३९	७	१८	३	७	४७	५९	प्रदोष व्रत,
३४	५	१३	चं.	२१	४५	मू.	१३	२	वै.	४८	१२	तै.	२१	४५	११	२६	४	१२	धनु			५	४०	७	१८	३	८	४५	१८	
३४	०	१४	मं.	२५	२८	पू.षा.	१८	२५	वि.	४८	२२	व.	२५	२८	१२	२७	५	१३	म.	३४	३०	५	४१	७	१७	३	९	४२	३६	भ. २५/२८ से ५६/४५ तक, श्री सत्यनारायण व्रत,
३४	०	१५	बु.	२८	२	उ.षा.	२२	४५	प्री.	४७	४२	ब.	२८	२	१३	२८	६	१४	मकर			५	४१	७	१७	३	१०	३९	५६	गुरु पूर्णिमा(व्यासपूजा),आषाढ़ी पूर्णिमा,चातुर्मास्य व्रत (C)

(A)पुष्यकाल १९/५० बाद,(B) श्रवण ३ में १४/१७, (C) नियमादि प्रारम्भ, कोकिला व्रत,चन्द्र ग्रहण,

आषाढ़ शुक्ल ८ मंगल, इष्ट ५९/४५

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	६	६	३	०	४	०	३	९
३	१०	१२	१३	९	९	२१	१९	१९
५८	५४	१८	११	११	४७	५७	५४	५४
३०	५२	५२	२३	११	१०	३६	२४	२४
५७	७१७	२६	३६	६	१८	३	३	३
१६	३५	४२	७	२०	७	५६	११	११
-	-	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पुष्य	स्वा.	स्वा.	पुष्य	आर्द्रा	मघा	भर.	आर्द्रा	श्रव.

कुण्डली सूर्योदये

शु.५
सू.बु. ४ रा.
३
६ चं.
२
७ मं.
१ श. गु.
८
के. १०
१२
९
११

लोक भविष्य- इस पक्ष में तिथि वृद्धि एवं तिथि क्षय होने से जन जीवनोपयोगी वस्तुओं में मन्दा आने से जनता में संतोष रहे, 'जेहि पखवारे तिथि बढ़े, वाही में घट जाए। सभी वस्तु मन्दी बिके मंहगाई हट जाए।' लेकिन आषाढ़ शुदी पंचमी को शनिवार होने से खड़ी फसलों को हानि पहुंचेगी, जिससे बाजार तेजी की ओर बढ़ेंगे।

ग्रहचाल और बाजार का रुख- १५ जुलाई के लगभग अनाज, दालवाना, घी, गुड़ खाण्ड में तेजी रहे,१८ जुलाई के लगभग बुध वक्री पोजीशन में अस्त होगा, रुई में झटके के साथ मन्दी, पाट, हैसियन एवं शेयरों में भी मन्दा बने। अनाज तेज रहें। २० जुलाई के लगभग अनाज, करयाणा में तेजी हो।

आकाश लक्षण- जुलाई १५,१६,१८,२० को उत्तरी भारत में वर्षा के योग हैं। लेकिन सिंहस्थ शुक्र कुछ भागों में वर्षा का अवरोधक है, हवा का जोर रहे।

शकुन विचार- आषाढ़ शुक्ल पञ्चमी को यदि पश्चिम से हवा चले, बादल वर्षा हो और इन्द्रधनुष दीखे तो अनाजों का स्टाक करने से कार्तिक में लाभ मिले ।

कुण्डली सूर्योदये

५ शु.
सू. ४ बु.रा.
३
६
२
७ मं.
गु.१श.
८
चं.१० के.
१२
९
११

आषाढ शुक्ल १५बुध, इष्ट ५९/३२

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	९	६	३	०	४	०	३	९
११	१७	१६	७	९	११	२२	१९	१९
३६	४३	१	४६	५७	१५	२६	२८	२८
४८	१५	४७	८	१९	३७	३०	५७	५७
५७	७६७	२९	३७	५	१	३	३	३
२०	३	१८	४९	१	१८	१३	११	११
-	-	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पुष्य	श्रव.	स्वा.	पुष्य	आर्द्रा	मघा	भर.	आर्द्रा	श्रव.

श्री वि.सं.२०५६, शाक १९२१, श्रावण कृष्ण पक्ष १०																तारीखें				चन्द्र राशि			चण्डीगढ़				उदय-कालिक				(२९ जुलाई से ११अगस्त तक, सन् १९९९ई.) दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा ऋतु।
दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	प.	योग	समाप्ति काल घ.	प.	करण	समाप्ति काल घ.	प.	प्र. श्राव.	अं. जुला.	श. श्राव.	मु. र.ऊ.	प्रवेश काल	घ.	प.	भा.स्टैं.टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	**ग्रह दर्शन** - ४ अगस्त को बुध प्रातः पूर्व में दीखने लगेगा। शुक्र ८ अगस्त को सायं पश्चिम में दीखना बन्द हो जायेगा। सायं मंगल और प्रातः गुरु एवं शनि खमध्यासन्न होंगे ।
३३	५५	१	गु.	२९	२८	श्र.	२५	५५	आ.	४६	५	कौ.	२९	२८	१४	२९	७	१५	कुं.	५६	५७	५	४२	७	१६	३	११	३७	१७	पञ्चक प्रा. ५६/५७, गुरु अश्विनी. ४ में ३०/२८,
३३	५०	२	शु.	२९	४२	ध.	२७	५८	सौ.	४३	३५	ग.	२९	४२	१५	३०	८	१६	कुम्भ			५	४३	७	१५	३	१२	३४	३८	भ. ५९/१८ बाद, शुक्र वक्री ३/२५,
३३	५०	३	श.	२८	५५	श.	२८	५५	शो.	४०	१२	वि.	२८	५५	१६	३१	९	१७	कुम्भ			५	४३	७	१५	३	१३	३२	००	भ.२८/५५ तक, श्री गणेश चतुर्थी व्रत,
३३	४५	४	र.	२६	५८	पू.भा.	२८	४८	अ.	३५	५८	बा.	२६	५८	१७	अ.१	१०	१८	मी.	१३	४९	५	४४	७	१४	३	१४	२९	२३	अगस्त प्रारम्भ,
३३	४३	५	चं.	२४	५	उ.भा.	२७	४५	सु.	३०	५५	तै.	२४	५	१८	२	११	१९	मीन			५	४४	७	१३	३	१५	२६	४७	
३३	३८	६	मं.	२०	१२	रे.	२५	४२	धृ.	२५	८	व.	२०	१२	१९	३	१२	२०	मे.	२५	४२	५	४५	७	१२	३	१६	२४	१३	भ. २०/१२ से ४७/५२ तक,पंचक समाप्त २५/४२,(A)
३३	३५	७	बु.	१५	३२	अ.	२२	५२	शू.	१८	४०	ब.	१५	३२	२०	४	१३	२१	मेष			५	४६	७	१२	३	१७	२१	३९	बुध पूर्व में उदित २७/४८
३३	३२	८	गु.	१०	१०	भ.	१९	२२	गं.	११	३५	कौ.	१०	१०	२१	५	१४	२२	वृ.	३३	२३	५	४६	७	११	३	१८	[illegible]	७	मंगल विशा. में ५०/५०,शुक्र वार्धक्य (B)
३३	२८	९	शु.	४	८	कृ.	१५	१५	वृ. धृ.	४ ५६	२ १०	ग.	४	८	२२	६	१५	२३	वृष			५	४७	७	१०	३	१९	१६	३६	भ.३० /५६ से ५७/४५ तक,बुध मार्गी ७/४०, **शुक्र अस्त ८अगस्त**
अवम		१०	शु.	५७	४५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०				०	०	०	०	०	०	०	०	०	दशमी तिथिक्षय,
३३	२३	११	श.	५१	२	रो.	१०	४२	व्या.	४८	२	ब.	२४	२४	२३	७	१६	२४	मि.	३८	२२	५	४८	७	९	३	२०	१४	७	कामिका एकादशी व्रत (स्मा.),
३३	२२	१२	र.	४४	२५	मृ.	६	२	ह.	३९	५८	कौ.	१७	४४	२४	८	१७	२५	मिथुन			५	४८	७	९	३	२१	११	३८	शुक्र पश्चिम में अस्त १२/३०,कामिका एकादशी व्रत(वै.),
३३	१८	१३	चं.	३८	०	आ. पुन.	१ ५७	२५ १०	व.	३२	२	ग.	६	१२	२५	९	१८	२६	क.	४३	२०	५	४९	७	८	३	२२	९	१०	भ.३८/०बाद, सोमप्रदोष व्रत,
३३	१५	१४	म.	३२	८	पु.	५३	३०	सि.	२४	३०	वि.	५	४	२६	१०	१९	२७	कर्क			५	४९	७	७	३	२३	६	४४	भ.५/४ तक, ग्रहणशूल,
३३	१०	३०	बु.	२७	०	आश्ले.	५०	४५	व्य.	१७	३५	ना.	२७	०	२७	११	२०	२८	सिं.	५०	४५	५	५०	७	६	३	२४	४	२०	हरियाली अमावस, खग्रास सूर्य ग्रहण (देखें पृष्ठ ९-१८),

(A) सूर्य आश्ले. में १६/२८,(B) प्रारम्भ,१२/३५

श्रावण कृष्ण८गुरु,इष्ट ५९/२०

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	१	६	३	०	४	०	३	९
१९	६	२०	४	१०	१०	२२	१९	१९
१५	१०	४	४४	३२	२०	४९	३	३
५५	१६	१५	१४	३४	२३	३२	३१	३१
५७	८६३	३१	२	३	१७	२	३	३
२९	१८	३४	१८	३६	२८	२७	११	११
-	-	मा.	व.	मा.	व.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
१	३	१	१	४	४	३	१	३
आश्ले.	कृ.	विशा.	पुष्य	अश्वि.	मघा	भर.	आश्ले.	श्रव.

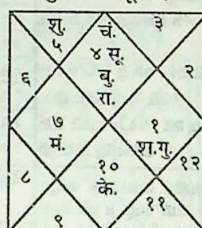
कुण्डली सूर्योदये



लोक भविष्य- इस मास में ५ गुरुवार हैं, अतः पश्चिमी देशों में कहीं भयंकर राजनैतिक उलझनें बनें, युद्धभय बने, कहीं राजनैतिक हत्याकाण्ड भी हों- 'यत्र मासे पञ्च वाराः जायन्ते च बृहस्पतेः। विग्रहः पश्चिमे देशे खड्गयुद्धं च जायते।' जन जीवनोपयोगी खाद्य वस्तुओं में तेजी बनेगी। भरणी नक्षत्र में शुक्र का अस्त होना पंजाब, दिल्ली, राजस्थान एवं बिहार, उ. प्र. में कहीं राजनैतिक सत्ता संघर्ष, कहीं धार्मिक एवं सामाजिक उलझनों से अशांति का संकेत देता है ।

ग्रहचाल और बाजार का रुख- पक्षारम्भ में घी, तेल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, गेहूं, जौ, चना आदि अनाज तेज हों, रुई में पहले तेजी आकर बाद में मन्दी बने। पक्ष मध्य में रुई में मन्दे के बाद अच्छी तेजी की संभावना है, गेहूं, जो, चना, लाल मिर्च, घी, तेल में अच्छी तेजी बने। ५/६ अगस्त के लगभग घी, खाण्ड में मन्दा सोना, चांदी, तिल ,चावल में तेजी बने।

कुण्डली सूर्योदये



श्रावण कृष्ण ३० बुध, इष्ट५९/१०

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	४	६	३	०	४	०	३	९
२५	१	२३	६	१०	८	२३	१८	१८
१	५५	१७	३९	५१	३	२	४४	४४
६	३८	३५	५	२३	११	४२	२६	२६
५७	८१८	३३	४२	२	२९	१	३	३
३६	९	७	५६	२८	४५	५१	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
३	१	१	३	४	३	३	१	३
आश्ले.	मघा	विशा.	पुष्य.	अश्वि.	मघा	भर.	आश्ले.	श्रव.

आकाश लक्षण- जुलाई २९, अगस्त ४/६ तक एवं ८ से ११ अगस्त के लगभग हि.प्र. हरियाणा, पंजाब दिल्ली, चण्डीगढ़ एवं उत्तर प्रदेश आदि में सर्वत्र बादल वर्षा के योग है।

शकुन विचार- श्रावण में यदि बिजली चमके, बादल गरजें, तो आगे सुभिक्ष की सूचना मिलती है। यदि श्रावण में कृत्तिका नक्षत्र में वर्षा हों तो आगे चौमासे में अच्छी वर्षा हो।

श्री वि.सं.२०५६, शाक १९२१, श्रावण शुक्ल पक्ष ११															तारीखें				चन्द्र राशि			चण्डीगढ़				उदय-कालिक				(१२ से २६अगस्त तक, सन् १९९९ ई.) दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा शरद ऋतु।
दि. मा.		तिथि	वार	समाप्ति काल		नक्षत्र	समाप्ति काल		योग	समाप्ति काल		करण	समाप्ति काल		प्र.	अं.	श.	मु.	प्रवेश काल			भा.स्टैं.टा.				स्पष्ट सूर्य				ग्रह दर्शन -१५ अगस्त को बुध प्रातः पूर्व में सूर्य से परम अन्तर पर होगा और वह २६ अगस्त को पूर्व में अस्त हो जाएगा। शुक्र २५ अग. से पूर्व में दीखने लगेगा। सायं मंगल और प्रातः गुरु एवं शनि खमध्यासन्न होंगे ।
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	श्राव.	अग.	श्राव.	र.उ.		घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सर्यास्त घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३३	५	१	गु.	२३	०	म.	४९	१०	व.	११	३०	ब.	२३	०	२८	१२	२१	२९	सिंह.			५	५१	७	५	३	२५	१	५६	चन्द्र दर्शन मु.३०, ग्रहणशूल,
३३	३	२	शु.	२०	२०	पू.फा.	४९	२	प.	६	३२	कौ.	२०	२०	२९	१३	२२	ज१	सिंह			५	५१	७	४	३	२५	५९	३४	ग्रहणशूल, जमद-उल अव्वल मु. प्रारम्भ,
३२	५८	३	श.	१९	१२	उ.फा.	५०	२८	शि.	२	४२	ग.	१९	१२	३०	१४	२३	२	क.	४	२४	५	५२	७	३	३	२६	५७	१२	भ. ४९/२७ बाद, मधुश्रवातृतीया (सन्धारा तीज),ग्रहणशूल,
३२	५२	४	र.	१९	४२	ह.	५३	३२	सि. सा.	० ५९	१० ०	वि.	१९	४२	३१	१५	२४	३	कन्या			५	५३	७	२	३	२७	५४	५२	भ. १९/४२ तक, भारत स्वतंत्रता दिवस,
३२	५०	५	चं.	२१	५८	चि.	५८	१२	शु.	५९	५	बा.	२१	४८	३२	१६	२५	४	तु.	२५	५२	५	५३	७	१	३	२८	५२	३३	नागपंचमी,
३२	४५	६	मं.	२५	४०	स्वा.	६०	००	शु.	६०	००	तै.	२५	४०	भा१	१७	२६	५	तुला.			५	५४	७	०	३	२९	५०	१५	सं सूर्य मघा सिंह में १०/८,मु.१५, पुण्य-काल २६/८ तक,
३२	४२	७	बु.	३०	३८	स्वा.	४	१०	शु.	०	१०	व.	३०	३८	२	१८	२७	६	वृ.	५४	१९	५	५४	६	५९	४	०	४७	५७	भ.३०/३८ बाद,वेंकटेश (प्लूटो)मार्गी,गो.स्वा.तुलसीदास जयंती,
३२	३७	८	गु.	३६	२०	वि.	११	२	ब्र.	२	०	वि.	३	२९	३	१९	२८	७	वृश्चिक			५	५५	६	५८	४	१	४५	४०	भ. ३/२९ तक,श्री दुर्गाष्टमी, कल्कि जयंती, दूर्वाष्टमी व्रत(A)
३२	३२	९	शु.	४२	१५	अनु.	१८	२०	ऐं.	४	१२	बा.	९	१८	४	२०	२९	८	वृश्चिक			५	५६	६	५७	४	२	४३	२५	बुध आश्ले.में ५२/५५, **शुक्र उदित २५ अगस्त**
३२	३०	१०	श.	४७	५२	ज्ये.	२५	३२	वै.	६	२८	तै.	१५	३	५	२१	३०	९	ध.	२५	३२	५	५६	६	५६	४	३	४१	१२	
३२	२५	११	र.	५२	४०	मू.	३२	५	वि.	८	१८	व.	२०	१६	६	२२	३१	१०	धनु			५	५७	६	५५	४	४	३८	५९	भ. २०/१६ से ५२/४० तक,पवित्रा एकादशी व्रत (स.),
३२	२२	१२	चं.	५६	१८	पू.षा.	३७	३५	प्री.	९	२५	ब.	२४	२९	७	२३	भाद्र१	११	धनु			५	५७	६	५४	४	५	३६	४७	शक भाद्रपद प्रारम्भ, सूर्य सायन कन्या में ३३/३०, (B)
३२	१८	१३	मं.	५८	२५	उ.षा.	४१	४५	आ.	९	३०	कौ.	२७	२२	८	२४	२	१२	म.	५३	३७	५	५८	६	५३	४	६	३४	३६	भौम प्रदोष व्रत,
३२	१२	१४	बु.	५९	२	श्र.	४४	२५	सौ.	८	२८	ग.	२८	४४	९	२५	३	१३	मकर			५	५९	६	५२	४	७	३२	२६	भ.५९/२ बाद, गुरु वक्री ५/०,वक्री शुक्र आश्ले.कर्क में ४३/५४,(C
३२	१०	१५	गु.	५८	१५	ध.	४५	४०	शो.	६	१८	वि.	२८	३८	१०	२६	४	१४	कुं.	१५	१	५	५९	६	५१	४	८	३०	१८	भ.२८/३८ तक, पञ्चक, प्रारम्भ १५/१,बुध पूर्व में (D)

(A)(देखें पृष्ठ97) ,(B)शरदर्तु प्रारम्भ,मंगल वृश्चिक में ४१/३५,(C)शुक्र पूर्व में उदित २५/००, ऋक् उपाकर्म,
(D)अस्त ४०/३५, रक्षा बन्धन (राखी) शुक्ल-कृष्ण यजु उपाकर्म, श्रावणी पूर्णिमा,श्री सत्यनारायण व्रत ,

श्रावण शुक्ल,८गुरु,इष्ट ५८/५८

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	७	६	३	०	४	०	३	९
२	१२	२७	१५	११	३	२३	१८	१८
४२	४८	४९	१८	५	२९	१४	१९	१९
२३	४३	५	४३	४३	५२	३३	०	०
५७	७१२	३४	९०	०	३७	१	३	३
४५	५९	५६	२६	५४	१९	०	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.
		उ.	उ	उ.	अ.	उ.	अ.	अ
मघा	अनु.	विशा.	पुष्य	आश्ले.	मघा	भर.	आर्द्रा	श्रव.

कुण्डली सूर्योदये

६ | बु.४ रा. | सू. ५ शु. | ७ मं. | ३ | ८ चं. | २ | ९ | ११ | श. १ गु. | १०के. | १२

लोक भविष्य- इस मास के अन्त में गुरु वक्री हो रहा है। शुक्र वक्र स्थिति में पुनः कर्क में आकर आश्लेषा नक्षत्र में उदय होता है- कहीं अत्यधिक वर्षा से भयंकर जनधन हानि होगी, कहीं सूखा रहने से शासन चिन्तित रहे। उपभोग्य वस्तुओं में भारी मंहगाई से जनता में असन्तोष रहे, 'दैत्यगुरुर्यदा कर्के रसानां वै महर्घता। सर्वधान्य समर्घत्वं मेघाश्च प्रबला भुवि।' लेकिन इस पक्ष में मंगल वृश्चिक राशि में भी आ रहा है- देश में आर्थिक विकास हो, ग्रामीण क्षेत्रों में रोगों का प्रकोप, नेताओं में संगठन की भावना, विदेशों से व्यापारिक संबंध बढे। कहीं राजनैतिक उथल पुथल हो।

ग्रहचार और बाजार का रुख- इस पक्ष में गेहूं, जौ, चना, चावल, अलसी, घी, सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी रहे। रुई में विशेष तेजी मन्दी के झटके आएंगे ।

कुण्डली सूर्योदये

६ | सू. ५ | शु.४ रा. बु. | ७ | ३ | ८ मं. | २ | ९ | ११ | १गु. श. | चं. १० के. | १२

श्रावण शुक्ल १५ गुरु,इष्ट ५८/४७

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श	रा.	के.
४	१०	७	३	०	३	०	३	९
९	९	१	२७	११	२९	२३	१७	१७
२७	३२	५७	१२	७	१८	१९	५६	५६
१	४३	५६	४३	५६	१८	२४	४५	४५
५७	८६४	३६	११३	०	३१	०	३	३
५३	४२	२०	२४	२९	५९	१६	११	११
-	-	मा.	मा.	व.	व.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मघा	शत.	विशा.	आर्द्रा	आश्ले.	आर्द्रा	भर.	आर्द्रा	श्रव.

आकाश लक्षण- १७ से २६ अगस्त तक शिलांग, गोवा, लंका, आसाम, भूटान, बंगाल एवं उत्तरी भारत में बादल चाल रहे, वायुवेग के साथ कहीं वर्षा हो, तापमान गिरें।

शकुन विचार- यदि श्रावण शुक्ल सप्तमी को वर्षा हो तो सभी प्रकार के धान्य उत्तम हों।

श्री वि.सं.२०५६, शाक १९२१,						**भाद्रपद कृष्ण पक्ष १२**									तारीखें				चन्द्र राशि			चण्डीगढ़				उदय कालिक				(२७ अगस्त से १सितम्बर तक, सन् १९९९ ई.) दक्षिणायन, उत्तर गोल, शरद ऋतु।
दि. मा.		तिथि	वार	समाप्ति काल		नक्षत्र	समाप्ति काल		योग	समाप्ति काल		करण	समाप्ति काल		प्र.	अं.	श.	मु	प्रवेश काल			भा.स्टैं.टा.				स्पष्ट सूर्य				**ग्रह दर्शन** - बुध अस्त है। पक्ष के आरम्भ में ही शुक्र प्रातः पूर्व में दीखने लग जाएगा। प्रातः गुरु शनि पश्चिम कपाल में होगे। सायं मंगल खमध्यासन्न होगा।
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	भाद्र	अग.	भाद्र	[illegible]		घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सर्यास्त घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३२	५	१	शु.	५६	५	श.	४५	३२	अ. सु.	२ ५८	५५ ३२	बा.	२७	१०	११	२७	५	१५	कुम्भ			६	०	६	५०	४	९	२८	१२	
३२	०	२	श.	५२	५०	पू.भा.	४४	२०	धृ.	५३	१२	तै.	२४	२७	१२	२८	६	१६	मी.	२९	३८	६	०	६	४८	४	१०	२६	८	शुक्र बाल्य समाप्त २४/५८, बुध मघा सिंह में २६/५२,
३१	५५	३	र.	४८	३८	उ.भा.	४२	५	शू.	४७	१०	व.	२०	४४	१३	२९	७	१७	मीन			६	१	६	४७	४	११	२४	५	भ.२०/४४ से, ४८/३८ तक, मंगल अनु. में १३/३२,
३१	५०	४	चं.	४३	४५	रे.	३९	१०	गं.	४०	३०	ब.	१६	१२	१४	३०	८	१८	मे.	३९	१०	६	२	६	४६	४	१२	२२	४	पञ्चक समाप्त ३९/१०, सूर्य पू.फा. में ५९/५२, <u>शनि वक्री</u> (A)
३१	४८	५	मं.	३८	२५	अ.	३५	४८	वृ.	३२	४०	कौ.	११	५	१५	३१	९	१९	मेष			६	२	६	४५	४	१३	२०	५	
३१	४२	६	बु.	३२	५०	भ.	३२	८	ध्रु.	२६	१५	ग.	५	३८	१६	१सि	१०	२०	वृ.	४६	१२	६	३	६	४४	४	१४	१८	६	भ. ३२/५० बाद,सितम्बर प्रारम्भ,
३१	४०	७	गु.	२७	१२	कृ.	२८	२२	व्या	१८	५५	वि.	०	१	१७	२	११	२१	वृष.			६	३	६	४३	४	१५	१६	९	भ.० /१ तक, वक्री यूरेनस श्रव. ३ में,४/५५श्री कृष्ण (B)
३१	३३	८	शु.	२१	३०	रो.	२४	४०	ह.	११	३५	कौ.	२१	३०	१८	३	१२	२२	मि.	५२	५४	६	४	६	४१	४	१६	१४	१५	अगस्त्य उदित,श्री कृष्ण जन्माष्टमी(वैष्णवों)संन्यासियों के लिए
३१	२८	९	श.	१६	०	मृ.	२१	८	व. सि.	४ ५७	२२ २५	ग.	१६	०	१९	४	१३	२३	मिथुन			६	५	६	४०	४	१७	१२	२३	भ. ४३/२६बाद, बुध पू.फा. में १६/३०,श्री गुग्गा नवमी,
३१	२५	१०	र.	१०	५२	आ.	१७	५२	व्य.	५०	४५	वि.	१०	५२	२०	५	१४	२४	मिथुन			६	५	६	३९	४	१८	१०	३३	भ. १०/५२ तक,
३१	२०	११	चं.	६	२	पुन.	१५	२	व.	४४	२५	बा.	६	२	२१	६	१५	२५	क.	०	४५	६	६	६	३८	४	१९	८	४५	अजा एकादशी व्रत(स.),
३१	१७	१२	मं.	१	४५	पु.	१२	४५	प.	३८	३५	तै.	१	४५	२२	७	१६	२६	कर्क			६	६	६	३७	४	२०	६	५९	भ. ५८/१० बाद, भौम प्रदोष व्रत,
अवम		१३	मं.	५८	१०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०			०	०	०	०	०	०	०	०	त्रयोदशी तिथिक्षय,
३१	१०	१४	बु.	५५	१८	आश्ले.	११	५	शि.	३३	२२	वि.	२६	४४	२३	८	१७	२७	सिं.	११	५	६	७	६	३५	४	२१	५	१५	भ. २६/४४ तक,
३१	८	३०	गु.	५३	२८	म.	१०	२०	सि.	२८	५२	च.	२४	२३	२४	९	१८	२८	सिंह			६	७	६	३४	४	२२	३	३३	<u>कुशोत्पाटिनी अमा, पिठौरी अमा,</u>

(A) १/५८ बहुला चतुर्थी, संकष्ट चतुर्थी(चन्द्रोदय रात्रि ९ घं.११मि.),श्री गणेश चतुर्थी व्रत,(B)जन्माष्टमी व्रत, (अर्धरात्रि में अष्टमी तिथि एवं रोहिणी नक्षत्र),(स्मार्तों गृहस्थियों के लिए जन्माष्टमी व्रत)(चन्द्रोदय रात्रि ११ घं.१९ मिं.),

भाद्र. कृ. ८ शुक्र, इष्ट ५८।३५

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	२	७	४	०	३	०	३	९
१७	१	६	१२	१०	२५	२३	१७	१७
१०	१९	५३	४४	५८	५५	१८	३१	३१
५९	५७	४०	४३	३१	१२	३६	१९	१९
५८	८४७	३७	११७	१	१५	०	३	३
८	६	४६	३	५३	३७	३५	११	११
-	-	मा.	मा.	व.	व.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.फा.	मृग.	अनु.	मघा	आश्ले.	आर्द्रा	भर.	आर्द्रा	श्रव.

कुण्डली सूर्योदये

६
४शु.रा.
सू. ५ बु.
७
३
चं.२
८ मं.
९
११
१ गु.श.
१०के.
१२

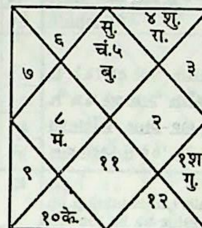
लोक भविष्य- सिंह राशि में बुध-सूर्य का सम्वन्ध अनाजों एवं दैनिक उपयोग में आने वाली चीजों में तेजी करेगा। यहां बुध-गुरु शनि वक्र चल रहे हैं, अतः किसी प्राकृतिक प्रकोप से जनधन हानि हो। किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति का पद रिक्त हो।'**सिंह राशी बुधः स्याच्चेत् सर्वधान्य महर्घता। मघा बुधेऽल्पवृष्टिश्च धान्यनाशः प्रजाभयम्॥**' कहीं खड़ी फसलों को हानि पहुंचे।

ग्रहचाल और बाजार का रुख- पक्षारम्भ में सोना चाँदी, सूत, रुई, ऊनी वस्त्र, सिक्का, कली, गेहूं, पीपल, ज्वार, चावल, घी, तेल, अलसी, सरसों, तमाखू, सिमेन्ट में तेजी आए।

आकाश लक्षण- अगस्त २८,२९,३० सितम्बर १,२ को बंगाल, भूटान एवं उत्तरी भारत में कहीं वर्षा, बादल चाल व खण्ड दृष्टि हो। उत्तरी भारत का तापमान गिरे।

शकुन विचार- यदि भाद्रपद कृष्ण तृतीया को वादल हों तो अनाज के स्टाक से छठे मास में लाभ हो। '**भादों कारी तीज में उत्तरदिशा प्रदोष। बादल तब सुख मानिए मिटे मिटाया दोष।।**'-संग्रह कर लो अन्न का रुका रहे षट्मास। लाभ होय उस माल में कर लेना विश्वास।।

कुण्डली सूर्योदये



भाद्र. कृ. ३० गुरु, इष्ट ५८।२८

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	४	७	४	०	३	०	३	९
२३	२३	१०	२४	१०	२४	२३	१७	१७
०	५९	४२	१५	४३	५७	१३	१२	१२
१९	५२	४९	५२	७	३४	३१	१५	१५
५८	७८४	३८	११२	३	१	१	३	३
१९	५५	४७	३	१५	१३	१३	११	११
-	-	मा.	मा.	व.	व.	व.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.फा.	पू.फा.	अनु.	पू.फा.	आश्ले.	आर्द्रा	भर.	आर्द्रा	श्रव.

श्री वि.सं.२०५६, शाक १९२१,	भाद्रपद शुक्ल पक्ष १३	तारीखें	चन्द्र राशि	चण्डीगढ़	उदय-कालिक	(१० से २५सितम्बर तक, सन् १९९९ई.) दक्षिणायन, उत्तर-दक्षिण गोल, शरद् ऋतु।

दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	प.	योग	समाप्ति काल घ.	प.	करण	समाप्ति काल घ.	प.	प्र. भाद्र	अं. सितं.	श. भाद्र	मु. उ.अ.	प्रवेश काल	घ.	प.	भा.स्टैं.टा. सूर्योदय घं.	मि.	सर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	ग्रह दर्शन - प्रातः शुक्र पूर्व में, गुरु एवं शनि पश्चिम कपाल में होंगे। सायं मंगल पूर्व कपाल में तथा बुध प्रातः पूर्व में होगा।
३१	२	१	शु.	५२	५०	पू.फा.	१०	३०	सा.	२५	१५	किं	२३	९	२५	१०	१९	२९	क.	२५	५१	६	८	६	३३	४	२३	१	५२	
३०	५८	२	श.	५३	२८	उ.फा.	११	५२	शु.	२२	३५	बा.	२३	९	२६	११	२०	३०	कन्या			६	९	६	३२	४	२४	०	१४	चन्द्र दर्शन मु.३०, बुध उ.फा में १५/३५,शुक्र मार्गी ५९/२९(A)
३०	५३	३	र.	५५	३२	ह.	१४	३५	शु.	२१	२	तै.	२४	३०	२७	१२	२१	ज. ३१	तु.	४६	३७	६	९	६	३०	४	२४	५८	३७	भ.२७/१५बाद,जमद उस्सानी मु. प्रारम्भ, श्री वराह जयन्ती(B)
३०	४८	४	च.	५८	५८	चि.	१८	४०	ब्र.	२०	३२	व.	२७	१५	२८	१३	२२	२	तुला			६	१०	६	२९	४	२५	५७	१	भ.५८/५८ तक, सूर्य उ.फा. में ४४/५, बुध कन्या में ४/२२(C)
३०	४५	५	मं.	६०	००	स्वा.	२४	५	ऐं.	२१	८	ब.	३१	१८	२९	१४	२३	३	तुला			६	१०	६	२८	४	२६	५५	२७	
३०	४०	५	बु.	३	३८	वि.	३०	३२	वै.	२२	३२	बा.	३	३८	३०	१५	२४	४	वृ.	१३	५५	६	११	६	२७	४	२७	५३	५५	
३०	३५	६	गु.	९	१८	अनु.	३७	४८	वि.	२४	३८	तै.	९	१८	३१	१६	२५	५	वृश्चिक			६	११	६	२५	४	२८	५२	२५	सूर्य षष्ठी,
३०	३०	७	शु.	१५	२५	ज्ये.	४५	१५	प्री.	२६	५५	व.	१५	२५	अश्वि. १	१७	२६	६	ध.	४५	१५	६	१२	६	२४	४	२९	५०	५६	भ.१५/२५ से ४८/२५तक, सं.सूर्य कन्या में९/१२,मु.,१५,(D)
३०	२५	८	श.	२१	२५	मू.	५२	२०	आ.	२९	५	ब.	२१	२५	२	१८	२७	७	धनु			६	१३	६	२३	५	०	४९	२९	बुध हस्त में ४३/०८, श्री राधाष्टमी,
३०	२०	९	र.	२६	४५	पू.षा.	५८	३२	सौ.	३०	४२	कौ.	२६	४५	३	१९	२८	८	धनु			६	१३	६	२१	५	१	४८	५	मंगल ज्येष्ठा में २/५,श्री चन्दनवमी(उदासीन सम्प्रदाय महोत्सव)
३०	१५	१०	च.	३०	५०	उ.षा.	६०	००	शो.	३१	१८	ग.	३०	५०	४	२०	२९	९	म.	१४	४२	६	१४	६	२०	५	२	४६	४२	वक्री गुरु अश्वि.३में२७/३०,राहु पुष्य४, केतु श्रवण २ में ६/४०,
३०	१२	११	मं.	३३	१८	उ.षा.	३	१२	अ.	३०	४२	वि.	०३	०४	५	२१	३०	१०	मकर			६	१४	६	१९	५	३	४५	२०	भ. २/४ से ३३/१८ तक,पद्मा एकादशी व्रत (स.),
३०	८	१२	बु.	३३	५२	श्र.	६	२०	सु.	२८	३५	ब.	३	३५	६	२२	३१	११	कुं.	३६	५८	६	१५	६	१८	५	४	४३	५९	पञ्चक प्रारम्भ ३६/५८,श्रवण द्वादशी,श्रीवामन जयन्ती,
३०	२	१३	गु.	३२	४५	ध.	७	३५	धृ.	२५	२	कौ.	३	१८	७	२३	आश्वि. १	१२	कुम्भ			६	१५	६	१६	५	५	४२	४०	शक आश्विन प्रारम्भ, सूर्य सायन तुला में २६/५५,(E)
२९	५८	१४	शु.	२९	४०	श.	७	०	शू.	२०	५	ग.	१	१३	८	२४	२	१३	मी.	५०	२४	६	१६	६	१५	५	६	४१	२४	भ.२९/४० से ५७/२५तक, श्री सत्यनारायणव्रत,अनन्त चतुर्दशी
२९	५३	१५	श.	२५	१०	पू.भा.	४	५२	गं.	१३	५२	ब.	२५	१०	९	२५	३	१४	मीन			६	१७	६	१४	५	७	४०	९	प्रोष्ठपदी श्राद्ध, पूर्णिमा का श्राद्ध,

(A) साम उपाकर्म, मेला बाबा गुसांईं आणां (कुराली),(B) श्री गौरी तृतीया, हरितालिका तृतीया, (C) कलंक चतुर्थी,(चन्द्रास्त रात्रि ८ घं. ४७ मि.), विनायक चतुर्थी,हरितालिका चतुर्थी,
(D) पुण्यकाल २५/१२ तक, श्री महालक्ष्मी व्रत प्रारम्भ,(E) दक्षिण गोल प्रारम्भ,प्रदोष व्रत,

भाद्र. शुक्ल. ८ शनि, इष्ट ५८।१३

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	८	७	५	०	३	०	३	९
९	१४	१६	१०	१०	२६	२२	१६	१६
४६	२९	३७	२५	७	७	५८	४३	४३
१८	४६	१६	४२	१४	१९	५३	३८	३८
५८	७२५	४०	१०२	४	१८	२	३	३
३५	३७	७	२५	५३	३९	७	११	११
-	-	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
२	२	४	२	४	३	३	२	३
उ.फा.	पू.फा.	अनु.	हस्त.	अश्वि.	आर्द्रा	भर.	आर्द्रा	श्रव.

कुण्डली सूर्योदये

लोक भविष्य- इस पक्ष में शुक्र का कर्क राशि में मार्गी होने से सुभिक्ष का संकेत देता है। लेकिन शनि -मंगल का षडष्टक कहीं सीमा-प्रान्तों पर अशान्ति, कहीं शासन सत्ता के लिए राजनीतिज्ञों को सन्नद्ध रहने का संकेत देता है। कहीं प्राकृतिक प्रकोप से हानि, कहीं अग्निकाण्ड व दुर्घटना से हानि किसी विशिष्ट व्यक्ति का पद रिक्त हो ।

ग्रहचाल और बाजार का रुख- पक्षारम्भ में रुई मन्दी होकर फिर तेज हो। चांदी में भी मन्दा बने। चावल, अलसी, सरसों, गुड़ खाण्ड, हल्दी में तेजी आए। पक्ष मध्य में चांदी व शेयरों में मन्दा आए।

आकाश लक्षण- सितम्बर ११,१३,१६,१९,२० के लगभग सिक्किम, भूटान, शिलांग, गोवा, कालीकट, सूरत आदि तटवर्ती प्रदेशों में वर्षा होगी, अन्यत्र कहीं बादलचाल व बूंदाबांदी हो।

कुण्डली सूर्योदये

भाद्र. शुक्ल. १५ शनि, इष्ट ५८।२

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	११	७	५	०	३	०	३	९
८	१५	२१	२२	९	२८	२२	१६	१६
३६	५०	२०	१	२९	५२	४२	२१	२१
५९	९	४७	४०	४०	२	१	२३	२३
५८	८६९	४१	९५	५	३०	२	३	३
४८	४४	०	३५	५९	१०	४७	११	११
-	-	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
४	४	२	४	३	४	३	४	२
उ.फा.	उ.भा.	ज्ये.	हस्त	अश्वि.	आर्द्रा	भर.	पुष्य	श्रव.

शकुन विचार- भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा को यदि आकाश निर्मल रहे, तो गेहूं, जौ, चना, चावल के स्टाक से आगे लाभ रहे।
नोट-'भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी को चन्द्र दर्शन करने से कलंक लगता है, अतः इस दिन चन्द्र दर्शन न करें। यदि गलती से चन्द्र दर्शन हो ही जाए तो-' ओं सिंहः प्रसेनमवधीत् सिंहो जाम्बवता हतः । सुकुमारक मा रोदीस्तव ह्येष स्यमन्तकः ॥ इस मंत्र को पूर्वोत्तर मुंह करके जपने से दोष का परिहार हो जाता है।

श्री वि.सं.२०५६, शाक १९२१, आश्विन कृष्ण पक्ष १४

(२६सितम्बर से ९ अक्तूबर तक, सन् १९९९ ई.)
दक्षिणायन दक्षिण गोल, शरद् ऋतु।

ग्रह दर्शन - २६ सितम्बर से बुध सांय पश्चिम में दीखने लगेगा। सायं गुरु शनि पूर्व में होंगे। मंगल खमध्यासान्न होगा। शुक्र को प्रातः पूर्व में देखें।

दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	प.	योग	समाप्ति काल घ.	प.	करण	समाप्ति काल घ.	प.	तारीखें प्र. आश्वि.	अं. सित.	श. आश्वि.	मु. ज.उ.	चन्द्र राशि प्रवेश काल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा.स्टैं.टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
२९	५०	१	र.	११	३२	उ.भा. रे.	१ ५७	२८ १०	वृ. ध्रु.	६ ५८	४२ ४८	कौ.	११	३२	१०	२६	४	१५	मे.	५७	१०	६	१७	६	१३	५	८	३८	५६	पंचक समाप्त ५७/१०,बुध चित्रा में ४७/५, बुध पश्चिम में(A)
२९	४३	२	च.	१३	२	अ.	५२	१५	व्या.	५०	२२	ग.	१३	२	११	२७	५	१६	मेष			६	१८	६	११	५	९	३७	४५	भ. ३९/३६बाद ,सूर्य हस्त में २२/३८, तृतीया का श्राद्ध,
२९	४०	३	मं.	६	१०	भ.	४७	१२	ह.	४१	५०	वि.	६	१०	१२	२८	६	१७	मेष			६	१८	६	१०	५	१०	३६	३६	भ. ६/१०तक, शुक्र मघा सिंह में ९/१०, श्री गणेश चतुर्थी(B)
अवम		४	मं.	५९	१२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्थी तिथिक्षय,
२९	३५	५	बु.	५२	२५	कृ.	४२	१५	व.	३३	२२	कौ.	२५	४८	१३	२९	७	१८	वृ.	०	५८	६	१९	६	९	५	११	३५	३०	पंचमी का श्राद्ध,
२९	३०	६	गु.	४६	८	रो.	३७	४८	सि.	२५	१८	ग.	१९	१७	१४	३०	८	१९	वृष			६	१९	६	७	५	१२	३४	२५	भ.४६/८ बाद, षष्ठी का श्राद्ध,
२९	२५	७	शु.	४०	३०	मृ.	३३	५०	व्य.	१७	३८	वि.	१३	१९	१५	अक्तू. १	९	२०	मि.	५	४९	६	२०	६	६	५	१३	३३	२२	अक्तूबर प्रारम्भ,भ. २३/१९ तक, बुध तुला में ४/२,सप्तमी(C)
२९	२०	८	श.	३५	३८	आ.	३०	४८	व.	१०	३५	बा.	८	४	१६	२	१०	२१	मिथुन			६	२१	६	५	५	१४	३२	२२	अष्टमी का श्राद्ध, जन्मदिन महात्मा गांधी,
२९	१७	९	र.	३१	४२	पुन.	२८	३५	प. शि.	४ ५८	१५ ३५	तै.	३	४०	१७	३	११	२२	क.	१४	८	६	२१	६	४	५	१५	३१	२६	नवमी का श्राद्ध, सौभाग्यवती श्राद्ध,
२९	१०	१०	च.	२८	३५	पु.	२७	१५	सि.	५३	३८	व.	०	९	१८	४	१२	२३	कर्क			३	२२	६	२	५	१६	३०	३१	भ. ०/८से२८/३५तक, दशमी का श्राद्ध
२९	८	११	मं.	२६	२५	आश्ले.	२६	४२	सा.	४९	२२	बा.	२६	२५	१९	५	१३	२४	सि.	२६	४२	६	२२	६	१	५	१७	२९	३८	बुध स्वाती में ३२/२,एकादशी का श्राद्ध, इन्दिरा एकादशी(D)
२९	२	१२	बु.	२५	२	म.	२७	२	शु.	४५	४८	तै.	२५	२	२०	६	१४	२५	सिंह			६	२३	६	०	५	१८	२८	४८	द्वादशी का श्राद्ध, मघा श्राद्ध संन्यासियों का श्राद्ध, (E)
२८	५७	१३	गु.	२४	३५	पू.फा.	२८	१५	शु.	४२	५५	व.	२४	३४	२१	७	१५	२६	क.	४३	४८	६	२४	५	५९	५	१९	२७	००	भ. २४/३५ से ५४/५२ तक, त्रयोदशी का श्राद्ध,
२८	५२	१४	शु.	२५	८	उ.फा.	३०	२८	ब्र.	४०	५०	श.	२५	८	२२	८	१६	२७	कन्या			६	२४	५	५७	५	२०	२७	१४	मंगल मूल धनु में २५/२२, शस्त्र-विष आदि से मृतों का श्राद्ध
२८	४७	३०	श.	२६	१८	ह.	३३	३२	ऐं.	३९	२८	ना.	२६	१८	२३	९	१७	२८	कन्या			६	२५	५	५६	५	२१	२६	३०	शनैश्चरी अमा, गजच्छाया पर्व, चतुर्दशी अमा का श्राद्ध, (F)

(A) उदित ३४/३८,पितृ पक्ष (श्राद्ध) प्रारम्भ, प्रतिपदा और द्वितीया का श्राद्ध,(B) व्रत, चतुर्थी का श्राद्ध,(C) का श्राद्ध, श्री महालक्ष्मी व्रत समाप्त , (D)व्रत (स.),
(E)प्रदोष व्रत, महात्रयोदशी (१६घं.२४ मि. बाद) (F) सर्वपितृ श्राद्ध, श्राद्ध समाप्त,

आश्विन कृ. ८ शनि, इष्ट ५७।५२

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	२	७	६	०	४	०	३	९
१५	२६	२६	२	८	२	२२	१५	१५
२९	१५	१०	५१	४४	५३	२०	५९	५९
२०	२८	२१	५७	५१	३	४३	९	९
५९	८२४	४१	८९	६	३९	३	३	३
३	३५	५१	२३	५५	३७	२३	११	११
-	-	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
२	२	३	३	३	१	३	४	२
हस्त	पुन.	ज्ये.	चित्रा	आश्वि.	मघा	भर.	पुष्य	श्रव.

कुण्डली सूर्योदये

७ बु. | सू. ६ | ५शु. | ४ रा. | मं. ८ | ९ | ३चं. | १२ | २ | १० के. | ११ | गु.१ शं.

लोक भविष्य- यहां आश्विन कृष्ण तृतीया को मंगलवार है, खाद्य वस्तुओं में भारी महंगाई से जनता कष्ट पाए। कहीं अग्निकाण्ड व प्राकृतिक प्रकोप से जनधन हानि हो, 'आश्विने हि तृतीयायां यदि भौमशनैश्चरी। तदा त्वग्निभयं विद्यादशवान्न महर्घता।' यहां अमावस शनैश्चरी होने से शासन को कहीं अकाल की स्थिति का सामना करना पड़े। पक्षान्त में धनु राशि का मंगल दक्षिणी गोलार्ध व देशों में प्राकृतिक उत्पाद का संकेत देता है ।

ग्रहचाल और बाजार का रुख- पक्षारंभ में रुई एवं शेयरों में १५ दिन में जोरदार मन्दी आए। २८ सितम्बर के लगभग सोना, तांवा, जौ, चना, गेहूं, लाल चन्दन, मजीठ, लाल मिर्च, घी, गुड़ खाण्ड में तेजी बने। अक्तूबर के प्रारम्भ में तेल तिलहन में मन्दा हो। पक्षान्त में बिनौला, सरसों, घी एवं अनाज तेज रहें।

कुण्डली सूर्योदये

७ बु. | ६ सू. चं. | ५ शु. | ४ रा. | ८ | ९मं. | ३ | १२ | २ | १० के. | ११ | श.१ गु.

आश्विन कृ. ३० शनि, इष्ट ५७।४२

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	५	८	६	०	४	०	३	९
२२	२८	१	१२	७	७	२१	१५	१५
२३	२१	५	५९	५४	५३	५५	३६	३६
३२	४८	३८	०	११	२	२७	५३	५३
५९	७४३	४२	८३	७	४६	३	३	३
१९	२२	३७	१	३७	४९	५४	११	११
-	-	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
४	२	१	२	३	३	३	४	२
हस्त	चित्रा	मूल	स्वा.	आश्वि.	मघा	भर.	पुष्य	श्रव.

आकाश लक्षण- सितम्बर २६,२८ अक्तूबर १ एवं ८ के लगभग कहीं बादल चाल, बूंदाबादी हो, ध्यान दें- सिंह राशि में शुक्र का प्रवेश वर्षा में रुकावट का कारण बनेगा ।'सिंह शुक्र जब होय भवानी। चाले पवन नहीं बरसे पानी।'

शकुन विचार- आश्विन कृष्णा दशमी से द्वादशी तक बादल गरजें, बिजली चमके, तो गेहूं आदि अनाजों के स्टाक से आगे लाभ मिले।

श्री वि.सं.२०५६, शाक १९२१, **आश्विन शुक्ल पक्ष १५** तारीखें | चन्द्र राशि | चण्डीगढ़ | उदय-कालिक

(१० से २४ अक्तू. तक, सन् १९९९ ई.)
दक्षिणायन, दक्षिण गोल, शरद्-हेमन्त ऋतु।

दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	प.	योग	समाप्ति काल घ.	प.	करण	समाप्ति काल घ.	प.	प्र. आश्वि.	अं. अक्टू.	श. आश्विन	मु. ज.उ.	चन्द्र राशि प्रवेश काल	घ.	प.	भा.स्टै.टा. सूर्योदय घं.	मि.	सर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	ग्रह दर्शन - २३ अक्तूबर को बुध सूर्य से पश्चिम में परम अन्तर (२४°) पर होगा। प्रातः गुरु शनि पश्चिम में सायं मंगल पूर्व कपाल में होगा। सायं शुक्र भी पश्चिम में होगा ।
२८	४२	१	र.	२९	१२	चि.	३७	४५	वै.	३८	५८	ब.	२९	१२	२४	१०	१८	२९	तु.	५	३८	६	२६	५	५५	५	२२	२५	४८	चन्द्र दर्शन मु. ३०, सूर्य चित्रा में ५४/४२शारद नवरात्र प्रारम्भ(A)
२८	४०	२	च.	३२	५८	स्वा.	४३	०	वि.	३९	२२	बा.	१	५	२५	११	१९	र. १	तुला			६	२६	५	५४	५	२३	२५	९	रजब मु. प्रारम्भ,
२८	३५	३	म.	३७	४५	वि.	४९	१५	प्री.	४०	३२	तै.	५	२२	२६	१२	२०	२	वृ.	३२	४१	६	२७	५	५३	५	२४	२४	३१	
२८	३०	४	बु.	४३	३०	अनु.	५६	२२	आ.	४२	२५	व.	१०	३७	२७	१३	२१	३	वृश्चिक			६	२७	५	५१	५	२५	२३	५६	भ. १०/३८ से ४३/३० तक,
२८	२५	५	गु.	४९	५५	ज्ये.	६०	००	सौ.	४४	४२	ब.	१६	४३	२८	१४	२२	४	वृश्चिक			६	२८	५	५०	५	२६	२३	२३	नेपच्यून मार्गी ५/२, उपाङ्ग ललिता व्रत,
२८	२०	६	शु.	५६	१८	ज्ये.	३	५८	शो.	४७	१२	कौ.	२३	६	२९	१५	२३	५	ध.	३	५८	६	२९	५	४९	५	२७	२२	५१	बुध विशा.में १०/१५, सरस्वती आवाहन (देखें पृ० 97)
२८	१८	७	श.	६०	००	मू.	११	३५	अ.	४९	२०	ग.	३०	३३	३०	१६	२४	६	धनु			६	२९	५	४८	५	२८	२२	२०	शुक्र पू.फा. में ३६/३२, सरस्वती पूजन (देखें पृ. 97)
२८	१२	७	र.	२	१८	पू.षा.	१८	३८	सु.	५०	४५	व.	४	४८	का. १	१७	२५	७	म.	३५	६	६	३०	५	४७	५	२९	२१	५२	भ.२/१८से ३४/४६ तक, सं. सूर्य तुला में ३८/२२, (B)
२८	८	८	च.	७	१५	उ.षा.	२४	३२	धृ.	५१	८	ब.	७	१५	२	१८	२६	८	मकर			६	३१	५	४६	६	०	२१	२६	सरस्वती विसर्जन (देखें पृ० 98), महाष्टमी, श्री दुर्गाष्टमी(C)
२८	५	९	म.	१०	४०	श्र.	२८	५०	शू.	५०	२	कौ.	१०	४०	३	१९	२७	९	कुं.	५९	५९	६	३१	५	४५	६	१	२१	१	पञ्चक प्रार. ५९/५९, वक्री गुरु अश्वि.२ में २३/३५, (D)
२८	०	१०	बु.	१२	५	ध.	३१	८	गं.	४७	२०	ग.	१२	५	४	२०	२८	१०	कुम्भ			६	३२	५	४४	६	२	२०	३८	भ. ४१/४४बाद, भरत मिलाप
२७	५३	११	गु.	११	२२	श.	३१	२०	वृ.	४२	५५	वि.	११	२२	५	२१	२९	११	कुम्भ			६	३३	५	४३	६	३	२०	१७	भ. ११/२२ तक, पापांकुशा एकादशी व्रत (स.)
२७	५०	१२	शु.	८	३२	पू.भा.	२९	३२	ध्रु.	३६	५८	बा.	८	३२	६	२२	३०	१२	मीं.	१४	५९	६	३३	५	४१	६	४	१९	५७	प्रदोष व्रत
२७	४५	१३	श.	३	५०	उ.भा.	२५	५५	व्या.	२९	२५	तै.	३	५०	७	२३	का. १	१३	मीन			६	३४	५	४०	६	५	१९	४०	भ. ५७/२८ बाद, बुध वृश्चिक में ३५/२२, सूर्य सायन (E)
अवम		१४	श.	५७	२८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चर्तुदशी तिथिक्षय
२७	४०	१५	र.	४९	५२	रे.	२०	५०	ह.	२०	४८	वि.	२३	४०	८	२४	२	१४	मे.	२०	५०	६	३५	५	३९	६	६	१९	२४	भ. २३/४०तक,पंचक समाप्त२०/५०,सूर्य स्वा. में,२०/३५(F)

(A) घटस्थापन, नाना का श्राद्ध**(B)** मु.४५,पुण्यकाल मध्याह्नोत्तर, सरस्वती को बलिदान (देखें पृ० 97),**(C)** महानवमी (पूजा उपवास के लिए),**(D)** महानवमी (बलिदान के लिए), विजयादशमी (दशहरा),(देखें पृ.98), अपराजिता पूजन, आयुधपूजा, नवरात्र समाप्त,**(E)** वृश्चिक ४९/३०, हेमन्त ऋतु प्रारम्भ, यूरेनस मार्गी १३/३० , शक कार्तिक प्रारम्भ,**(F)** श्री सत्यनारायण व्रत, शरद् पूर्णिमा, कोजागर व्रत, कार्तिक स्नान प्रारम्भ, महर्षि बाल्मीकि जयन्ती

आश्विन शुक्ल. ८ चन्द्र , इष्ट ५७।३७

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	९	८	६	०	४	०	३	९
१	१६	७	२४	६	१५	२१	१५	१५
१८	४५	३२	४४	४३	२३	१८	८	८
२९	५१	४९	४९	२५	२७	१०	१७	१७
५९	७५७	४३	७१	८	५३	४	३	३
३५	१३	२९	३०	६	४२	२५	११	११
-	-	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
३	३	३	२	३	१	३	४	२
चित्रा	श्रव.	मूल	विशा.	अश्वि.	पू.फा.	भर.	पुष्य	श्रव.

कुण्डली सूर्योदये

८
७ सू. बु.
६
शु. ५
९ मं.
१० चं. के.
४ रा.
११
१ गु. श.
३
१२
२

लोक भविष्य- इस मास में पांच रविवार है। कहीं, राजनैतिक अशांति, कहीं किसी विशिष्ट व्यक्ति विशेष का वियोग सहना पड़ेगा, सत्ता हस्तान्तरण का समाचार मिले, कहीं प्राकृतिक प्रकोप व यान दुर्घटना से हानि हो,-'**यत्र मासे रवेर्वाराः जायन्ते पंच सततम्। दुर्भिक्षं छत्र भंगः स्यात्तदात्र** महद्भयम्' पक्षान्त में वृश्चिक राशि का बुध घी, तेल आदि दैनिक आवश्यक वस्तुओं में तेजी करेगा ।

ग्रहचाल और बाजार का रुख - १४ अक्टूबर को बाजार का रुख बदले। पक्ष मध्य में रुई, चांदी में मन्दी, गेहूं, जौ, चना, अलसी, सोना एवं ताम्बा तेज रहें। चन्दन, मजीठ, सुपारी में भी कुछ तेजी रहे। पक्षान्त में घी, तेल, सरसों, रुई, चांदी में तेजी का वातावरण बने ।

कुण्डली सूर्योदये

८ बु.
सू. ७
६
५ शु.
९ मं.
१० के.
४ रा.
११
१ श. गु.
३
चं. १२
२

आश्विन शुक्ल १५ रवि, इष्ट ५७/१८

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श	रा	के.
६	०	८	७	०	४	०	३	९
७	८	११	१	५	२०	२०	१४	१४
१६	५८	५४	२३	५४	५४	५१	४९	४९
२८	२३	५९	१६	४२	५२	३	१२	१२
५९	८९६	४३	५७	८	५७	४	३	३
४६	३८	५९	४७	७	१७	३९	११	११
-	-	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
१	३	४	४	२	३	३	४	२
स्वा.	अश्वि.	मूल	विशा.	अश्वि.	पू.फा.	भर.	पुष्य	श्रव.

आकाश लक्षण- अक्तूबर १४,१५,१७,१९,२३,२४ को लंका, आसाम, बंगलादेश एवं उत्तरी भारत में कहीं बादल चाल व बूंदाबादी के योग हैं। उत्तर भारत का तापमान गिरेगा।

शकुन विचार- यदि आश्विन शुक्ल पूर्णिमा को आकाश मेघाछन्न रहे, तो धान्य के स्टाक से आगामी चैत्र में अच्छा लाभ मिले। 'आश्विनी निर्मलापूर्णा शुभाय जलदोदये। धान्यस्य संग्रहं कुर्यात् चैत्रे लाभ प्रदो मतः'

श्री वि.सं.२०५६, शाक १९२१	कार्त्तिक कृष्ण पक्ष १६	तारीखें	चन्द्र राशि	चण्डीगढ़	उदय-कालिक	(२५अक्तू. से ८ नवम्बर तक सन् १९९९ ई.) दक्षिणायन दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतु।

दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति घ.	काल प.	नक्षत्र	समाप्ति घ.	काल प.	योग	समाप्ति घ.	काल प.	करण	समाप्ति घ.	काल प.	प्र.	अं.	श.	मु.	प्रवेश काल	प.	प.	भा.स्टै.टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	ग्रह दर्शन -७ नवम्बर को बुध पश्चिम में दीखना बन्द हो जाएगा। गुरु, शनि सूर्यास्त के लगभग पूर्व में उदित होकर सारी रात दीखेंगे। प्रातः शुक्र पूर्व में एवं सायं मंगल पश्चिम में होगा।
२७	३५	१	चं.	४१	३२	अ.	१४	४५	व.	११	२२	बा.	१५	४२	९	२५	३	१५	मेष			६	३६	५	३८	६	७	१९	११	
२७	३२	२	मं.	३२	५८	भ.	८	१०	सि. व्य.	१ ५१	३० ३२	तै.	७	१५	१०	२६	४	१६	वृ.	२१	३०	६	३६	५	३७	६	८	१८	५९	भ. ५८/४४ बाद, मंगल पू.षा. में ५३/०,
२७	२८	३	बु.	२४	३०	कृ. रो.	१ ५५	३० १५	व.	४१	४५	वि.	२४	३०	११	२७	५	१७	वृष			६	३७	५	३६	६	९	१८	५१	भ.२४/३० तक, बुध अनु. में २/२, श्री गणेश चतुर्थी व्रत(A)
२७	२२	४	गु.	१६	३२	मृ.	४९	४०	प.	३२	३०	बा.	१६	३२	१२	२८	६	१८	मि.	२२	४८	६	३८	५	३५	६	१०	१८	४४	
२७	२०	५	शु.	९	३२	आ.	४५	१०	शि.	२४	५	तै.	९	३२	१३	२९	७	१९	मिथुन			६	३८	५	३४	६	११	१८	३८	
२७	१५	६	श.	३	३५	पुन.	४१	५५	सि.	१०	१०	व.	३	३५	१४	३०	८	२०	क.	२७	४४	६	३९	५	३३	६	१२	१८	३४	भ.३/३५ से ३१/१८ तक, शुक्र उ.फा. में ५०/५०,
अवम		७	श.	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	सप्तमी तिथिक्षय,
२७	१२	८	र.	५५	४८	पु.	४०	०	सा.	४	५०	बा.	२७	२४	१५	३१	९	२१	कर्क			६	४०	५	३३	६	१३	१८	३२	अहोई अष्टमी (पंजाब),
२७	७	९	च.	५३	५८	आश्ले.	३९	२८	शु. शु.	० ५७	३८ २८	तै.	२४	५३	१६	न. १	१०	२२	सिं.	३९	२८	६	४१	५	३२	६	१४	१८	३२	नवम्बर प्रारम्भ,
२७	२	१०	मं.	५३	२५	म.	४०	१०	ब्र.	५५	८	व.	२३	४२	१७	२	११	२३	सिंह			६	४२	५	३१	६	१५	१८	३५	भ. २३/४२ से ५३/२५ तक,
२७	०	११	बु.	५४	८	पू.फा.	४२	८	ऐं.	५३	४०	ब.	२३	४६	१८	३	१२	२४	क.	५७	५२	६	४२	५	३०	६	१६	१८	४२	शुक्र कन्या में ८/३०, रमा एकादशी व्रत (स.)
२६	५५	१२	गु.	५५	५०	उ.फा.	४५	५	वै.	५२	५५	कौ.	२४	५९	१९	४	१३	२५	कन्या			६	४३	५	२९	६	१७	१८	४९	वक्री शनि भर.२ में ३९/४०, गोवत्स द्वादशी,
२६	५०	१३	शु.	५८	३०	ह.	४९	०	वि.	५२	५०	ग.	२७	१०	२०	५	१४	२६	कन्या			६	४४	५	२८	६	१८	१८	५९	भ. ५८/३० बाद, बुध वक्री ३/३५, प्रदोष व्रत, धन (B)
२६	४५	१४	श	६०	०	चि.	५३	४८	प्री.	५३	२२	वि.	३०	१६	२१	६	१५	२७	तु.	२१	२४	६	४५	५	२७	६	१९	१९	११	भ. ३०/१६ तक, सूर्य विशा. में ४०/३५
२६	४२	१४	र.	२	२	स्वा.	५९	२२	आ.	५४	३५	श.	२	२	२२	७	१६	२८	तुला			६	४६	५	२७	६	२०	१९	२५	बुध पश्चिम में अस्त ३५/५८, दीपावली, श्री लक्ष्मी पूजा(c)
२६	४०	३०	च.	६	३२	वि.	६०	०	सौ.	५४	३८	ना.	६	३२	२३	८	१७	२९	वृ.	४९	११	६	४६	५	२६	६	२१	१९	४०	सोमवती अमा, गोवर्धन पूजा, अन्नकूट ,बलिपूजा,

(A) करक चतुर्थी (करवा चौथ) (चन्द्रोदय रात्रि ७ घं. ५८ मि.),(B) त्रयोदशी, यम को दीपदान(C) नरक चतुर्दशी (पहले अरुणोदय वाली),श्री हनुमान जयन्ती, श्री महावीर निर्वाण (जैन)

कार्तिक कृष्ण ८ रवि, इष्ट ५७/५

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	३	८	७	०	४	०	३	९
१४	२०	१७	६	४	२७	२०	१४	१४
१५	१०	४	४७	५८	४६	१७	२६	२६
३७	५४	२८	२०	२३	२५	५६	५६	५६
६०	८०१	४४	२६	७	६०	४	३	३
२	४०	२९	४४	५३	३९	४९	११	११
-	-	मा.	मा	व.	मा	व.	व	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
स्वा.	आर्द्रा	पू.षा.	अनु.	आश्ले.	उ.फा.	भ.	पुष्य	श्रव.

कुण्डली सूर्योदये

८बु.
६
७ सू.
९ मं.
शु. ५
१० के
४ चं.रा.
११
गु.१ श
३
१२
२

लोक भविष्य- इस मास में पांच चन्द्रवार हैं, धन-धान्य समृद्धि रहे, जनता में परस्पर सौमनस्य सुख रहे,-'सोमस्य पंचवारास्तु यत्र मासे भवन्ति हि। धनधान्य समृद्धिःस्यात् सुखं भवति सर्वदा।' कार्तिक कृष्ण-पंचमी को आर्द्रा नक्षत्र होने से पशुचारा की कमी रहे। कुछ प्रान्तों में वर्षा की कमी अनुभव हो। इस मास में बुध-गुरु शनि का वक्र होना कहीं प्राकृतिक प्रकोप से हानि का संकेत देता है।

ग्रहचाल और बाजार का रुख- पक्षारम्भ में सोना, चांदी, चावल, उड़द, घी, दूध, तिल तेल, सरसों, मूंगफली में तेजी, सूत, सण, रुई, सोना चांदी में मन्दा बने। ३ नवं. के लगभग सभी प्रकार के अनाज, गुड़, खाण्ड, घास, व ऊनी, रेशमी वस्त्रों में तेजी, चावलों में विशेष तेजी का झटका आए। ५ नवं. के लगभग गुड़ खांड, घी, शक्कर में तेजी , रुई में जोरदार तेजी के बाद मन्दा बने। अनाजों में अचानक मन्दा बने।

कुण्डली सूर्योदये

बु. ८
६ शु.
मं. ९
चं. ७ सू.
५
१० के
४ रा.
११
गु. १ श.
३
१२
२

कार्तिक कृष्ण ३० चन्द्र, इष्ट ५६/५०

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श	रा	के.
६	७	८	७	०	५	०	३	९
२२	१	२३	६	३	६	१९	१४	१४
१६	३१	२	४३	५७	२	३९	१	१
४७	३५	२९	१९	१५	४७	११	३१	३१
६०	७१६	४५	४१	७	६३	४	३	३
१७	३१	३	३३	१५	३९	५१	११	११
-	-	मा.	व.	व.	मा.	व.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
विशा.	विशा.	पू.फा.	अनु.	आश्ले.	उ.फा.	भ.	पुष्य	श्रव.

आकाश लक्षण- नवम्बर ३,४,७ के लगभग पर्वतीय भूभाग पर वर्षा के योग हैं, उत्तरी भारत में शीत का प्रभाव बढ़ने लगेगा। कहीं वायु-वेग के साथ खण्ड वृष्टि भी हो।

शकुन विचार- कार्तिक कृष्ण में सूर्य के चारों ओर परिवेश दिखाई दे तो अलसी सरसों, [illegible] स्टाक से निस्सन्देह लाभ होगा। दीपावली की शाम को यदि जोरदार वायु चले, तो आगामी शीतकालीन फसल खराब होने से तेजी जोर पकड़ेगी।

श्री वि.सं.२०५६, शाक १९२१, कार्त्तिक शुक्ल पक्ष१७

(९ से २३नवम्बर तक सन् १९९९ ई.)
दक्षिणायन,दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतु।

दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	प.	योग	समाप्ति काल घ.	प.	करण	समाप्ति काल घ.	प.
२६	३५	१	मं.	११	४८	वि.	५	४८	शो.	५६	५	ब.	११	४८
२६	३३	२	बु.	१७	४५	अनु.	१२	५०	अ.	५८	३०	कौ.	१७	४५
२३	२८	३	गु.	२४	१५	ज्ये.	२०	२५	सु.	६०	०	ग.	२४	१५
२६	२३	४	शु.	३०	५८	मू.	२८	१२	सु.	०	५५	वि.	३०	५८
२६	२३	५	श.	३७	२८	पू.षा.	३५	५०	धृ.	३	२२	ब.	४	१३
२६	१८	६	र.	४३	१०	उ.षा.	४२	४५	शू.	५	२५	कौ.	१०	१९
२६	१३	७	चं.	४७	३५	श्र.	४८	२०	गं.	६	४५	ग.	१५	२२
२६	१०	८	मं.	५०	१५	ध.	५२	१८	वृ.	६	५८	वि.	१८	५५
२६	५	९	बु.	५०	४८	श.	५४	१५	ध्रु.	५	४०	बा.	२०	३२
२६	२	१०	गु.	४९	५	पू.भा.	५४	०	व्या ह.	२ ५८	४७ १२	तै.	१९	५६
२५	५८	११	शु.	४५	१२	उ.भा.	५१	३५	व.	५१	५०	व.	१७	०८
२५	५८	१२	श.	३९	२२	रे.	४७	२०	सि.	४३	५५	ब.	१२	१७
२५	५५	१३	र.	३१	५५	अ.	४१	२८	व्य.	३४	४२	कौ.	५	३९
२५	५०	१४	चं.	२३	१८	भ.	३४	३२	व.	२२	३५	व.	२३	१८
२५	४८	१५	मं.	१३	५५	कृ.	२६	५८	प.	१३	५०	ब.	१३	५५

तिथि	तारीखें प्र. (कार्ति.)	अं. (नवं.)	श. (कार्ति.)	मु. (रम्ज़.)	चन्द्र राशि प्रवेश काल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा.स्टैं.टा. सूर्योदय घं.	मि.	सर्यास्त घं.	मि.
१	२४	९	१८	३०	वृश्चिक			६	४७	५	२५
२	२५	१०	१९	शा१	वृश्चिक			६	४८	५	२५
३	२६	११	२०	२	ध.	२०	२५	६	४९	५	२४
४	२७	१२	२१	३	धनु			६	५०	५	२३
५	२८	१३	२२	४	म.	५२	३२	६	५०	५	२३
६	२९	१४	२३	५	मकर			६	५१	५	२२
७	३०	१५	२४	६	मकर			६	५२	५	२१
८	मार्ग १	१६	२५	७	कु.	२०	१९	६	५३	५	२१
९	२	१७	२६	८	कुम्भ			६	५४	५	२०
१०	३	१८	२७	९	मी.	३९	४	६	५५	५	२०
११	४	१९	२८	१०	मीन			६	५६	५	१९
१२	५	२०	२९	११	मे.	४७	२०	६	५६	५	१९
१३	६	२१	३०	१२	मेष			६	५७	५	१९
१४	७	२२	मार्ग १	१३	वृ.	४७	३९	६	५८	५	१८
१५	८	२३	२	१४	वृष			६	५९	५	१८

तिथि	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	ग्रह दर्शन - प्रातः शुक्र पूर्व में दीखेगा। सायं मंगल पश्चिम कपाल में होगा। गुरु-शनि पूर्व में दृश्य होंगे।
१	६	२२	१९	५८	चन्द्र दर्शन मु. ३०
२	६	२३	२०	१७	यम द्वितीया,भाई दूज (देखें पृ. 98)विश्वकर्मा पूजा, शाबान प्रा.
३	६	२४	२०	३८	भ. ५६/३६ बाद,
४	६	२५	२१	१	भ.३०/५८तक,वक्री बुध विशा.में ४१/२०,शुक्र हस्त में३८/३०
५	६	२३	२१	२५	मंगल उ.षा. में ४५/३०,
६	६	२७	२१	५१	वक्री गुरु अश्वि.१में १६/२८, जन्मदिन जवाहरलाल नेहरु(A)
७	६	२८	२२	१९	भ. ४७/३५ बाद,वक्री बुध तुला में १७/५५,
८	६	२९	२२	४८	भ. १८/५५ तक, पञ्चक प्रा.२०/१९,सं.सूर्य वृश्चिक (B)
९	७	०	२३	१८	कूष्माण्ड नवमी,अक्षय नवमी (C)
१०	७	१	२३	४९	मंगल मकर में ९/२८,
११	७	२	२४	२२	भ.१७/९से४५/१२तक,सूर्य अनु. में ५५/५, भीष्म पंचक (D)
१२	७	३	२४	५६	पञ्चक समाप्त ४७/२०,तुलसी विवाह,
१३	७	४	२५	३१	राहु पुष्य३,केतु श्रव.१में ५९/४५, प्रदोष व्रत, वैकुण्ठ चतुर्दशी,
१४	७	५	२६	७	भ. २३/१८ से ४८/३७ तक, सूर्य सायन, (E)
१५	७	६	२६	४४	भीष्म पंचक समाप्त, श्री गुरु नानक जयन्ती (F)

(A) बाल दिवस (बाल मेला)(B) ३६/५०, मु ३० पुण्यकाल मध्याह्नोत्तर, गोपाष्टमी(C) बलिदान दिन लाला लाजपत राय(D) प्रारम्भ, देव प्रबोधिनी एकादशी व्रत (स.),(E) धनु में ४२/२२ सत्यनारायण व्रत, शक मार्गशीर्ष प्रारम्भ(F) कार्त्तिक स्नान समाप्त, कार्तिक पूर्णिमा,

कार्तिक शुक्ल ८ मंगल, इष्ट ५६/३२

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	१०	८	६	०	५	०	३	९
०	७	२९	२७	३	१४	१९	१३	१३
१९	१२	४	४८	२	४०	०	३६	३६
४६	३९	३३	१०	२९	३८	५२	५	५
६०	७९६	४५	७६	६	६५	४	३	३
२९	७	३०	३२	१५	५९	४१	११	११
-	-	मा.	व.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
४	१	१	३	१	२	२	४	२
विशा.	शत.	उ.षा.	विशा.	अश्वि.	हस्त	भर.	पुष्य	श्रव.

कुण्डली सूर्योदये

९ मं.
सू. ८
७ बु
चं.१० के.
६ शु.
११
५
१२
२
४ रा.
गु. १ श.
३

लोक भविष्य- इस मास में पांच चन्द्र एवं मंगलवार हैं, अतः पश्चिमी देशों एवं मुस्लिम देशों में कहीं घोर आन्तरिक कलह से वातावरण अशांत हो, कहीं रक्तपात से सत्ता हस्तान्तरण हों, 'यत्र मासे महीसूनोर्जायन्ते पंच वासरा;। रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्रभंगस्तदा भवेत्।' किसी विशिष्ट व्यक्ति का पद कार्तिक किंवा मार्गशीर्ष में रिक्त हो। इस पक्ष में शनि-मंगल का दशम-चतुर्थ योग कहीं युद्धाग्नि को भी प्रज्वलित कर सकता है ।

ग्रहचार और बाजार का रुख- पक्षारम्भ में रुई, चांदी, चावल में विशेष मन्दे का वातावरण रहे। अनाजों व दालवाना में इस समय मन्दी आने पर स्टाक करें, आगे अच्छा लाभ मिलेगा। १३ नवम्बर के लगभग रुई में अचानक तेजी से लाभ लें। १५ नवम्बर के लगभग रुई, गुड़ खाण्ड, सेना, अलसी, सरसों आदि तेलवीया में मन्दे की आशा होने पर भी तेजी ही रहे।

कुण्डली सूर्योदये

९
७ बु
के. १० मं.
सू. ८
६ शु
११
५
१२
२ चं.
४ रा.
गु.१ श.
३

कार्तिक शुक्ल १५ मंगल,इष्ट ५६/१७

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	१	९	६	०	५	०	३	९
७	१७	४	२१	२	२२	१८	१३	१३
२३	२७	२३	५३	२१	२७	२८	१३	१३
३५	३३	५९	४६	५२	४७	४९	५०	५०
६०	९१३	४५	७	५	६७	४	३	३
३८	३७	४७	११	१०	३९	२५	११	११
-	-	मा.	व.	व.	मा.	व.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
२	३	३	१	१	४	२	३	१
अनु.	रो.	उ.षा.	विशा.	अश्वि.	हस्त	भर.	पुष्य	श्रव.

आकाश लक्षण- नवम्बर १२ से १८, तक काश्मीर, भूटान, शिलांग, हि.प्र. एवं कुछ अन्य उत्तरी भारत में वायुवेग के साथ बादलचाल वर्षा व बूंदाबादी के योग हैं। शरद ऋतु का प्रभाव बढ़े।

शकुन विचार- कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को सूर्य के चारों तरफ परिवेष (घेरा) दिखाई दे तो तेल के स्टाक से आगे लाभ लें।

श्री वि.सं.२०५६, शाक १९२१,						**मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष१८**										तारीखें				चन्द्र राशि			चण्डीगढ़				उदय-कालिक				(२४ नवम्बर से ७ दिसम्बर तक सन् १९९९ ई.) दक्षिणायन, दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतु।
दि. मा.		तिथि	वार	समाप्ति काल		नक्षत्र	समाप्ति काल		योग	समाप्ति काल		करण	समाप्ति काल			प्र.	अं.	श.	मु.	प्रवेश काल			भा.स्टैं.टा.				स्पष्ट सूर्य				**ग्रह दर्शन** - ५ दिसम्बर को बुध का सूर्य से अन्तर अधिकतम होगा। २४ नवम्बर को बुध प्रातः पूर्व में दीखने लगेगा। सांय गु. श. पूर्व में होंगे। मंगल पश्चिम कपाल में होगा। प्रातः शुक्र-बुध पूर्व में होंगे।
																मार्ग.	नवं.	मार्ग.	शाबा.				सूर्योदय		सर्यास्त						
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.							घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२५	४२	१	बु.	४	२०	रो.	१९	१८	शि. सि.	२ ५२	५३ ८	कौ.	४	२०		९	२४	३	१५	मि.	४५	३८	७	०	५	१८	७	७	२७	२३	शुक्र चित्रा में ४२/३० बुध पूर्व में उदित ३३/२,
अवम		२	बु.	५५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	द्वितीय तिथिक्षय
२५	४०	३	गु.	४६	१८	मृ.	११	५८	सा.	४१	५५	व.	२०	३९		१०	२५	४	१६	मिथुन			७	१	५	१७	७	८	२८	४	भ.२०/३९ से ४६/१८ तक, बुध मार्गी ६/२२,
२५	३८	४	शु.	३८	४०	आ.	५	२८	शु.	३२	३२	ब.	१२	२९		११	२६	५	१७	क.	५६	३०	७	२	५	१७	७	९	२८	४६	श्री गणेश चतुर्थी व्रत,
२५	३८	५	श.	३२	३०	पुन. पु.	० ५६	१० २५	शु.	२४	१८	कौ.	५	३५		१२	२७	६	१८	कर्क			७	२	५	१७	७	१०	२९	२९	
२५	३५	६	र.	२७	५२	आश्ले.	५४	१८	ब्र.	१७	२०	ग.	०	११		१३	२८	७	१९	सि.	५४	१८	७	३	५	१७	६	११	३०	१३	भ. २७/५२ से ५६/२९ तक,
२५	३२	७	चं.	२५	५	म.	५३	५२	ऐं.	११	४२	ब.	२५	५		१४	२९	८	२०	सिंह			७	४	५	१७	७	१२	३०	५८	
२५	२७	८	मं.	२४	०	पू.फा.	५५	१०	वै.	७	३२	कौ.	२४	०		१५	३०	९	२१	सिंह			७	५	५	१६	७	१३	३१	४५	शुक्र तुला में ३३/३२, श्री कालाष्टमी(A)
२५	२५	९	बु.	२४	३८	उ.फा.	५८	०	वि.	४	४०	ग.	२४	३८		१६	दि.१	१०	२२	क.	१०	५३	७	६	५	१६	७	१४	३२	३४	भ. ५५/४१ बाद, मंगल श्रवण में १५/१० दिसम्बर प्रारम्भ,
२५	२३	१०	गु.	२६	४५	ह.	६०	०	प्री.	३	०	वि.	२६	४५		१७	२	११	२३	कन्या			७	७	५	१६	७	१५	३३	२५	भ. २६/४५ तक,
२५	२२	११	शु.	३०	१२	ह.	२	१०	आ.	२	२५	बा.	३०	१२		१८	३	१२	२४	तु.	३४	४८	७	७	५	१६	७	१६	३४	१७	सूर्य ज्येष्ठा में ५/३०, उत्पन्ना एकादशी व्रत(स.),
२५	२०	१२	श.	३४	४०	चि.	७	२५	सौ.	२	४०	कौ.	२	२७		१९	४	१३	२५	तुला			७	८	५	१६	७	१७	३५	१२	
२५	१८	१३	र.	३९	५५	स्वा.	१३	३२	शो.	३	३५	ग.	७	१७		२०	५	१४	२६	तुला			७	९	५	१६	७	१८	३६	८	भ. ३९/५५ बाद, प्रदोष व्रत,
२५	१५	१४	च.	४५	४८	वि.	२०	१८	अ.	५	०	वि.	१२	५१		२१	६	१५	२७	वृ.	३	३८	७	१०	५	१६	७	१९	३७	४	भ. ११/५१ तक, बुध वृश्चिक में १७/५, शुक्र स्वा में(B)
२५	१२	३०	मं.	५२	५	अनु.	२७	३२	सु.	६	५२	च.	१८	५७		२२	७	१६	२८	वृश्चिक			७	११	५	१६	७	२०	३८	१२	भौमवती अमावस,

(A) (श्री भैरवाष्टमी)(B) १९/१८ , वेंकटेश(प्लूटो) ज्येष्ठा १ में

मार्गशीर्ष कृष्ण ८ मंगल, इष्ट ५६/२

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	४	९	६	०	६	०	३	९
१४	२६	९	२४	१	०	१७	१२	११
२८	५०	४५	२५	४९	२५	५९	५१	५१
३५	२१	२२	१९	२४	४४	१	३४	३४
६०	७६३	४६	५२	३	६९	४	३	३
४९	३१	४	३०	५४	३	१	११	११
-	-	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
४	१	४	२	१	३	२	३	१
अनु.	पू.फा.	उ.षा.	विशा.	आश्ले.	चित्रा	भर.	पुष्य	श्रव.

कुण्डली सूर्योदये

९ / बु ७ शु / ८ सू. / पं.१० के / ६ / ११ / ५चं. / १२ / २ / ४ रा. / श.१गु. / ३

लोक भविष्य- इस पक्ष में मंगल-राहु का समसप्तक, शनि-मंगल का परस्पर दृष्टि सम्बन्ध चीन, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, रूस एवं यूरोपीय बड़े देशों के लिए शुभ नहीं। कहीं भूकम्प से हानि, कहीं बड़े राजनीतिज्ञ को कठिन परिस्थिति का सामना करना पड़े। कहीं सीम-प्रान्तों पर सैन्य हलचल से तनाव की स्थिति बने । मकर-मीन -कन्या एवं मेष राशि वाले देशों को कठिन परिस्थिति का सामना करना पड़ेगा।

ग्रहचाल और बाजार का रुख- पक्षारम्भ में ही बुध के मार्गी होने पर बाजार का रुख अचानक तेल, तिलहन में मन्दे का वातावरण बन सकता है। पक्ष मध्य में एवं पक्षान्त में तुला राशि के शुक्र-बुध तेल तिलहन में मन्दे का संकेत देते हैं , लेकिन शीघ्र ही बाजार तेजी की तरफ बढ़ेंगे, सावधानी से काम करें।

कुण्डली सूर्योदये

के १० मं. / ९ / बु ८ सू च. / ७ शु / ६ / ११ / ५ / १२ / २ / ४ रा. / गु.१श. / ३

मार्गशीर्ष कृष्ण ३० मंगल, इष्ट ५५/४७

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	७	९	७	०	६	०	३	९
२१	२२	१५	२	१	८	१७	१२	१२
३४	१४	८	२	२६	३२	३२	२९	२९
४५	८	२८	४६	७	२५	१८	१८	१८
६०	७०९	४६	७७	२	७०	३	३	३
५८	२६	१७	४३	३१	१०	३१	११	११
-	-	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
२	२	२	४	१	१	२	३	१
ज्ये.	ज्ये.	श्रव.	विशा.	आश्ले.	स्वा.	भर.	पुष्य	श्रव.

आकाश ल[illegible] हो। शीत लहर जोर पकड़े। हि.प्र., काश्मीर, में जोरदार वर्षा व हिम्पात से शीत भयंकर हो।

शकुन विचार- यदि मार्गशीर्ष कृष्ण चतुर्दशी किंवा अमावस के दिन बादल हो तो अनाजों में शीघ्र तेजी आती है ।

श्री वि.सं.२०५६, शाक १९२१, मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष १९ | तारीखें | चन्द्र राशि | चण्डीगढ़ | उदय-कालिक

(८ से २२ दिसम्बर तक, सन् १९९९ ई.)
दक्षिण-उत्तरायण, दक्षिण गोल, हेमन्त शिशिर ऋतु।

ग्रह दर्शन - २१ दिसम्बर को बुध पूर्व में अदृश्य हो जाएगा। प्रातः बु.,शु. को पूर्व में देखें। सायं मंगल पश्चिम में एवं गु.,श. पूर्व में दीखेंगे।

दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	ए.	योग	समाप्ति काल घ.	प.	करण	समाप्ति काल घ.	प.	प्र. मार्गी	अं. दिसं.	श. मार्गी	मु. तारा.	चन्द्र राशि प्रवेश काल	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
२५	१२	१	बु.	५८	४२	ज्ये.	३५	८	धृ.	९	२	किं.	२५	२४	२३	८	१७	२९	ध.	३५	८	७	११	५	१६	७	२१	३९	१	बुध अनुराधा में ५५/२०,
२५	१२	२	गु.	६०	०	मू.	४२	४८	शू.	११	२०	बा.	३२	२०	२४	९	१८	३०	धनु			७	१२	५	१७	७	२२	४०	२	चन्द्र दर्शन मु.३०,
२५	१०	२	शु.	५	१८	पू.षा.	५०	२०	गं.	१३	३८	कौ.	५	१८	२५	१०	१९	र.१	धनु			७	१३	५	१७	७	२३	४१	१	रमजान मु. प्रारम्भ,
२५	१०	३	श.	११	४५	उ.षा.	५७	२८	वृ.	१५	४५	ग.	११	४५	२६	११	२०	२	म.	७	७	७	१३	५	१७	७	२४	४२	१	भ. ४४/३७ बाद, यूरेनस श्रव. ४ में ७/४९,
२५	८	४	र.	१७	३०	श्र.	६०	०	ध्रु.	१७	२२	वि.	१७	३०	२७	१२	२१	३	मकर			७	१४	५	१७	७	२५	४३	५	भ. १७/३० तक,
२५	५	५	चं.	२२	१८	श्र.	३	४३	व्या	१८	१५	बा.	२२	१८	२८	१३	२२	४	कुं.	३६	१५	७	१५	५	१७	७	२६	४४	७	पंचक प्रा. ३६/१५बाद,बलिदान दिन गुरु तेग बहादुर जी,
२५	५	६	मं.	२५	४८	ध.	८	४८	ह.	१८	१०	तै.	२५	४८	२९	१४	२३	५	कुम्भ			७	१६	५	१८	७	२७	४५	१०	गुहषष्ठी, चम्पाषष्ठी,
२५	५	७	बु.	२७	२८	श.	१२	२२	व.	१६	४८	व.	२७	२८	३०	१५	२४	६	मी.	५८	३६	७	१६	५	१८	७	२८	४६	१३	भ. २७/२८से ५७/२२ तक, मित्र सप्तमी,
२५	२	८	गु.	२७	१५	पू.भा.	१४	०	सि.	१३	५२	ब.	२७	१५	पौ.१	१६	२५	७	मीन			७	१७	५	१८	७	२९	४७	१८	सं. सूर्य मूल धनु में १२/२५ मु.३०,पुण्यकाल सारा दिन,
२५	२	९	शु.	२४	५५	उ.भा.	१३	४०	व्य.	९	२५	कौ.	२४	५५	२	१७	२६	८	मीन			७	१८	५	१९	८	०	४८	२३	शुक्र विशाखा में ३९/२,
२५	२	१०	श.	२०	३५	रे.	११	२२	व. प.	३ ५५	२० ४८	ग.	२०	३५	३	१८	२७	९	मे.	११	२२	७	१८	५	१९	८	१	४९	२८	भ. ४७/३२ बाद, पंचक समाप्त ११/२२, मंगल धनिष्ठा (A)
२५	२	११	र.	१४	३०	अ.	७	१५	शि.	४६	५५	वि.	१४	३०	४	१९	२८	१०	मेष			७	१९	५	२०	८	२	५०	३३	भ. १४/३० तक, मोक्षदा एकादशी व्रत (स.),श्रीगीता जयन्ती,
२५	२	१२	चं.	६	५३	भ. कृ.	१ ५४	३८ ५०	सि.	३७	०	बा.	६	५३	५	२०	२९	११	वृ.	१४	५६	७	१९	५	२०	८	३	५१	३८	गुरु मार्गी ३३/५०, सोम प्रदोष व्रत,
अवम		१३	चं.	५८	१२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	त्रयोदशी तिथिक्षय
२५	०	१४	मं.	४८	४८	रा.	४७	२०	सा.	२६	२२	ग.	२३	३०	६	२१	३०	१२	वृष			७	२०	५	२०	८	४	५२	४४	भ. ४८/४८ बाद, बुध पूर्व में अस्त ६/१२,
२५	२	१५	बु.	३९	१२	मृ.	३९	३८	शु.	१५	२८	वि.	१४	०	७	२२	पौ.१	१३	मि.	१३	२९	७	२०	५	२१	८	५	५३	४९	भ. १४/० तक, सूर्य सायन मकर में १५/२,उत्तरायण(B)

(A) में ३१/२०,बुध ज्येष्ठा में २१/४२,(B) शिशिर ऋतु प्रारम्भ, श्री सत्यनारायण व्रत, श्री दत्त जयन्ती, शक पौष प्रारम्भ,

मार्ग शीर्षशुक्ल ८ गुरु, इष्ट ५५/३२

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	११	९	७	०	६	०	३	९
०	१२	२२	१४	१	१९	१७	१२	१२
४३	१२	५	३३	१०	८	३	०	०
४८	५०	४६	१५	४९	१४	४१	४२	४२
६१	८४३	४६	८७	०	७१	२	३	३
३	२९	५७	५५	३९	१३	४४	११	११
-	-	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ
१	३	४	४	१	४	१	३	१
मूल.	उ.भा.	श्रव.	अनु.	अश्वि.	स्वा.	भर.	पुष्य	श्रव.

कुण्डली सूर्योदये

के १० मं.
बु. ८
११
९ सू.
७ शु.
१२ चं.
६
१गु. श.
३
५
२
४ रा

लोक भविष्य-इस पक्ष में तिथिवृद्धि एवं तिथिक्षय होने से जन जीवनोपयोगी वस्तुओं में मन्दा बनेगा। "जेहि पखवारे तिथि बढै वाही में घट जाय। सभी वस्तु मन्दी बिकें मंहगाई घट जाय"। मार्ग-शुक्ल पक्ष में तिथिक्षय होने से किसी राष्ट्र विशेष की शासन सत्ता में परिवर्तन हो, प्रजा में रोगादि से कष्ट एवं कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति भी बन सकती है-"मार्गशीर्षादि मासेषु शुक्ल पक्षे तिथिक्षयः। छत्रभंगं प्रजापीड़ां दुर्भिक्षं च समादिशेत्।"

ग्रहचाल बाजार का रुख- पक्ष मध्य में रुई, कपास, सूत, तिल, तेल, सोना, चांदी आदि में तेजी आती है, १८ दिसम्बर के लगभग घी, गुड़, खाण्ड, चावल में तेजी रहेगी। रुई में कुछ मन्दा आकर फिर तेजी। चावल अलसी, गुड़, तम्बाखू में भी तेजी बने। पक्षान्त में अनाज घी आदि मन्दे हो।

कुण्डली सूर्योदये

१०म. के.
८ बुं.
९ सू.
११
७ शु.
१२
६
गु.१ श.
३
५
चं.२
४ रा.

मार्गशीर्ष शुक्ल १५ बुध, इष्ट ५५/२४

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	२	९	७	०	६	०	३	९
६	१०	२६	२३	१	२६	१६	११	११
५०	४४	४४	२८	१०	१७	४८	४१	४१
११	२९	३७	४३	१	३	४४	३६	३६
६१	१०६	४६	१०	०	७१	२	३	३
६	१२	३०	३८	३६	४८	९	११	११
-	-	मा.	मा.	पा.	मा.	व.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
३	२	१	३	१	१	२	३	४
मूल.	रोहि.	धनि.	ज्ये.	अश्वि.	विशा.	भर.	पुष्य	श्रव.

आकश लक्षण- दिसम्बर ८,११,१६,१७,१८,२०,२१ को वर्षा हो। उत्तरी भारत पूर्ण रूपेण शीत लहर से जकड़ा जाएगा, अनेकत्र धुन्द का वातावरण रहे। हि.प्र., काश्मीर में भारी हिमपात के समाचार मिलेंगे, जिससे यातायात प्रभावित होगा ।

शकुन विचार- यदि इस पक्ष में धनिष्ठा नक्षत्र के समय (१४,१५ दिसम्बर को) बादल गरजें तो जनता में संक्रामक रोगों से हानि हो। यदि इस पक्ष में इन्द्रधनुप दीखे तो आगे अच्छी वर्षा हो, बाजार मन्दे हों।

श्री वि.सं.२०५६, शाक १९२१,														**पौष कृष्ण पक्ष २०**								तारीखें				चन्द्र राशि			चण्डीगढ़				उदय-कालिक				(२३ दिसम्बर सन् १९९९ ई. से ६ जनवरी सन् २०००ई.तक) उत्तरायण,दक्षिण गोल, शिशिर ऋतु।
दि. मा.		तिथि	वार	समाप्ति काल		नक्षत्र	समाप्ति काल		योग	समाप्ति काल		करण	समाप्ति काल		प्र.	अं.	श.	मु.	प्रवेश काल			भा.स्टैं.टा.				स्पष्ट सूर्य				ग्रह दर्शन - बुध अस्त है। सायं मंगल पश्चिम में तथा गु.,श. पूर्व कपाल में होंगे। प्रातः शुक्र पूर्व में दीखेगा ।
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	पौष	दिसं.	पौष	रम.		घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सर्यास्त घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२५	२	१	गु.	२९	४८	आ.	३२	५	शु.	४	३०	बा.	४	३०	८	२३	२	१४	मिथुन			७	२१	५	२२	८	६	५४	५५	
									ब्र.	५३	५८																			
२५	२	२	शु.	२१	८	पुन.	२५	२०	ऐं.	४४	१०	ग.	२१	८	९	२४	३	१५	क.	१२	२	७	२१	५	२२	८	७	५६	२	भ. ४७/१४ बाद,
२५	२	३	श.	१३	३०	पु.	१९	३८	वै.	३५	१८	वि.	१३	३०	१०	२५	४	१६	कर्क			७	२२	५	२३	८	८	५७	९	भ. १३/३०तक, श्री गणेश चतुर्थी व्रत,
२५	२	४	र.	७	२२	आश्ले.	१५	२५	वि.	२७	४५	बा.	७	२२	११	२६	५	१७	सिं.	१५	२५	७	२२	५	२३	८	९	५८	१६	शुक्र वृश्चिक में १/१८,
२५	२	५	चं.	२	५५	म.	१२	५८	प्री.	२१	३८	तै.	२	५५	१२	२७	६	१८	सिंह			७	२३	५	२४	८	१०	५९	२४	मंगल कुम्भ में ७/१८, बुध मूल धनु में १२/५०,(A)
२५	२	६	मं.	०	२८	पू.फा.	१२	२५	आ.	१७	८	व.	०	२८	१३	२८	७	१९	क.	२७	४५	७	२३	५	२४	८	१२	०	३२	भ.०/२८से ३०/२४ तक, शुक्र अनु. में ४७/३५,
२५	२	७	बु.	०	२०	उ.फा.	१३	४५	सौ.	१४	५	ब.	०	२०	१४	२९	८	२०	कन्या			७	२४	५	२५	८	१३	१	४१	सूर्य पू.षा. में १७/५२,
२५	५	८	गु.	१	२२	ह.	१७	०	शो.	१२	३२	कौ.	१	२२	१५	३०	९	२१	तु.	४९	२२	७	२४	५	२६	८	१४	२	५१	
२५	५	९	शु.	४	३२	चि.	२१	४५	अ.	१२	१५	ग.	४	३२	१६	३१	१०	२२	तुला			७	२४	५	२६	८	१५	४	२	भ.३६/५०बाद, सन् १९९९ई.पूर्ण,
२५	५	१०	श.	९	८	स्वा.	२७	५२	सु.	१३	५	वि.	९	८	१७	जा१	११	२३	तुला			७	२४	५	२७	८	१६	५	१२	भ. ९/८ तक, सन् २०००ई.प्रारम्भ, जनवरी प्रारम्भ,
२५	८	११	र.	१४	४५	वि.	३४	४८	धृ.	१४	३२	बा.	१४	४५	१८	२	१२	२४	वृ.	१८	४	७	२५	५	२८	८	१७	६	२२	सफला एकादशी व्रत(स.),
२५	८	१२	चं.	२१	५	अनु.	४२	१८	शू.	१६	३५	तै.	२३	५	१९	३	१३	२५	वृश्चिक			७	२५	५	२९	८	१८	७	३२	
२५	१०	१३	मं.	२७	४५	ज्ये.	५०	०	गं.	१८	५०	व.	२७	४५	२०	४	१४	२६	ध.	५०	०	७	२५	५	२९	८	१९	८	४२	भ. २७/४५बाद, मंगल शत. में ४२/५८, बुध पू.षा. में (B)
२५	१०	१४	बु.	३४	२२	मू.	५७	३५	वृ.	२१	१०	वि.	१	४	२१	५	१५	२७	धनु			७	२५	५	३०	८	२०	९	५४	भ.१/८ तक,
२५	१२	३०	गु.	४०	५५	पू.षा.	६०	०	ध्रु.	२३	१५	च.	७	३९	२२	६	१६	२८	धनु			७	२६	५	३१	८	२१	११	५	

(A) वक्री शनि भरणी१ में २१/२५, (B) ४८/१२ भौम प्रदोष व्रत,

पौष कृष्ण ८ गुरु, इष्ट ५५/१५

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	६	१०	८	०	७	०	३	९
१४	१	२	५	१	५	१६	११	११
५९	१३	५६	४२	२०	५३	३४	१६	१६
९	३८	४६	२२	३४	५८	२७	९	९
६१	७३२	४६	९३	२	७२	१	३	३
९	१४	३२	४	१४	२८	१९	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
१	३	३	२	१	१	१	३	१
पू.षा.	उ.फा.	धनि.	मूल	अश्वि.	अनु.	भर.	पुष्य	श्रव.

कुण्डली सूर्योदये

१० के.
मं. ११
बु. ९ सू.
८ शु.
७
१२
चं. ६
गु.१ श.
३
५
२
रा. ४

लोक भविष्य- इस पौष मास में पांच गुरुवार होने से पश्चिमी भूभाग पर कहीं युद्धमय वातावरण से शासन चिन्तित हो। किसी देश के साथ तनावपूर्ण वातावरण बने। लेकिन भारत में इस पक्ष में कुम्भ राशि का मंगल कहीं धार्मिक, उन्माद को जन्म दे सकता है, जिससे शासन को कठिन परिस्थिति का सामना करना पड़ेगा।

ग्रहचाल और बाजार का रुख-२६ दिसंबर के लगभग रुई, शेयर , चांदी में पहले काफी मन्दा बाद में काफी तेजी बने। गेहूं, जौ उड़द, मूंग मोठ, बाजरा एवं दालवाना में तेजी हो, पीतल , तिल, तेल ,अलसी, सरसों, घी, चावल, ज्वार, मिर्च, सूत में भी तेजी रहेगी।

आकाश लक्षण- दिसम्बर २६ से २८ तक एवं ४ जनवरी को पंजाब, हि.प्र., हरयाणा, राजस्थान, केन्द्र शासित कुछ प्रदेशों में भयंकर शीत लहर चलेगी। कहीं धुन्ध, वर्षा व वायुवेग से हानि भी हो।

शकुन विचार- यदि पौषकृष्ण पञ्चमी को वर्षा हो तो आगे अच्छी वर्षा होती है। यदि इस पक्ष में अष्टमी के दिन बादल चाल एवं वर्षा हो तो आगे फरवरी में अनाज तेज हों।

कुण्डली सूर्योदये

१० के.
मं. ११
९ सू. बु. चं.
८शु.
७
१२
६
गु.१ श.
३
५
२
रा. ४

पौष कृष्ण ३० गुरु, इष्ट ५५/१०

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	८	१०	८	०	७	०	३	९
२२	२४	८	१६	१	१४	१६	१०	१०
७	४४	२२	४०	४०	२२	२७	५३	५३
२०	२	३१	४३	२८	३७	३६	५३	५३
६१	७१७	४६	९५	३	७२	०	३	३
१०	५४	३२	२८	३८	५४	३२	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
३	४	१	२	१	४	१	३	१
पू.षा.	पू.षा.	शत.	पू.षा.	अश्वि.	अनु.	भर.	पुष्य	श्रव.

श्री वि.सं.२०५६, शाक १९२१,	पौष शुक्ल पक्ष २१	तारीखें	चन्द्र राशि	चण्डीगढ़	उदय-कालिक	(७ से २१जनवरी तक, सन् २००० ई.) उत्तरायण, दक्षिण गोल, शिशिर ऋतु।

दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति घ.	काल प.	नक्षत्र	समाप्ति घ.	काल प.	योग	समाप्ति घ.	काल प.	करण	समाप्ति घ.	काल प.	प्र. पौष	अं. जन.	श. पौष	मु. रम.	प्रवेश काल	घ.	प.	भा.स्टैं.टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	ग्रह दर्शन - बुध अस्त है। प्रातः गुरु,शनि खमध्यासन्न होंगे। सायं मंगल पश्चिम में तथा प्रातः शुक्र पूर्व में होगा।
२५	१५	१	शु.	४६	३८	पू.षा.	४	५०	व्या.	२५	१०	किं.	१३	४७	२३	७	१७	२९	म.	२१	३२	७	२६	५	३२	८	२२	१२	१५	
२५	१५	२	श.	५१	४८	उ.षा.	११	३५	ह.	२६	२८	बा.	१९	१३	२४	८	१८	३०	मकर			७	२६	५	३२	८	२३	१३	२५	चन्द्र दर्शन मु.३०, शुक्र ज्येष्ठा में ४८/१०,
२५	१७	३	र.	५६	५	श्र.	१७	३५	व.	२७	१२	तै.	२३	५२	२५	९	१९	शवा १	कु.	४९	५८	७	२६	५	३३	८	२४	१४	३५	पञ्चक प्रारम्भ ४९/५८, शव्वाल मु. प्रारम्भ,
२५	२०	४	च.	५९	१५	ध.	२२	३८	सि.	२७	१०	व.	२७	४०	२६	१०	२०	२	कुम्भ			७	२६	५	३४	८	२५	१५	४५	भ. २७/४० से ५९/१५ तक,
२५	२२	५	मं.	६०	०	श.	२६	३५	व्य.	२६	१५	ब.	३०	१०	२७	११	२१	३	कुम्भ			७	२६	५	३५	८	२६	१६	५४	सूर्य उ.षा. में २२/३५,
२५	२५	५	बु.	१	५	पू.भा.	२९	८	व.	२४	१८	बा.	१	५	२८	१२	२२	४	मी.	१३	३०	७	२६	५	३६	८	२७	१८	२	शनि मार्गी ८/८,
२५	२८	६	गु.	१	३०	उ.भा.	३०	१५	प.	२१	८	तै.	१	३०	२९	१३	२३	५	मीन			७	२६	५	३७	८	२८	१९	११	बुध उ.षा. में ७/२८, लोहड़ी (पंजाब-जम्मू काश्मीर),
२५	२८	७	शु.	०	१८	रे.	२९	१०	शि.	१६	४५	व.	०	१८	मा१	१४	२४	६	मे.	२९	१०	७	२६	५	३७	८	२९	२०	१८	भ.०/१८ से २८/५६तक, पंचक समाप्त २९/१०,सं सूर्य (A)
अवम		८	शु.	५७	२८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	अष्टमी तिथिक्षय
२५	३०	९	श.	५३	५	अ.	२७	४८	सि.	११	२०	बा.	२५	१६	२	१५	२५	७	मेष			७	२६	५	३८	९	०	२१	२५	बुध मकर में ९/२२,
२५	३५	१०	र.	४७	१८	भ.	२४	२०	सा. शु.	४ ५६	१५ १५	तै.	२०	१२	३	१६	२६	८	वृ.	३८	८	७	२५	५	३९	९	१	२२	३१	
२५	३८	११	च.	४०	२०	कृ.	१९	३५	शु.	४७	२०	व.	१३	४९	४	१७	२७	९	वृष			७	२५	५	४०	९	२	२३	३७	भ. १३/४९ से ४०/२० तक, पुत्रदा एकादशी व्रत (स.),
२५	४०	१२	मं.	३२	२५	रो.	१३	४८	ब्र.	३७	४२	ब.	६	२२	५	१८	२८	१०	मि.	४०	३३	७	२५	५	४१	९	३	२४	४२	भौम प्रदोष व्रत, (देखें पृष्ठ ९४)
२५	४२	१३	बु.	२४	०	मृ.	७	१८	ऐं.	२७	४५	तै.	२४	०	६	१९	२९	११	मिथुन			७	२५	५	४२	९	४	२५	४५	शुक्र मूल धनु में ४३/५५,
२५	४७	१४	गु.	१५	२२	आ. पुन.	० ५३	३५ ५२	वै.	१७	३२	व.	१५	२२	७	२०	३०	१२	क.	४०	३३	७	२४	५	४३	९	५	२६	४८	भ. १५/२२ से ४१/९ तक, सूर्द सायन कुम्भ में ४१/१२, (B)
२५	५०	१५	शु.	६	५५	पु.	४७	४२	वि. प्री.	७ ५८	३२ ५	ब.	६	५५	८	२१	मा. १	१३	कर्क			७	२४	५	४४	९	६	२७	५०	मंगल पू.भा. में ५६/१५, बुध श्रवण में ७/५५, सूर्य (C)

(A) मकर में ३८/५२, मु.३०,पुण्यकाल अगले दिन १८/५२ तक, अवतारदिन श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जी,(B) श्री सत्यनारायण व्रत,(C)अभिजित् में ११/५८, नेपच्यून श्रव. १ में १८/१,माघ स्नान प्रारम्भ, पौषी पूर्णिमा, शक माघ प्रारंभ,

पौष शुक्ल ७ शुक्र, इष्ट ५५/१०

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९ ० १६ ३२	० ५ २६ २७	१० १४ ३४ २९	८ २९ ३६ २७	० २ १४ ५५	७ २४ ७ ७	० १६ २६ ३०	३ १० २८ २७	९ १० २८ २७
६१ ६	८५७ ४५	४६ २६	९९ २३	५ ९	७३ १५	० २२	३ ११	३ ११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
२ उ.षा.	२ अभि.	३ शत.	१ उ.षा.	१ अभि.	३ ज्ये.	१ भर.	३ पुष्य	१ श्रव.

कुण्डली सूर्योदये

११ मं.
१० सू. के.
९ बु.
१२ चं.
८ शु.
१ गु. श.
७
२
४ रा.
६
३
५

लोक भविष्य- मेप राशिस्थ शनि का सूर्य के साथ दृष्टि-सम्बन्ध एवं राहु से समसप्तक योग पाकिस्तान के सिन्ध आयरलैण्ड अफ्रीकन देश चीन, जापान में कहीं आन्तरिक अशान्ति, कहीं प्राकृतिक प्रकोप से हानि का संकेत देता है। सरकार मंहगाई पर नियन्त्रण पाने में असफल रहे, 'मकरे च स्थितो भानुः घृत तैल-महर्घताम्। सुभिक्षं सर्वधान्यानां लोकानां दुःख पीड़नम्॥'

ग्रहचाल और बाजार का रुख- १२ जनवरी के लगभग रुई में मन्दा आकर तेजी हो, तिल, तेल, सरसों, हींग, लाल मिर्च तेज हों। पक्षमध्य में रुई, सोना, चांदी, घी, तेल, अलसी, गुड़,शक्कर,खाण्ड तेज रहे।

आकाश लक्षण- जनवरी ८,१२,१३,१५,१९,२०,२१ को हि.प्र. , शिलांग, आसाम, अरुणाचल एवं जम्मू क शमीर में वर्षा योग हैं। उत्तरी भारत में जोरदार शीत लहर चले। उच्च पर्वत शिखिरों पर हिमपात हो।

कुण्डली सूर्योदये

११ मं.
१० सू. बु. के.
९ शु.
१२
८
१ गु.श.
७
२
४ रा.चं.
६
३
५

पौष शुक्ल १५ शुक्र, इष्ट ५५/१५

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९ ७ २४ १	३ १८ ३० ४२	१० १९ ५९ १०	९ ११ २० २८	० २ ५४ ३८	८ २ ४० ४१	० १६ ३१ २७	३ १० ६ ११	९ १० ६ ११
६१ १	८७३ ४६	४६ १८	१०२ ३५	६ २२	७३ ३१	१ ९	३ ११	३ ११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
४ उ.षा.	१ आश्ले.	४ शत.	१ श्रव.	१ अश्वि.	१ मूल	१ भर.	२ पुष्य	४ श्रव.

शकुन विचार- यदि पौष शुक्ल पूर्णिमा को बिजली चमके या आकाश मेघाछन्न रहे तो फसल अच्छी हो । पौष शुक्ल पञ्चमी को यदि वर्षा हो तो आगे वर्षा अच्छी होती है ।

श्री वि.सं.२०५६, शाक १९२१,						माघ कृष्ण पक्ष २२										तारीखें				चन्द्र राशि			चण्डीगढ़				उदय-कालिक				(२२जनवरी से ५ फरवरी तक, सन् २००० ई.) उत्तरायण, दक्षिण गोल ,शिशिर ऋतु।
दि. मा.		तिथि	वार	समाप्ति काल		नक्षत्र	समाप्ति काल		योग	समाप्ति काल		करण	समाप्ति काल		प्र.	अं.	श.	मु.	प्रवेश काल			भा.स्टैं.टा.				स्पष्ट सूर्य				ग्रह दर्शन - बुध अस्त है। सायं मंगल पश्चिम में तथा गु.,श.खमध्यासन्न होंगे। प्रातः शुक्र पूर्व में होगा ।
															माघ	जन.	माघ	फाल्गु.				सूर्योदय		सर्यास्त						
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
अवम		१	शु.	५९	५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प्रतिपदा तिथिक्षय,
२५	५२	२	श.	५२	१५	आश्ले.	४२	२५	आ.	४९	२२	तै.	२५	४०	९	२२	२	१४	सि.	४२	२५	७	२४	५	४५	९	७	२८	५१	
२५	५२	३	र.	४६	४८	म.	३८	२५	सौ.	४१	४८	व.	१९	३१	१०	२३	३	१५	सिंह			७	२४	५	४५	९	८	२९	५१	भ.१९/३२ से ४६/४८तक,राहु पुष्य २में,केतु उ.षा.४ में ५१/ ४७,
२५	५८	४	चं.	४३	०	पू.फा.	३६	५	शो.	३५	३५	ब.	१४	४४	११	२४	४	१६	क.	५०	५६	७	२३	५	४६	९	९	३०	५०	सूर्य श्रवण में २८/३५, श्री गणेश (संकष्ट)चतुर्थीव्रत (A)
२६	०	५	मं.	४१	८	उ.फा.	३५	३२	अ.	३०	४८	कौ.	१२	४	१२	२५	५	१७	कन्या			७	२३	५	४७	९	१०	३१	४९	गुरु अश्वि.२ में ४४/५५, सूर्य अभिजित् से निवृत्त २१/८,
२६	५	६	बु.	४१	२०	ह.	३७	२	सु.	२७	३८	ग.	११	१४	१३	२६	६	१८	कन्या			७	२२	५	४८	९	११	३२	४८	भ. ४१/२० बाद, भारतगणतन्त्र दिवस,
२६	७	७	गु.	४३	२५	चि.	४०	४८	धृ.	२५	५८	वि.	१२	२२	१४	२७	७	१९	तु.	८	५५	७	२२	५	४९	९	१२	३३	४६	भ. १२/२३ तक, शनि भर.२ में ५४/१०,(B)
२६	१२	८	शु.	४७	२२	स्वा.	४५	३०	शू.	२५	४५	बा.	१५	२४	१५	२८	८	२०	तुला			७	२१	५	५०	९	१३	३४	४४	बुध धनि. में ५१/१५,जन्मदिन ला. लाजपतराय जी,
२६	१५	९	श.	५२	४२	वि.	५१	५५	गं.	२६	४०	तै.	२०	२	१६	२९	९	२१	वृ.	३५	१९	७	२१	५	५१	९	१४	३५	४१	
२६	२०	१०	र.	५९	२	अनु.	५९	२०	वृ.	२८	२८	व.	२५	५१	१७	३०	१०	२२	वृश्चिक			७	२०	५	५२	९	१५	३६	३७	भ.२५/५२ से ५९/२ तक, शुक्र पू.षा. में ३६/२५,(C)
२६	२२	११	चं.	६०	०	ज्ये.	६०	०	ध्रु.	३०	४५	ब.	३२	२४	१८	३१	११	२३	वृश्चिक			७	२०	५	५३	९	१६	३७	३२	
२६	२५	११	मं.	५	४७	ज्ये.	७	८	व्या.	३३	१२	बा.	५	४७	१९	फ.१	१२	२४	ध.	७	८	७	१९	५	५३	९	१७	३८	२६	बुध कुम्भ में ४०/३०,षट्तिला एकादशी व्रत (स.),फर.प्रारम्भ,
२६	२७	१२	बु.	१२	२८	मू.	१४	४८	ह.	३५	२२	तै.	१२	२८	२०	२	१३	२५	धनु			७	१९	५	५४	९	१८	३९	१९	प्रदोष व्रत,
२६	३२	१३	गु.	१८	३५	पू.षा.	२२	०	व.	३७	१०	व.	१८	३५	२१	३	१४	२६	म.	३८	३६	७	१८	५	५५	९	१९	४०	११	भ. १८/३५ से ५१/१५तक, मंगल मीन में ५६/१२,
२६	३७	१४	शु.	२३	५५	उ.षा.	२८	२५	सि.	३८	१८	श.	२३	५५	२२	४	१५	२७	मकर			७	१७	५	५६	९	२०	४१	२	
२६	४०	३०	श.	२८	१२	श्र.	३३	४८	व्य.	३८	३५	ना.	२८	१२	२३	५	१६	२८	मकर			७	१७	५	५७	९	२१	४१	५२	बुध शत. में ३४/३२, शनैश्चरी अमा,मौनी अमा,महोदय योग,

(A) (चन्द्रोदय रात्रि २१घं.१०मि.),(B) जन्मदिन स्वामी विवेकानन्द जी, (C)बलिदान दिन महात्मा गान्धी जी,जन्म दिन स्वामी दयानन्द सरस्वती जी,

माघ कृष्ण ८ शुक्र, इष्ट ५५/२२

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	६	१०	९	०	८	०	३	९
१४	२१	२५	२३	३	११	१६	९	९
३०	५९	२२	२७	४२	१५	४१	४३	४३
५९	१०	५१	६	३७	५८	५०	५६	५६
६०	७२१	४६	१०४	७	७३	१	३	३
५७	८	९	५२	३०	४५	५५	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
२	१	२	१	२	४	३	२	४
श्रव.	विशा.	पू.भा.	धनि.	अश्वि.	मृग.	भर.	पुष्य	उ.षा.

कुण्डली सूर्योदये

११ मं.
९शु.
१२
सू.
१०बु.
के.
८
१ गु.
श.
७
चं.
२
४
रा.
६
३
५

लोक भविष्य- इस पक्ष में कुम्भ राशि का बुध एवं मीन राशि का मंगल - जनता में मंहगाई से असन्तोष का कारण बनता है। शनैश्चरी अमा राजनीतिज्ञों में परस्पर मतभेद का संकेत देती है। इस पक्ष में तिथिवृद्धि एवं तिथिक्षय होना शासन को मंहगाई के विरूद्ध अंकुश लगाने के लिए विवश कर दे। मीन राशिस्थ मंगल का फल इस प्रकार लिखा है- 'मीन राशौ कुजश्चैव तृणं काष्ठं चतुष्पदाम्। महर्घं जायते सर्वं ज्ञेयमेवं हि पण्डितैः।'

ग्रहचाल और बाजार का रुख- इस पक्ष में गेहूं, जौ, चावल, रुई, सूत, सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, अलसी,सुपारी, लौंग, घी, तेल में तेजी रहे।

आकाश लक्षण- जनवरी २३,२४,२५,२७,२८,३०, फरवरी १,३,५ को लंका का पूर्वी छोर, पू. पंजाब, उड़ीसा एवं हि.प्र. में कहीं बादल चाल व खण्डवृष्टि के योग हैं। उ.भारत में ऋतु परिवर्तन अनुभव होगा।

शकुन विचार- माघ- कृष्ण तृतीया को यदि मेघ गरजे लेकिन बरसे न हो तो गेहूं और जौ के स्टाक से आगे लाभ मिलेगा।

कुण्डली सूर्योदये

११
बु.
१०
सू.
चं.
के.
९
शु.
१२
मं.
८
१
गु.
श.
७
२
४
रा.
६
३
५

माघ कृष्ण ३० शनि, इष्ट ५५/३२

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	९	११	१०	०	८	०	३	९
२२	२७	१	७	४	२१	१७	९	९
३८	४८	३१	१४	४६	६	०	१८	१८
१४	१७	२४	४७	४६	२९	११	२९	२९
६०	७५०	४५	९८	८	७३	२	३	३
५०	३४	५७	३५	४१	५४	४६	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
४	२	४	१	२	३	२	२	४
श्रव.	धनि.	पू.भा.	शत.	अश्वि.	पू.षा.	भर.	पुष्य	उ.षा.

श्री वि.सं.२०५६, शाक १९२१,	माघ शुक्ल पक्ष २३	तारीखें	चन्द्र राशि	चण्डीगढ़	उदय-कालिक	(६ से १९ फरवरी तक, सन् २००० ई.) उत्तरायण, दक्षिण गोल, शिशिर-वसन्त ऋतु।

दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	प.	योग	समाप्ति काल घ.	प.	करण	समाप्ति काल घ.	प.	प्र. माघ	अं. फ़र.	श. माघ	मु. शव्वा.	चन्द्र राशि प्रवेश काल	घ.	प.	भा.स्टैं.टा. सूर्योदय घं.	मि.	सर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	ग्रह दर्शन - ८ फरवरी से बुध सायंकाल पश्चिम में दीखने लगेगा। १४ फरवरी को बुध का सूर्य से परम अन्तर होगा। प्रातः शुक्र पूर्व में सायं मंगल पश्चिम में,गुरु, शनि पश्चिम कपाल में होंगे।
२६	४५	१	र.	३१	२०	ध.	३८	८	व.	३८	२	ब.	३१	२०	२४	६	१७	२९	कु.	५	५८	७	१६	५	५८	९	२२	४२	४०	पञ्चक प्रारम्भ ५/५८,सूर्य धनि. में, ३६/४०,
२६	५०	२	चं.	३३	१८	श.	४१	२०	प.	३६	३५	बा.	२	१९	२५	७	१८	३०	कुम्भ			७	१५	५	५९	९	२३	४३	२८	चन्द्र दर्शन मु,१५ ,
२६	५२	३	मं.	३४	८	पू.भा.	४३	२५	शि.	३४	१५	तै.	३	४३	२६	८	१९	१ज़ि	मी.	२७	५४	७	१४	५	५९	९	२४	४४	१५	मंगल उ.भा. में १७/२८, बुध पश्चिम में उदित ३१/५२,(A)
२६	५७	४	बु.	३३	४८	उ.भा.	४४	२५	सि.	३१	२	व.	३	५८	२७	९	२०	२	मीन			७	१३	६	०	९	२५	४५	०	भ. ३/५८ से ३३/४८ तक, तिल-कुन्द-वरद चतुर्थी,
२७	०	५	गु.	३२	१८	रे.	४४	१८	सा.	२६	५८	ब.	३	३	२८	१०	२१	३	मे.	४४	१८	७	१३	६	१	९	२६	४५	४४	पंचक समाप्त ४४/१८, शुक्र उ.षा. में २६/२०, श्री पञ्चमी,(B)
२७	५	६	शु.	२९	४८	अ.	४३	१२	शु.	२२	५	कौ.	१	३	२९	११	२२	४	मेष			७	१२	६	२	९	२७	४६	२६	
२७	१०	७	श.	२६	१८	भ.	४१	८	शु.	११	२२	ब.	२६	१८	३०	१२	२३	५	वृ.	५५	२३	७	११	६	३	९	२८	४७	६	भ. २६/१८ से ५४/४ तक, यूरेनस धनि.१ में ५६/२२,रथ(C)
२७	१५	८	र.	२१	५०	कृ.	३८	१०	ब्र.	९	५५	ब.	२१	५०	फा.१	१३	२४	६	वृष			७	१०	६	४	९	२९	४७	४५	सं. सूर्य कुम्भ में १२/०, मु.३०, पुण्यकाल सारा दिन,शुक्र(D)
२७	२०	९	चं.	१६	३२	रो.	३४	२२	ऐं. वै.	२ ५५	४५ ०	कौ.	१६	३२	२	१४	२५	७	वृष			७	९	६	४	१०	०	४८	२२	
२७	२२	१०	मं.	१०	३२	मृ.	२९	५५	वि.	४६	४८	ग.	१०	३२	३	१५	२६	८	मि.	२	९	७	८	६	५	१०	१	४८	५७	भ.३७/१६ बाद, बुध पू. भा. में ३/२८,जया एकादशी व्रत (स्मा.)
२७	२७	११	बु.	४	०	आ.	२५	२	प्री.	३८	१२	वि.	४	०	४	१६	२७	९	मिथुन			७	७	६	६	१०	२	४९	३१	भ. ४/० तक,जया एकादशी व्रत (वै.), भीष्म द्वादशी,(E)
अवम		१२	बु.	५७	२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	द्वादशी तिथिक्षय,
२७	३२	१३	गु.	४९	५८	पुन.	१९	५५	आ.	२९	३०	कौ.	२३	३०	५	१७	२८	१०	क.	६	११	७	६	६	७	१०	३	५०	४	गुरु अश्वि. ३ में ५८/१५, प्रदोष व्रत,
२७	३५	१४	शु.	४३	२२	पु.	१४	५०	सौ.	२०	५२	ग.	१६	४०	६	१८	२९	११	कर्क			७	५	६	७	१०	४	५०	३४	भ. ४३/२२ बाद,
२७	३८	१५	श.	३७	८	आश्ले.	१०	५	शो.	१२	३५	वि.	१०	१५	७	१९	३०	१२	सिं.	१०	५	७	५	६	८	१०	५	५१	२	भ. १०/१५ तक,सूर्य शत. में ४८/२८, सूर्य सायन मीन में (F)

(A) गौरी तृतीया (गोन्तरी), जिल्काद मु. प्रारम्भ, (B) वसन्त पञ्चमी, (C) सप्तमी (पहिले अरुणोदय वाली), आरोग्य सप्तमी, (D) मकर में ८/४२, भीष्माष्टमी, (E) त्रिस्पृशा महाद्वादशी, (F) १७/२५, वसन्त ऋतु प्रारम्भ, माघस्नान समाप्त, श्री सत्यनारायणव्रत, माघी पूर्णिमा, जन्मदिन श्री गुरु रविदास जी,

माघ शुक्ल ८ रवि, इष्ट ५५/५०

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	९	११	१०	०	९	०	३	९
०	१४	७	१८	५	०	१७	८	८
४४	९	३८	४८	५०	५८	२५	५३	५३
१३	४९	७	३२	५६	२	१०	३	३
६०	८५८	४५	६३	९	७४	३	३	३
३८	११	४१	४५	४३	०	३४	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
३	२	२	४	२	२	२	२	४
धनि.	रो.	उ.भा.	पू.भा.	अश्वि.	उ.षा.	भ.	पुष्य	उ.षा.

कुण्डली सूर्योदये

१२ म.
१० के.
गु. १श.
११ सू. बु.
९ शु.
२ चं.
८
३
५
७
रा.४
६

लोक भविष्य- इस चान्द्रमास में पांच शनिवार हैं, कहीं भूकम्प, कहीं प्राकृतिक-प्रकोप से जन-धन हानि, ईशान कोण में कहीं सत्ता परिवर्तन, कहींअग्निकाण्ड से जनधन विनाश हो,- 'शनेश्च पंचकं दृष्टा पाताले कम्पते फणी। ईशान देश भंगश्च वह्निदाहो महर्घता। उ.षा. नक्षत्र का शुक्र चोरी, ठगी एवं रोग आदि से जनता में परेशानी करे। काश्मीर एवं कुछ अन्य विषय विशेष चर्चा के विषय बनें!

ग्रहचाल और बाजार का रुख- पक्षारम्भ में रुई व शेयर बाजारों में मन्दा बने, पक्षमध्य में घी, तेल, नमक, सरसों एवं मूंगफली में तेजी बने, अलसी, एरण्ड,गेहूं,आदि अनाज, गुड़,खाण्ड,शक्कर में मन्दा बने। पक्षान्त में व्यापारिक वस्तुओं में तेजी बनेगी ।

कुण्डली सूर्योदये

१२ म.
११ सू. बु.
के.१० शु.
गु.१ श.
९
२
८
३
५
७
चं.४ रा.
६

माघ शुक्ल १५ शनि, इष्ट ५६/२

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	४	११	१०	०	९	०	३	९
६	१०	१२	२३	७	८	१७	८	८
४७	५७	११	७	०	२२	४७	३३	३३
३३	१९	३१	२५	२	८	५७	५९	५९
६०	८४४	४५	१०	१०	७४	४	३	३
२८	२५	२७	२९	२५	३	८	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
२	४	३	२	३	४	२	२	४
शत.	मघा	उ.भा.	पू.भा.	अश्वि.	उ.षा.	भ.	पुष्य	उ.षा.

आकाश लक्षण- फर. ६,८,१०,१२,१३,१५,१७,१९ को लंका के पूर्वी छोर, शिलांग आदि में वर्षा के योग हैं। उत्तरी भारत में हवा का जोर रहेगा, मौसम सुखद अनुभव होगा।

शकुन विचार- माघ पूर्णमासी के दिन यदि बादल हों तो अन्न के संग्रह से सातवें मास अच्छा लाभ रहे, यदि इस दिन आकाश साफ रहे एवं मेघ किंवा किसी प्रकार का गर्द गुबार न हो तो आगे आषाढ़ में प्रत्येक प्रकार का अन्नाज सस्ता रहेगा, वर्षा खूब होगी।

श्री वि.सं.२०५६, शाक १९२१,	फाल्गुन कृष्ण पक्ष २४	तारीखें	चन्द्र राशि	चण्डीगढ़	उदय-कालिक	(२० फरवरी से ६ मार्च तक, सन् २००० ई.) उत्तरायण, दक्षिण गोल, बसन्त ऋतु,

दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	प.	योग	समाप्ति काल घ.	प.	करण	समाप्ति काल घ.	प.	प्र. फाल्गु.	अं. फर.	श. फाल्गु.	मु. ज़िल्का.	चन्द्र राशि प्रवेश काल	घ.	प.	भा.स्टैं.टा. सूर्योदय घं.	मि.	सर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	ग्रह दर्शन - २१ फरवरी से बुध पश्चिम में दीखना बंद हो जायेगा। प्रातः मं. पश्चिम में और गु. श. पश्चिम कपाल में दीखेंगे। प्रातः शुक्र पूर्व में होगा।
२७	४२	१	र.	३१	५०	म.	६	५	अ. सु.	४ ५८	५५ ५	बा.	४	२९	८	२०	१	१३	सिंह			७	४	६	९	१०	६	५१	२८	शक फाल्गुन प्रारम्भ,
२७	४८	२	चं.	२७	४८	पू. फा.	३	८	धृ.	५२	२५	ग.	२७	४८	९	२१	२	१४	क.	१७	४६	७	३	६	१०	१०	७	५१	५३	भ. ५६/३३ बाद, शुक्र श्रव. में १५/२७, बुध पश्चिम में (A)
२७	५५	३	मं.	२५	१८	उ.फा.	१	४०	शू.	४८	०	वि.	२५	१८	१०	२२	३	१५	कन्या			७	१	६	११	१०	८	५२	१६	भ. २५/१८ तक, श्री गणेश चतुर्थी व्रत,
२७	५८	४	बु.	२४	३०	ह.	१	४५	ग.	४५	०	बा.	२४	३०	११	२३	४	१६	तु.	३२	४२	७	०	६	११	१०	९	५२	३९	
२८	२	५	गु.	२५	३८	चि.	३	३८	वृ.	४३	३०	तै.	२५	३८	१२	२४	५	१७	तुला			६	५९	६	१२	१०	१०	५३	०	
२८	७	६	शु.	२८	३८	स्वा.	७	२२	ध्रु.	४३	२२	व.	२८	३८	१३	२५	६	१८	वृ.	५६	२६	६	५८	६	१३	१०	११	५३	१९	भ. २८/३८ बाद मंगल रेवती में ५१/१२,
२८	१२	७	श.	३३	१८	वि.	१२	४८	व्या.	४४	३०	वि.	०	५८	१४	२६	७	१९	वृश्चिक			६	५७	६	१४	१०	१२	५३	३७	भ. ०/५८ तक,
२८	१५	८	र.	३९	१०	अनु.	१९	३२	ह.	४६	२५	बा.	६	१४	१५	२७	८	२०	वृश्चिक			६	५६	६	१४	१०	१३	५३	५४	
२८	२०	९	चं.	४५	४५	ज्ये.	२७	८	व.	४८	५०	तै.	१२	२७	१६	२८	९	२१	ध.	२७	८	६	५५	६	१५	१०	१४	५४	९	वक्री बुध शत. में २/३०,
२८	२५	१०	मे.	५२	२२	मू.	३४	५२	सि.	५१	१५	व.	१९	०४	१७	२९	१०	२२	धनु			६	५४	६	१६	१०	१५	५४	२३	भ. १९/४ से ५२/२२ तक,
२८	३०	११	बु.	५८	२५	पू.षा.	४२	१५	व्य.	५३	१८	ब.	२५	२४	१८	मा.१	११	२३	म.	५८	५२	६	५३	६	१७	१०	१६	५४	३६	विजया एकादशी व्रत (स.), मार्च प्रारम्भ,
२८	३२	१२	गु.	६०	०	उ.षा.	४८	४५	व.	५४	३५	कौ.	३०	५६	१९	२	१२	२४	मकर			६	५२	६	१७	१०	१७	५४	४६	
२८	३७	१२	शु.	३	२८	श्र.	५४	२	प.	५४	५०	व.	३	२८	२०	३	१३	२५	मकर			६	५१	६	१८	१०	१८	५४	५४	शुक्र धनि. में ३/३८, प्रदोष व्रत,
२८	४२	१३	श.	७	८	ध.	५७	५२	शि.	५४	०	ब.	७	८	२१	४	१४	२६	कुं.	२५	५७	६	५०	६	१९	१०	१९	५५	०	भ. ७/८ से ३८/१४ तक, पञ्चक प्रारम्भ २५/५७ बाद,(B)
२८	४७	१४	र.	९	२०	श.	६०	०	सि.	५२	२	श.	९	२०	२२	५	१५	२७	कुम्भ			६	४८	६	१९	१०	२०	५५	४	
२८	५२	३०	चं.	९	५२	श.	०	२०	सा.	४८	५५	ना.	९	५२	२३	६	१६	२८	मी.	४६	६	६	४७	६	२०	१०	२१	५५	८	सोमवती अमावस,

(A) अस्त २६/८, बुध वक्री २७/५८,(B) सूर्य पू.भा. में ५/०, श्री महाशिवरात्री व्रत,

फाल्गुन कृष्ण ८ रवि, इष्ट ५६/२५

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	७	११	१०	०	९	०	३	९
१४	२३	१८	२०	८	१८	१८	८	८
५०	५६	१४	५	२६	१४	२३	८	८
३५	५८	१३	३७	२३	४९	२१	३३	३३
६०	७९१	३५	५६	११	७४	४	३	३
१६	०	९	४०	१५	७	४९	११	११
-	-	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
शत. ३	ज्ये. ३	स्वाती २	पू.भा. १	आश्ले. ३	श्रव. ३	भर. २	पुष्य २	उ.षा. ४

कुण्डली सूर्योदये

१२ मं. | १० शु.के. | ११ सू. बु. | गु. १ श. | ९ | २ | ८ चं. | ५ | ३ | ७ | ४ रा. | ६

लोक भविष्य- बुध अस्त होते ही वक्र हो रहा है, अतः उत्पात व कहीं विशिष्ट व्यक्ति के निधन का समाचार मिले। फाल्गुन कृष्ण प्रतिपदा को पू.फा. नक्षत्र होने से सर्वत्र सुभिक्ष रहें, **'फाल्गुन-प्रथमे पक्षे पूर्वाफाल्गुनि योगतः। सर्वान् दोषान्निहन्त्येव सुभिक्षं भुवि जायते।'**

ग्रहचाल और बाजार का रुख- पक्षारम्भ में रुई में जोरदार मन्दा आए, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी, अनाजों में मन्दा आए। २५ फर. के लगभग गेहूं, चना, मूंग, मोठ, उड़द, ज्वार, बाजरा मंदा, चांदी तेज हो । ३ मार्च से पक्षांत तक दालवाना, चांदी, सोना एवं रुई कपास में तेजी बने। इस समय गुड़, खाण्ड में भी तेजी रहे।

आकाश लक्षण- फरवरी २१,२५,२८ एवं मार्च ३,४ को बंगलादेश, भूटान, सिक्किम, एवं लंका के पश्चिमी भूभाग पर वर्षा के योग हैं। उत्तरी भारत में गर्मी अनुभव होने लगेगी।

शकुन विचार- यदि फाल्गुन में बादल हों परन्तु वर्षा न हो तो आगे वर्षा ऋतु में अच्छी वर्षा हो।

कुण्डली सूर्योदये

१२ मं. | चं. ११ सू. बु. | शु. १० के. | गु. १ श. | ९ | २ | ८ | ५ | ३ | ७ | ४ रा. | ६

फाल्गुन कृष्ण ३० चन्द्र, इष्ट ५६/३५

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	११	११	१०	०	९	०	३	९
२२	२	२४	१२	९	२८	१९	७	७
५१	१९	१४	१३	५९	७	४	४३	४३
५९	५	१८	०	०	५५	२	६	६
६०	८०१	४४	४६	११	७४	५	३	३
३	३१	५०	४०	५९	९	२५	११	११
-	-	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.भा. १	पू.भा. ४	स्वाती ३	शत. २	आश्ले. ३	धनि. २	भर. २	पुष्य २	उ.षा. ४

श्री वि.सं.२०५६, शाक १९२१,	फाल्गुन शुक्ल पक्ष २५	तारीखें	चन्द्र राशि	चण्डीगढ़	उदय-कालिक	(७ से २० मार्च तक, सन् २००० ई.) उत्तरायण, दक्षिण-उत्तर गोल, वसन्त ऋतु।

दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	प.	योग	समाप्ति काल घ.	प.	करण	समाप्ति काल घ.	प.	प्र. फाल्गु.	अं. मार्च	श. फाल्गु.	मु. जिल्का.	प्रवेश काल	घ.	प.	भा.स्टैं.टा. सूर्योदय घं.	मि.	सर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	ग्रह दर्शन - ८ मार्च को बुध प्रातः पूर्व में दीखने लगेगा। सायं मं., गु.,श. पश्चिम में होंगे। प्रातः शुक्र पूर्व में चमकता दीखेगा।
२८	५७	१	मं.	९	१५	पू.भा.	१	२२	शु.	४४	५०	ब.	९	१५	२४	७	१७	२९	मीन			६	४६	६	२१	१०	२२	५५	८	चंद्र दर्शन मु.४५, गुरु अश्वि. ४ में १/५०,
२९	०	२	बु.	७	२०	उ.भा.	१	१२	शु.	३९	५५	कौ.	७	२०	२५	८	१८	१ जि	मीन			६	४५	६	२१	१०	२३	५५	७	शुक्र कुम्भ में २७/३५, बुध पूर्व में उदित ३०/२५ (A)
२९	७	३	गु.	४	३०	रे. अ.	० ५८	८ १२	ब्र.	३४	२२	ग.	४	३०	२६	९	१९	२	मे.	०	८	६	४३	६	२२	१०	२४	५५	४	भ. ३३/४२ बाद, पञ्चक समाप्त ५८/१२,
२९	१२	४	शु.	२	५५	भ.	५५	४५	ऐ.	२८	१५	वि.	२	५५	२७	१०	२०	३	मेष			६	४२	६	२३	१०	२५	५४	५९	भ. २/५५ तक,
अवम		५	शु.	५६	३५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	पञ्चमी तिथिक्षय,
२९	१५	६	श.	५१	३८	कृ.	५२	५५	वै.	२१	४८	कौ.	२४	६	२८	११	२१	४	वृ.	१०	१०	६	४१	६	२३	१०	२६	५४	५३	
२९	२०	७	र.	४७	५	रो.	४९	४८	वि.	१५	०	ग.	१९	२२	२९	१२	२२	५	वृष			६	४०	६	२४	१०	२७	५४	४५	भ. ४७/५ बाद,
२९	२५	८	चं.	४२	०	मृ.	४६	२८	प्री.	८	५	वि.	१४	३३	३०	१३	२३	६	मि.	१८	८	६	३९	६	२५	१०	२८	५४	३५	भ. १४/३२ तक, शुक्र शत. में ५१/३५, होलाष्टक प्रारम्भ,(B)
२९	३०	९	मं.	३६	२२	आ.	४३	८	आ. सौ.	१ ५३	०० ४८	बा.	९	११	चै. १	१४	२४	७	मिथुन			६	३७	६	२५	१०	२९	५४	२३	सं. सूर्य मीन में ५/४२, मु.१५, पुण्यकाल २१/४२ तक,(C)
२९	३५	१०	बु.	३१	३२	पुन.	३९	३८	शो.	४६	३८	तै.	३	५७	२	१५	२५	८	क.	२५	३०	६	३६	६	२६	११	०	५४	८	भ. ५८/५६ बाद,
२९	४०	११	गु.	२६	२०	पु.	३६	१२	अ.	३९	३२	वि.	२६	२०	३	१६	२६	९	कर्क			६	३५	६	२७	११	१	५३	५०	भ. २६/२० तक, शनि भर.३ में ४३/२२, गोविन्द द्वादशी,(D)
२९	४२	१२	शु.	२१	१८	आश्ले.	३३	२	सु.	३२	३८	बा.	२१	१८	४	१७	२७	१०	सि.	३३	२	६	३४	६	२७	११	१	५३	३०	सूर्य उ.भा. में २६/४०, प्रदोष व्रत,
२९	४७	१३	श.	१६	४०	म.	३०	२०	धृ.	२६	५	तै.	१६	४०	५	१८	२८	११	सिंह			६	३२	६	२७	११	३	५३	८	
२९	५३	१४	र.	१२	३५	पू.फा.	२८	१०	शू.	२०	०	व.	१२	३५	६	१९	२९	१२	कं.	४२	५२	६	३१	६	२९	११	४	५२	४३	भ. १२/३५ से ४०/५७ तक, होलिका दहन, (E)
२९	५८	१५	चं.	९	२०	उ.फा.	२६	५८	गं.	१४	४८	ब.	११	५०	७	२०	३०	१३	कन्या			६	३०	६	२९	११	५	५२	१६	सूर्य सायन मेष में १६/२८, उत्तर गोल प्रारम्भ, (F)

(A) जन्म दिन श्री राम कृष्ण परमहंस, जिल्हिज्ज मु. प्रारम्भ,(B) वेंकटेश (प्लूटो) वक्री,(C) मंगल अश्वि. मेष में ४१/३०, बुध मार्गी ४१/१८,(D) आमलकी एकादशी व्रत (स.), (E) (भद्रोपरान्त २२ घं. ५३ मि. बाद),(देखें पृष्ठ... 98),श्री सत्यनारायण व्रत, (F) शक संवत् १९२१ समाप्त, महाविषुवदिन,

फाल्गुन शुक्ल ८ रवि, इष्ट ५७/१८

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१० २९ ५१ ३४	२ ९ ९ ५९	११ २९ २७ ९	१० ८ ५७ ४०	० ११ २४ ३०	१० ६ ४६ ५३	० १९ ४३ २९	३ ७ २० ५१	९ ७ २० ५१
५९ ४७	८४९ १९	४४ ३०	२ १४	१२ ३०	७४ ८	५ ५५	३ ११	३ ११
-	-	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
३ पू.भा.	१ आर्द्रा	४ रेवती	१ शत.	४ अश्वि.	१ शत.	२ भर.	२ पुष्य	४ उ.षा.

कुण्डली सूर्योदये

१२ मं.
११ सू.बु.शु.
१० के.
९
गु. १ श.
चं.२
८
३
५
७
४ रा.
६

लोक भविष्य-पक्षारम्भ में कुम्भ राशि का शुक्र पर्याप्त वर्षा एवं सुभिक्ष करे 'कुम्भ राशौ स्थिते शुक्रे सुभिक्षं प्रचुरं जलम्। भवत्यत्र न सन्देहो लोकाः सर्वे निरामयाः'' लेकिन मेष राशि में शनि-मंगल का सम्बन्ध सीमा प्रान्तों पर सैनिक हलचल से अशांति का कारण बनेगा, -'युद्धदौ शनि-माहेयौ तथा दुर्भिक्षकारकौ।'

ग्रहचाल और बाजार का रुख- पक्षारम्भ में रुई में तेजी, सोना चांदी में घटाबढ़ी चलकर मन्दी हो। गुड़, खाण्ड, गेहूं, चना, जौ, मूंग, ज्वार, बाजरा में भी मन्दे का वातावरण रहे। लाल मिर्च तेज रहे। घी, तिल, पाट, हैसियन में भी तेजी बने। १४ मार्च के लगभग मंगल, शनि का मेष राशि में सम्बन्ध सोना, चांदी आदि धातु, मूंगा, मोती आदि रत्न, रुई, कपास, बारदाना में अच्छी तेजी करेगा।

कुण्डली सूर्योदये

गु. १ म.श.
बु. ११ शु.
२
सू. १२
१० के.
३
९
रा.४
चं. ६
८
५
७

फाल्गुन शु. १५ चन्द्र, इष्ट ५७/३०

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११ ६ ४९ २०	५ १६ ४९ २९	० ४ ३७ ४२	१० १० ३९ ४२	० १२ ५३ २९	१० १५ २५ ४१	० २० २६ ८	३ ६ ५८ ३५	९ ६ ५८ ३५
५९ ३३	७९२ १९	४४ १०	३४ २२	१२ ५७	७४ ७	६ २०	३ ११	३ ११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
२ उ.भा.	२ हस्त	२ अश्वि.	२ शत.	४ अश्वि.	३ शत.	३ भर.	२ पुष्य	४ उ.षा.

आकाश लक्षण- मार्च ७,८,१३,१४,१५,१६,१७,१८ को हवा का जोर रहे, उत्तरी भारत में तापमान जोर पकड़े, बंगलादेश एवं कुछ दक्षिणी प्रान्तों में बादलचाल एवं खण्डवृष्टि के योग हैं।

शकुन विचार- फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा के दिन यदि वर्षा हो तो फसल को रोली (काल, अंगारी) रोग से हानि होती है। ऐसी स्थिति में अन्न संग्रह से सातवें मास लाभ मिलता है।

श्री वि.सं.२०५६, शाक १९२१, **चैत्र कृष्ण पक्ष २६** — तारीखें — चन्द्र राशि — चण्डीगढ़ — उदय-कालिक

(२१ मार्च से ४ अप्रैल तक,सन् २००० ई.) उत्तरायण, उत्तर गोल, वसन्त ऋतु।

ग्रह दर्शन - २९ मार्च को बुध सूर्य का अन्तर अधिकतम होगा। सायं मंगल गु. श. पश्चिम में होंगे। प्रातः शुक्र पूर्व में दीखेगा।

दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	प.	योग	समाप्ति काल घ.	प.	करण	समाप्ति काल घ.	प.	प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्र राशि प्रवेश काल	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
३०	२	१	मं.	७	१२	ह.	२६	५२	वृ.	१०	१०	कौ.	७	१२	८	२१	१	१४	तु.	५७	३३	६	२९	६	३०	११	६	५१	४७	वसन्तोत्सव, शक सं. १९२२ प्रारम्भ, शक चैत्र प्रारम्भ,
३०	८	२	बु.	६	२८	चि.	२८	१५	ध्रु.	६	४८	ग.	६	२८	९	२२	२	१५	तुला			६	२७	६	३१	११	७	५१	१६	भ. ३६/५२ बाद,
३०	१३	३	गु.	७	१५	स्वा.	३१	१०	व्या.	४	३८	वि.	७	१५	१०	२३	३	१६	तुला			६	२६	६	३१	११	८	५०	४४	भ.७/१५ तक,गुरु भर.१ में ०/५, (A)
३०	२०	४	शु.	९	४५	वि.	३५	४५	ह.	३	४८	बा.	९	४५	११	२४	४	१७	वृ.	१९	३४	६	२४	६	३२	११	९	५०	१०	शुक्र पू. भा. में ३९/५०,
३०	२०	५	श.	१३	४५	अनु.	४१	४०	व.	४	८	तै.	१३	४५	१२	२५	५	१८	वृश्चिक			६	२४	६	३२	११	१०	४९	३४	
३०	२८	६	र.	१९	१२	ज्ये.	४८	४८	सि.	५	३५	व.	१९	१२	१३	२६	६	१९	ध.	४८	४८	६	२२	६	३३	११	११	४८	५६	भ. १९/१२ से ५२/२१ तक,राहु पुष्य१, केतु उ. षा.३में४८/४२
३०	३३	७	चं.	२५	३०	मू.	५६	३०	व्य.	७	४५	ब.	२५	३०	१४	२७	७	२०	धनु			६	२१	६	३४	११	१२	४८	१६	
३०	३८	८	मं.	३२	२	पू.षा.	६०	०	व.	१०	१५	कौ.	३२	२	१५	२८	८	२१	धनु			६	२०	६	३५	११	१३	४७	३४	
३०	४०	९	बु.	३८	१०	पू.षा.	४	५	प.	१२	४०	तै.	५	३५	१६	२९	९	२२	म.	२०	५१	६	१९	६	३५	११	१४	४६	५०	
३०	४५	१०	गु.	४३	१८	उ.षा.	११	१०	शि.	१४	२८	व.	१०	४४	१७	३०	१०	२३	मकर			६	१८	६	३६	११	१५	४६	६	भ. १०/४४ से ४३/१८ तक, सूर्य रेवती में ५४/३२,
३०	५०	११	शु.	४६	५८	श्र.	१६	५८	सि.	१५	१८	ब.	१५	८	१८	३१	११	२४	कुम्भ	४९	३	६	१६	६	३६	११	१६	४५	१९	पञ्चक प्रारम्भ ४९/३, बुध पू. भा. में ४९/४०, (B)
३०	५५	१२	श.	४८	४८	ध.	२१	८	सा.	१४	५०	कौ.	१७	५६	१९	अप्रै.	१२	२५	कुम्भ			६	१५	६	३७	११	१७	४४	३१	मंगल भर. में ५१/३८, शुक्र मीन में ४६/८, अप्रैल प्रारम्भ,
३०	५७	१३	र.	४८	४८	श.	२३	२८	शु.	१२	५८	ग.	१८	४८	२०	२	१३	२६	कुम्भ			६	१४	६	३७	११	१८	४३	४०	भ. ४८/४८ बाद, प्रदोष व्रत, वारुणीपर्व (१५घं. ३७ मि.तक),
३१	२	१४	चं.	४७	०	पू.भा.	२४	२	शु.	९	३८	वि.	१७	५४	२१	३	१४	२७	मी.	८	५३	६	१३	६	३८	११	१९	४२	४७	भ. १७/५४ तक, मेला पिहोवा तीर्थ (हरियाणा,)
३१	८	३०	मं.	४३	४५	उ.भा.	२३	२	ब्र.	४	५८	च.	१५	२२	२२	४	१५	२८	मीन			६	१२	६	३९	११	२०	४१	५३	शुक्र उ. भा. में २८/१५ भौमवती अमा, चान्द्र संवत्सर (C)
									ऐ.	५९	१२																			

(A) श्री गणेश चतुर्थी व्रत, मेला शीतला माता (कुराली),(B) पापमोचिनी एकादशी व्रत, (स.), (C) सं. २०५६ विक्रमी पूर्ण,

चैत्र कृष्ण ८ मंगल, इष्ट ५७/५५

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	८	०	१०	०	१०	०	३	९
१४	२५	१०	१६	१४	२५	२१	६	६
४४	२५	२९	५७	३८	१८	१८	३३	३३
४९	२३	४७	३३	४६	२९	१५	१०	१०
५९	७१५	४३	६१	१३	७४	६	३	३
१८	३३	४९	२३	२४	६	३५	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
उ.भा.	पू.षा.	अश्वि.	शत.	भर.	पू.भा.	भर.	पुष्य	उ.षा.

कुण्डली सूर्योदये

म. गु. १ श. | १२ सू. | बु.११ शु. | १० के. | २ | ३ | ९ चं. | ४ रा. | ६ | ८ | ५ | ७

लोक भविष्य-- शनि मंगल का एक राशि सम्बन्ध कहीं अशान्तिमय वातावरण बनाएगा, लेकिन किसी विशिष्ट व्यक्ति की मध्यस्थता से माहौल शांत हो। क्योंकि पक्षान्त में मीन राशि का शुक्र सुख-समृद्ध एवं सुभिक्ष का सूचक है- 'मीन राशिगते शुक्र सुभिक्षं प्रचुरं भवेत् । मेदिनी सुख संयुक्ता भविष्यति न संशयः' पक्षान्त में भौमवती अमा खाद्यवस्तुओं में मंहगाई से असंतोष की परिचायक है ।

ग्रहचाल और बाजार का रूख- चांदी, सोना, अलसी, चावल, जौ, गेहूं, तिल, उड़द, मूंग, मोठ चना, ज्वार, में घटाबढ़ी और रूई में तेजी हो। १ अप्रैल के लगभग सरसों , एरण्डी, अलसी, बिनौला आदि तिलहन एवं अनाजों में मन्दा बने। चांदी में धमाके की अच्छी तेजी बने।

कुण्डली सूर्योदये

म. गु १ श | सू. १२ चं. शु. | ११ बु. | १० के. | २ | ३ | ९ | ४ रा. | ६ | ८ | ५ | ७

चैत्र कृष्ण ३० मंगल, इष्ट ५८/५

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	११	०	१०	०	११	०	३	९
२१	२४	१५	२४	१६	३	२२	६	६
३९	४५	३५	५७	१३	५७	६	१०	१०
१७	३५	२८	४२	३२	२	२४	५५	५५
५८	८२१	४३	७७	१३	७४	७		३
५८	५८	२९	१७	४३	४	३	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
रेवती	रेवती	भर.	पू.भा.	भर.	उ.भा.	भर.	पुष्य	उ.षा.

आकाश लक्षण- मार्च २३,३०, ३१ एवं १ अप्रैल को उत्तरी भारत में गर्मी का प्रकोप बढ़ने लगे, ल का का पश्चिमी छोर, बंगलादेश, सिक्किम, बंगाल, हि.प्र. एवं मध्यप्रदेश के कुछ भागों में बादल चाल व बूंदाबांदी के योग हैं ।

शकुन विचार- अगर चैत्र कृष्ण अष्टमी को आकाश बादलों से ढका रहे तो गुड़, खाण्ड, गेहूं, सोना , तेज रहे ।'चन्द्रमौलि-शंकरचरण बार बार सिर नाय। संवत् यह पूरण कियो गिरा गणेश मनाय।'

स्टैंडर्ड टाईम को ही प्रयोग में लाइए—घड़ी-पलों को तिलांजलि दीजिए।

—प्रियव्रत शर्मा

प्राचीनकाल में जब स्टैं. टा. का आविष्कार नहीं हुआ था, तिथि, नक्षत्र, योग, करणों की प्रारम्भ-समाप्ति, ग्रहों का राशि-नक्षत्र -नक्षत्र चरणों में प्रवेश आदि का काल घड़ी-पलों में ही दिया जाता था। उसी परम्परानुसार अब भी पंचांगों में घड़ी-पलों में तिथ्यादि का काल दिया रहता है। ये घड़ी पल किसी एक (पंचांगीय)नगर के सूर्योदय से बीता काल बतलाते हैं। अत: इन्हें उसी रूप में किसी अन्य नगर में इस्तेमाल नहीं किया जा सकता । इन्हें किसी दूसरे अभीष्ट नगर में इस्तेमाल करने के लिए इनमें पंचांगीय नगर और अभीष्ट नगर के सूर्योदय कालों के अन्तर का संस्कार (जिसे ''पंचांग परिवर्त्तन संस्कार'' कहा जाता है) करना ज़रूरी होता है। उदाहरणार्थ अमृतसर के पंचांग में दिए गए तिथ्यादि के घड़ी-पलों को केवल अमृतसर में ही प्रयोग में लाया जा सकता है। यदि हम इन्हें जम्मू में इस्तेमाल करना चाहें तो यह आवश्यक होगा कि अमृतसर तथा जम्मू के उस दिन के सूर्योदय कालों का अन्तर जानकर उसे अमृतसर के पंचांग में दिए गए घड़ी-पलों में जोड़ें या घटाएं (उस दिन जम्मू में सूर्योदय अमृतसर के सूर्योदय से पहिले हुआ हो तो जोड़ें, अन्यथा घटाएं)। इस प्रकार प्राप्त तिथ्यादि के घड़ी-पल ही जम्मू में प्रयोग के योग्य होंगे । इस प्रकार स्पष्ट है — तिथ्यादि कालों को घड़ी पलों में बतलाने वाला पंचांग अपने नगर से अन्यत्र प्रयोग के योग्य नहीं होता। लेकिन यदि तिथ्यादि के काल स्टैं. टा. में दिए हों तो उस पंचांग के तिथ्यादि के कालों को उस देश के (जिस देश का स्टैं. टा. उस पंचांग में प्रयुक्त किया गया है, उस देश के)सभी नगरों में बिना ''पंचांग परिवर्त्तन संस्कार'' के प्रयोग में लाया जा सकता है। स्पष्टता के लिए यहां हम कुछ उदाहरण देते हैं-

इस वर्ष (सं. २०५६ वि. में) १८ मार्च '९९ को चैत्र शुक्ल प्रतिपदातिथि भा.स्टैं.टा. के अनुसार २१ घं. ३९ मि. पर समाप्त होगी। प्रतिपदा का यह समाप्तिकाल भारत के प्रत्येक नगर/ग्राम में बिना किसी परिवर्तन के प्रयोग में लाया जाएगा। अर्थात् चण्डीगढ़ हो या दिल्ली, कानपुर हो या बनारस, मद्रास हो या कलकत्ता- सभी नगरों में इस चैत्र शुक्ल प्रतिपदा की समाप्ति का काल (भा.स्टै.टा.) १८ मार्च '९९ को २१ घं. ३९ मि. (रात्रि ९ बजकर ३९ मिनट)ही होगा। भारत में कहीं भी इस काल में किसी प्रकार का जोड़-घटाव नहीं करना पड़ेगा। इसी प्रकार २८ मार्च '९९ को चन्द्रमा का सिंह राशि में प्रवेश काल (भा.स्टैं.टा.)१० घं. ३४ मि. लिखा है। इसका अर्थ है भारत के प्रत्येक नगर/ग्राम में चन्द्र का सिंह में यह प्रवेश प्रातः १० बजकर ३४ मिनट (भा.स्टैं.टा.) पर ही माना जाएगा ।

एक और उदाहरण लीजिए- ''मार्त्तण्ड पंचांग'' में दैनिक स्पष्ट ग्रह प्रातः ५ घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)के दिए रहतेहैं। ये स्पष्ट ग्रह भी भारत के प्रत्येक नगर /ग्राम में प्रातः ५ घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.) के ही माने जाएंगे (अर्थात् इन्हें इसी टाईम के ही मानकर भारत के प्रत्येक नगर/ग्राम में उत्पन्न जातक के जन्मकालिक ग्रह चालन द्वारा स्पष्ट करने होंगे)।

इसी प्रकार चन्द्रग्रहण का उदाहरण भी लीजिए- इस वर्ष चन्द्रग्रहण २८ जुलाई, '९९ को भा.स्टैं.टा. के अनुसार सायं ३ घं. ५२ मि. पर प्रारम्भ होकर सायं ६ घं. १५ मि. पर समाप्त होगा। चन्द्रग्रहण के ये प्रारम्भ-समाप्तिकाल भारत के सभी नगरों के लिए हैं, यानि भारत के सभी नगरों में इस चन्द्रग्रहण का प्रारम्भ और समाप्तिकाल उल्लिखित ही होगा, यह बात अलग है कि यह ग्रहण कहीं दिखाई देगा, कहीं नहीं ।

आजकल घटी-पलात्मक काल को बतलाने वाले घटीयंत्र भी तो नहीं हैं। घड़ी -पलात्मक तिथ्यादिसमाप्तिकाल एवं ग्रहों के राशि-नक्षत्र-नवांश में प्रवेश आदि का काल वस्तुत: कब पड़ता है— यह जानने केलिए भी हमें अन्तत: घड़ियों (watches)द्वारा बतलाए जाने वाले स्टैं. टा. की ही शरण लेनी पड़ती है। जैसा कि पहिले स्पष्ट कर चुके हैं- घटी-पलात्मक काल से स्टैं.टा. वाला काल कहीं अधिक सुविधाजनक एवं देश में सर्वत्र एकरूप भी होता है । इसी लिए हम इस पंचांग में विगत ३०-३५वर्षों से भा.स्टैं.टा. में तिथ्यादि समाप्तिकाल, ग्रहों का राशि-नक्षत्र-नवांश-प्रवेश-काल आदि पृथक् पृष्ठों पर देते आ रहे हैं। आप देख रहे हैं - इस वर्ष ''भा.स्टैं. टा. में तिथ्यादि पंचांग'' हमने अधिक विस्तृत रूप में दिया है। पहले यह भा. स्टैं. टा. वाला पंचांग केवल ८ पृष्ठों पर ही होता था, अब इसे १६ पृष्ठ दिए गए हैं। यहां चण्डीगढ़ के साथ दिल्ली, जयपुर,वाराणसी नगरों के सूर्योदयास्त भी दिए गए हैं। जिस नगर में जो तिथि, नक्षत्र या योग पूर्वापरवर्त्ती दोनों सूर्योदय कालों को स्पर्श न कर पाए उस नगर में उस तिथि, नक्षत्र या योग का क्षय, किन्च यदि वह पूर्वापरवर्त्ती दोनों सूर्योदयों को स्पर्श कर ले तो उसकी वृद्धि मानी जाती है। **यहां तिथ्यादि की क्षय-वृद्धि का निर्णय (निर्देश) केवल चण्डीगढ़ के सूर्योदय के आधार पर ही किया गया है- यह पाठक ध्यान में रखें। कुछ स्थलों पर यह संभव है कि किसी तिथि, नक्षत्र या योग की चण्डीगढ़ के सूर्योदयानुसार तो वृद्धि या क्षय हो, लेकिन वाराणसी,जयपुर या दिल्ली के सूर्योदयानुसार वह वृद्धि-क्षय घटित न हो।**

(शेष पृष्ठ 67 पर)

तिथ्यादि पञ्चाङ्ग (भा. स्टैं. टा.)

जनवरी १९९९ ई.

मास पक्ष	जन. १९९९ ई.	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश काल रा.	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	भद्रा-ग्रहराशि-नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है।)
पौष शु.प.	१	१४	शु.	११ १	मू.	१४ ३५	शु. ब्र.	९ २९ ३० २	मिथुन			७	२५	१७	२७	७	१८	१७	३१	७	२०	१७	४०	६	४७	१७	१७	भ. ११/१ से २१/४०तक;
	२	१५	श.	८ २० ३० ३	आ.	१२ ३९	ऐं.	२६ ५४	क.	२९	३२	७	२५	१७	२८	७	१८	१७	३२	७	२०	१७	४१	६	४७	१७	१७	बुध मूल धनु में २५/१८;पौषी पूर्णिमा,
माघ कृष्ण पक्ष	३	२	र.	२८ २०	पुन.	११ १०	वै.	२४ १२	कर्क			७	२५	१७	२९	७	१९	१७	३३	७	२०	१७	४१	६	४७	१७	१८	माघ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,
	४	३	चं.	२७ १८	पु	१० १६	वि.	२२ २	कर्क			७	२५	१७	२९	७	१९	१७	३४	७	२१	१७	४२	६	४८	१७	१९	भ.१५ /३९ से २७/१८ तक,
	५	४	मं.	२७ २	आश्ले.	१० ४	प्री.	२० २७	सिं.	१०	४	७	२५	१७	३०	७	१९	१७	३५	७	२१	१७	४३	६	४८	१७	१९	संकष्ट चतुर्थी,
	६	५	बु	२७ ३३	म.	१० ३७	आ.	१९ २९	सिंह			७	२६	१७	३१	७	१९	१७	३६	७	२१	१७	४४	६	४९	१७	२०	
	७	६	गु	२८ ४९	पूफा.	११ ५६	सौ.	१९ ६	क.	१८	२६	७	२६	१७	३२	७	१९	१७	३७	७	२१	१७	४५	६	४९	१७	२१	भ. २८/४९ बाद, शुक्र श्रवण में २३/३०;
	८	७	शु.	३० ४४	उ.फा.	१३ ५६	शो.	१९ १४	कन्या			७	२६	१७	३३	७	१९	१७	३७	७	२१	१७	४५	६	४९	१७	२२	भ. १७/४७ तक;
	९	८	श.	- -	ह.	१६ २८	अ.	१९ ४६	तु	२९	५४	७	२६	१७	३३	७	१९	१७	३८	७	२१	१७	४५	६	४९	१७	२२	
	१०	८	र.	९ ४	चि.	१९ २०	सु.	२० ३२	तुला			७	२६	१७	३४	७	१९	१७	३८	७	२१	१७	४६	६	४९	१७	२३	
	११	९	चं.	११ ३७	स्वा.	२२ २०	धृ	२१ २३	तुला			७	२६	१७	३५	७	१९	१७	३९	७	२१	१७	४७	६	४९	१७	२४	भ. २४/५४ बाद, सूर्य उ.षा. में १०/२९, (A)
	१२	१०	मं.	१४ १०	वि.	२५ १३	शू.	२२ १०	वृ.	१८	३०	७	२६	१७	३६	७	१९	१७	४०	७	२१	१७	४८	६	४९	१७	२५	भ.१४/१०तक, मंगल तुला में १४/४३,गुरु पू.भा.४मीन(B)
	१३	११	बु	१६ २८	अनु.	२७ ५०	गं.	२२ ४४	वृश्चिक			७	२६	१७	३७	७	१९	१७	४१	७	२१	१७	४९	६	४९	१७	२५	बुध पूर्व में अस्त;लोहड़ी (पंजाब);
	१४	१२	गु	१८ २४	ज्ये.	३० २	वृ.	२३ १	ध.	३०	२	७	२६	१७	३८	७	१९	१७	४२	७	२१	१७	४९	६	४९	१७	२६	सं. सूर्य मकर में१७/००, पुण्यकाल १०/३६ बाद,
	१५	१३	शु.	१९ ५२	मू.	- -	ध्रु	२२ ५६	धनु			७	२५	१७	३९	७	१९	१७	४२	७	२१	१७	५०	६	४९	१७	२७	भ. १९/५२ बाद;
	१६	१४	श.	२० ४९	मू.	७ ४६	व्या.	२२ २७	धनु			७	२५	१७	३९	७	१९	१७	४३	७	२१	१७	५१	६	४९	१७	२८	भ. ८/२० तक;
	१७	३०	र.	२१ १६	पूषा.	९ ०	ह.	२१ ३६	म.	१५	१२	७	२५	१७	४०	७	१९	१७	४४	७	२१	१७	५२	६	४९	१७	२९	मौनी अमावस,
माघ शुक्ल पक्ष	१८	१	चं.	२१ १४	उ.षा.	९ ४६	व.	२० २२	मकर			७	२५	१७	४१	७	१९	१७	४५	७	२१	१७	५३	६	४९	१७	२९	माघ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, शुक्र धनि. में १५/१२ ;
	१९	२	मं.	२० ४८	श्रव.	१० ७	सि.	१८ ५०	कु.	२२	६	७	२५	१७	४२	७	१९	१७	४६	७	२१	१७	५४	६	४९	१७	३०	पञ्चक प्रा. २२/६;शनि अश्विनी २ में २१/३९;
	२०	३	बु	१९ ५८	धनि.	१० ४	व्य.	१७ ०	कुंभ			७	२४	१७	४३	७	१८	१७	४७	७	२१	१७	५५	६	४९	१७	३१	भ.३१/२३बाद;सूर्य सायन कुम्भ में १८/७;बुध उ.षा. (C)
	२१	४	गु	१८ ४९	शत.	९ ४१	व.	१४ ५०	मी.	२७	११	७	२४	१७	४४	७	१८	१७	४८	७	२१	१७	५६	६	४९	१७	३१	भ.१८/४९ तक; वरद-कुन्द-तिल चतुर्थी;
	२२	५	शु.	१७ २३	पू.भा.	९ १	प	१२ ३३	मीन			७	२४	१७	४५	७	१७	१७	४९	७	२१	१७	५७	६	४९	१७	३२	बुध मकर में १९/५८; वसन्त पंचमी;
	२३	६	श.	१५ ४१	उ.भा. रे.	८ ४ ३० ५४	शि. सि.	१० ० ३१ १७	मे.	३०	५४	७	२३	१७	४६	७	१७	१७	५०	७	२१	१७	५८	६	४९	१७	३३	पञ्चक समाप्त ३०/५४, शुक्र कुम्भ में २३/१६;
	२४	७	र.	१३ ४७	अ.	२९ ३२	सा.	२८ २४	मेष			७	२३	१७	४७	७	१७	१७	५०	७	२०	१७	५८	६	४८	१७	३४	भ. १३/४७ से २४/४४ तक, सूर्य श्रव. में १२/४३;
	२५	८	चं.	११ ४१	भ.	२८ २	शु.	२५ २५	मेष			७	२३	१७	४७	७	१७	१७	५१	७	२०	१७	५९	६	४८	१७	३४	सूर्य अभिजित् से निवृत्त ९/४४;भीष्माष्टमी,
	२६	९	मं.	९ २८ ३१ १०	कृ.	२६ २६	शु.	२२ २०	वृ.	९	३८	७	२२	१७	४८	७	१६	१७	५२	७	१९	१७	५९	६	४८	१७	३६	
	२७	११	बु	२८ ५२	रो.	२४ ५०	ब्र.	१९ १५	वृष			७	२२	१७	४९	७	१६	१७	५३	७	१९	१८	००	६	४७	१७	३६	भ. १८/१ से २८ /५२ तक, मंगल स्वाती में २३/३३;
	२८	१२	गु.	२६ ४०	मृ.	२३ १८	ऐं.	१६ ११	मि.	१२	४	७	२१	१७	५०	७	१५	१७	५४	७	१८	१८	०१	६	४७	१७	३७	बुध श्रव. में २२/४३, भीष्म द्वादशी;
	२९	१३	शु.	२४ ३९	आ.	२१ ५७	वै.	१३ १५	मिथुन			७	२१	१७	५१	७	१४	१७	५५	७	१८	१८	०२	६	४७	१७	३८	शुक्र शत. में ७/३३;
	३०	१४	श.	२२ ५६	पुन.	२० ५१	वि.	१० ३०	क.	१५	७	७	२०	१७	५२	७	१३	१७	५६	७	१७	१८	०२	६	४६	१७	३९	भ. २२/५६ बाद, गुरु उ.भा. १ में २१/७;
	३१	१५	र.	२१ ३७	पु	२० ९	प्री. आ.	८ १ २९ ५४	कर्क			७	२०	१७	५३	७	१२	१७	५७	७	१७	१८	०३	६	४५	१७	४०	भ. १०/१७ तक, माघी पूर्णिमा;

(A) बुध पू.षा. में २७/५, राहु आश्ले. ४ कर्क में,केतु धनि.२ मकर में १८/४;(B) में २७/१५,(C) में १७/४८,सूर्य अभिजित् में ३०/५४, गौरी तृतीया,

तिथ्यादि पञ्चाङ्ग (भा. स्टैं. टा.)

फरवरी १९९९ ई.

मास पक्ष	फर. १९९९ ई.	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश काल रा.	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	जयपुर सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं.	मि.	भद्रा-ग्रहराशि-नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है।)
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	१	१	सो.	२० ४७	आश्ले.	१९ ५७	सौ.	२८ ११	सिं.	१९	५७	७	१९	१७	५४	७	१३	१७	५७	७	१६	१८	०४	६	४५	१७	४०	फाल्गुन कृष्ण पक्ष प्रारम्भ;
	२	२	मं.	२० ३४	म.	२० १८	शो.	२६ ५८	सिंह			७	१८	१७	५४	७	१३	१७	५८	७	१६	१८	०४	६	४५	१७	४०	
	३	३	बु	२० ५८	पूफा.	२१ १६	अ.	२६ १३	क.	२७	४०	७	१८	१७	५५	७	१२	१७	५८	७	१५	१८	०५	६	४४	१७	४१	भ.८ /४६ से २०/५८ तक,
	४	४	गु.	२२ ०	उ.फा.	२२ ५२	सु	२५ ५९	कन्या			७	१७	१७	५६	७	१२	१७	५९	७	१५	१८	०६	६	४३	१७	४२	
	५	५	शु.	२३ ३९	ह.	२५ १	धृ	२६ १०	कन्या			७	१६	१७	५७	७	११	१८	००	७	१४	१८	०७	६	४३	१७	४२	बुध धनि. में. १७/३५,
	६	६	श.	२५ ४७	चि.	२७ ३७	शू.	२६ ४२	तु	१४	११	७	१६	१७	५८	७	१०	१८	००	७	१४	१८	०८	६	४२	१७	४३	भ. २५/४७ बाद, सूर्य धनि.में १५/५७,
	७	७	र.	२८ १२	स्वा.	३० ३०	गं.	२७ २८	तुला			७	१५	१७	५९	७	०९	१८	०१	७	१३	१८	०८	६	४२	१७	४३	भ. १५/०० तक,
	८	८	सो.	३० ४३	वि.	–	–	वृ	२८ १८	वृ	२६	४२	७	१४	१८	००	७	०८	१८	०२	७	१३	१८	०९	६	४१	१७	४४	शुक्र पू.भा.में २४/५३,
	९	९	मं.	– –	वि.	९ २६	ध्रु	२९ २	वृश्चिक			७	१३	१८	००	७	०८	१८	०३	७	१२	१८	१०	६	४१	१७	४५	बुध कुम्भ में ११/३०,
	१०	९	बु	९ ५	अनु	१२ १३	व्या.	२९ ३२	वृश्चिक			७	१२	१८	०१	७	०७	१८	०३	७	१२	१८	१०	६	४०	१७	४५	भ. २२/५ बाद,
	११	१०	गु.	११ ४	ज्ये	१४ ३८	ह.	२९ ३९	ध	१४	३८	७	१२	१८	०२	७	०६	१८	०४	७	११	१८	११	६	३९	१७	४६	भ. ११/४ तक,
	१२	११	शु.	१२ ३३	मू.	१६ ३२	व.	२९ १९	धनु			७	११	१८	०३	७	०६	१८	०५	७	११	१८	१२	६	३९	१६	४६	सं. सूर्य कुम्भ में २९/५९, पुण्यकाल अगले दिन(A)
	१३	१२	श.	१३ २४	पूषा.	१७ ५०	सि.	२८ २९	म.	२४	१	७	१०	१८	०४	७	०५	१८	०६	७	०९	१८	१३	६	३८	१७	४७	
	१४	१३	र.	१३ ३६	उ.षा.	१८ २९	व्य.	२७ ९	मकर			७	०९	१८	०५	७	०४	१८	०६	७	०९	१८	१३	६	३८	१७	४७	भ. १३/३६ से २५/२३ तक, श्री महाशिवरात्रि व्रत,
	१५	१४	सो.	१३ १०	श्रव.	१८ ३२	व.	२५ २१	कुं.	३०	२८	७	०८	१८	०५	७	०४	१८	०७	७	०७	१८	१४	६	३७	१७	४८	पञ्चक प्रा. ३०/१८, गुरु उ.भा.२ में १४/१९,
	१६	३०	मं.	१२ ९	धनि	१८ ३	प	२३ ७	कुम्भ			७	०७	१८	०६	७	०३	१८	०८	७	०७	१८	१५	६	३६	१७	४९	शुक्र मीन में २६/३७, भौमवती अमावस
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	१७	१	बु	१० ३९	शत.	१७ ७	शि.	२० ३३	कुम्भ			७	०६	१८	०७	७	०२	१८	०९	७	०६	१८	१६	६	३५	१७	५०	फाल्गुन शुक्ल पक्ष प्रारम्भ,
	१८	२	गु.	८ ४६	पूभा.	१५ ५०	सि.	१७ ४८	मी.	१०	९	७	०५	१८	०८	७	०१	१८	१०	७	०५	१८	१६	६	३५	१७	५०	
				३० ३७																								
	१९	४	शु.	२८ १७	उ.भा.	१४ १९	सा.	१४ ४३	मीन			७	०४	१८	०९	७	००	१८	१०	७	०४	१८	१७	६	३४	१७	५१	भ. १७/२७ से २८/१७ तक, सूर्य सायन मीन में (B)
	२०	५	श.	२५ ५४	रे.	१२ ४०	शु.	११ ३६	मे.	१२	४०	७	०३	१८	०९	६	५९	१८	११	७	०३	१८	१७	६	३३	१७	५१	पञ्चक समाप्त १२/४०, बुध पश्चिम में उदित, बुध (C)
	२१	६	र.	२३ ३३	अश्वि.	११ ००	शु.	८ २८	मेष			७	०२	१८	१०	६	५८	१८	१२	७	०२	१८	१८	६	३२	१७	५२	
							ब्र.	२९ २२																				
	२२	७	सो.	२१ १७	भ	९ २३	ऐं.	२६ २२	वृ.	१५	१	७	०१	१८	११	६	५७	१८	१२	७	०२	१८	१८	६	३२	१७	५२	भ. २१/१७ बाद,
	२३	८	मं.	१९ ११	कृ.	७ ५४	वै.	२३ २९	वृष			७	०	१८	१२	६	५६	१८	१३	७	०१	१८	१९	६	३१	१७	५३	भ. ८/१४ तक, होलाष्टक प्रारम्भ,
					रो.	३० ३६																						
	२४	९	बु	१७ १८	मृ.	२९ ३१	वि.	२० ४८	मि.	१८	४	६	५९	१८	१२	६	५६	१८	१४	७	००	१८	२०	६	३०	१७	५३	
	२५	१०	गु.	१५ १९	आ.	२८ ४३	प्री.	१८ १९	मिथुन			६	५८	१८	१३	६	५५	१८	१५	६	५९	१८	२१	६	२९	१७	५४	भ. २६/५८ बाद,
	२६	११	शु.	१४ १८	पुन.	२८ १३	आ.	१६ ४	क.	२२	२१	६	५७	१८	१४	६	५४	१८	१५	६	५८	१८	२१	६	२९	१७	५४	भ. १४/१८ तक, बुध मीन में १०/४२,
	२७	१२	श.	१३ १६	पु	२८ ३	सौ.	१४ ५	कर्क			६	५६	१८	१५	६	५३	१८	१६	६	५७	१८	२२	६	२८	१७	५५	गोविन्द द्वादशी,
	२८	१३	र.	१२ ३६	आश्ले.	२८ १५	शो.	१२ २३	सिंह	२८	१५	६	५५	१८	१५	६	५२	१८	१६	६	५६	१८	२२	६	२७	१७	५५	बुध उ.भा. में १९/१३,

(A) मध्याह्न से पूर्व, बुध शत. में २७। ३८, (B) ८/१७, सूर्य शत. में २०/२३, शुक्र उ.भा. में १९/२२, (C) पू.भा. में १९/१०, यूरेनस श्रव. ४में २५/३८,

तिथ्यादि पञ्चाङ्ग (भा. स्टैं. टा.)

मार्च १९९९ ई.

मास पक्ष	मार्च १९९९ ई.	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश काल रा.	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	भद्रा-ग्रहराशि-नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है।)
फा.	१	१४	चं.	१२ १९	म.	२८ ५३	अ.	१० ५९	सिंह			६	५४	१८	१६	६	५१	१८	१७	६	५५	१८	२३	६	२५	१७	५६	भ. १२/१९ से २४/२४ तक, होलिका दहन,
शु.	२	१५	मं.	१२ २९	पूफा.	२९ ५६	सु.	९ ५७	सिंह			६	५२	१८	१७	६	५०	१८	१८	६	५४	१८	२३	६	२४	१७	५६	गुरु. उ.भा.३ में २९/५९, शुक्र रेव. में १५/२९,(A)
चैत्र कृष्ण पक्ष	३	१	बु	१३ ६	उ.फा.	- -	धृ	९ १४	कं.	१२	२०	६	५१	१८	१७	६	४९	१८	१८	६	५३	१८	२४	६	२३	१७	५७	चैत्र कृष्ण पक्ष प्रारम्भ;
	४	२	गु	१४ १३	उ.फा.	७ २८	शू.	८ ५५	कन्या			६	५०	१८	१८	६	४८	१८	१९	६	५२	१८	२५	६	२२	१७	५७	भ. २७/०बाद, सूर्य पू.भा में २६/४२,
	५	३	शु.	१५ ४८	ह.	९ २८	गं.	८ ५८	तु	२२	४०	६	४९	१८	१९	६	४६	१८	२०	६	५१	१८	२६	६	२१	१७	५८	भ. १५/४८तक,
	६	४	श.	१७ ४८	चि.	११ ५३	वृ.	९ २०	तुला			६	४८	१८	१९	६	४५	१८	२०	६	५०	१८	२७	६	२०	१७	५९	शनि अश्विनी ३ में ९/३७,
	७	५	र.	२० ७	स्वा.	१४ ३८	ध्रु	९ ५९	तुला			६	४७	१८	२०	६	४४	१८	२१	६	४९	१८	२७	६	१९	१७	५९	
	८	६	चं.	२२ ३६	वि.	१७ ३३	व्या.	१० ४८	वृ.	१०	५०	६	४५	१८	२१	६	४३	१८	२२	६	४८	१८	२८	६	१८	१८	००	भ. २२/३६बाद,
	९	७	मं.	२५ २	अनु	२० २९	ह.	११ ३९	वृश्चिक			६	४४	१८	२२	६	४२	१८	२२	६	४७	१८	२८	६	१७	१८	००	भ. ११/४९ तक,
	१०	८	बु	२७ १२	ज्ये.	२३ ११	व.	१२ २४	ध.	२३	११	६	४३	१८	२२	६	४१	१८	२३	६	४६	१८	२९	६	१६	१८	०१	बुध वक्री १४/४२,
	११	९	गु	२८ ५४	मू.	२५ २९	सि.	१२ ५२	धनु			६	४२	१८	२३	६	४०	१८	२३	६	४५	१८	२९	६	१५	१८	०१	
	१२	१०	शु.	२९ ५८	पूषा.	२७ १०	व्य.	१२ ५६	धनु			६	४१	१८	२४	६	३९	१८	२४	६	४४	१८	३०	६	१४	१८	०२	भ. १७/२६से २९/५८ तक, बुध पश्चिम में अस्त,
	१३	११	श.	३० १६	उ.षा.	२८ ९	व.	१२ २९	म.	९	२५	६	३९	१८	२४	६	३८	१८	२४	६	४२	१८	३०	६	१३	१८	०२	शुक्र अश्विनी मेष में १३/३८ , वेंकटेश (प्लूटो) वक्री,
	१४	१२	र.	२९ ४८	श्र.	२८ २३	प	११ २७	मकर			६	३८	१८	२५	६	३७	१८	२५	६	४१	१८	३१	६	१२	१८	०३	सं. सूर्य मीन में २६/५०, पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न सेपूर्व,
	१५	१३	चं.	२८ ३५	धनि	२७ ५३	शि.	९ ४९	कुं.	१६	८	६	३७	१८	२५	६	३६	१८	२५	६	४०	१८	३१	६	११	१८	०३	भ. २८/३५ बाद, पञ्चक प्रा. १६/८, राहु आश्ले.३,केतु (B)
	१६	१४	मं.	२६ ४३	शत.	२६ ४४	सि.	७ ३६	कुम्भ			६	३६	१८	२६	६	३५	१८	२६	६	३९	१८	३२	६	१०	१८	०४	भ. १५/३९तक, गुरु उ.भा.४ में ७/५८,
							सा.	२८ ५१																				
	१७	३०	बु	२४ १८	पू.भा.	२५ ३	शु.	२५ ४१	मी.	१९	२८	६	३५	१८	२७	६	३३	१८	२७	६	३८	१८	३२	६	०९	१८	०४	विक्रमी सं. २०५५पूर्ण,
चैत्र शुक्ल पक्ष	१८	१	गु	२१ ३९	उ.भा.	२२ ५८	शु.	२२ १३	मीन			६	३३	१८	२८	६	३२	१८	२७	६	३७	१८	३३	६	०८	१८	०५	चैत्र शुक्ल पक्ष प्रारम्भ,सूर्य उ.भा.में ११/७,मंगल(C) ,
	१९	२	शु.	१८ २६	रे.	२० ३९	ब्र.	१८ ३३	मे.	२०	३९	६	३२	१८	२९	६	३१	१८	२८	६	३६	१८	३३	६	०७	१८	०५	चन्द्र दर्शन, पञ्चक समाप्त २०/३९, वक्री वेंकटेश(D)
	२०	३	श.	१५ १८	अ.	१८ १७	ऐं.	१४ ४८	मेष			६	३१	१८	३०	६	३०	१८	२८	६	३५	१८	३४	६	०६	१८	०६	भ. २५/४६बाद, गौरी तृतीया
	२१	४	र.	१२ १४	भ.	१५ ५९	वै.	११ ७	वृ.	२१	२९	६	३०	१८	३०	६	२८	१८	२९	६	३४	१८	३४	६	०५	१८	०६	भ.१२/१४तक,वक्री बुध.पू.भा.में १७/२१,सूर्य सायन (E) ,
	२२	५	चं.	९ २२	कृ.	१३ ५६	वि.	७ ३६	वृष			६	२८	१८	३१	६	२७	१८	२९	६	३३	१८	३५	६	०४	१८	०६	नाग पंचमी, स्कन्द षष्ठी, गुरु अस्त (२१ मार्च)
							प्री.	२८ २०																				
	२३	६	मं.	६ ४९	रो.	१२ १३	आ.	२५ २४	मि.	२३	३५	६	२७	१८	३२	६	२६	१८	३०	६	३२	१८	३५	६	०३	१८	०७	भ. २८/४१ बाद, नेपच्यून श्रव. १ में २४/५५ ,
				२८ ४१																								
	२४	८	बु	२७ २	मृ.	१० ५६	सौ.	२२ ५१	मिथुन			६	२६	१८	३२	६	२५	१८	३०	६	३१	१८	३६	६	०२	१८	०७	भ. १५/५२ तक, शुक्र भरणी में १४ / १२,श्री दुर्गाष्टमी
	२५	९	गु	२५ ५१	आ.	१० ७	शो.	२० ४१	क.	२७	५२	६	२५	१८	३३	६	२४	१८	३१	६	२९	१८	३६	६	०१	१८	०७	वक्री बुध कुम्भ में १६/ ३३, श्री रामनवमी व्रत, नवरात्र समाप्त;
	२६	१०	शु.	२५ ११	पुन.	९ ४७	अ.	१८ ५५	कर्क			६	२३	१८	३४	६	२३	१८	३१	६	२८	१८	३७	६	००	१८	०८	बुध पूर्व में उदित १२/४,
	२७	११	श.	२४ ५२	पु.	९ ५७	सु.	१७ ३२	कर्क			६	२२	१८	३४	६	२२	१८	३२	६	२७	१८	३७	५	५९	१८	०८	भ. १३/२ से २४/५२ तक;
	२८	१२	र.	२५ १४	आश्ले.	१० ३४	धृ.	१६ ३१	सिं.	१०	३४	६	२१	१८	३५	६	२१	१८	३३	६	२६	१८	३८	५	५८	१८	०९	
	२९	१३	चं.	२५ ५३	म.	११ ३६	शू.	१५ ४९	सिंह			६	१९	१८	३५	६	१९	१८	३३	६	२५	१८	३८	५	५७	१८	०९	गुरु रेवती १ में २७/३६, श्री महावीर जयन्ती (जैन);
	३०	१४	मं.	२६ ५५	पू. फा.	१३ १	गं.	१५ २५	क.	१९	२८	६	१८	१८	३६	६	१८	१८	३४	६	२४	१८	३९	५	५६	१८	१०	भ. २६/५५ बाद,
	३१	१५	बु	२८ १९	उ.फा.	१४ ४७	वृ.	१५ १३	कन्या			६	१७	१८	३६	६	१७	१८	३५	६	२३	१८	३९	५	५५	१८	१०	भ. १५/३७ तक, सूर्य रेवती में २१/५६;

(A) होलाष्टक समाप्त, वसन्तोत्सव, (B) धनि. [illegible] (C) [illegible] (D) (प्लूटो) अनु. ४ में,
(E) मेष में ७/१६, गुरु अस्त २८/३०, महाविषुव दिन,

तिथ्यादि पञ्चाङ्ग (भा. स्टें. टा.)

अप्रैल १९९९ ई.

मास पक्ष	अप्रै. १९९९ ई.	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश काल रा.	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	भद्रा-ग्रहराशि-नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा.स्टें.टा. दिया गया है।)
वैशाख कृष्ण पक्ष	१	१	गु	३० २	ह.	१६ ५३	ध्रु	१५ २८	तु	३०	६	६	१६	१८	३६	६	१५	१८	३६	६	२२	१८	३८	५	५४	१८	१०	वैशाख कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,
	२	२	शु.	- -	चि.	१९ १९	व्या.	१५ ५३	तुला			६	१५	१८	३७	६	१४	१८	३६	६	२१	१८	३९	५	५३	१८	११	बुध मार्गी १४/५५,
	३	२	श.	८ ४	स्वा.	२२ ००	ह.	१६ ३१	तुला			६	१४	१८	३८	६	१३	१८	३७	६	२०	१८	४०	५	५२	१८	११	भ. २१/१३ बाद,
	४	३	र.	१० २२	वि.	२४ ५४	व.	१७ १९	वृ.	१८	११	६	१२	१८	३८	६	१२	१८	३७	६	१९	१८	४०	५	५१	१८	१२	भ.१०/२२तक,शुक्र कृतिका में १७/५६, शनि अश्वि.(A)
	५	४	चं.	१२ ४९	अनु.	२७ ५३	सि.	१८ १३	वृश्चिक			६	११	१८	३९	६	११	१८	३८	६	१८	१८	४१	५	५०	१८	१२	
	६	५	मं.	१५ १७	ज्ये.	- -	व्यति.	१९ ६	वृश्चिक			६	१०	१८	४०	६	१०	१८	३८	६	१६	१८	४२	५	४९	१८	१३	
	७	६	बु.	१७ ३५	ज्ये.	६ ४७	व.	१९ ५२	ध.	६	४७	६	९	१८	४१	६	०९	१८	३९	६	१५	१८	४३	५	४८	१८	१४	भ. १७/३५ बाद, शुक्र वृष में १३/२६,
	८	७	गु.	१९ ३३	मू.	९ २६	प.	२० २०	धनु			६	७	१८	४२	६	०८	१८	३९	६	१४	१८	४३	५	४७	१८	१४	भ. ६/३४ तक,
	९	८	शु.	२० ५७	पू.षा.	११ ३७	शि.	२० २३	म.	१८	१	६	६	१८	४२	६	०७	१८	४०	६	१३	१८	४४	५	४६	१८	१४	शनि अस्त ९/४३,
	१०	९	श.	२१ ३८	उ.षा.	१३ ११	सि.	१९ ५४	मकर			६	५	१८	४३	६	०५	१८	४०	६	१२	१८	४४	५	४५	१८	१४	बुध मीन में २४/५५,
	११	१०	र.	२१ ३१	श्रव.	१३ ५९	सा.	१८ ४७	कुं.	२५	५९	६	४	१८	४४	६	०४	१८	४१	६	११	१८	४५	५	४४	१८	१५	भ. ९/३४ से २१ /३१ तक,पञ्चक प्रा. २५/५९,
	१२	११	चं.	२० ३४	धनि.	१३ ५८	शु.	१७ १	कुम्भ			६	३	१८	४४	६	०३	१८	४१	६	१०	१८	४५	५	४३	१८	१५	गुरु रेवती २ में २२/४७,
	१३	१२	मं.	१८ ४८	शत.	१३ ८	शु.	१४ ३५	मी.	२९	५७	६	२	१८	४५	६	०२	१८	४२	६	०९	१८	४६	५	४२	१८	१६	
	१४	१३	बु.	१६ २०	पू.भा.	११ ३५	ब्र.	११ ३४	मीन			६	०	१८	४६	६	०१	१८	४२	६	०८	१८	४६	५	४१	१८	१६	भ. १६/२० से २६/४९ तक, सं.सूर्य अश्वि. मेष में (B)
	१५	१४	गु.	१३ १८	उ.भा.	९ ३५	ऐं.	८ ४	मीन			५	५९	१८	४६	६	००	१८	४३	६	०७	१८	४७	५	४०	१८	१७	बुध ऊ.भा. में ६/१६, शुक्र रोहिणी में २५/२९,
							वै.	२८ १०																				
	१६	३०	शु.	९ ५१	रे.	६ ४९	वि.	२४ ३	मे.	६	४९	५	५८	१८	४७	५	५९	१८	४३	६	०६	१८	४७	५	३९	१८	१७	पञ्चक समाप्त ६/४९,
					अ.	२७ ५८																						
वैशाख शुक्ल पक्ष	१७	१	श.	६ ११	भ.	२५ ४	प्री.	१९ ५१	मेष			५	५७	१८	४८	५	५८	१८	४४	६	०५	१८	४८	५	३८	१८	१८	वैशाख शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्र दर्शन,
				२६ २८																								
	१८	३	र.	२२ ५४	कृ.	२२ १७	आ.	१५ ४४	वृ.	६	२२	५	५६	१८	४८	५	५७	१८	४४	६	०४	१८	४८	५	३७	१८	१८	श्री परशुराम जयन्ती, अक्षय तृतीया,
	१९	४	चं.	१९ ३९	रो.	१९ ४८	सौ.	११ ४९	वृष			५	५५	१८	४९	५	५६	१८	४५	६	०३	१८	४९	५	३६	१८	१९	भ. ९/१७ से १९/३९ तक,
	२०	५	मं.	१६ ५१	मृ.	१७ ४७	शो.	८ १५	मि.	६	४७	५	५४	१८	४९	५	५५	१८	४५	६	०२	१८	४९	५	३५	१८	१९	सूर्य सायन वृष में १८/१६, जगद्गुरु आद्य शंकराचार्यजयन्ती,
							अ.	२९ ७																				
	२१	६	बु.	१४ ३७	आ.	१६ २१	सु.	२६ २९	मिथुन			५	५३	१८	५०	५	५४	१८	४६	६	०१	१८	५०	५	३४	१८	२०	गुरु उदित १५/५४,श्री रामानुजाचार्य जयन्ती,
	२२	७	गु.	१३ ३	पुन.	१५ ३५	धृ.	२४ २५	क.	९	४७	५	५२	१८	५१	५	५३	१८	४७	६	००	१८	५०	५	३३	१८	२०	भ. १३/३ से २४/३६ तक, श्री गंगाजन्म,
	२३	८	शु.	१२ ९	पु.	१५ २८	शू.	२२ ५३	कर्क			५	५१	१८	५१	५	५२	१८	४८	५	५९	१८	५१	५	३२	१८	२१	
	२४	९	श.	११ ५६	आश्ले.	१६ १	गं.	२१ ५२	लिं.	१६	१	५	५०	१८	५२	५	५१	१८	४८	५	५८	१८	५१	५	३२	१८	२१	श्री जानकी जयन्ती, गुरुबाल्य समाप्त १५/५४,
	२५	१०	र.	१२ १९	म.	१७ ९	वृ.	२१ १८	सिंह			५	४९	१८	५३	५	५०	१८	४९	५	५७	१८	५२	५	३१	१८	२१	भ. २४/४६ बाद,
	२६	११	चं.	१३ १३	पू.फा.	१८ ४६	ध्रु	२१ ७	क.	२५	१६	५	४८	१८	५३	५	४९	१८	४९	५	५६	१८	५२	५	३०	१८	२१	भ. १३/१३तक,बुध रेवती में१८/३३, गुरु रेवती ३ में२२/४१;
	२७	१२	मं.	१४ ३४	उ.फा.	२० ४७	व्या.	२१ १५	कन्या			५	४७	१८	५४	५	४९	१८	५०	५	५५	१८	५३	५	२९	१८	२२	सूर्य भरणी में २७/२,शुक्र मृगशिरा में १३/५४,
	२८	१३	बु.	१६ १६	ह.	२३ ८	ह.	२१ ३८	कन्या			५	४६	१८	५५	५	४८	१८	५०	५	५४	१८	५३	५	.९	१८	२२	नृसिंह जयन्ती,
	२९	१४	गु.	१८ १४	चि.	२५ ४३	व.	२२ १३	तु.	१२	२५	५	४५	१८	५५	५	४७	१८	५१	५	५३	१८	५४	५	२८	१८	२३	भ. १८/१४ बाद,
	३०	१५	शु.	२० २४	स्वा.	२८ २९	सि.	२२ ५७	तुला			५	४४	१८	५६	५	४६	१८	५२	५	५३	१८	५५	५	२७	१८	२३	भ.७ /१९ तक, शनि भरणी १ में २४/१६,(C)

गुरु उदित २१अप्रैल,

(A) ४ में १५/२४, (B) ११/१६, पुण्यकाल सारा दिन, वैशाखी (पंजाब), (C) श्री बुद्धपूर्णिमा, श्रीकूर्मजयन्ती,

तिथ्यादि पञ्चाङ्ग (भा. स्टैं. टा.)

मई १९९९ ई.

मास पक्ष	मई १९९९ ई.	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्रराशि रा.	प्रवेश काल घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	भद्रा-ग्रहराशि-नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है।)
प्र. ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	१	१	श.	२२ ४३	वि.	- -	व्या.	२३ ४८	वृ.	२४ ४०	५	४३	१८	५७	५	४५	१८	५३	५	५२	१८	५६	५	२६	१८	२४	प्र. ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ;
	२	२	र.	२५ ८	वि.	७ २३	ह.	२४ ४३	वृश्चिक		५	४२	१८	५७	५	४४	१८	५३	५	५२	१८	५६	५	२६	१८	२४	
	३	३	चं.	२७ ३३	अनु.	१० २१	प	२५ ३८	वृश्चिक		५	४१	१८	५८	५	४३	१८	५४	५	५१	१८	५७	५	२५	१८	२५	भ. १४/२२ से २७/३३ तक, शुक्र मिथुन में १०/२८,
	४	४	मं.	- -	ज्ये.	१३ १७	शि.	२६ ३०	ध.	१३ १७	५	४०	१८	५९	५	४२	१८	५४	५	५०	१८	५७	५	२४	१८	२५	वक्री मंगल चित्रा में १६/७;
	५	४	बु.	५ ५२	मू.	१६ ५	सि.	२७ ११	धनु		५	३९	१८	५९	५	४१	१८	५५	५	४९	१८	५८	५	२३	१८	२६	बुध अश्वि. मेष में १२/५३,
	६	५	गु.	७ ५७	पूषा.	१८ ३४	सा.	२७ ३४	म.	२५ ४	५	३९	१९	०	५	४१	१८	५५	५	४९	१८	५८	५	२३	१८	२६	नैपच्यून वक्री २८/१४,
	७	६	शु.	९ ३६	उ.षा.	२० ३५	शु.	२७ ३३	मकर		५	३८	१९	१	५	४०	१८	५६	५	४८	१८	५९	५	२२	१८	२७	भ.९/३६से २२/९ तक,
	८	७	श.	१० ४१	श्र.	२२ १	शु.	२७ ०	मकर		५	३७	१९	१	५	३९	१८	५६	५	४७	१८	५९	५	२१	१८	२७	
	९	८	र.	११ २	ध.	२२ ४१	ब्र.	२५ ५१	कुं.	१० २१	५	३६	१९	२	५	३८	१८	५७	५	४६	१९	००	५	२०	१८	२८	पञ्चक प्रा. १०/२१, शुक्र आर्द्रा में ८/५८;
	१०	९	चं.	१० २६	श.	२२ ३२	ऐं.	२४ २	कुम्भ		५	३५	१९	३	५	३८	१८	५७	५	४६	१९	००	५	२०	१८	२८	भ. २१/५८ बाद,
	११	१०	मं.	९ २०	पूभा.	२१ ३५	वै.	२१ ३४	मी.	१५ ४९	५	३५	१९	३	५	३७	१८	५८	५	४५	१९	०१	५	१९	१८	२९	भ. ९/२० तक, सूर्य कृत्ति. में २१/१४, गुरु रेवती ४ (A)
	१२	११	बु.	७ १६	उ.भा.	१९ ५४	वि.	१८ २९	मीन		५	३४	१९	४	५	३६	१८	५९	५	४४	१९	०१	५	१९	१८	२९	बुध भर. में २४/३८,
				२८ ३१																							
	१३	१३	गु.	२५ १२	रे.	१७ ३५	प्री.	१४ ५३	मे.	१७ ३५	५	३३	१९	५	५	३५	१९	००	५	४३	१९	०२	५	१८	१८	३०	भ. २५/१२ बाद, पञ्चक समाप्त१७/३५,
	१४	१४	शु.	२१ २९	अ.	१४ ४८	आ.	१० ५२	मेष		५	३३	१९	५	५	३५	१९	००	५	४३	१९	०२	५	१८	१८	३०	भ. ११/२२ तक, बुध पूर्व में अस्त ९/४२,
	१५	३०	श.	१७ ३४	भ.	११ ४५	सौ.	६ ३७	वृ.	१६ ५७	५	३२	१९	६	५	३४	१९	०१	५	४२	१९	०३	५	१७	१८	३१	सं. सूर्य वृष में ८/४, पुण्यकाल १४/२८ तक, शनि (B)
							शो.	२६ १६																			
प्र.(अधिक) ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	१६	१	र.	१३ ३८	कृ.	८ ३८	अ.	२१ ५८	वृष		५	३१	१९	७	५	३४	१९	०१	५	४२	१९	०३	५	१६	१८	३१	मल (अधिक) ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्र दर्शन,
	१७	२	चं.	९ ५३	रो.	५ ३८	सु.	१७ ५२	मि.	१६ १८	५	३१	१९	७	५	३३	१९	०२	५	४१	१९	०४	५	१५	१८	३२	राहु आश्लेषार, केतु श्रवण ४ में १३/४०,
					मृ.	२६ ५८																					
	१८	३	मं.	६ २८	आ.	२४ ४८	धृ.	१४ ८	मिथुन		५	३०	१९	८	५	३३	१९	०२	५	४१	१९	०४	५	१५	१८	३२	भ. १७ /०१ से २७/३५ तक,
				२७ ३५																							
	१९	५	बु.	२५ २०	पुन.	२३ १५	शू.	१० ५२	क.	१७ ३८	५	३०	१९	८	५	३२	१९	०३	५	४०	१९	०५	५	१५	१८	३३	बुध कृतिका में १६/३५,
	२०	६	गु.	२३ ५०	पु.	२२ २७	गं.	८ १०	कर्क		५	२९	१९	९	५	३२	१९	०४	५	४०	१९	०६	५	१५	१८	३३	
	२१	७	शु.	२३ ७	आश्ले.	२२ २५	वृ.	६ ५	सिं.	२२ २५	५	२९	१९	१०	५	३१	१९	०५	५	३९	१९	०७	५	१४	१८	३४	भ. २३/७ बाद, बुध वृष में ६/२५, यूरेनस वक्री, (C)
							ध्रु.	२८ ३८																			
	२२	८	श.	२३ १०	म.	२३ ८	व्या.	२७ ४७	सिंह		५	२८	१९	१०	५	३१	१९	०५	५	३९	१९	०७	५	१४	१८	३४	भ. ११/९ तक,
	२३	९	र.	२३ ५५	पूफा.	२४ ३२	ह.	२७ २८	सिंह		५	२८	१९	११	५	३०	१९	०६	५	३९	१९	०८	५	१३	१८	३५	
	२४	१०	चं.	२५ १४	उ.फा.	२६ ३०	व.	२७ ३५	कं.	७ २	५	२७	१९	१२	५	३०	१९	०६	५	३९	१९	०८	५	१३	१८	३५	श्रीगंगा दशहरा,
	२५	११	मं.	२७ १	ह.	२८ ५४	सि.	२८ ३	कन्या		५	२७	१९	१२	५	२९	१९	०७	५	३८	१९	०९	५	१२	१८	३६	भ. १४/७ से २७/१ तक, सूर्य रोहिणी में १७ /२१(D)
	२६	१२	बु.	२९ ७	चि.	- -	व्य.	२८ ४५	तु.	१८ १५	५	२६	१९	१३	५	२९	१९	०७	५	३८	१९	०९	५	१२	१८	३६	गुरु अश्वि. मेष में १६/२६,
	२७	१३	गु.	- -	चि.	७ ३६	व.	- -	तुला		५	२६	१९	१३	५	२९	१९	०८	५	३७	१९	१०	५	१२	१८	३७	शनि भरणी २ में १७/३,
	२८	१३	शु.	७ २७	स्वा.	१० २८	व.	५ ३६	तुला		५	२६	१९	१४	५	२९	१९	०८	५	३७	१९	१०	५	१२	१८	३७	
	२९	१४	श.	९ ४६	वि.	१३ २४	प.	६ ३१	वृ.	६ ४०	५	२५	१९	१५	५	२८	१९	०९	५	३६	१९	११	५	११	१८	३८	भ. ९/४६ से २२/५७ तक,
	३०	१५	र.	१२ ९	अनु.	१६ २०	शि.	७ २७	वृश्चिक		५	२५	१९	१५	५	२८	१९	०९	५	३६	१९	११	५	११	१८	३८	शुक्र कर्क में २५/७;
*	३१	१	चं.	१४ २९	ज्ये.	१९ १३	सि.	८ २२	ध.	१९ १३	५	२५	१९	१५	५	२८	१९	१०	५	३६	१९	१२	५	११	१८	३९	द्वि. (अधिक) ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, बुध मृग.(E)

* द्वि.(अ.)ज्ये.कृ.पक्ष (A) में ९/४५, श्री भद्रकाली एकादशी(पंजाब), (B) उदित २१/०, वट सावित्री व्रत (अमा पक्ष), भावुका अमा, शनैश्चरी अमा, (C) २७/१७, सूर्य सायन मिथुन में १७ /२२,
(D) बुध रोहिणी में [illegible] (E) में [illegible] शुक्र पुन. १ मे १३/०७

तिथ्यादि पञ्चाङ्ग (भा. स्टैं. टा.)

जून १९९९ ई.

मास पक्ष	जून १९९९ ई.	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश काल रा.	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	भद्रा-ग्रहराशि-नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है।)
द्वि.(अधिक) ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	१	२	मं.	१६ ४०	मू.	२१ ५७	सा.	९ ११	धनु			५	२५	१९	१६	५	२८	१९	१०	५	३६	१९	१२	५	११	१८	३९	
	२	३	बु	१८ ३८	पूषा.	२४ २७	शु.	९ ५०	धनु			५	२५	१९	१६	५	२८	१९	१०	५	३६	१९	१२	५	११	१८	३९	भ. ५/३२से १८/३८ तक,
	३	४	गु.	२० १६	उ.षा.	२६ ३७	शु.	१० १७	म.	७	१	५	२४	१९	१७	५	२८	१९	११	५	३६	१९	१३	५	११	१८	४०	बुध मिथुन में २७/५५, शुक्र पुष्य में ७/२८,
	४	५	शु.	२१ २८	श्र.	२८ १९	ब्र.	१० २५	मकर			५	२४	१९	१७	५	२८	१९	११	५	३६	१९	१३	५	११	१८	४०	मंगल मार्गी ११/४८,
	५	६	श.	२२ ६	ध.	- -	ऐं.	१० १०	कुं.	१६	५३	५	२४	१९	१८	५	२७	१९	१२	५	३६	१९	१४	५	११	१८	४१	भ. २२/६ बाद, पंचक प्रा. १६/५३,
	६	७	र.	२२ ६	ध.	५ २७	वै.	९ २६	कुम्भ			५	२४	१९	१८	५	२७	१९	१२	५	३६	१९	१४	५	११	१८	४१	भ. १०/६ तक,
	७	८	चं.	२१ २२	श.	५ ५६	वि.	८ १०	मी.	२३	४६	५	२४	१९	१९	५	२७	१९	१२	५	३६	१९	१४	५	११	१८	४१	बुध आर्द्रा में १२/९, बुध पश्चिम में उदित २६/१८,
	८	९	मं.	१९ ५१	पू.भा.	५ ४२	प्री.	६ १९	मीन			५	२४	१९	१९	५	२७	१९	१३	५	३६	१९	१५	५	११	१८	४१	सूर्य मृग. में १५/१८,
					उ.भा.	२८ ४४	आ.	२७ ५२																				
	९	१०	बु	१७ ४५	रे.	२७ ६	सौ.	२४ ५२	मे.	२७	६	५	२३	१९	२०	५	२७	१९	१४	५	३६	१९	१६	५	११	१८	४२	भ. ६/५० से १७/४५ तक, पंचक समाप्त २७/६,
	१०	११	गु.	१४ ५९	अ.	२४ ५३	शो.	२१ २४	मेष			५	२३	१९	२०	५	२७	१९	१४	५	३६	१९	१६	५	११	१८	४२	
	११	१२	शु.	११ ४३	भ.	२२ १६	अ.	१७ ३३	वृ.	२७	३४	५	२३	१९	२१	५	२७	१९	१४	५	३६	१९	१६	५	११	१८	४३	
	१२	१३	श.	८ ६	कृ.	१९ २२	सु.	१३ २७	वृष			५	२३	१९	२१	५	२७	१९	१५	५	३६	१९	१७	५	११	१८	४३	भ. ८/६ से १८ /१२ तक, गुरु अश्वि. २ में ९/३०,
				२८ १९																								
	१३	३०	र.	२४ ३२	रो.	१६ २४	धृ.	८ १४	मि.	२६	५९	५	२३	१९	२१	५	२७	१९	१५	५	३६	१९	१७	५	११	१८	४४	मल (अधिक) ज्येष्ठ मास समाप्त,
							शू.	२९ ४																				
द्वि.(शुद्ध) ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	१४	१	चं.	२० ५७	मृ.	१३ ३३	गं.	२५ ५	मिथुन			५	२३	१९	२२	५	२७	१९	१५	५	३६	१९	१७	५	११	१८	४४	द्वि.(शुद्ध)ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ,बुध पुनर्वसु में २३/४८,
	१५	२	मं.	१७ ४२	आ.	१० ५९	वृ.	२१ २६	क.	२७	२६	५	२३	१९	२२	५	२७	१९	१५	५	३६	१९	१७	५	११	१८	४५	चन्द्रदर्शन,सं.सूर्य मिथुन में१४/३८, पुण्यकाल ८/१४ बाद,
	१६	३	बु	१४ ५९	पु.	८ ५४	ध्रु	१८ १४	कर्क			५	२४	१९	२२	५	२७	१९	१७	५	३६	१९	१७	५	११	१८	४५	भ. २५/५६ बाद, शुक्र आश्लेषा में २६/२०, रम्भाव्रत,
	१७	४	गु	१२ ५४	पु	७ २६	व्या.	१५ ३५	कर्क			५	२४	१९	२३	५	२७	१९	१७	५	३६	१९	१८	५	११	१८	४५	भ. १२/५४ तक,
	१८	५	शु.	११ ३५	आश्ले.	६ ४२	ह.	१३ ३३	सिं.	६	४२	५	२४	१९	२३	५	२७	१९	१७	५	३६	१९	१८	५	११	१८	४६	
	१९	६	श.	११ ३	म.	६ ४४	व.	१२ ९	सिंह			५	२४	१९	२३	५	२७	१९	१८	५	३६	१९	१८	५	११	१८	४६	
	२०	७	र.	११ १८	पू.फा.	७ ३४	सि.	११ २३	क.	१३	५७	५	२४	१९	२४	५	२७	१९	१८	५	३६	१९	१८	५	११	१८	४६	भ. ११/१८ से २३/४७ तक,
	२१	८	चं.	१२ १७	उ.फा.	९ ६	व्यति.	११ ११	कन्या			५	२४	१९	२४	५	२७	१९	१८	५	३७	१९	१९	५	१२	१८	४६	सूर्य सायन कर्क में २५/१९, दक्षिणायन प्रारम्भ, (A)
	२२	९	मं.	१३ ५१	ह.	११ १४	व.	११ २७	तु	२४	३२	५	२४	१९	२४	५	२८	१९	१८	५	३७	१९	१९	५	१२	१८	४७	सूर्य आर्द्रा में १४ /१३,
	२३	१०	बु	१५ ५२	चि.	१३ ४९	प	१२ ५	तुला			५	२५	१९	२४	५	२८	१९	१८	५	३७	१९	१९	५	१२	१८	४७	भ. २९/१ बाद,
	२४	११	गु	१८ ९	स्वा.	१६ ४०	शि.	१२ ५५	तुला			५	२५	१९	२४	५	२९	१९	१८	५	३७	१९	१९	५	१३	१८	४७	भ. १८/९ तक, बुध पुष्य में ९/४५, निर्जला एकादशी,
	२५	१२	शु.	२० ३२	वि.	१९ ३८	सि.	१३ ५३	वृ.	१२	५३	५	२५	१९	२४	५	२९	१९	१८	५	३८	१९	२०	५	१३	१८	४७	
	२६	१३	श.	२२ ५४	अनु	२२ ३५	सा.	१४ ५०	वृश्चिक			५	२५	१९	२५	५	२९	१९	१८	५	३८	१९	२०	५	१३	१८	४७	
	२७	१४	र.	२५ ७	ज्ये.	२५ २३	शु.	१५ ४२	ध.	२५	२३	५	२६	१९	२५	५	२९	१९	१९	५	३८	१९	२०	५	१३	१८	४७	भ. २५/७ बाद, शनि भरणी ३ में ५/४८,
	२८	१५	चं.	२७ ७	मू.	२७ ५९	शु.	१६ २५	धनु			५	२६	१९	२५	५	२९	१९	१९	५	३८	१९	२०	५	१४	१८	४७	भ. १४/७ तक, वटसावित्री व्रत (पूर्णिमा पक्ष),
आषाकृ.	२९	१	मं.	२८ ५०	पूषा.	------	ब्र.	१६ ५७	धनु			५	२६	१९	२५	५	३०	१९	१९	५	३९	१९	२०	५	१४	१८	४७	आषाढ़ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,
	३०	२	बु	------	पूषा.	६ १७	ऐं.	१७ १४	म.	१२	४७	५	२७	१९	२५	५	३०	१९	१९	५	४०	१९	२१	५	१४	१८	४७	

(A) बुध कर्क में १८/२४, नेपच्यून उ.षा.४ में २२/३९,

तिथ्यादि पञ्चाङ्ग (भा. स्टै. टा.)

जुलाई १९९९ ई.

मास पक्ष	जुलाई १९९९ ई.	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्रराशि	प्रवेश काल घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मि.	दिल्ली सूर्योदय घं. मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मि.	जयपुर सूर्योदय घं. मि.	जयपुर सूर्यास्त घं. मि.	वाराणसी सूर्योदय घं. मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं. मि.	भद्रा-ग्रहराशि-नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है।)
आषाढ़ कृष्ण पक्ष	१	२	गु	६ १२	उ.षा.	८ १७	वै.	१७ १३	मकर		५ २७	१९ २५	५ ३१	१९ १९	५ ४०	१९ २१	५ १५	१८ ४७	भ. १८/४२ बाद, गुरु अश्वि.३में २१/५८,
	२	३	शु.	७ ११	श्र.	९ ५२	वि.	१६ ५३	कुं.	२२ २८	५ २७	१९ २५	५ ३२	१९ १९	५ ४०	१९ २१	५ १५	१८ ४७	भ. ७/११ तक,पञ्चक प्रारम्भ २२/२८,शुक्र मघा(A)
	३	४	श.	७ ४३	ध.	११ २	प्री.	१६ ११	कुम्भ		५ २८	१९ २५	५ ३२	१९ १९	५ ४०	१९ २१	५ १५	१८ ४७	
	४	५	र.	७ ४५	श.	११ ४२	आ.	१५ ५	कुम्भ		५ २८	१९ २५	५ ३२	१९ १९	५ ४१	१९ २०	५ १६	१८ ४७	
	५	६	चं	७ १५	पू.भा.	११ ४९	सौ.	१३ ५३	मी.	५ ४७	५ २९	१९ २५	२ ३३	१९ १८	५ ४१	१९ २०	५ १६	१८ ४७	भ. ७/१५ से १८/४३ तक,
	६	७	मं.	६ ११ २८ ३४	उ.भा.	११ २४	शो.	११ ३३	मीन		५ २९	१९ २५	५ ३३	१९ १८	५ ४२	१९ २०	५ १७	१८ ४७	सूर्य पुन. में १३/५३, मंगल स्वाती में २१/५१,
	७	९	बु	२६ २५	रे.	१० २४	अ.	९ ६	मे.	१० २४	५ ३०	१९ २५	५ ३३	१९ १८	५ ४२	१९ २०	५ १७	१८ ४७	पञ्चक समाप्त १०/२४,
	८	१०	गु	२३ ४९	अ.	८ ५५	सु. धृ.	६ १४ २७ ००	मेष		५ ३०	१९ २४	५ ३३	१९ १८	५ ४३	१९ २०	५ १८	१८ ४७	भ. १३/७ से २३/४९ तक,
	९	११	शु.	२० ५०	भ. कृ.	७ ० २८ ४४	शू.	२३ २८	वृ	१२ २६	५ ३१	१९ २४	५ ३४	१९ १८	५ ४३	१९ २०	५ १८	१८ ४७	
	१०	१२	श.	१७ ३७	रो.	२६ १७	गं.	१९ ४५	वृष		५ ३१	१९ २४	५ ३४	१९ १८	५ ४४	१९ २०	५ १९	१८ ४७	
	११	१३	र.	१४ १७	मृ.	२३ ४७	वृ.	१५ ५७	मि.	१३ २	५ ३२	१९ २४	५ ३५	१९ १८	५ ४४	१९ २०	५ १९	१८ ४७	भ. १४/१७ से २४/३९ तक,
	१२	१४	चं	११ ०	आ.	२१ २३	ध्रु	१२ १२	मिथुन		५ ३२	१९ २४	५ ३६	१९ १७	५ ४५	१९ १९	५ २०	१८ ४६	बुध वक्री २८/५९,
	१३	३०	मं.	७ ५४ २९ ८	पुन.	१९ १५	व्या. ह.	८ ३६ २९ १०	क.	१३ ४७	५ ३३	१९ २३	५ ३६	१९ १७	५ ४५	१९ १९	५ २०	१८ ४६	भौमवती अमावस,
आषाढ़ शुक्ल पक्ष	१४	२	बु	२६ ५१	पु	१७ ३२	व.	२६ २३	कर्क		५ ३३	१९ २३	५ ३७	१९ १७	५ ४६	१९ १९	५ २०	१८ ४६	आषाढ़ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, रथ यात्रा,
	१५	३	गु	२५ १०	आश्ले.	१६ २३	सि.	२३ ५८	सिं.	१६ २३	५ ३४	१९ २३	५ ३७	१९ १७	५ ४६	१९ १९	५ २०	१८ ४६	
	१६	४	शु.	२४ ११	म.	१५ ५३	व्यति.	२२ ७	सिंह		५ ३४	१९ २२	५ ३८	१९ १६	५ ४७	१९ १८	५ २१	१८ ४५	भ.१३/४१से २४/११तक, सं. सूर्य कर्क में २५/३०(B)
	१७	५	श.	२३ ५७	पू.फा.	१६ ७	व.	२० ५२	क.	२२ २२	५ ३५	१९ २२	५ ३८	१९ १६	५ ४७	१९ १८	५ २१	१८ ४५	
	१८	६	र.	२४ २८	उ.फा.	१७ ६	प	२० १३	कन्या		५ ३५	१९ २२	५ ३९	१९ १५	५ ४८	१९ १७	५ २२	१८ ४५	बुध पश्चिम में अस्त ८/१७, कुमार षष्ठी,
	१९	७	चं	२५ ४०	ह.	१८ ४६	शि.	२० ६	कन्या		५ ३६	१९ २१	५ ३९	१९ १५	५ ४८	१९ १७	५ २२	१८ ४५	भ. २५/४०बाद,राहु आश्ले. १,केतु श्रव.३ में(C)
	२०	८	मं.	२७ २६	चि.	२१ १	सि.	२० २७	तु	७ ५३	५ ३६	१९ २१	५ ४०	१९ १४	५ ४९	१९ १६	५ २३	१८ ४४	भ. १४/३३ तक, सूर्य पुष्य में १३/२०,
	२१	९	बु	२९ ३५	स्वा.	२३ ४१	सा.	२१ ९	तुला		५ ३७	१९ २०	५ ४०	१९ १४	५ ४९	१९ १६	५ २३	१८ ४४	
	२२	१०	गु	- -	वि.	२६ ३६	शु.	२२ २	वृ.	१९ ५१	५ ३८	१९ २०	५ ४१	१९ १३	५ ५०	१९ १६	५ २४	१८ ४३	
	२३	१०	शु.	७ ५७	अनु	२९ ३२	शु.	२२ ५९	वृश्चिक		५ ३८	१९ १९	५ ४१	१९ १३	५ ५०	१९ १६	५ २४	१८ ४३	भ. २१/८ बाद, सूर्य सायन सिंह में १२/१४,
	२४	११	श.	१० १८	ज्ये.	- -	ब्र	२३ ५१	वृश्चिक		५ ३९	१९ १९	५ ४२	१९ १२	५ ५१	१९ १५	५ २५	१८ ४२	भ. १०/१८ तक, हरिशयनी एकादशी,
	२५	१२	र.	१२ ३०	ज्ये.	८ २१	ऐं.	२४ ३२	ध.	८ २१	५ ३९	१९ १८	५ ४२	१९ १२	५ ५१	१९ १५	५ २५	१८ ४२	
	२६	१३	चं	१४ २२	मू.	१० ५३	वै.	२४ ५७	धनु		५ ४०	१९ १८	५ ४३	१९ ११	५ ५२	१९ १४	५ २६	१८ ४१	
	२७	१४	मं.	१५ ५२	पू.षा.	१३ ३	वि.	२५ २	म.	१९ २९	५ ४१	१९ १७	५ ४४	१९ ११	५ ५२	१९ १४	५ २६	१८ ४१	भ. १५/५२ से २८/२३ तक,
	२८	१५	बु	१६ ५४	उ.षा.	१४ ४७	प्री.	२४ ४५	मकर		५ ४१	१९ १७	५ ४५	१९ १०	५ ५३	१९ १३	५ २७	१८ ४०	गुरु पूर्णिमा, चन्द्रग्रहण, कोकिला व्रत,
श्राव.कृ.	२९	१	गु	१७ २९	श्रव.	१६ ४	आ.	२४ ४	कुं.	२८ २९	५ ४२	१९ १६	५ ४५	१९ १०	५ ५३	१९ १३	५ २७	१८ ४०	श्रावण कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, पञ्चक प्रा.२८/२९(D)
	३०	२	शु.	१७ ३६	धनि.	१६ ५४	सौ.	२३ ९	कुम्भ		५ ४३	१९ १५	५ ४६	१९ ०९	५ ५४	१९ १२	५ २८	१८ ३९	भ. २९/२७ बाद, शुक्र वक्री ७/५,
	३१	३	श.	२७ १७	शत.	१७ १७	शो.	२१ [illegible]	कुम्भ		[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	भ. [illegible]/१७ तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,

(A) सिंह में २८/४७, (B) पुण्यकाल १३/३० बाद, (C) ११/९, विवस्वत् सप्तमी, (D) गुरु अश्वि.४में १७ /५४,

तिथ्यादि पञ्चाङ्ग (भा. स्टैं. टा.)

अगस्त १९९९ ई.

मास पक्ष	अगस्त १९९९ ई.	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश काल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				भद्रा-ग्रहराशि-नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है।)
									रा.	घं.	मि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	
श्रावण कृष्ण पक्ष	१	४	र.	१६ ३१	पू.भा.	१७ १५	अ.	२० ७	मी.	११	१५	५	४४	१९	१४	५	४७	१९	०८	५	५५	१९	१०	५	२९	१८	३८	
	२	५	चं.	१५ २२	उ.भा.	१६ ५०	सु.	१८ ६	मीन			५	४४	१९	१३	५	४७	१९	०८	५	५५	१९	१०	५	२९	१८	३८	
	३	६	मं.	१३ ५०	रे.	१६ २	धृ.	१५ ४८	मे.	१६	२	५	४५	१९	१२	५	४८	१९	०७	५	५६	१९	०९	५	३०	१८	३७	भ. १३/५० से २४/५५ तक, पञ्चक समाप्त १६/२, (A)
	४	७	बु	११ ५९	अ.	१४ ५५	शू.	१२ १४	मेष			५	४६	१९	१२	५	४८	१९	०६	५	५६	१९	०९	५	३०	१८	३७	बुध पूर्व में उदित १६/५४,
	५	८	गु	९ ५०	भ.	१३ ३१	गं.	१० २५	वृ.	१९	७	५	४६	१९	११	५	४९	१९	०५	५	५७	१९	०८	५	३१	१८	३६	मंगल विशाखा में २६/६, शुक्र वार्धक्य प्रारम्भ १०/४८,
	६	९	शु.	७ २६	कृ.	११ ५३	वृ.	७ २४	वृष			५	४७	१९	१०	५	४९	१९	०५	५	५७	१९	०८	५	३१	१८	३६	भ. १८/९ से २८/५३ तक, बुध मार्गी ८/५०,
				२८ ५३			ध्रु	२८ १५																				
	७	११	श.	२६ १३	रो.	१० ५	व्या.	२५ १	मि.	२१	९	५	४८	१९	९	५	५०	१९	०४	५	५८	१९	०७	५	३२	१८	३५	शुक्र अस्त ८ अगस्त
	८	१२	र.	२३ ३४	मृ.	८ १३	ह.	२२ ४७	मिथुन			५	४८	१९	९	५	५०	१९	०३	५	५८	१९	०६	५	३२	१८	३४	शुक्र पश्चिम में अस्त १०/४८,
	९	१३	चं.	२१ १	आ.	६ २३	व.	१८ ३८	क.	२३	६	५	४९	१९	८	५	५१	१९	०२	५	५९	१९	०५	५	३३	१८	३३	भ. २१/१ बाद,
					पुन	२८ ४१																						
	१०	१४	मं.	१८ ४०	पु	२७ १३	सि.	१५ ३७	कर्क			५	४९	१९	७	५	५१	१९	०१	५	५९	१९	०४	५	३३	१८	३३	भ. ७/५१ तक,
	११	३०	बु	१६ ३८	आश्ले.	२६ ८	व्य.	१२ ५२	सिं.	२६	८	५	५०	१९	६	५	५२	१९	००	६	००	१९	०३	५	३४	१८	३२	हरयाली अमावस, खग्रास सूर्यग्रहण,
श्रावण शुक्ल पक्ष	१२	१	गु	१५ ३	म.	२५ ३१	व.	१० ३७	सिंह.			५	५१	१९	५	५	५३	१८	५९	६	००	१९	०२	५	३४	१८	३१	श्रावण शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्र दर्शन,
	१३	२	शु.	२३ ५९	पू.फा.	२५ २८	प	८ २८	सिंह			५	५१	१९	४	५	५४	१८	५८	६	०१	१९	०१	५	३५	१८	३०	
	१४	३	श.	१३ ३३	उ.फा.	२६ ३	शि.	६ ५७	कं.	७	३७	५	५२	१९	३	५	५४	१८	५८	६	०१	१९	०१	५	३५	१८	३०	भ. २५/३९ बाद, मधुश्रवा तृतीया, सन्धारा तीज,
	१५	४	र.	१३ ४६	ह.	२७ १८	सि.	५ ५७	कन्या			५	५३	१९	२	५	५५	१८	५७	६	०२	१९	००	५	३६	१८	२९	भ. १३/४६ तक, भारत स्वतंत्रता दिवस,
							सा.	२९ २९																				
	१६	५	चं.	१४ ४०	चि.	२९ १०	शु.	२९ ३१	तु.	१६	१४	५	५३	१९	१	५	५५	१८	५६	६	०२	१८	५९	५	३६	१८	२८	नागपंचमी,
	१७	६	मं.	१६ १०	स्वा.	- -	शु.	- -	तुला			५	५४	१९	०	५	५६	१८	५५	६	०३	१८	५८	५	३७	१८	२७	सं. सूर्य मघा सिंह में ९/५६, (B)
	१८	७	बु	१८ ९	स्वा.	७ ३४	शु.	५ ५८	वृ.	२७	३८	५	५४	१८	५९	५	५६	१८	५४	६	०३	१८	५७	५	३७	१८	२६	भ.१८/९ बाद, गोस्वामी श्री तुलसी जयन्ती, वैंकटेश मार्गी,
	१९	८	गु	२० २७	वि.	१० २०	ब्र.	६ ४३	वृश्चिक			५	५५	१८	५८	५	५७	१८	५३	६	०४	१८	५६	५	३७	१८	२५	भ.७/१८ तक, श्री कल्कि जयन्ती, श्री दुर्गाष्टमी,दूर्वाष्टमी व्रत,
	२०	९	शु.	२२ ५०	अनु	१३ १६	ऐं.	७ ३७	वृश्चिक			५	५६	१८	५७	५	५७	१८	५२	६	०४	१८	५५	५	३७	१८	२४	बुध आश्लेषा में २७/६,
	२१	१०	श.	२५ ५	ज्ये.	१६ १	वै.	८ ३१	ध.	१९	९	५	५६	१८	५६	५	५८	१८	५१	६	०५	१८	५४	५	३८	१८	२३	शुक्र उदित -२५ अगस्त
	२२	११	र.	२७ १	मू.	१८ ४७	वि.	९ १६	धनु			५	५७	१८	५५	५	५८	१८	५०	६	०५	१८	५३	५	३८	१८	२३	भ. १४/३ से २७/१ तक,
	२३	१२	चं.	२८ २८	पू.षा.	२० ५९	प्री.	९ ४३	म.	२७	२४	५	५७	१८	५४	५	५९	१८	४९	६	०६	१८	५२	५	३९	१८	२२	सूर्य सायन कन्या में १९/२१, मंगल वृश्चिक में २२/३५;
	२४	१३	मं.	२९ २०	उ.षा.	२२ ४०	आ.	९ ४६	मकर			५	५८	१८	५३	५	५९	१८	४८	६	०६	१८	५१	५	३९	१८	२१	
	२५	१४	बु	२९ ३६	श्र.	२३ ४५	सौ.	९ २२	मकर			५	५९	१८	५२	६	००	१८	४६	६	०७	१८	५०	५	४०	१८	२०	भ. २९/३६ बाद, गुरु वक्री ७/५७, वक्री शुक्र (C)
	२६	१५	गु	२९ १७	ध.	२४ १५	शो.	८ ३०	कुं.	१२	०	५	५९	१८	५१	६	००	१८	४५	६	०७	१८	४९	५	४०	१८	१९	भ. १७/२६ तक, पञ्चक प्रारम्भ १२/०, बुध पूर्व में (D)
भाद्र. कृष्ण पक्ष	२७	१	शु.	२८ २६	श.	२४ १३	अ.	७ १०	कुम्भ			६	००	१८	५०	६	०१	१८	४४	६	०८	१८	४८	५	४०	१८	१८	भाद्रपद कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,
							सु.	२९ २५																				
	२८	२	श.	२७ ८	पू.भा.	२३ ४४	धृ.	२७ १७	मी.	१७	५१	६	००	१८	४८	६	०१	१८	४३	६	०८	१८	४७	५	४०	१८	१७	बुध मघा सिंह में १६/४५, शुक्र बाल्य समाप्त १५/५९,
	२९	३	र.	२५ २८	उ.भा.	२२ ५१	शू.	२४ ५३	मीन			६	०१	१८	४७	६	०२	१८	४२	६	०९	१८	४६	५	४१	१८	१६	भ. १४/१८ से २५/२८ तक, मंगल अनुराधा में ११/२६,
	३०	४	चं.	२३ ३२	रे.	२१ ४२	गं.	२२ १४	मे.	२१	४२	६	०२	१८	४६	६	०२	१८	४१	६	०९	१८	४५	५	४१	१८	१५	पञ्चक समाप्त २१/४२, सूर्य पू.फा. में २९/५९ (E)
	३१	५	मं.	२१ २४	अ.	२० २१	वृ.	१९ २६	मेष			६	०२	१८	४५	६	०३	१८	४०	६	१०	१८	४४	५	४२	१८	१४	

(A) सूर्य आश्ले. में १२/२०, (B) पुण्यकाल १६/२१ तक (C) आश्ले. कर्क में २३/ ३५, शुक्र पूर्व में उदित १५/५९, ऋक् उपाकर्म (D) अस्त, २२/११ रक्षाबन्धन, शुक्ल -कृष्ण यजु उपाकर्म, श्रावणी पूर्णिमा, (E) शनि वक्री ६/५०, बहुला चतुर्थी, संकष्ट चतुर्थी, (चन्द्रोदय रात्रि ९ घं. ११ मि.)

तिथ्यादि पञ्चाङ्ग (भा. स्टैं. टा.)

सितंबर १९९९ ई.

मास पक्ष	सितं. १९९९ ई.	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश काल रा. घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	जयपुर सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं.	मि.	भद्रा-ग्रहराशि-नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है।)
भाद्रपद कृष्ण पक्ष	१	६	बु.	१९ ११	भ.	१८ ५४	ध्रु.	१६ ३३	वृ. २४ ३२	६	३	१८	४४	६	०३	१८	३९	६	१०	१८	४३	५	४२	१८	१३	भ.१९/११ बाद,
	२	७	गु.	१६ ५५	कृ.	१७ २४	व्या.	१३ ३७	वृष	६	३	१८	४३	६	०४	१८	३७	६	११	१८	४१	५	४३	१८	१२	भ. ६/४ तक, वक्री यूरेस श्रव. ३ में ८/१, श्री कृष्ण(A)
	३	८	शु.	१४ ४०	रो.	१५ ५६	ह.	१० ४२	मि. २७ १४	६	४	१८	४१	६	०४	१८	३६	६	११	१८	४०	५	४३	१८	११	श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत(वैष्णव), अगस्त्य उदय,
	४	९	श.	१२ २९	मृ.	१४ ३२	व.	७ ५०	मिथुन	६	५	१८	४०	६	०५	१८	३५	६	११	१८	३९	५	४४	१८	१०	भ. २३/२७ बाद, बुध पू.फा. में १२/४१, गुग्गा नवमी,
							सि.	२९ ३																		
	५	१०	र.	१० २६	आ.	१३ १४	व्य.	२६ २३	मिथुन	६	५	१८	३९	६	०५	१८	३४	६	११	१८	३८	५	४४	१८	०९	भ.१०/२६ तक,
	६	११	चं.	८ ३१	पुन.	१२ ७	व.	२३ ५२	क. ६ २४	६	६	१८	३८	६	०६	१८	३३	६	१२	१८	३७	५	४५	१८	०८	
	७	१२	मं.	६ ४९	पु.	११ १२	प.	२१ ३२	कर्क	६	६	१८	३७	६	०६	१८	३२	६	१२	१८	३६	५	४५	१८	०७	भ.२९/२२ बाद,
				२९ २२																						
	८	१४	बु.	२८ १५	आश्ले.	१० ३३	शि.	१९ २८	सिं. १० ३३	६	७	१८	३५	६	०७	१८	३१	६	१३	१८	३५	५	४५	१८	०६	भ. १६/४८ तक,
	९	३०	गु.	२७ ३२	म.	१० १५	सि.	१७ ४०	सिंह	६	७	१८	३४	६	०७	१८	३०	६	१३	१८	३४	५	४५	१८	०५	कुशोत्पाटिनी अमा,
भाद्रपद शुक्ल पक्ष	१०	१	शु.	२७ १६	पू.फा.	१० २०	सा.	१६ १४	क. १६ २९	६	८	१८	३३	६	०८	१८	२८	६	१४	१८	३२	५	४६	१८	०४	भाद्रपद शुक्ल पक्ष प्रारम्भ,
	११	२	श.	२७ ३२	उ.फा.	१० ५४	शु.	१५ ११	कन्या	६	९	१८	३२	६	०८	१८	२७	६	१४	१८	३१	५	४६	१८	०३	चन्द्र दर्शन, बुध उ.फा.में १२/२३, शुक्र मार्गी २९/५३(B)
	१२	३	र.	२८ २२	ह.	११ ५९	शु.	१४ ३४	तु. २४ ४९	६	९	१८	३०	६	०९	१८	२६	६	१५	१८	३०	५	४७	१८	०२	श्री वराह जयन्ती, गौरी तृतीया, हरितालिका तृतीया,
	१३	४	चं.	२९ ४५	चि.	१३ ३८	ब्र.	१४ २३	तुला	६	१०	१८	२९	६	०९	१८	२५	६	१५	१८	२९	५	४७	१८	०१	भ. १७/३ से २९/४५ तक, सूर्य उ.फा. में २३/४८(C)
	१४	५	मं.	- -	स्वा.	१५ ४८	ऐं.	१४ ३७	तुला	६	१०	१८	२८	६	१०	१८	२३	६	१६	१८	२८	५	४८	१७	५९	
	१५	५	बु.	७ ३८	वि.	१८ २४	वै.	१५ १२	वृ. ११ ४५	६	११	१८	२७	६	१०	१८	२२	६	१६	१८	२७	५	४८	१७	५८	
	१६	६	गु.	९ ५४	अनु.	२१ १८	वि.	१६ २	वृश्चिक	६	११	१८	२५	६	११	१८	२१	६	१७	१८	२६	५	४८	१७	५७	सूर्य षष्ठी,
	१७	७	शु.	१२ २२	ज्ये.	२४ १८	प्री.	१६ ५८	ध. २४ १८	६	१२	१८	२४	६	११	१८	२०	६	१७	१८	२५	५	४८	१७	५६	भ.१२/२२ से २५/३५ तक, सं. सूर्य कन्या में ९/५३(D)
	१८	८	श.	१४ ४७	मू.	२७ ९	आ.	१७ ५१	धनु	६	१३	१८	२३	६	१२	१८	१८	६	१८	१८	२३	५	४९	१७	५५	बुध हस्त में २३/२९, श्री राधाष्टमी,
	१९	९	र.	१६ ५५	पू.षा.	२९ ३८	सौ.	१८ ३०	धनु	६	१३	१८	२१	६	१२	१८	१७	६	१८	१८	२२	५	४९	१७	५४	मंगल ज्येष्ठा में ७/३,
	२०	१०	चं.	१८ ३४	उ.षा.	- -	शो.	१८ ४५	म. १२ ७	६	१४	१८	२०	६	१३	१८	१६	६	१८	१८	२१	५	५०	१७	५३	वक्री गुरु अश्विनी ३में१७/१४,राहु पुष्य ४, केतु श्रव.(E)
	२१	११	मं.	१९ ३३	उ.षा.	७ ३३	अ.	१८ ३१	मकर	६	१४	१८	१९	६	१३	१८	१५	६	१८	१८	२०	५	५०	१७	५२	भ. ७/७ से १९/३३ तक,
	२२	१२	बु.	१९ ४८	श्र.	८ ४७	सु.	१७ ४१	कुं. २१ २	६	१५	१८	१८	६	१४	१८	१३	६	१९	१८	१९	५	५१	१७	५१	पञ्चक प्रारम्भ २१/२, श्री वामन जयन्ती,
	२३	१३	गु.	१९ १९	ध.	९ १७	धृ.	१६ १६	कुम्भ	६	१५	१८	१६	६	१४	१८	१२	६	१९	१८	१८	५	५१	१७	५०	सूर्य सायन तुला में १७/१, दक्षिण गोल प्रारम्भ,
	२४	१४	शु.	१८ ८	श.	९ ४	शू.	१४ १६	मी. २६ २८	६	१६	१८	१५	६	१५	१८	११	६	२०	१८	१७	५	५१	१७	४९	भ. १८/८ से २९/१५ तक,
	२५	१५	श.	१६ २१	पू.भा.	८ १४	गं.	११ ५०	मीन	६	१७	१८	१४	६	१५	१८	१०	६	२०	१८	१६	५	५१	१७	४८	
आश्वि. कृष्ण पक्ष	२६	१	र.	१४ ६	उ.भा.	६ ५२	वृ.	८ ५८	मे. २९ ९	६	१७	१८	१३	६	१६	१८	०९	६	२१	१८	१४	५	५२	१७	४६	आश्विन कृष्ण पक्ष प्रारंभ, पञ्चक समाप्त २९/९, (F)
					रे.	२९ ९	ध्रु.	२९ ४८																		
	२७	२	चं.	११ ३१	अ.	२७ १२	व्या.	२६ २७	मेष	६	१८	१८	११	६	१६	१८	०८	६	२१	१८	१३	५	५२	१७	४५	भ. २२/९ बाद, सूर्य हस्त में१५/२१,
	२८	३	मं.	८ ४६	भ.	२५ ११	ह.	२३ २	मेष	६	१८	१८	१०	६	१७	१८	०७	६	२२	१८	१२	५	५३	१७	४४	भ. ८/४६ तक, शुक्र मघा सिंह में ९/५८,
				२९ ५१																						
	२९	५	बु.	२७ १७	कृ.	२३ १३	व.	१९ ४०	वृ. ६ ४२	६	१९	१८	९	६	१७	१८	०६	६	२२	१८	११	५	५३	१७	४३	
	३०	६	गु.	२४ ४६	रो.	२१ २६	सि.	१६ २६	वृष	६	१९	१८	७	६	१८	१८	०४	६	२३	१८	१०	५	५४	१७	४२	भ. २४/४६ बाद,

(A) जन्माष्टमी व्रत(स्मार्त)(B) साम उपाकर्म,(C) बुध कन्या में ७/५५, कलंक चतुर्थी, हरितालिका चतुर्थी, विनायक चतुर्थी,(D) पुण्यकाल १६/१७ तक, श्री महालक्ष्मी व्रत प्रारम्भ,
(E) २ में ८/५४,(F) बुध चित्रा में २५/७ , बुध पश्चिम में उदय, श्राद्ध प्रारम्भ,

तिथ्यादि पञ्चाङ्ग (भा. स्टैं. टा.)

अक्तूबर १९९९ ई.

मास पक्ष	अक्तू. १९९९ ई.	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश काल रा.	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	भद्रा-ग्रहराशि-नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है।)
आश्विन कृष्ण पक्ष	१	७	शु.	२२ ३२	मू.	१९ ५४	व्य.	१३ २३	मि.	८	४०	६	२०	१८	६	६	१८	१८	०३	६	२३	१८	०९	५	५४	१७	४१	भ.११/३९ तक,बुधतुला में ७/५७, श्री महालक्ष्मी व्रत समाप्त,
	२	८	श.	२० ३६	आ.	१८ ४०	व.	१० ३५	मिथुन			६	२१	१८	५	६	१९	१८	०२	६	२४	१८	०८	५	५५	१७	४०	जन्म श्री महात्मा गांधी,
	३	९	र.	१९ २	पुन.	१७ ४७	प.	८ ३	क.	१२	०	६	२१	१८	४	६	१९	१८	०१	६	२४	१८	०७	५	५५	१७	३९	
							शि.	२९ ४७																				
	४	१०	चं.	१७ ४८	पु.	१७ १५	सि.	२७ ४९	कर्क			६	२२	१८	२	६	२०	[illegible]	००	६	२५	१८	०६	५	५६	१७	३८	भ. ६/२५ से १७/४८ तक,
	५	११	मं.	१६ ५६	आश्ले.	१७ ३	सा.	२६ ७	सिं.	१७	३	६	२२	१८	१	६	२०	१७	५९	६	२५	१८	०५	५	५६	१७	३७	बुध स्वाती में १९/११,
	६	१२	बु.	१६ २४	म.	१७ १२	शु.	२४ ४२	सिंह			६	२३	१८	०	६	२१	१७	५८	६	२६	१८	०४	५	५६	१७	३६	
	७	१३	गु.	१६ १४	पू.फा.	१७ ४२	शु.	२३ ३४	क.	२३	५५	६	२४	१७	५९	६	२१	१७	५७	६	२६	१८	०३	५	५६	१७	३५	भ. १६/१४ से २८/२२ तक,
	८	१४	शु.	१६ २७	उ.फा.	१८ ३५	ब्र.	२२ ४४	कन्या			६	२४	१७	५७	६	२२	१७	५५	६	२७	१८	०१	५	५७	१७	३४	मंगल मूल धनु में १६/२२,
	९	३०	श.	१७ ४	ह.	१९ ५०	ऐं.	२२ १२	कन्या			६	२५	१७	५६	६	२२	१७	५४	६	२७	१८	००	५	५७	१७	३३	श्राद्ध समाप्त, शनैश्चरी अमा, गजच्छाया पर्व,
आश्विन शुक्ल पक्ष	१०	१	र.	१८ ७	चि.	२१ ३१	वै.	२२ १	तु.	८	४२	६	२६	१७	५५	६	२३	१७	५३	६	२८	१७	५९	५	५८	१७	३२	आश्विन शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, सूर्य चित्रा में (A)
	११	२	चं.	१९ ३७	स्वा.	२३ ३८	वि.	२२ ११	तुला			६	२६	१७	५४	६	२३	१७	५२	६	२८	१७	५८	५	५८	१७	३१	
	१२	३	मं.	२१ ३३	वि.	२६ ९	प्री.	२२ ४०	वृ.	१९	३१	६	२७	१७	५३	६	२४	१७	५१	६	२९	१७	५७	५	५९	१७	३०	
	१३	४	बु.	२३ ५१	अनु.	२९ ०	आ.	२३ २५	वृश्चिक			६	२७	१७	५१	६	२४	१७	५०	६	२९	१७	५६	५	५९	१७	३०	भ. १०/४२ से २३/५१ तक,
	१४	५	गु.	२६ २४	ज्ये.	- -	सौ.	२४ २१	वृश्चिक			६	२८	१७	५०	६	२५	१७	४९	६	३०	१७	५५	६	००	१७	२९	नेप्च्यून मार्गी ८/३९, उपांगललिता व्रत,
	१५	६	शु.	२९ ०	ज्ये.	८ ३	शो.	२५ २०	ध.	८	३	६	२९	१७	४९	६	२६	१७	४८	६	३०	१७	५४	६	००	१७	२८	बुध विशा. में १०/३५,
	१६	७	श.	- -	मू.	११ ७	अ.	२६ १३	धनु			६	२९	१७	४८	६	२७	१७	४७	६	३१	१७	५३	६	०१	१७	२७	शुक्र पू.फा. में २१/६
	१७	७	र.	७ २५	पू.षा.	१३ ५७	सु.	२६ ४८	म.	२०	३३	६	३०	१७	४७	६	२७	१७	४६	६	३१	१७	५२	६	०१	१७	२६	भ. ७/२५ से २०/२५ तक, सं. सूर्य तुला में २१/५१(B)
	१८	८	चं.	९ २५	उ.षा.	१६ २०	धृ.	२६ ५८	मकर			६	३१	१७	४६	६	२८	१७	४५	६	३२	१७	५१	६	०२	१७	२५	श्री दुर्गाष्टमी, महानवमी,
	१९	९	मं.	१० ४७	श्र.	१८ ३	शू.	२६ ३२	मकर			६	३१	१७	४५	६	२८	१७	४४	६	३२	१७	५०	६	०२	१७	२४	वक्री गुरु आश्वि. २ में १५/५७, विजया दशमी (दशहरा),नवरात्रसमाप्त,
	२०	१०	बु.	११ २२	ध.	१८ ५९	गं.	२५ २८	कुं.	६	३२	६	३२	१७	४४	६	२९	१७	४३	६	३३	१७	४९	६	०३	१७	२३	भ.२३/१४ बाद, पञ्चक प्रारंभ, ६/३२,
	२१	११	गु.	११ ६	श.	१९ ५	वृ.	२३ ४३	कुम्भ			६	३३	१७	४२	६	२९	१७	४२	६	३३	१७	४९	६	०३	१७	२३	भ. ११/६ तक,
	२२	१२	शु.	९ ५८	पू.भा.	१८ २२	ध्रु.	२१ १९	मी.	१२	३३	६	३३	१७	४१	६	३०	१७	४१	६	३४	१७	४८	६	०४	१७	२२	
	२३	१३	श.	८ ५	उ.भा.	१६ ५६	व्या.	१८ २०	मीन			६	३४	१७	४०	६	३१	१७	४०	६	३५	१७	४७	६	०४	१७	२२	भ.२९/३३ बाद,सूर्य सायन वृश्चिक में २६/२२बुध वृश्चिक(C)
				२९ ३३																								
	२४	१५	र.	२६ ३२	रे.	१४ ५५	ह.	१४ ५४	मे.	१४	५५	६	३५	१७	३९	६	३२	१७	३९	६	३६	१७	४६	६	०५	१७	२१	भ.१६/२ तक,पञ्चक समाप्त १४/५५, सूर्य स्वाती में(D)
कार्तिक कृष्ण पक्ष	२५	१	चं.	२३ १३	अ.	१२ ३०	व.	११ ९	मेष			६	३६	१७	३८	६	३२	१७	३८	६	३६	१७	४५	६	०५	१७	२०	कार्तिक कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,
	२६	२	मं.	१९ ४७	भ.	९ ५२	सि.	७ १२	वृ.	१५	१२	६	३६	१७	३७	६	३३	१७	३७	६	३७	१७	४४	६	०६	१७	१९	भ. ३०/६ बाद, मंगल पू.षा. में २७/४८,
							व्य.	२७ १३																				
	२७	३	बु.	१६ २५	कृ.	७ १३	व.	२३ १८	वृष			६	३७	१७	३६	६	३३	१७	३६	६	३७	१७	४३	६	०६	१७	१८	भ.१६/२५तक,बुध अनु.में ७/२६,करक चतुर्थी(करवा चौथ),
					रो.	२८ ४३																						
	२८	४	गु.	१३ १५	मृ.	२६ ३०	प.	१९ ३७	मि.	१५	३७	६	३८	१७	३५	६	३४	१७	३५	६	३८	१७	४२	६	०७	१७	१७	
	२९	५	शु.	१० २७	आ.	२४ ४२	शि.	१६ १५	मिथुन			६	३८	१७	३४	६	३४	१७	३५	६	३८	१७	४२	६	०७	१७	१७	
	३०	६	श.	८ ५	पुन.	२३ २५	सि.	१३ १६	क.	१७	४४	६	३९	१७	३३	६	३५	१७	३४	६	३९	१७	४१	६	०८	१७	१६	भ. ८ / ५ से १९/१० तक, शुक्र उ.फा. में २६/५९,
				३० १५																								
	३१	८	र.	२८ ५९	पु.	२२ ४०	सा.	१० ४३	कर्क			६	४०	१७	३३	६	३६	१७	३३	६	४०	१७	४०	६	०८	१७	१५	अहोई अष्टमी (पंजाब),

(A) २८/१९, शारद नवरात्र प्रारम्भ,(B) पुण्यकाल मध्याह्नोत्तर, (C) में २०/४७, यूरेनस मार्गी,११/५८,(D) १४/५१, शरत् पूर्णिमा, महर्षि श्रीवाल्मीकि जयन्ती,

तिथ्यादि पञ्चाङ्ग (भा. स्टैं. टा.)

नवम्बर १९९९ ई.

मास पक्ष	नवं. १९९९ ई.	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश काल रा.	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	भद्रा-ग्रहराशि-नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है।)
कार्तिक कृष्ण पक्ष	१	९	चं.	२८ १६	आश्लें.	२१ २८	शु.	८ ३६	सिं.	२२	२८	६	४१	१७	३२	६	३६	१७	३३	६	४१	१७	४०	६	०८	१७	१५	
	२	१०	मं.	२८ ४	म.	२२ ४६	शु.	६ ५६	सिंह			६	४२	१७	३१	६	३७	१७	३२	६	४१	१७	३९	६	०९	१७	१४	भ.१६/१०से २८/४ तक,
							ब्र.	२९ ४०																				
	३	११	बु.	२८ २१	पू.फा.	२३ ३३	ऐं.	२८ ४५	क.	२९	५१	६	४२	१७	३०	६	३८	१७	३१	६	४२	१७	३८	६	१०	१७	१३	शुक्र कन्या में १०/६,
	४	१२	गु.	२९ ३	उ.फा.	२४ ४५	वै.	२८ १०	कन्या			६	४३	१७	२९	६	३९	१७	३०	६	४२	१७	३७	६	११	१७	१२	वक्री शनि भर. २ में २२/३५, गोवत्स द्वादशी,
	५	१३	शु.	३० ८	ह.	२६ २०	वि.	२७ ५३	कन्या			६	४४	१७	२८	६	३९	१७	३०	६	४३	१७	३७	६	११	१७	११	भ. ३०/८बाद, बुध वक्री ८/१०, धन त्रयोदशी,
	६	१४	श.	– –	चि.	२८ १६	प्री.	२७ ५२	तु.	१५	१८	६	४५	१७	२७	६	४०	१७	२९	६	४३	१७	३६	६	१२	१७	११	भ. १८/५२ तक, सूर्य विशाखा में २२/५९,
	७	१४	र.	७ ३५	स्वा.	३० ३१	आ.	२८ ७	तुला			६	४६	१७	२७	६	४१	१७	२८	६	४४	१७	३६	६	१३	१७	१०	बुध पश्चिम में अस्त२१/९,नरक चतुर्दशी,(A)
	८	३०	चं.	९ २३	वि.	– –	सौ.	२८ ३६	वृ.	२६	२८	६	४६	१७	२६	६	४२	१७	२७	६	४५	१७	३५	६	१४	१७	१०	सोमवती अमावस, गोवर्धन पूजा, अन्नकूट,
कार्तिक शुक्ल पक्ष	९	१	मं.	११ ३०	वि.	९ ६	शो.	२९ १३	वृश्चिक			६	४७	१७	२५	६	४२	१७	२६	६	४५	१७	३५	६	१४	१७	९	कार्तिक शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्र दर्शन,
	१०	२	बु.	१३ ५४	अनु.	११ ५६	अ.	३० १२	वृश्चिक			६	४८	१७	२५	६	४३	१७	२६	६	४६	१७	३४	६	१५	१७	९	यम (भ्रातृ) द्वितीया, विश्वकर्मा पूजा,
	११	३	गु.	१६ ३१	ज्ये.	१४ ५९	सु.	– –	ध.	१४	५९	६	४९	१७	२४	६	४४	१७	२५	६	४७	१७	३४	६	१६	१७	८	भ. २९/५२ बा,
	१२	४	शु.	१९ १३	मू.	१८ ७	सु.	७ १२	धनु			६	५०	१७	२३	६	४५	१७	२५	६	४८	१७	३३	६	१७	१७	८	भ. १९/१३तर्क, वक्री बुध विशा. में २३/२२,(B)
	१३	५	श.	२१ ४९	पू.षा.	२१ १०	धृ.	८ ११	म.	२७	५२	६	५०	१७	२३	६	४५	१७	२४	६	४८	१७	३३	६	१७	१७	७	मंगल उ.षा. में २५/२,
	१४	६	र.	२४ ७	उ.षा.	२३ ५७	शू.	९ १	मकर			६	५१	१७	२२	६	४६	१७	२४	६	४९	१७	३२	६	१८	१७	७	वक्री गुरु अश्विनी १ में १३/२६,
	१५	७	चं.	२५ ५४	श्र.	२६ १३	गं.	९ ३४	मकर			६	५२	१७	२१	६	४७	१७	२३	६	५०	१७	३२	६	१८	१७	७	भ. २५/५४बाद, वक्री बुध तुला में १४/२
	१६	८	मं.	२६ ५९	ध.	२७ ४९	वृ.	९ ४०	कुं.	१५	६	६	५३	१७	२१	६	४८	१७	२३	६	५१	१७	३१	६	१९	१७	७	भ. १४/२७ तक, पंचक प्रारम्भ १५/६, सं. सूर्य(C)
	१७	९	बु.	२७ १३	श.	२८ ३६	ध्रु.	९ ११	कुम्भ			६	५४	१७	२०	६	४९	१७	२२	६	५१	१७	३०	६	१९	१७	६	अक्षय नवमी
	१८	१०	गु.	२६ ३३	पू.भा.	२८ ३१	व्या.	८ २	मी.	२२	३०	६	५५	१७	२०	६	५०	१७	२२	६	५२	१७	३०	६	२०	१७	६	मंगल मकर में १०/४२,
							ह.	३० १२																				
	१९	११	शु.	२५ १	उ.भा.	२७ ३४	व.	२७ ४०	मीन			६	५६	१७	१९	६	५१	१७	२२	६	५३	१७	३०	६	२१	१७	६	भ. १३/४७.से २५/१ तक, सूर्य अनु. में २८/५८, भीष्म(D)
	२०	१२	श.	२२ ४१	रे.	२५ ५२	सि.	२४ ३०	मे.	२५	५२	६	५६	१७	१९	६	५२	१७	२२	६	५४	१७	३०	६	२२	१७	६	पञ्चक समाप्त २५/५२, तुलसी विवाह,
	२१	१३	र.	१९ ४३	अ.	२३ ३२	व्य.	२० ५०	मेष			६	५७	१७	१९	६	५२	१७	२१	६	५४	१७	२९	६	२२	१७	५	वैकुण्ठ चतुर्दशी,राहु पुष्य ३ में, केतु श्रव.१ में, ३०/५१
	२२	१४	चं.	१६ १७	भ.	२० ४७	व.	१६ ४८	वृ.	२६	२	६	५८	१७	१८	७	५३	१७	२१	६	५५	१७	२९	६	२३	१७	५	भ. १६/१७ से २६/२५ तक, सूर्य सायन धनु में २३/५५,
	२३	१५	मं.	१२ ३३	कृ.	१७ ४६	प.	१२ ३१	वृष			६	५९	१७	१८	६	५४	१७	२१	६	५६	१७	२९	६	२४	१७	५	भीष्म पंचक समाप्त , कार्तिक पूर्णिमा, श्री गुरु नानक जयन्ती,
मार्ग. कृ. पक्ष	२४	१	बु.	८ ४४	रो.	१४ ४३	शि.	८ ९	मि.	२५	१६	७	०	१७	१८	६	५५	१७	२१	६	५७	१७	२९	६	२५	१७	५	मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,शुक्र चित्रा में२४/०,बुध पूर्व(E)
				२९ ०			सि.	२७ ५१																				
	२५	३	गु.	२५ ३२	मृ.	११ ४८	सा.	२३ ४७	मिथुन			७	१	१७	१७	६	५५	१७	२०	६	५७	१७	२९	६	२५	१७	५	भ.१५/१६ से २५/३२ तक, बुध मार्गी ९/३४,
	२६	४	शु.	२२ ३०	आ.	९ १३	शु.	२० ३	क.	२५	३८	७	२	१७	१७	६	५६	१७	२०	६	५८	१७	२९	६	२६	१७	५	
	२७	५	श.	२० २	पुन.	७ ६	शु.	१६ ४६	कर्क			७	२	१७	१७	६	५७	१७	२०	६	५९	१७	२९	६	२७	१७	५	
					पु.	२९ ३६																						
	२८	६	र.	१८ १२	आश्ले.	२८ ४६	ब्र.	१३ ५९	सिं.	२८	४६	७	३	१७	१७	६	५८	१७	२०	७	०	१७	२९	६	२८	१७	५	भ. १८/१२ से २९/३९ तक,
	२९	७	चं.	१७ ६	म.	२८ ३७	ऐं.	११ ४५	सिंह			७	४	१७	१७	६	५८	१७	२०	७	०	१७	२९	६	२८	१७	५	
	३०	[illegible]	मं.	१६ ४१	पू.फा.	२९ ९	वै.	१० ६	सिंह			७	५	१७	१६	६	५९	१७	२०	७	१	१७	२९	६	२९	१७	५	शुक्र तुला में २०/३०, कालाष्टमी (श्री भैरवाष्टमी),

(A) हनुमान जयन्ती, दीपावली, (B) शुक्र हस्त में २२/१७, (C) वृश्चिक में २१/३७, पुण्य काल मध्याह्नोत्तर, गोपाष्टमी (D) पञ्चक समाप्त, देव प्रबोधिनी एकादशी (E) में उदित २०/१२,

तिथ्यादि पञ्चाङ्ग (भा.स्टैं. टा.)

दिसम्बर १९९९ ई.

मास पक्ष	दिसं. १९९९ ई.	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश काल रा.	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	भद्रा-ग्रहराशि-नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है।)
मार्ग. कृष्णपक्ष	१	९	बु.	१६ ५७	उ.फा.	३० १८	वि.	८ ५८	क.	११	२६	७	६	१७	१६	७	०१	१७	२०	७	२	१७	२९	६	३०	१७	०५	भ. २९/२३ बाद , मंगल श्रव. में १३/६,
	२	१०	गु.	१७ ४९	ह.	- -	प्री.	८ १९	कन्या			७	७	१७	१६	७	०१	१७	२०	७	३	१७	२९	६	३१	१७	०५	भ. १७/४९ तक,
	३	११	शु.	१९ १२	ह.	७ ५९	आ.	८ ५	तु.	२१	३	७	७	१७	१६	७	०२	१७	२०	७	३	१७	२९	६	३१	१७	०५	सूर्य ज्येष्ठा में ९/१९,
	४	१२	श.	२१ ०	चि.	१० ६	सौ.	८ १२	तुला			७	८	१७	१६	७	०२	१७	२०	७	४	१७	२९	६	३२	१७	०५	
	५	१३	र.	२३ ७	स्वा.	१२ ३४	शो.	८ ३५	तुला			७	९	१७	१६	७	०३	१७	२०	७	५	१७	२९	६	३२	१७	०५	भ. २३/७ बाद,
	६	१४	चं.	२५ २९	वि.	१५ १७	अ.	९ १०	वृ.	८	३६	७	१०	१७	१६	७	०४	१७	२०	७	६	१७	२९	६	३३	१७	०५	भ. १२/१८तक, बुध वृश्चिक में १४/०, शुक्र(A)
	७	३०	मं.	२८ १	अनु.	१८ १२	सु.	९ ५६	वृश्चिक			७	११	१७	१६	७	०४	१७	२१	७	६	१७	३०	६	३३	१७	०६	भौमवती अमावस,
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष	८	१	बु.	३० ४०	ज्ये.	२१ १४	धृ.	१० ४८	ध.	२१	२४	७	११	१७	१६	७	०५	१७	२१	७	७	१७	३०	६	३४	१७	०६	मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, बुध अनुराधा में २९/१९,
	९	२	गु.	- -	मू.	२४ १९	शू.	११ ४४	धनु			७	१२	१७	१७	७	०६	१७	२१	७	८	१७	३०	६	३५	१७	०६	चन्द्र दर्शन,
	१०	२	शु.	९ २०	पू.षा.	२७ २१	गं.	१२ ४०	धनु			७	१३	१७	१७	७	०७	१७	२१	७	९	१७	३०	६	३६	१७	०६	
	११	३	श.	११ ३४	उ.षा.	३० १२	वृ.	१३ ३१	म.	१०	४	७	१३	१७	१७	७	०७	१७	२२	७	९	१७	३१	६	३६	१७	०६	भ. २४/५४बाद, यूरेनस श्रव. ४ में १०/२०,
	१२	४	र.	१४ १४	श्र.	- -	ध्रु.	१४ ११	मकर			७	१४	१७	१७	७	०८	१७	२२	७	१०	१७	३१	६	३७	१७	०६	भ. १४/१४ तक,
	१३	५	चं.	१६ ११	श्र.	८ ४४	व्या.	१४ ३३	कु.	२१	४६	७	१५	१७	१७	७	०९	१७	२२	७	१०	१७	३१	६	३८	१७	०६	पञ्चक प्रारम्भ २१/४६,
	१४	६	मं.	१७ ३५	ध.	१० ४०	ह.	१४ ३२	कुम्भ			७	१६	१७	१८	७	१०	१७	२२	७	११	१७	३१	६	३९	१७	०७	गुह षष्ठी, चम्पा षष्ठी,
	१५	७	बु.	१८ १६	श.	१२ १३	व.	१३ ५९	मी.	३०	४०	७	१६	१७	१८	७	१०	१७	२३	७	११	१७	३२	६	३९	१७	०७	भ. १८/१६ से ३०/१४ तक. मित्र सप्तमी,
	१६	८	गु.	१८ ११	पू.भा.	१२ ५३	सि.	१२ ५०	मीन			७	१७	१७	१८	७	११	१७	२३	७	१२	१७	३२	६	४०	१७	०८	सं. सूर्य मूल धनु में १२/१५, पुण्यकाल सारा दिन,
	१७	९	शु.	१७ १६	उ.भा.	१२ ४३	व्य.	११ ४	मीन			७	१८	१७	१९	७	११	१७	२३	७	१३	१७	३२	६	४०	१७	०८	शुक्र विशाखा. में २२/५५,
	१८	१०	श.	१५ ३३	रे.	११ ५१	व.	८ ३८	मे.	११	५१	७	१८	१७	१९	७	१२	१७	२३	७	१४	१७	३२	६	४१	१७	०९	भ. २६/१९ बाद , पञ्चक समाप्त ११/५१ (B)
							प.	२९ ३७																				
	१९	११	र.	१३ ६	अ.	१० १३	शि.	२६ ५	मेष			७	१९	१७	२०	७	१२	१७	२४	७	१४	१७	३२	६	४२	१७	०९	भ. १३/६तक, श्री गीता जयन्ती,
	२०	१२	चं.	१० ४	भ.	७ ५८	सि.	२२ ७	वृ.	१३	१८	७	१९	१७	२०	७	१३	१७	२४	७	१५	१७	३३	६	४२	१७	१०	गुरु मार्गी २०/५१,
				३० ३६	कृ.	२९ १५																						
	२१	१४	मं.	२६ ५१	रो.	२६ १६	सा.	१७ ५३	वृष			७	२०	१७	२०	७	१३	१७	२५	७	१५	१७	३३	६	४३	१७	१०	भ. २६/५१ बाद, बुध पूर्व में अस्त ९/४८,
	२२	१५	बु.	२३ १	मृ.	२३ ११	शु.	१३ ३१	मि.	१२	४४	७	२०	१७	२१	७	१४	१७	२५	७	१६	१७	३४	६	४४	१७	११	भ. १२/५६ तक, सूर्य सायन मकर में १३/२१(C)
पौष कृष्ण पक्ष	२३	१	गु.	१९ १६	आ.	२० ११	शु.	९ ९	मिथुन			७	२१	१७	२२	७	१४	१७	२५	७	१६	१७	३४	६	४४	१७	११	पौष कृष्ण पक्ष प्रारम्भ;
							ब्र.	२८ ५६																				
	२४	२	शु.	१५ ४८	पुन.	१७ २९	ऐं.	२५ १	क.	१२	१०	७	२१	१७	२२	७	१५	१७	२६	७	१७	१७	३५	६	४४	१७	१२	भ. २६/१७ बाद,
	२५	३	श.	१२ ४६	पु.	१५ १३	वै.	२१ २९	कर्क			७	२२	१७	२३	७	१५	१७	२७	७	१७	१७	३५	६	४४	१७	१२	भ. १२/४६ तक,
	२६	४	र.	१० १९	आश्ले.	१३ ३२	वि.	१८ २८	सिं.	१३	३२	७	२२	१७	२३	७	१६	१७	२८	७	१८	१७	३६	६	४५	१७	१३	शुक्र वृश्चिक में ७/५३,
	२७	५	चं.	८ ३३	म.	१२ ३४	प्री.	१६ २	सिंह			७	२३	१७	२४	७	१७	१७	२८	७	१८	१७	३६	६	४५	१७	१३	मंगल कुम्भ में १०/१८, बुध मूल धनु में १२/३१(D)
	२८	६	मं.	७ ३४	पू.फा.	१२ २१	आ.	१४ १४	क.	१८	३९	७	२३	१७	२४	७	१७	१७	२९	७	१८	१७	३७	६	४६	१७	१४	भ. ७/३४ से १९/३३ तक, शुक्र अनुराधा में २६/२५,
	२९	७	बु.	७ ३२	उ.फा.	१२ ५४	सौ.	१३ २	कन्या			७	२४	१७	२५	७	१७	१७	२९	७	१८	१७	३८	६	४६	१७	१४	सूर्य पू.षा. में १४/३३,
	३०	८	गु.	७ ५७	ह.	१४ १२	शो.	१२ २५	तु.	२७	९	७	२४	१७	२६	७	१७	१७	३०	७	१९	१७	३९	६	४७	१७	१५	
	३१	९	शु.	९ १३	चि.	१६ ७	अ.	१२ १८	तुला			७	२४	१७	२६	७	१८	१७	३१	७	२०	१७	४०	६	४७	१७	१६	भ. २२/८ बाद,

(A) स्वाती में १४/५३, वेंकटेश (प्लूटो)ज्येष्ठा १ में,(B) मंगल धनिष्ठा में १९/ ५०, बुध ज्येष्ठा में १५/५९ ,(C) उत्तरायण प्रारंभ, श्री दत्त जयन्ती(D) वक्री शनि भरणी १ में १५/५७,

तिथ्यादि पञ्चाङ्ग (भा. स्टैं. टा.)

मास पक्ष	जन. २००० ई.	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश काल रा.	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	भद्रा-ग्रहराशि-नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है।)
पौष कृ.पक्ष	१	१०	श.	२१ ३	स्वा.	१८ ३३	सु.	१२ ३८	तुला			७	२४	१७	२७	७	१८	१७	३१	७	२०	१७	४०	६	४७	१७	१७	भ. ११/२ तक,
	२	११	र.	२३ १९	वि.	२१ २०	धृ.	१३ १४	वृ.	१४	३८	७	२५	१७	२८	७	१८	१७	३२	७	२०	१७	४१	६	४७	१७	१७	
	३	१२	चं.	१५ ५१	अनु.	२४ २०	शू.	१४ ३	वृश्चिक			७	२५	१७	२९	७	१९	१७	३३	७	२०	१७	४१	६	४७	१७	१८	
	४	१३	मं.	१८ ३१	ज्ये.	२७ २५	गं.	१४ ५७	ध.	२७	२५	७	२५	१७	२९	७	१९	१७	३४	७	२१	१७	४२	६	४८	१७	१९	भ. १८/३१ बाद, मंगल शत.में२४/३६, बुध पू.षा.में २६/४२,
	५	१४	बु.	२१ १०	मू.	३० २७	वृ.	१५ ५३	धनु			७	२५	१७	३०	७	१९	१७	३५	७	२१	१७	४३	६	४८	१७	१९	भ. ७/५२ तक,
	६	३०	गु.	२३ ४८	पू.षा.	- -	ध्रु.	१६ ४४	धनु			७	२६	१७	३१	७	१९	१७	३६	७	२१	१७	४४	६	४९	१७	२०	
पौष शुक्ल पक्ष	७	१	शु.	२६ २५	पू.षा.	९ २२	व्या.	१७ २८	म.	१६	१	७	२६	१७	३२	७	१९	१७	३७	७	२१	१७	४५	६	४९	१७	२१	पौष शुक्ल पक्ष प्रारम्भ,
	८	२	श.	२८ ९	उ.षा.	१२ ४	ह.	१८ १	मकर			७	२६	१७	३२	७	१९	१७	३७	७	२१	१७	४५	६	४९	१७	२२	चन्द्र दर्शन, शुक्र ज्येष्ठा में २६/४२,
	९	३	र.	२९ ५२	श्र.	१४ २८	व.	१८ १९	कुं.	२७	२५	७	२६	१७	३३	७	१९	१७	३८	७	२१	१७	४६	६	४९	१७	२२	पञ्चक प्रारम्भ २७/२५,
	१०	४	चं.	३१ ८	ध.	१६ २३	सि.	१८ १८	कुम्भ			७	२६	१७	३४	७	१९	१७	३८	७	२१	१७	४६	६	४९	१७	२३	भ. १८/३० से ३१/८ तक,
	११	५	मं.	- -	श.	१८ ४	व्य.	१७ ५६	कुम्भ			७	२६	१७	३५	७	१९	१७	३९	७	२१	१७	४७	६	४९	१७	२४	सूर्य उ.षा. में १६/२८,
	१२	५	बु.	७ ५२	पू.भा.	१९ ५	व.	१७ ९	मी.	१२	५०	७	२६	१७	३६	७	१९	१७	४०	७	२१	१७	४८	६	४९	१७	२५	शनि मार्गी १०/४१,
	१३	६	गु.	८ २	उ.भा.	१९ ३२	प.	१५ ५३	मीन			७	२६	१७	३७	७	१९	१७	४१	७	२१	१७	४९	६	४९	१७	२५	बुध उ.षा. में १०/२५, लोहड़ी (पंजाब),
	१४	७	शु.	७ ३३ ३० २५	रे.	१९ २१	शि.	१४ ८	मे.	१९	२१	७	२६	१७	३७	७	१९	१७	४२	७	२१	१७	४९	६	४९	१७	२६	भ. ७/३३ से १८/५९ तक, पंचक समाप्त १९/२१,(A)
	१५	९	श.	२८ ४०	अ.	१८ ३३	सि.	११ ५८	मेष			७	२६	१७	३८	७	१९	१७	४२	७	२१	१७	५०	६	४९	१७	२७	बुध मकर में ११/११,
	१६	१०	र.	२६ २१	भ.	१७ ९	सा. शु.	९ ७ २९ ५५	वृ.	२२	४०	७	२५	१७	३९	७	१९	१७	४३	७	२१	१७	५१	६	४९	१७	२८	
	१७	११	चं.	२३ ३३	कृ.	१५ १५	शु.	२६ २१	वृष			७	२५	१७	४०	७	१९	१७	४४	७	२१	१७	५२	६	४९	१७	२९	भ. १२/५७से २३/३३ तक,
	१८	१२	मं.	२० २३	रो.	१२ ५६	ब्र.	२२ ३०	मि.	२३	३८	७	२५	१७	४१	७	१९	१७	४५	७	२१	१७	५३	६	४९	१७	२९	
	१९	१३	बु.	१७ १	मृ.	१० २०	ऐं.	१८ ३०	मिथुन			७	२५	१७	४२	७	१९	१७	४६	७	२१	१७	५४	६	४९	१७	३०	शुक्र मूल धनु में २४/५९, नेपच्यून श्रव. १ में १४/४२,
	२०	१४	गु.	१३ ३३	आ. पुन.	७ ३८ २८ ५७	वै.	१४ २५	क.	२३	३७	७	२४	१७	४३	७	१८	१७	४७	७	२१	१७	५५	६	४९	१७	३१	भ. १३/३३ से २३/५२ तक,(B)
	२१	१५	शु.	१० १० ३१ २	पु.	२६ २८	वि. प्री.	१० २५ ३० ३८	कर्क			७	२४	१७	४४	७	१८	१७	४८	७	२१	१७	५६	६	४९	१७	३१	सूर्य अभिजित् में १२/१, मंगल पू. भा. में २९/५४,(C)
माघ कृष्ण पक्ष	२२	२	श.	२८ १८	आश्ले.	२४ २२	आ.	२७ ९	सि.	२४	२२	७	२४	१७	४५	७	१७	१७	४९	७	२१	१७	५७	६	४९	१७	३२	माघ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,
	२३	३	र.	२६ ७	म.	२२ ४६	सौ.	२४ ७	सिंह			७	२४	१७	४५	७	१७	१७	५०	७	२१	१७	५८	६	४९	१७	३३	भ. १५/१२ से २६/७ तक,राहु पुष्य २ केतु उ.षा ४ में २८/७,
	२४	४	चं.	२४ ३५	पू.फा.	२१ ४९	शो.	२१ ३७	क.	२७	४६	७	२३	१७	४६	७	१७	१७	५०	७	२०	१७	५८	६	४८	१७	३४	सूर्य श्रवण में १८/४९ , संकष्ट चतुर्थी,
	२५	५	मं.	२३ ५०	उ.फा.	२१ ३६	अ.	१९ ४२	कन्या			७	२३	१७	४७	७	१७	१७	५१	७	२०	१७	५९	६	४८	१७	३४	गुरु अश्वि. २ में २५/२१,
	२६	६	बु.	२३ ५४	ह.	२२ ११	सु.	१८ २५	कन्या			७	२२	१७	४८	७	१६	१७	५२	७	१९	१७	५९	६	४८	१७	३५	भ. २३/५४ बाद, भारत गणतंत्र दिवस,
	२७	७	गु.	२४ ४४	चि.	२३ ४१	धृ.	१७ ४५	तु.	१०	५६	७	२२	१७	४९	७	१६	१७	५३	७	१९	१८	००	६	४७	१७	३६	भ. १२/१९ तक , शनि भरणी २ में २८/५२,
	२८	८	शु.	२६ १८	स्वा.	२५ ३३	शू.	१७ ३९	तुला			७	२१	१७	५०	७	१५	१७	५४	७	१८	१८	०१	६	४७	१७	३७	बुध धनिष्ठा में २७/५१,
	२९	९	श.	२८ २६	वि.	२८ ७	गं.	१८ १	वृ.	२१	२९	७	२१	१७	५१	७	१४	१७	५५	७	१८	१८	०२	६	४७	१७	३८	
	३०	१०	र.	३० ५७	अनु.	३१ ४	वृ.	१८ ४३	वृश्चिक			७	२०	१७	५२	७	१३	१७	५६	७	१७	१८	०२	६	४६	१७	३९	भ. १७/४१ से ३०/५७ तक, शुक्र पू.षा में २१/५०(D)
	३१	११	चं.	- -	ज्ये.	- -	ध्रु.	१९ ३८	वृश्चिक			७	२०	१७	५३	७	१२	१७	५७	७	१७	१८	०३	६	४५	१७	४०	

(A) सं. सूर्य मकर में २२/५९, पुण्यकाल अगले दिन १४/५९ तक, जन्म दिन श्री गुरु गोविन्द सिंह जी,(B) सूर्य सायन कुम्भ में २३/५३,(C) बुध श्रव. में १०/३४,(D) ज.दि. स्वामी दयानन्द सरस्वती

तिथ्यादि पञ्चाङ्ग (भा. स्टैं. टा.)

फरवरी २०००ई.

मास पक्ष	फर. २००० ई.	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश काल रा.	घं.	मि.	चण्डीगढ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	भद्रा-ग्रहराशि-नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा.स्टै.टा. दिया गया है।)
माघ.कृ.प.	१	११	मं.	९ ३८	ज्ये.	१० १०	व्या.	२० ३६	ध.	१०	१०	७	१९	१७	५३	७	१३	१७	५७	७	१६	१८	०४	६	४५	१७	४०	बुध कुम्भ में २३/३१,
	२	१२	बु.	१२ १८	मू.	१३ १४	ह.	२१ २८	धनु			७	१९	१७	५४	७	१३	१७	५८	७	१६	१८	०४	६	४५	१७	४०	
	३	१३	गु.	१४ ४४	पू.षा.	१६ ०६	व.	२२ १०	म.	२२	४४	७	१८	१७	५५	७	१२	१७	५८	७	१५	१८	०५	६	४४	१७	४१	भ. १४/४४ से २७/४८ तक, मंगल मीन में २९/४७,
	४	१४	शु.	१६ ५१	उ.षा.	१८ ३९	सि.	२२ ३६	मकर			७	१७	१७	५६	७	१२	१७	५९	७	१५	१८	०६	६	४३	१७	४२	
	५	३०	श.	१८ ३४	श्रव.	२० ४८	व्य.	२२ ४३	मकर			७	१७	१७	५७	७	११	१८	००	७	१४	१८	०७	६	४३	१७	४२	बुध शतभिषा में २१/०६,मौनी अमा, शनैश्चरी अमा,(A)
माघ शुक्ल पक्ष	६	१	र.	१९ ४८	धनि.	२२ ३१	वरी.	२२ २९	कुं.	९	३९	७	१६	१७	५८	७	१०	१८	००	७	१४	१८	०८	६	४२	१७	४३	माघ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, पंचक प्रा. ९/३९,सूर्य धनि.में(B)
	७	२	चं.	२० ३४	शत.	२३ ४७	प.	२१ ५३	कुम्भ			७	१५	१७	५९	७	९	१८	०१	७	१३	१८	०८	६	४२	१७	४३	चन्द्र दर्शन,
	८	३	मं.	२० ५३	पू.भा.	२४ ३६	शि.	२० ५६	मी.	१८	२४	७	१४	१७	५९	७	८	१८	२	७	१३	१८	०९	६	४१	१७	४४	मंगल उ.भा. में १४/१३, बुध पश्चिम में उदित २०/१,(C)
	९	४	बु.	२० ४४	उ.भा	२४ ५९	सि.	१९ ३८	मीन			७	१३	१८	००	७	८	१८	३	७	१२	१८	१०	६	४१	१७	४५	भ. ८/४८ से २०/४४ तक, वरद-तिल-कुन्द चतुर्थी,
	१०	५	गु.	२० ०८	रेव.	२४ ५६	सा.	१६ ००	मे.	२४	५६	७	१३	१८	१	७	७	१८	३	७	१२	१८	१०	६	४०	१७	४५	पञ्चक समाप्त २४/५६, शुक्र उ.षा में १७/४५, वसन्त पंचमी,
	११	६	शु.	१९ ०७	अश्वि.	२४ २९	शु.	१६ ०२	मेष			७	१२	१८	२	७	६	१८	४	७	११	१८	११	६	३९	१७	४६	
	१२	७	श.	१७ ४२	भर.	२३ ३८	शु.	१३ ४४	वृ.	२९	२०	७	११	१८	३	७	६	१८	५	७	११	१८	१२	६	३९	१७	४६	भ.१७/४२से२८/४८तक,यूरेनस धनि.१में २९/४०,(D)
	१३	८	र.	१५ ५४	कृति.	२२ २६	ब्र.	११ ०८	वृष			७	१०	१८	४	७	५	१८	६	७	९	१८	१३	६	३८	१७	४७	सं. सूर्य कुम्भ में ११/५८, पुण्यकाल सारा दिन(E)
	१४	९	चं.	१३ ४६	रोहि.	२० ५४	ऐं	८ १५	वृष			७	९	१८	४	७	४	१८	६	७	९	१८	१३	६	३८	१७	४७	
							वै.	२९ ९																				
	१५	१०	मं.	११ २१	मृग.	१९ ०६	वि.	२५ ५०	मि.	८	००	७	८	१८	५	७	४	१८	७	७	७	१८	१४	६	३७	१७	४८	भ.२२/०२ बाद, बुध पू.भा. में ८/३१,
	१६	११	बु.	८ ४३	आर्द्रा	१७ ०८	प्री.	२२ २४	मिथुन			७	७	१८	६	७	३	१८	८	७	७	१८	१५	६	३६	१७	४९	भ. ८/४३ तक, भीष्म द्वादशी,
				२९ ५६																								
	१७	१३	गु.	२७ ०५	पुन.	१५ ०४	आ.	१८ ५४	क.	९	३५	७	६	१८	७	७	२	१८	९	७	६	१८	१६	६	३५	१७	५०	गुरु अश्विनी ३ में ३०/२४,
	१८	१४	शु.	२४ २६	पुष्य	१३ ०१	सौ.	१५ २६	कर्क			७	५	१८	७	७	१	१८	१०	७	५	१८	१६	६	३५	१७	५०	भ. २४/२६ बाद,
	१९	१५	श.	२१ ५६	आश्ले.	११ ०७	शो.	१२ ०७	सिं.	११	७	७	५	१८	८	७	०	१८	१०	७	४	१८	१७	६	३४	१७	५१	भ. ११/११तक, सूर्य शतमिषा में २६/२८ , सूर्य सायन(F)
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	२०	१	र.	१९ ४८	मघा	९ ३०	अ.	९ २	सिंह			७	४	१८	९	६	५९	१८	११	७	३	१८	१७	६	३३	१७	५१	फाल्गुन कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,
							सु.	३० १७																				
	२१	२	चं.	१८ १०	पू.फा.	८ १८	धृ.	२७ ५९	क.	१४	०९	७	३	१८	१०	६	५८	१८	१२	७	२	१८	१८	६	३२	१७	५२	भ.२९/३९ बाद, बुध वक्री १८/१४,शुक्र श्रव.में १३/१२(G)
	२२	३	मं.	१७ ०८	उ.फा.	९ ४०	शू.	२६ १२	कन्या			७	१	१८	११	६	५७	१८	१२	७	२	१८	१८	६	३२	१७	५२	भ. १७/०८ तक,
	२३	४	बु.	१६ ४८	हस्त	७ ४२	गं.	२५ ००	तु.	२०	०४	७	०	१८	११	६	५६	१८	१३	७	१	१८	१९	६	३१	१७	५३	
	२४	५	गु.	१७ १४	चित्रा	८ २६	वृ.	२४ २३	तुला			६	५९	१८	१२	६	५६	१८	१४	७	०	१८	२०	६	३०	१७	५३	
	२५	६	शु.	१८ २५	स्वा.	९ ५५	ध्रु.	२४ १९	वृ.	२९	३२	६	५८	१८	१३	६	५५	१८	१५	६	५९	१८	२१	६	२९	१७	५४	भ. १८/२५ बाद, मंगल रेवती. में २७/२७,
	२६	७	श.	२० १६	विशा.	१२ ०४	व्या.	२४ ४५	वृश्चिक			६	५७	१८	१४	६	५४	१८	१५	६	५८	१८	२१	६	२९	१७	५४	भ. ७/२२तक,
	२७	८	र.	२२ ३६	अनु.	१४ ४५	ह.	२५ ३०	वृश्चिक			६	५६	१८	१४	६	५३	१८	१६	६	५७	१८	२२	६	२८	१७	५५	
	२८	९	चं.	२५ १३	ज्ये.	१७ ४६	व.	२६ २७	ध.	१७	४६	६	५५	१८	१५	६	५२	१८	१६	६	५६	१८	२२	६	२७	१७	५५	वक्री बुध शतभिषा में ७/५५ ,
	२९	१०	मं.	२७ ५१	मूल	२० ५१	सि.	२७ २४	धनु			६	५४	१८	१६	६	५१	१८	१७	६	५५	१८	२३	६	२६	१७	५६	भ. १४/३२ से २७/५१ तक,

(A) महोदय योग(B) २१/५६,(C) गौरी तृतीया (गौंतरी).(D) रथ सप्तमी, आरोग्य सप्तमी,(E) शुक्र मकर में १०/३९,भीष्माष्टमी,(F) मीन में १४/०३, माघी पूर्णिमा,(G) बुध पश्चिम में अस्त १७/३०,

तिथ्यादि पञ्चाङ्ग (भा. स्टैं. टा.)

मार्च २०००ई.

मास पक्ष	मार्च २००० ई.	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश काल रा.	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	भद्रा-ग्रहराशि-नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है।)
फाल्गु.कृ.पक्ष	१	११	बु.	३० १५	पू.षा.	२३ ४७	व्य.	२८ १२	म.	३०	२६	६	५३	१८	१७	६	५१	१८	१७	६	५५	१८	२३	६	२५	१७	५६	
	२	१२	गु.	- -	उ.षा.	२६ २२	व.	२८ ४२	मकर			६	५२	१८	१७	६	५०	१८	१८	६	५४	१८	२३	६	२४	१७	५६	
	३	१२	शु.	८ १४	श्रव.	२८ २८	प.	२८ ४७	मकर			६	५१	१८	१८	६	४९	१८	१८	६	५३	१८	२४	६	२३	१७	५७	शुक्र धनि. में ८/१८,
	४	१३	श.	९ ४१	धनि.	२९ ५९	शि.	२८ २६	कुं.	१७	१४	६	५०	१८	१९	६	४८	१८	१९	६	५२	१८	२५	६	२२	१७	५८	भ. ९/४१ से २२/०७ तक, पञ्चक प्रारम्भ. १७/१४, सूर्य(A)
	५	१४	र.	१० ३२	शत.	- -	सि.	२७ ३७	कुम्भ			६	४८	१८	१९	६	४६	१८	२०	६	५१	१८	२६	६	२१	१७	५९	
	६	३०	सं.	१० ४६	श.	६ ५५	सा.	२६ २१	मी.	२५	१३	६	४७	१८	२०	६	४५	१८	२०	६	५०	१८	२७	६	२०	१७	५९	सोमवती अमावस,
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	७	१	मं.	१० २८	पू.भा.	७ १९	शु.	२४ ४२	मीन			६	४६	१८	२१	६	४४	१८	२१	६	४९	१८	२७	६	१९	१७	५९	फाल्गुन शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्र दर्शन, गुरु अश्विनी(B)
	८	२	बु.	९ ४१	उ.भा.	७ १४	शु.	२२ ४३	मीन			६	४५	१८	२१	६	४३	१८	२२	६	४८	१८	२८	६	१८	१८	००	शुक्र कुम्भ में १७/४७, बुध पूर्व में उदित १८/५३,जन्मदिन(C)
	९	३	गु.	८ ३१	रेव.	६ ४६	ब्र.	२० २८	मे.	६	४६	६	४३	१८	२२	६	४२	१८	२२	६	४७	१८	२८	६	१७	१८	००	भ. २०/११ बाद, पञ्चक समाप्त ६/४६,
					अश्वि.	३० ०																						
	१०	४	शु.	७ ५२	भ.	२९ ०	ऐं.	१८ ०	मेष			६	४२	१८	२३	६	४१	१८	२३	६	४६	१८	२९	६	१६	१८	०१	भ.७/५२ तक,
				२९ २०																								
	११	६	श.	२७ २८	कृ.	२७ ५१	वै.	१५ २४	वृ.	१०	४४	६	४१	१८	२३	६	४०	१८	२३	६	४५	१८	२९	६	१५	१८	०१	
	१२	७	र.	२५ ३०	रो.	२६ ३५	वि.	१२ ४०	वृष			६	४०	१८	२४	६	३९	१८	२४	६	४४	१८	३०	६	१४	१८	०२	भ. २५/३० बाद,
	१३	८	सं.	२३ २७	मृ.	२५ १४	प्री.	९ ५३	मि.	१३	५५	६	३९	१८	२५	६	३८	१८	२४	६	४२	१८	३०	६	१३	१८	०२	भ. १२/२९ तक, शुक्र शतभिषा में २७/१७, होलाष्टक प्रारम्भ,
	१४	९	मं.	२१ २०	आ.	२३ ५१	आ.	७ १	मिथुन			६	३७	१८	२५	६	३७	१८	२५	६	४१	१८	३१	६	१२	१८	०३	सं. सूर्य मीन में ८ / ५४,पुण्यकाल १५/१८ तक, मंगल(D)
							सौ.	२८ ८																				
	१५	१०	बु.	१९ १३	पु.	२२ २७	शो.	२५ १५	क.	१६	४८	६	३६	१८	२६	६	३६	१८	२५	६	४०	१८	३१	६	११	१८	०३	भ. ३०/१० बाद, वेंकटेश (प्लूटो)वक्री,
	१६	११	गु.	१७ ०७	पु.	२१ ०४	अ.	२२ २४	कर्क			६	३५	१८	२७	६	३५	१८	२६	६	३९	१८	३२	६	१०	१८	०४	भ. १७/७ तक, शनि भरणी ३ में २३/५५, गोबिन्द द्वादशी,
	१७	१२	शु.	१५ ०५	आश्ले.	१९ ४७	सु.	१९ ३७	सिं.	१९	४७	६	३४	१८	२७	६	३३	१८	२७	६	३८	१८	३२	६	०९	१८	०४	सूर्य उ.भा. में १७/१४ तक,
	१८	१३	श.	१३ १२	म.	१८ ४०	धृ.	१६ ५८	सिंह			६	३२	१८	२७	६	३२	१८	२७	६	३७	१८	३३	६	०८	१८	०५	
	१९	१४	र.	११ ३३	पू.फा.	१७ ४७	शू.	१४ ३१	क.	२३	३९	६	३१	१८	२९	६	३१	१८	२८	६	३६	१८	३३	६	०७	१८	०५	भ. ११/३३ से २२/५३ तक, होलिका दहन,
	२०	१५	सं.	१० १४	उ.फा.	१७ १७	ग.	१२ २१	कन्या			६	३०	१८	२९	६	३०	१८	२८	६	३५	१८	३४	६	०६	१८	०६	सूर्य सायन मेष में १३/०५, उत्तर गोल प्रारम्भ,
चैत्र कृष्ण पक्ष	२१	१	मं.	९ २२	ह.	१७ १४	वृ.	१० ३३	तु.	२९	२९	६	२९	१८	३०	६	२८	१८	२९	६	३४	१८	३४	६	०५	१८	०६	चैत्र कृष्ण पक्ष प्रारम्भ , वसन्तोत्सव,
	२२	२	बु.	९ ०२	चि.	१७ ४५	ध्रु	९ १०	तुला			६	२७	१८	३०	६	२७	१८	२९	६	३३	१८	३५	६	०४	१८	०६	भ. २१/११ बाद,
	२३	३	गु.	९ २०	स्वा.	१८ ५४	व्या.	८ १७	तुला			६	२६	१८	३१	६	२६	१८	३०	६	३२	१८	३५	६	०३	१८	०७	भ. ९/२० तक, गुरु भरणी १ में ६/२८,
	२४	४	शु.	१० १८	वि.	२० ४२	ह.	७ ५५	वृ.	१४	१५	६	२४	१८	३२	६	२५	१८	३०	६	३१	१८	३६	६	०२	१८	०७	शुक्र पू.भा. में २२/२०,
	२५	५	श.	११ ५४	अ.	२३ ०४	व.	८ ०३	वृश्चिक			६	२४	१८	३२	६	२४	१८	३१	६	२९	१८	३६	६	०१	१८	०७	
	२६	६	र.	१४ ०३	ज्ये.	२५ ५३	सि.	८ ३६	ध.	२५	५३	६	२२	१८	३३	६	२३	१८	३१	६	२८	१८	३७	६	००	१८	०८	भ. १४/०३से २७/१८ तक, राहु पुष्य १, केतु उ.षा.(E)
	२७	७	सं.	१६ ३२	मू.	२८ ५७	व्य.	९ २७	धनु			६	२१	१८	३४	६	२२	१८	३२	६	२७	१८	३७	५	५९	१८	०८	
	२८	८	मं.	१९ ०८	पू.षा.	- -	व.	१० २६	धनु			६	२०	१८	३५	६	२१	१८	३३	६	२६	१८	३८	५	५८	१८	०९	
	२९	९	बु.	२१ ३५	पू.षा.	७ ५७	प.	११ २३	म.	१४	३९	६	१९	१८	३५	६	१९	१८	३३	६	२५	१८	३८	५	५७	१८	०९	सूर्य रेवती में २८/०७,
	३०	१०	गु.	२३ ३७	उ.षा.	१० ४६	शि.	१२ ०५	मकर			६	१८	१८	३६	६	१८	१८	३४	६	२४	१८	३९	५	५६	१८	१०	भ. १०/३६ से २३/३७ तक,
	३१	११	शु.	२५ ०३	श्रव.	१३ ०३	सि.	१२ २३	कुं.	२५	५३	६	१६	१८	३६	६	१७	१८	३५	६	२३	१८	३९	५	५५	१८	१०	बुध पू.भा. में २६/०८, पंचक प्रारम्भ २५/५३,

(A) पू.भा. में ८/ ५०, श्री महाशिवरात्रि व्रत,(B) ४ में ७/३०,(C) श्री रामकृष्ण परमहंस, (D) अश्विनी मेष में १३/१३, बुध मार्गी २३/०८,(E) ३में २५/५१

तिथ्यादि पञ्चाङ्ग (भा. स्टैं. टा.)

अप्रैल २०००ई.

मास पक्ष	अप्रै. २००० ई.	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश काल रा.	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	भद्रा-ग्रहराशि-नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है।)
वैशा. कृ. पक्ष	१	१२	श.	२५ ४६	धनि.	१४ ४२	सा.	१२ ११	कुम्भ			६	१५	१८	३७	६	१५	१८	३६	६	२२	१८	३८	५	५४	१८	१०	मंगल भर. में २६/५४, शुक्र मीन में २४/४२,
	२	१३	र.	२५ ४५	शत.	१५ ३७	शु.	११ २५	कुम्भ			६	१४	१८	३७	६	१४	१८	३६	६	२१	१८	३९	५	५३	१८	११	भ. २५/४५ बाद, वारुणी पर्व(१५/३७ तक),
	३	१४	चं.	२५ ०१	पू.भा.	१५ ५०	शु.	१० ०४	मी.	९	४७	६	१३	१८	३८	६	१३	१८	३७	६	२०	१८	४०	५	५२	१८	११	भ. १३/२३ तक,
	४	३०	मं.	२३ ४२	उ.भा.	१५ २५	ब्र.	८ १२	मीन			६	१२	१८	३९	६	१२	१८	३७	६	१९	१८	४०	५	५१	१८	१२	शुक्र उ.भा. में १७/३० भौमवती अमा, वि.सं. २०५६ पूर्ण ,
							ऐं.	२९ ५३																				

(पृष्ठ 51 का शेष भाग)

– भा.स्टैं. टा. वाले तिथ्यादि कालों को विदेशी स्टैं. टा. में बदलना आसान है –

स्टैं. टा. वाले पंचांग को विश्व के किसी भी देश में इस्तेमाल करने के लिए कुछ भी परिश्रम नहीं करना पड़ता। जिस देश का पंचांग आपके पास है और जिस अभीष्ट देश के लिए आप उसे इस्तेमाल करना चाहते हैं — उन दोनों देशों के स्टैं. टाइमों का अन्तर जानिए (पृ.१८६ पर भा.स्टैं. टा. और विश्व के अन्य देशों के स्टैं.टा. का अन्तर दिया हुआ है) आपके पंचांगीय देश के स्टैं. टा. से यदि अभीष्ट देश का स्टैं. टा. आगे हो तो पंचांगीय देश के स्टैं. टा. में यह अन्तर जोड़ दें, अन्यथा घटा दें । इस प्रकार वह अभीष्ट देशीय स्टैं.टा. बन जाएगा

उदाहरण— ४ अप्रै.'९९ को वैशा. कृष्ण तृतीया भा.स्टैं.टा. के अनुसार प्रात: १० घं. २२ मि. पर समाप्त होगी। हांगकांग में यह तिथि हांगकांग के स्टैं.टा. के अनुसार कब समाप्त होगी — यह जानने के लिए हांगकांग ओर भारत के स्टैं.टाईमों के अन्तर २ घं. ३० मि. को १० घं. २२ मि. में जोड़ने पर १२ घं. ५२ मि. मिला। यह हांगकांग में वहां के स्टैं. टा. के अनुसार वैशा. कृ. तृतीया का समाप्तिकाल मिला। क्योंकि हांगकांग का स्टैं.टा. भा.स्टैं.टा. से २ घं. ३० मि. आगे रहता है, अत: यहाँ २ घं. ३० मि. जोड़े गए हैं।

दूसरा उदाहरण लीजिए— ७ अप्रै. '९९ को १३ घं. २६ मि.(भा.स्टैं.टा.)पर शुक्र वृष में प्रवेश करेगा। इंग्लैण्ड में वहां के स्टैं. टा. (जिसे G.M.T. कहा जाता है) के अनुसार शुक्र का वृष में प्रवेश ७ घं. ५६ मि. पर होगा । (G.M.T. भा.स्टैं.टा. से ५ घं. ३० मि. पीछे रहता है)

एक और उदाहरण लेते हैं-- टोकियो (जापान) में बसे श्री अरुण मिश्र के घर २५ अप्रै. '९९ को जापानी स्टैं.टा. के अनुसार १९ घं. २० मि. पर पुत्रजन्म हुआ। ज्ञात कीजिए-क्या यह बच्चा गण्डमूल में पैदा हुआ है। क्योंकि गण्डमूल नक्षत्र मघा २५ अप्रै.'९९ को भा.स्टैं.टा. के अनुसार १७ घं. ९ मि. पर समाप्त हो रहा है । जापानी स्टैं. टा., भा. स्टैं.टा. से ३ घं. ३० मि. आगे रहता है। अत: जापानी स्टैं.टा. के अनुसार इस (मघा) नक्षत्र की समाप्ति २० घं. ३९ मि. पर होगी। अत: स्पष्ट है , श्री अरुण मिश्र जी का पुत्र गण्डमूल में ही जन्मा है। उन्हें गण्डमूल शान्ति करवानी पड़ेगी।

उपरोक्त विवरण से पाठक समझ गए होंगे कि स्टैं.टा. के प्रयोग से पंचांग के तिथ्यादि के काल विश्वजनीन (Universal)बन जाते हैं। स्टैं.टा. वाले पंचांग को विश्व के किसी भी देश में आप तुरन्त (मौखिक जोड़-घटाव द्वारा ही) इस्तेमाल करने योग्य बना सकते हैं। घड़ी-पल वाले पंचांग को तो, विदेश की बात तो दूर रही, आप अपने ही देश के अन्य नगरों में भी आसानी से इस्तेमाल नहीं कर सकते । इसलिए घड़ी-पलों के झंझट को नमस्कार कीजिए, स्टैं.टा. को अपनाइए। इसके प्रयोग से, दैवज्ञ लोग देखेंगे, जन्मपत्र, वर्षफल आदि की गणित सरल एवं अल्पकालसाध्य बन जाती है।

अन्त में पाठकों को हम यह बतला देना आवश्यक समझते हैं कि किसी नगर के सूर्यादि ग्रहों के उदयास्त, लग्नों की प्रारम्भ समाप्ति एवं सूर्यग्रहण के स्पर्श-मोक्ष का काल स्टैं.टा. में भले ही क्यों न हों, इन्हें तिथ्यादि के स्टैं.टा. की भान्ति दूसरे नगर में इस्तेमाल नहीं कियाजा सकता। इन्हें स्टैं.टा. के अन्तर का संस्कार करके दूसरे देशों में भी इस्तेमाल नहीं करना चाहिए ।इन्हें तो उसी नगर में इस्तेमाल किया जा सकता है जिस नगर के लिए इन्हें स्पष्ट किया (बनाया गया) है। अन्य नगरों के लिए इन्हें स्पष्ट करना हो तो इसके लिए उन नगरों के अपने-अपने अक्षांश -रेखांशों के अनुसार विशेष गणित प्रक्रिया करनी पड़ती है ।

विवाहादि मुहूर्त्त (सं. २०५६ वि.)

प्रो. प्रियव्रत शर्मा ५९/६,(अभिजित्),पंचकूला-१३४१०९

समय शुद्धि

गुरुअस्त :- चैत्र शु. ४ रवि, (२१ मार्च'९९) से वैशाख ५ मंगल, (२० अप्रै. '९९)तक गुरु अस्त रहेगा।

शुक्र अस्तः- श्राव. कृ. १२ रवि (८ अग.'९९)से श्राव. शु. १३ मं.(२४ अग.' ९९) तक शुक्र अस्त रहेगा ।

अधिक मासः- इस वर्ष १६ मई से १३ जून'९९ तक ज्येष्ठ अधिक (मल) मास रहेगा, जिसे सभी मांगलिक कृत्यों में वर्जित किया गया है ।

अक्षांश भेद से भारत के सभी स्थलों पर गुरु-शुक्र का उदय-अस्त

अक्षांश	+ १०°	+ २०°	+ ३०°	+ ३५°
गुरु अस्त	२२ मार्च ' ९९	२२ मार्च' ९९	२१मार्च '९९	२१मार्च' ९९
गुरु उदित	१४ अप्रै.' ९९	१६ अप्रै.' ९९	२० अप्रै. '९९	२३ अप्रै. '९९
शुक्र पश्चिम में अस्त	१३अग. '९९	११ अग. '९९	९ अग. '९९	७ अग. '९९
शुक्र पूर्व में उदित	१३ अग. '९९	२४अग.९९	२५अग. '९९	२६अग. '९९

ध्यान रहे- यहां नीचे दिए गए विवाहादि मुहूर्त्तों में गुरु-शुक्रास्त की तारीखें पंजाब, हरियाणा, हि.प्र. दिल्ली आदि की ही ली गई हैं। अन्य प्रान्तों के लिए विवाहादि मुहूर्तों का विचार करते समय अक्षांश के आधार पर उन प्रान्तों में उदयास्त की तारीखों का ध्यान रखना जरुरी है ।

मुहूर्त्तों में जिस लग्न का कुछ भाग किसी विशेष दोष के कारण वर्जित है, उस लग्न के आगे कोष्ठक में भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम के अनुसार यह निर्देश दिया गया है कि इस लग्न को इस टाईम के बाद अथवा पहले ही मुहूर्त्तों में स्वीकार करें।

यहां मुहूर्त्तों में क्रान्तिसाम्य (महापात) दोष का विचार सूक्ष्म गणित से किया गया है। सूर्य एवं चन्द्र की राशियों के आधार पर निर्णीत क्रान्तिसाम्य नितांत स्थूल होता है । भास्कर आदि आचार्यों ने इसके निर्णय के लिए एक विशेष गणित प्रक्रिया निर्दिष्ट की है। कई पंचांगकार इसकी जटिल गणित-प्रक्रिया से डरकर स्थूल क्रान्तिसाम्य के आधार पर ही मुहूर्त्तों का निर्णय कर देते हैं, जो सर्वथा भ्रामक है ।

यहां दिए गए मुहूर्तों में जहां युति, वेध, कर्त्तरी, दग्धातिथि, अष्टमस्थ भौम, षडाष्टमस्थ, चन्द्र-शुक्र आदि दोषों के परिहार मिल गए हैं, उन मुहूर्तों को शास्त्रानुसार शुद्ध माना गया है और वहां लग्न लगा दिए गए हैं ।

ध्यान दें- यहां मुहूर्तों में दी गई अंग्रेजी तारीखें सूर्योदय कालिक हैं। जो मुहूर्तकाल (लग्न) रात के १२ बजे के बाद और सूर्योदय से पहिले पड़ता है, वहां अंग्रेजी तारीख अग्रिम (परवर्ती) समझनी चाहिए।

शुद्ध विवाह मुहूर्त्त (सं. २०५६ वि.)

मास-तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख १९९९ई.		विवाह नक्षत्र	विवाहलग्न के समय चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि	लत्ता आदि दश दोष रेखाएं	शुद्धलग्न, ग्रह-दान-पूजा आदि विवरण (सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है)
वैशा. शु. ११ चं.	वैशा. १३	अप्रै.	२६	उ.फा.	सिंह	मेष	मीन	ऽ सू॥॥ ऽ अ।॥ ।	ल. गोधू.,(२५/१६बाद गुरु पादवेध है)
,, ,, १२ मं	,, १४	,,	२७	,,	कन्या	,,	,,	ऽ सू ॥॥॥।	दि.ल. २(७/४६ बाद)(श.दा.),३,(७/४६तक गुरु का एवं १४/१७ बाद बुध का पादवेध है)
,, ,, १३ बु.	,, १५	,,	२८	हस्त	,,	,,	,,	ऽ सू ऽ ॥। ऽ नृ ॥॥	दि.ल. २ (श.दा.), ३, गोधू.,
,, ,, १४ गु.	,, १६	,,	२९	चित्रा	,,	,,	,,	॥॥ऽ बु.शु. । ऽ॥।	दि.ल. २ (श.दा.),३,
प्र.ज्ये.कृ. ४ मं.	,, २१	मई	४	मूल	धनु	,,	,,	॥॥ऽशु ऽ अ । ऽ ॥	ल. ११,(२३/५८ तक मृत्युबाण),
,, ,, ४ बु.	,, २२	,,	५	,,	,,	,,	,,	॥॥ ऽ शु ऽ अ । ऽ॥	दि.ल. ३ (चं. दा.)
,, ,, ५ गु.	,, २३	,,	६	[illegible]	[illegible]	,,	,,	[illegible]	ल. ११, (१८/३४ से २५/४ तक शुक्र पादवेध),दग्धा परिहार,
,, ,, ६ शु.	,, २४	,,	७	श्रव.	,,	,,	,,	ऽ बु ॥॥॥ ऽ ॥	ल. ११,
,, ,, ७ श.	,, २५	,,	८	,,	,,	,,	,,	ऽ बु ॥॥॥ ऽ ॥	ल. गोधू. (१४/४४ तक क्रान्तिसाम्य)

शुद्ध विवाह मुहूर्त्त (सं. २०५६ वि.)

मास-तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख १९९९ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय			लत्ता आदि दश दोष रेखाएं	शुद्धलग्न, ग्रह-दान-पूजा आदि विवरण (सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है)
				चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि		
प्र.ज्ये.कृ. १० म.	वैशा. २८	मई ११	उ.भा.	मीन	मेष	मीन	।।।।ऽ रो ऽऽ ।।	ल. ११,
,, ,, ११ बु.	,, २९	,, १२	,,	,,	,,	,,	।।।। ऽऽ ।।	दि.ल.३,
,, ,, ११ बु.	,, २९	,, १२	रेव.	,,	,,	,,	।।ऽगु. ।।।ऽ ।।	ल. ११,
द्वि.शुद्ध ज्ये.शु.८चं.	आषा. ७	जून २१	हस्त	कन्या	मिथुन	मेष	।ऽ ।।।ऽ ।।।	दि.ल. ५ (११/११ बाद),८, गोधू.,
,, ,, ,, ९ मं.	,, ८	,, २२	,,	,,	,,	,,	।ऽ ।।।ऽ ऽ ।।।	दि.ल.५(१०/२ तक),
,, ,, १० बु.	,, ९	,, २३	स्वा.	तुला	,,	,,	।।।।।।ऽ।।	दि.ल.८, गोधू.,११,
,, ,, १५ चं.	,, १४	,, २८	मूल	धनु	,,	,,	।।।।।। ऽ ।।	दि.ल. ८, रा.ल.११.
आषा.कृ. २ बु.	,, १६	,, ३०	उ.षा.	धनु/मकर	,,	,,	।।।।।।।।	दि.ल.५,,८(१७/१४ तक),
,, ,, ७ मं.	,, २२	जुला. ६	रेव.	मीन	,,	,,	।।।।ऽ अ ऽऽ ।ऽ	दि.ल.८, गोधू.,२ (श.दा.), दग्धा परिहार,
,, ,, ९ बु.	,, २३	,, ७	अश्वि.	मेष	,,	,,	।।।।ऽ अ ऽऽ।।	दि.ल. ५(१०/२४ बाद),गोधू.,२ (श.दा.)
,, ,, १२ श.	,, २६	,, १०	रोहि.	वृष	,,	,,	।ऽ।।।।ऽ ।।	दि.ल.५,८ (१७/३७ तक),(चं.दा.)
आषा.शु. ५ श	श्राव. २	,, १७	उ.फा.	सिंह	कर्क	,,	।।।।।।।।	दि.ल.८(१६/७ बाद),९,
,, ,, ७ चं.	,, ४	,, १९	हस्त	कन्या	,,	,,	।।।।ऽ अ ऽऽ ।।	दि.ल.,८,९ (१७/३४ तक)
,, ,, ७ चं.	,, ४	,, १९	चित्रा	,,	,,	,,	।।।।ऽ अ ।ऽ ।।	दि.ल.९ (१८/४६ बाद),गोधू.,२ (२५/४० तक),(श.दा.)
,, ,, ८ मं.	,, ५	,, २०	चित्रा	तुला	,,	,,	।।।।।ऽऽ ।।	दि.ल.८,९, गोधू.,
श्राव.कृ. ४ र.	,, १७	अग. १	उ.भा.	मीन	,,	,,	।।।।ऽ चौ ।ऽ ।।	दि.ल.९ (१७/१५ बाद),गोधू., २ (श.दा.),
,, ,, ५ चं.	,, १८	,, २	उ.भा.	,,	,,	,,	।।।।ऽ चौ।ऽ ।।	दि.ल. ८ (१५/३८ तक),
,, ,, ५ चं.	,, १८	,, २	रेव.	,,	,,	,,	।।।।ऽ चौ ।।ऽ।	दि.ल. ९ (१६/५० बाद),गोधू.,२(श.दा.),दग्धा परिहार,
भाद्र॰ कृ. २ श.	भाद्र. १२	,, २८	उ.भा.	,,	सिंह	,,	।।।।ऽअ।।।	ल.३ (अत्यावश्यकता में)
,, ,, ४ चं.	,, १४	,, ३०	अश्वि.	मेष	,,	,,	।ऽ।।।ऽ नृ।ऽ।।	ल.३(अत्यावश्यकता में)
,, ,, ७ गु.	,, १७	सितं. २	रोहि.	वृष	,,	,,	ऽ बु. ।।।ऽ मं. ऽ चौ. ।ऽ ।।	ल. गोधू., १२,३ (अत्यावश्यकता में)
,, ,, ८ शु.	,, १८	,, ३	मृग.	वृष	,,	,,	ऽ शु. ।।।।ऽऽ ।।	ल.गोधू., १२,
भाद्र॰ शु. २ श.	,, २६	,, ११	हस्त.	कन्या	,,	,,	।।।।ऽ चौ. ऽ ।।।	दि.ल. ९, रा.ल.१२ (चं.दा.),
,, ,, ३ र.	,, २७	,, १२	चित्रा	,,	,,	,,	।।।।।।।।	दि.ल.९, रा.ल.१२ (चं.दा.),(१९/७से २४/३९ तक क्रान्तिसाम्य)
,, ,, ४ चं.	,, २८	,, १३	स्वा.	तुला	,,	,,	।।ऽ चं. ।ऽ रो ।।।।	दि.ल.९(१३/३८ बाद),चन्द्र पादवेध नहीं,
,, ,, ९ र.	आश्वि. ३	,, १९	उ.षा.	धनु	कन्या	,,	।।।।ऽ अ ।ऽ ।।	ल. ५ (२९/३८ बाद)
,, ,, १० चं.	,, ४	,, २०	उ.षा.	मकर	,,	,,	।।।।ऽ अ ।ऽ ।।	दि.ल.९,११ (मं.दा.),गोधू.,
,, ,, १२ बु.	,, ६	,, २२	धनि.	मकर/कुम्भ	,,	,,	ऽ सू. ।।ऽ शु. ऽ शु. ।ऽ ।।।	दि.ल.११(मं.दा.),गोधू॰, ३,५(चं.दा.),(८/४७से१४/५५तक,शुक्र पादवेध)
आश्वि.शु. १ र.	,, २४	अक्तू. १०	स्वा.	तुला	,,	,,	।।ऽबु. ।ऽगु. ।ऽ।।।	ल. ५,
,, ,, २ चं.	,, २५	,, ११	स्वा.	,,	,,	,,	।।ऽबु. ।ऽगु. ।।। ।।	दि.ल.८
,, ,, ८ चं.	कार्ति. २	,, [illegible]	उ.षा.	मकर	तुला	[illegible]	ऽ मं. ।।।।। ऽऽ ।	दि.ल. ८,दग्धा परिहार,
,, ,, १२ शु.	,, ६	,, २२	उ.भा.	मीन	,,	,,	।।।।ऽ नृ ।।।	[illegible] गोधू.,

शुद्ध विवाह मुहूर्त्त (सं. २०५६ वि.)

मास-तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख १९९९-२०००ई.	विवाह नक्षत्र	विवाहलग्न के समय चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि	लत्ता आदि दश दोष रेखाएं	शुद्धलग्न, ग्रह-दान-पूजा आदि विवरण (सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है)
आश्वि.शु. १३ श.	कार्ति. ७	अक्तू. २३	उ.भा.	मीन	तुला	मेष	॥॥॥॥॥	दि.ल.८,
,, ,, १३ श.	,, ७	,, २३	रेव.	,,	,,	,,	॥॥॥ऽऽ॥	ल.गोधू.,
,, ,, १५ र.	,, ८	,, २४	अश्वि.	मेष	,,	,,	॥ऽगु.ऽशु. ।ऽचौऽऽ॥	दि.ल.१२(१६/२बाद)(मं.दा.),५(२५/४३बाद),(२०/१९से२५/४३ तक शुक्र पादवेध)
कार्ति.कृ. ३ बु.	,, ११	,, २७	रोहि.	वृष	,,	,,	॥॥ऽबु. ॥॥।	दि.ल.१२(१६/२५ बाद)(मं.दा.),गोधू.,
,, ,, ४ गु.	,, १२	,, २८	मृग.	मिथुन	,,	,,	॥॥।ऽअ॥॥	ल.५(२५/१८तक),(२३/१० तक मृत्युबाण)
कार्ति.शु. ३ गु.	,, २६	नवं. ११	मूल	धनु	,,	,,	॥॥।ऽचौ॥॥	ल. गोधू.,५
मार्ग. कृ. १ बु.	मार्ग. ९	,, २४	रोहि.	वृष	वृश्चि.	,,	॥॥ऽ॥ऽ॥	दि.ल.११(१३/३१ तक),
,, ,, ९ बु.	,, १६	दिसं. १	उ.फा.	सिंह/कन्या	,,	,,	॥॥।ऽचौ।ऽ।ऽ	दि.ल.९, गोधू.,५(शु.दा.),(सिंह लग्न में दग्धा परिहार)
,, ,, १० गु.	,, १७	,, २	हस्त	कन्या	,,	,,	॥॥॥ऽऽ॥	ल. ५ (शु.दा.),
,, ,, ११ शु.	,, १८	,, ३	चित्रा	कन्या	,,	,,	॥ऽशु. ॥।ऽऽ॥	दि.ल.९,गोधू.,(२१/३बाद शुक्र युति का परिहार नहीं है)
,, ,, १२ श.	,, १९	,, ४	स्वाती	तुला	,,	,,	॥॥ऽगु.ऽरो। ऽ।।	दि.ल.११,
मार्ग. शु. ३ श.	,, २६	,, ११	उ.षा.	धनु/मकर	,,	,,	॥॥।ऽचौ॥॥	दि.ल.११,गोधू.,
,, ,, ५ चं.	,, २८	,, १३	धनि.	मकर/कुम्भ	,,	,,	॥॥।ऽरो.ऽ॥।	दि.ल.९(८/४४बाद),११,गोधू.,५(चं.शु.दा.)
,, ,, ६ मं.	,, २९	,, १४	धनि.	कुम्भ	,,	,,	॥॥॥ऽ॥।	दि.ल.९,
पौष. शु. ९ श.	माघ २	जन. १५	अश्वि.	मेष	मकर	,,	॥ऽगु॥।ऽऽ॥	दि.ल.१२,
,, ,, ११ चं.	,, ४	,, १७	रोहि.	वृष	,,	,,	॥॥॥॥।ऽ	ल.८ (चं.दा.),दग्धा परिहार,
,, ,, १२ मं.	,, ५	,, १८	रोहि.	वृष	,,	,,	॥॥॥॥।ऽ	दि.ल.१२,दग्धा परिहार,
माघ कृ. ५ मं	,, १२	,, २५	हस्त	कन्या	,,	,,	॥॥।ऽअऽऽ॥	ल.९,
,, ,, ६ बु.	,, १३	,, २६	हस्त	कन्या	,,	,,	॥॥।ऽअऽऽ॥	दि.ल.१२(चं.दा.),गोधू.,
,, ,, १२ बु.	,, २०	फर. २	मूल	धनु	,,	,,	॥॥॥ऽऽ।ऽ	दि.ल.१२, दग्धा परिहार,
माघ. शु. ४ बु.	,, २७	,, ९	रेव.	मीन	,,	,,	।ऽ।।। ऽ रो ऽऽ॥	ल.८,९,
,, ,, ५ गु.	,, २८	,, १०	रेव.	मीन	,,	,,	।ऽ॥।ऽरोऽऽ॥	दि.ल.११,गोधू.,
,, ,, ५ गु.	,, २८	,, १०	अश्वि.	मेष	,,	,,	ऽ मं. ॥॥॥।	ल.९,
,, ,, ६ शु.	,, २९	,, ११	अश्वि.	मेष	,,	,,	ऽ मं. ॥॥॥।	दि.ल. ११,(१२/३५ बाद मृत्युबाण),
,, ,, १५ श.	फाल्गु. ७	,, १९	मघा	सिंह	कुम्भ	,,	॥॥ऽऽ चौऽऽ॥	दि.ल.२ (११/११ से १२/७ तक)(श.दा.),रा.ल.८(शु.दा.),९,
फाल्गु.कृ. २ चं.	,, ९	,, २१	उ.फा.	सिंह/कन्या	,,	,,	॥॥ऽबु.ऽरो॥॥	दि.ल.२(श.दा.),गोधू.,८(शु.दा.),९(२७/५९तक)
,, ,, ९ चं.	,, १६	,, २८	मूल	धनु	,,	,,	॥॥।ऽचौ ऽऽ॥	ल.गोधू.,८(शु.दा.),
फाल्गु.शु. १ मं.	,, २४	मार्च ७	उ.भा.	मीन	,,	,,	॥॥॥॥	दि.ल.२(१०/२८ बाद)(श.दा.), रा.ल.८(शु.दा.),९,
,, ,, ३ गु.	,, २६	,, ९	अश्वि.	मेष	,,	,,	॥॥॥ । ऽ	दि.ल.२(श.दा.),गोधू.,(८/४९ तक क्रान्तिसाम्य है),दग्धा परिहार,

सं. २०५७ वि. में गुरु-शुक्रास्त - (गुरु अस्त)-लगभग वैशाख कृष्ण दशमी(२९ अप्रैल २००० ई.) से ज्ये.कृ.८(२६मई २०००ई.)तक गुरु अस्त रहेगा।

(शुक्र अस्त) -लगभग वैशाख शुक्ल चतुर्थी (७ मई २००० ई.) से आषाढ़ पूर्णिमा (१६ जुलाई २०००ई.)तक शुक्रअस्त रहेगा ।

सर्वार्थसिद्धि योग (सं. २०५६ वि.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ		समाप्त	
१९९९ ई.	घं. मि.	१९९९ ई.	घं. मि.
१८ मार्च	२२ ५८	१९ मार्च	सू. उ.
(१९ ,,	सू. उ.	१९ ,,	२० ३९) शु.
१९ ,,	२० ३९	२० ,,	सू. उ.
२४ ,,	सू. उ.	२४ ,,	१० ५६
२५ ,,	१० ०७	२६ ,,	सू. उ.
३१ ,,	१४ ४७	१ अप्रै.	सू. उ.
३ अप्रै.	सू. उ.	३ अप्रै.	२२ ००
५ ,,	सू. उ.	६ अप्रै.	३ ५३
१० ,,	१३ ११	११ ,,	सू. उ.
१५ ,,	९ २५	१६ ,,	सू. उ.
(१६ ,,	सू. उ.	१६ ,,	६ ४९) शु.
१६ ,,	६ ४९	१७ ,,	३ ५८
१९ ,,	सू. उ.	१९ ,,	१९ ४८
(१९	१९ ४८	२० ,,	सू. उ.) चं.
२२ ,,	सू. उ.	२२ ,,	१५ ३५
(२२ ,,	१५ ३५	२३ ,,	सू. उ.) गु.
३ मई	सू. उ.	३ मई	१० २१
७ ,,	२० ३६	८ ,,	सू. उ.
८ ,,	सू. उ.	८ ,,	२२ ०१
११ ,,	२१ ३५	१२ ,,	सू. उ.
१३ ,,	सू. उ.	१३ ,,	१९ ३५
१३ ,,	१७ ३५	१४ ,,	सू. उ.
१४ ,,	सू. उ.	१४ ,,	१४ ४८
(१७ ,,	५ [illegible]८	१८ ,,	२ ५८) चं.
(२० ,,	सू. उ.	२० ,,	२२ २७) गु
२४ ,,	० ३२	२४ ,,	सू. उ.
४ जून	सू. उ.	५ जून	४ २९
८ ,,	५ ४२	९ ,,	४ ४४
१० ,,	सू. उ.	११ ,,	० ५३
(१२ ,,	१९ २२	१३ ,,	सू. उ.) श.
(१४ ,,	सू. उ.	१४ ,,	१३ ३३) चं.
(१७ ,,	सू. उ.	१७ ,,	७ २६) गु.
२० ,,	७ ३४	२१ ,,	सू. उ.
२८ ,,	१ २३	२८ ,,	सू. उ.

प्रारम्भ		समाप्त	
१९९९ ई.	घं. मि.	१९९९ ई.	घं. मि.
२ जुला.	सू. उ.	२ जुला.	९ ५२
६ ,,	सू. उ.	६ ,,	११ २४
८ ,,	,, ,,	८ ,,	८ ५५
(१० ,,	,, ,,	११ ,,	२ १७) श.
१६ ,,	१५ ५३	१७ ,,	सू. उ.
१८ ,,	सू. उ.	१८ ,,	१७ ०६
(१८ ,,	१७ ०६	१९ ,,	सू. उ.) र.
२३ ,,	२ ३६	२३ ,,	सू. उ.
२५ ,,	८ २१	२६ ,,	,, ,,
१ अग.	१७ १५	२ अग.	,, ,,
११ ,,	३ १३	११ ,,	,, ,,
१३ ,,	सू. उ.	१४ ,,	५ २८
(१५ ,,	सू. उ.	१६ ,,	१३ ४६) र.
१९ ,,	१० २०	२० ,,	सू. उ.
२२ ,,	सू. उ.	२२ ,,	१८ ४६
२९ ,,	,, ,,	२९ ,,	२२ ५१
१ सितं.	१८ ५४	२ सितं.	सू. उ.
६ ,,	१२ ०७	७ ,,	सू. उ.
७ ,,	११ १२	८ ,,	सू. उ.
१० ,,	सू. उ.	१० ,,	१० २०
(१५ ,,	१८ २४	१६ ,,	सू. उ.) बु.
१६ ,,	सू. उ.	१६ ,,	२१ १८
२० ,,	५ ३८	२० ,,	सू. उ.
२६ ,,	सू. उ.	२६ ,,	६ ५२
२९ ,,	१ ११	२९ ,,	सू. उ.
२९ ,,	सू. उ.	३० ,,	,, ,,
३ अक्तू.	१७ ४७	४ अक्तू.	,, ,,
४ ,,	सू. उ.	४ ,,	१७ १५
५ ,,	,, ,,	५ ,,	१७ ०३
(१३ ,,	,, ,,	१४ ,,	५ ००) बु.
१७ ,,	१३ ५७	१८ ,,	सू. उ.
१८ ,,	१६ २०	१९ ,,	,, ,,
२४ ,,	१४ ५५	२५ ,,	[illegible]
२६ ,,	[illegible] ५२	२७ ,,	,, ,,

प्रारम्भ		समाप्त	
१९९९ ई.	घं. मि.	१९९९ ई.	घं. मि.
२७ अक्तू.	सू. उ.	२८ अक्तू.	सू. उ.
३० ,,	० ४२	३० ,,	,, ,,
७ नवं.	४ १६	७ नवं.	,, ,,
(१० ,,	सू. उ.	१० ,,	११ ५६) बु.
१४ ,,	,, ,,	१४ ,,	२३ ५७
१५ ,,	,, ,,	१६ ,,	२ १३
(२० ,,	३ ३४	२० ,,	सू. उ.) शु.
२१ ,,	सू. उ.	२१ ,,	२३ ३२
२३ ,,	,, ,,	२३ ,,	१७ ४६
२४ ,,	,, ,,	२५ ,,	सू. उ.
२६ ,,	९ १३	२७ ,,	सू. उ.
२ दिसं.	६ १८	२ दिसं.	,, ,,
४ ,,	१० ०६	५ ,,	,, ,,
६ ,,	१५ १७	७ ,,	,, ,,
१२ ,,	६ १२	१२ ,,	,, ,,
१३ ,,	सू. उ.	१३ ,,	८ ०१
(१७ ,,	१२ ४६	१८ ,,	१७ १६) शु.
१९ ,,	सू. उ.	१९ ,,	१० १३
२२ ,,	,, ,,	२२ ,,	२३ ११
२३ ,,	२० ११	२४ ,,	सू. उ.
२४ ,,	सू. उ.	२४ ,,	१७ २९
२९ ,,	१२ ५४	३० ,,	सू. उ.

(सन् २००० ई.)

प्रारम्भ		समाप्त	
२००० ई.	घं. मि.	२००० ई.	घं. मि.
१ जन.	सू. उ.	१ जन.	१८ ३३
३ ,,	,, ,,	४ ,,	० २०
८ ,,	१२ ०४	९ ,,	सू. उ.
१३ ,,	१९ ३२	१४ ,,	,, ,,
(१४ ,,	सू. उ.	१४ ,,	१९ २१) शु
१५ ,,	१५ १५	१६ ,,	सू. उ.
१९ ,,	सू. उ.	१९ ,,	१० २०
२० ,,	७ ३८	२१ ,,	४ ५७
(२१ ,,	४ ५७	२१ ,,	सू. उ.) गु
२५ ,,	सू. उ.	२६ ,,	२२ ११
४ फर.	[illegible]	५ फर.	सू. उ.

प्रारम्भ		समाप्त	
२००० ई.	घं. मि.	२००० ई.	घं. मि.
५ फर.	सू. उ.	५ फर.	२० ४८
९ ,,	० ३६	९ ,,	सू. उ.
१० ,,	सू. उ.	११ ,,	,, ,,
११ ,,	,, ,,	१२ ,,	० २९
१४ ,,	,, ,,	१४ ,,	२० ५४
(१४ ,,	२० ५४	१५ ,,	सू. उ.) चं.
१७ ,,	सू. उ.	१७ ,,	१५ ४
(१७ ,,	१५ ०४	१८ ,,	सू. उ.) गु.
२३ ,,	सू. उ.	२३ ,,	७ ४२
७ मार्च	७ ११	८ मार्च	सू. उ.
९ ,,	सू. उ.	१० ,,	६ ००
(१२ ,,	३ ५१	१२ ,,	सू. उ.) श.
(१३ ,,	सू. उ.	१४ ,,	१ १४) चं.
(१६ ,,	सू. उ.	१६ ,,	२१ ०४) गु.
१९ ,,	१७ ४७	२० ,,	सू. उ.
२७ ,,	१ ५३	२७ ,,	,, ,,
३१ ,,	सू. उ.	३१ ,,	१३ ०३
४ अप्रै.		४ अप्रै.	१५ २५

रवियोग (सं. २०५६ वि.)
सन् १९९९ ई.

प्रारम्भ		समाप्त	
२१ मार्च	सू. उ.	२१ मार्च	१५ २९
२३ ,,	सू. उ.	२३ ,,	१२ १३
२६ ,,	,, ,,	२७ ,,	९ ५७
३० ,,	,, ,,	३० ,,	१३ ०१
७ अप्रै.	६ ४७	८ अप्रै.	९ २६
१८ ,,	२२ १७	१९ ,,	१९ ४८
२० ,,	१७ ४७	२१ ,,	१६ २१
२३ ,,	१६ २८	२५ ,,	१७ ०९
२७ ,,	२० ४७	२८ ,,	३ ०२
२८ ,,	२२ ०८	३० ,,	१ ४३
६ मई	१८ ३४	७ मई	२० ३६
१८ ,,	३ ५८	१९ ,,	० ४८
१९ ,,	२३ १५	२० ,,	२२ २७

रवियोग (सं. २०५६ वि.) (भा. स्टैं.टा.)

प्रारम्भ		समाप्त	
१९९९ ई.	घं. मि.	१९९९ ई.	घं. मि.
२२ मई	२३ ०८	२५ मई	२ ३०
२८ ,,	१० २८	२९ ,,	१३ २४
५ जून	४ १९	६ जून	५ २७
१६ ,,	८ ५४	१७ ,,	७ २६
१८ ,,	६ ४२	१९ ,,	६ ४४
२१ ,,	९ ०६	२२ ,,	११ १४
२२ ,,	१४ १३	२४ ,,	१६ ४०
२६ ,,	२२ ३५	२८ ,,	१ २३
४ जुला.	११ ४१	५ जुला.	११ ४९
१५ ,,	१६ २३	१६ ,,	१५ ५३
१७ ,,	१६ ०७	१८ ,,	१७ ०६
२१ ,,	२३ ४१	२४ ,,	५ ३२
२६ ,,	१० ५३	२७ ,,	१३ ०३
२ अग.	१६ ५०	३ अग.	१२ २०
३ ,,	१६ ०२	४ ,,	१४ ५५
१४ ,,	१ २८	१५ ,,	२ ०३
१६ ,,	३ १८	१७ ,,	५ १०
१७ ,,	९ ५६	१८ ,,	७ ३४
२० ,,	१३ १६	२२ ,,	१८ ४७
२४ ,,	२२ ४०	२५ ,,	२३ ४५
१ सितं.	१८ ५४	२ सितं.	१७ २४
१३ ,,	२३ ४८	१४ ,,	१५ ४८
१५ ,,	१८ २४	१६ ,,	२१ १८
१९ ,,	३ ०९	२१ ,,	७ ३३
२३ ,,	९ १७	२४ ,,	९ ०४
३० ,,	२१ २६	१ अक्तू.	१९ ५४
१३ अक्तू.	२ ०९	१४ ,,	५ ००
१५ ,,	८ ०३	१६ ,,	११ ०७
१८ ,,	१६ २०	२० ,,	१८ ५९
२२ ,,	१८ २२	२३ ,,	१६ ५६
३० ,,	० ४२	३० ,,	२३ २५
११ नवं.	१४ ५९	१२ नवं.	१८ ०७
१३ ,,	२१ १०	१४ ,,	२३ ५७
१७ ,,	३ ४९	१९ ,,	४ ३१
२१ नवं.	२३ ३२	२२ नवं.	२० ४७
२८ ,,	५ ३६	२९ ,,	४ ४६
११ दिसं.	३ २१	१२ दिसं.	६ १२
१३ ,,	८ ४८	१४ ,,	१० ४७
१७ ,,	१२ ४६	१९ ,,	१० १३
२१ ,,	५ १५	२२ ,,	२ १६
सन् २०००ई.			
९ जन.	१४ २८	१० जन.	१६ २३
१२ ,,	१९ ०५	१३ ,,	१९ ३२
१५ ,,	१८ ३३	१७ ,,	१५ १५
१९ ,,	१० २०	२० ,,	७ ३८
२६ ,,	२२ ११	२७ ,,	२३ ४१
९ फर.	० ३६	१० फर.	० ५९
११ ,,	० ५६	१२ ,,	० २९
१३ ,,	१२ २६	१५ ,,	१९ ०६
१७ ,,	१५ ०४	१८ ,,	१३ ०१
२५ ,,	९ ५५	२६ ,,	१२ ०४
९ मार्च	६ ४६	१० मार्च	६ ००
११ ,,	५ ००	१२ ,,	३ ५१
१४ ,,	१ १४	१५ ,,	२२ २७
१८ ,,	१८ ४०	१९ ,,	१७ ४७
२५ ,,	२३ ०४	२७ ,,	१ ४३

सिद्धियोग (सं. २०५६ वि.) सन् १९९९ ई.

प्रारम्भ		समाप्त	
२५ मार्च	१० ०७	२६ मार्च	सू. उ.
३ अप्रै.	सू. उ.	३ अप्रै.	२२ ००
२२ ,,	,, ,,	२२ ,,	१५ ३५
११ मई	२१ ३५	१२ मई	सू. उ.
८ जून	५ ४२	९ जून	४ ४४
६ जुला.	सू. उ.	६ जुला.	११ २४
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

सिद्धियोग (सं. २०५६ वि.) सन् १९९९ ई.

प्रारम्भ		समाप्त	
१९९९ ई.	घं. मि.	१९९९ ई.	घं. मि.
१३ अग.	सू. उ.	१४ अग.	१ २८
१० सितं.	,, ,,	१० सितं.	१० २०
२९ सितं.	,, ,,	२९ ,,	२३ १३
२७ अक्तू.	,, ,,	२७ अक्तू.	७ १३
७ नव.	४ १६	७ नव.	सू. उ.
४ दिसं.	१० ०६	५ दिसं.	,, ,,
२३ ,,	२० ११	२४ ,,	,, ,,
सन् २०००ई.			
१ जन.	सू. उ.	१ जन.	१८ ३३
२० ,,	७ ३८	२१ ,,	४ ५७
१७ फर.	सू. उ.	१७ फर.	१५ ०४
७ मार्च	७ १९	८ मार्च	सू. उ.
२७ ,,	१ ५३	२७ ,,	,, ,,
४ अप्रै.	सू. उ.	४ अप्रै.	१५ २५

त्रिपुष्करयोग (सं. २०५६ वि.) सन् १९९९ई.

प्रारम्भ		समाप्त	
१३ अप्रै.	१३ ०८	१३ अप्रै.	१८ ४८
२७ ,,	सू. उ.	२७ ,,	१४ ३४
१५ जून	१० ५९	१५ जून	१७ ४२
२० ,,	७ ३४	२० ,,	११ ४८
२८ अग.	सू. उ.	२८ अग.	२३ ४४
११ सितं.	,, ,,	११ सितं.	१० ५४
२६ अक्तू.	९ ५२	२६ अक्तू.	१९ ४७
३० ,,	८ ०५	३० ,,	२३ २५
२८ दिसं.	१२ २१	२९ ,,	सू. उ.
सन् २००० ई.			
८ जन.	सू. उ.	८ जन.	१२ ०४
११ मार्च	२७ २८	११ मार्च	२७ ५१

द्विपुष्कर योग(सं. २०५६वि.) (सं.१९९९ई.)

प्रारम्भ		समाप्त	
२३ माच	१२ १३	२४ माच	४ ४१
१२ अप्रै.	२० ३४	१३ अप्रै.	सू. उ.
१७ मई	५ ३८	१७ मई	९ ५३
२६ मई	४ ५४	२६ मई	सू. उ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

द्विपुष्कर योग(सं. २०५६वि.) (सं.१९९९ई.)

प्रारम्भ		समाप्त	
१९९९ ई.	घं. मि.	१९९९ ई.	घं. मि.
८ अग.	२ १३	८ अग.	सू. उ.
२२ सितं.	८ ४७	२२ सितं.	१९ ४८
१० अक्तू.	१८ ०७	१० अक्तू.	२१ ३१
४ दिसं.	सू. उ.	४ दिसं.	१० ०४
सन् २०००ई.			
१८ जन.	१२ ५६	१८ जन.	२० २३
६ फर.	१९ ४८	६ फर.	२२ ३१
२१ मार्च	१७ १४	२२ मार्च	सू. उ.
१ अप्रै.	सू. उ.	१ अप्रै.	१४ ४२

अमृतसिद्धि-योग (सन् २०५६ वि.) सन् १९९९ ई.

प्रारम्भ		समाप्त	
(१९मार्च)	सू. उ.	१९ मार्च	२० ३९) शु.
(१६ अप्रै.	,, ,,	१६ अप्रै.	६ ४९) शु.
(१९ ,,	१९ ४८	२० अप्रै.	सू. उ.) च.
(२२ ,,	१५ ३५	२३ अप्रै.	,, ,,) गु.
(१७मई	५ ३८	१८ मई	२ ५८) च.
(२० मई	सू. उ.	२० मई	२२ २७) गु.
(१२जून	१९ २२	१३ जून	सू. उ.) श.
(१४,,	सू. उ.	१४ ,,	१३ ३३) च.
(१७ ,,	,, ,,	१७ ,,	७ २६) गु.
(१०जुला.	,, ,,	११ जुला.	२ १७) श.
(१८,,	१७ ०६	१९ ,,	सू. उ.) र.
(१५अग.	सू. उ.	१५ अग.	१३ ४६) र.
(१५सितं.	१८ २४	१६ सितं.	सू. उ.) बु.
(१३अक्तू.	सू. उ.	१४ अक्तू.	५ ००) बु.
(१०नव.	,, ,,	१० नव.	११ ५६) बु.
(२० नवं.	३ ३४	२० ,,	सू. उ.) शु.
(१७दिसं.	१२ ४६	१८ दिसं.	१७ १६) शु.
सन् २००० ई.			
(१४ जन.	सू. उ.	१४ जन.	१९ २१) शु.
(२१ ,,	४ ५७	२१ ,,	सू. उ.) गु.
(१४ फर.	२० ५४	१५ फर.	,, ,,) चं.
(१७फर.	१५ ०४	१८ ,,	,, ,,) गु.
(१२ मार्च	३ ५१	१२ ,,	,, ,,) शं.
(१३ मार्च	सू. उ.	१४ मार्च	१ १४) च
(१६मार्च	,, ,,	१६ ,,	२१ ४) गु.

श्री मार्तण्ड पंचांग ज्योतिषकार्यालय के नियम

हमारे यहां जन्मपत्र एवं वर्षफल शुद्धगणित से बनाये जाते हैं, जिनमें आयु,रोग,सन्तान,स्त्री,धन एवं भाग्योदय , तरक्की आदि का निर्णय किया जाता है ।

जन्मपत्र की फीस :- साधारण जन्मपत्र की फीस कम से कम 351 रु. और बडे जन्मपत्र की फीस 400 रु.है । डाकव्यय अलग होगा । विदेशी जन्मपत्र कम्प्यूटर से तैयार की गई सारणियों से बड़ी सावधानी के साथ बनाए जाते हैं , गणित विशेष परिश्रम से करनी पड़ती है, अत: जिनका जन्म विदेश में हुआ हो , उनके साधारण जन्मपत्र की फीस कम से कम 501रु. है। यदि आप वर्षफल बनवाना चाहते हैं, तो अपनी जन्मकुण्डली की नकल व पेशा लिख कर भेजें। जन्मपत्र बनवाने के लिए जन्म, तारीख, मास, सन्, जन्मसंवत् , जन्मटाईम , जन्मस्थान,जाति, पेशा एवं विशेष विचारणीय विषय भी लिखना न भूलें। टेवा की फीस 51 रु. है ।

वर्षफल की फीस - साधारणतया 101 रु.है ! विस्तृत फलादेश वाले वर्षफल की फीस 151 रु. है। जिनकी जन्मकुण्डली न हो, वे व्यक्ति पत्र लिखने का समय ,तारीख एवं अपनी अन्दाजन उम्र ,पेशा, जाति अवश्य लिखें। वर्षफल का आर्डर देते समय यह लिखना जरूरी है, कि इसवर्ष आपके वर्षफल में किन बातों पर विशेष रूप से विचार किया जाए। शुद्ध विवाहमुहूर्त जानने की फीस 51 रु. है, और वर-कन्या की कुण्डली मिलान की फीस 151 रु. है । जन्मपत्र एवं वर्षफल हिन्दी और पंजाबी में सुन्दर और विस्तृत फलादेश सहित बनाए जाते हैं। आर्डर के साथ पूरी फीस पेशगी भेजें। विशेष प्रश्न की फीस 101 रु. है । सर्वसाधारण प्रश्न फीस 51 रु. है।

नोट- प्रत्येक काम की पूरी फीस आर्डर के साथ ही भेजें । वी. पी. पी. नहीं की जाएगी । बिना पेशगी के कोई भी कार्य नहीं किया जायेगा।

घर बैठे प्रश्न पूछने की रीति- यद्यपि सामने आकर प्रश्न पूछने से सब शंकाएं निवृत्त हो जाती हैं, फिर भी यदि कोई सज्जन किसी विशेष कारण से प्रत्यक्ष न मिल सके, तो वह अपनी अन्दाजन उम्र, पेशा, जाति, प्रश्न लिखने की तारीख एवं टाईम लिख दें। जो प्रश्न पूछना हो उसे स्पष्ट शब्दों में खुलासा तौर पर लिखें।

व्यापारियों के लिए चांस -हम समय समय पर रुई, बिनौला, सरसों,गुड़, खांड एवं शेयर मार्कीट आदि के चांस देते हैं । वर्षों से अनेकों व्यापारी हमारे परामर्श से लाभ उठाते आ रहें हैं।

यदि आप भी लाभ उठाना चाहते हैं, तो आप आज ही 501 रु. का मनीआर्डर भेजकर एक मास की रिपोर्ट प्राप्त करें । वर्ष भर की फीस 5000 रु. है। जो व्यापारी साल में प्रमुख- प्रमुख एक-दो चांस ही चाहते हैं, 201 रु. भेजकर रजि.में नाम दर्ज करा सकते हैं । जिन व्यापारियों के नाम रजिस्टर में दर्ज होंगे, उन्हें ही अपने विचार भेज सकेगें ।

—: पण्डित जी से प्रत्यक्ष मिलने का समय :—

सर्दियों में- प्रात: ९ से २ बजे तक।

गर्मियों में- प्रात: 8 से 1 बजे तक।

दूर से आने वाले सज्जन पत्र द्वारा या टैलीफोन से पूज्य पण्डित जी से बातचीत का दिन एवं समय आने से पूर्व ही निश्चित कर लें।

पुसवनी-

पुत्रदाता दिव्य-औषधि

इस ईश्वरप्रदत्त प्रभावयुक्त दिव्यौषधि को गर्भ के दूसरे मास के अन्त में सेवन करने से पुत्र ही उत्पन्न होता है । इस अद्भुत औषधि की प्रशंसा में असंख्य पत्र और ईनाम प्राप्त हुए हैं। मूल्य ३२५रु. पैकिंग एवं डाकव्यय सहित ३५१रु.भेजें । वी. पी. पी. नहीं की जाएगी ।

सिद्ध शनियन्त्र - विधिपूर्वक शुभमुहूर्त में बने इस यन्त्र को धारण करने से शनिजन्य अशुभफल, पीड़ा, चिन्ता, आदि से मुक्ति मिलती है,अनुभव करें। भेंट-251 रु. है ।

श्री लक्ष्मी यन्त्र - अष्टगंधादि से विधिपूर्वक सिद्धमुहूर्त में बनाए गए इस यंत्र को विधिवत् पूजास्थान या गल्ले में रखने से लक्ष्मी की कृपा रहती है , कोष में भारी बरकत रहती है, तुजुर्बा लें । भेंट 501 रु. डाक व्यय अलग ।

अठराहा नाशक यन्त्र - जिन औरतों के प्यारे बच्चे देवदोष , गर्भदोष व अठराहा, मसानदोष के कारण मर जाते हैं, उनके लिए यह यन्त्र वरदानरूप सिद्ध हो चुका है। इस विधिपूर्वक निर्मित यन्त्र के प्रभाव से बच्चे दीर्घायु होकर सैकड़ों माता पिताओं को सुखी कर रहे हैं । तजुर्बा करके चमत्कार देखें । विधानपत्र यन्त्र के साथ भेजा जाता है। भेंट 251 रु. डाक व्यय पृथक्।

सिद्ध गोपाल यन्त्र - इससिद्ध यन्त्र को विधिपूर्वक श्रद्धासहित स्त्री धारण करे, तो चिरंजीव पुत्र की प्राप्ति होती है । आर्डर देते समय स्त्री का नाम, जाति लिखें । विधानपत्र साथ भेजा जाएगा । भेंट २५१रु. डाकखर्च पृथक्।

गुरुवार को कार्यालय बन्द रहता है ।

पत्र व्यवहार के लिए पता- पं.इन्दुशेखर शास्त्री , ज्योतिषाचार्य , एम. ए.

श्री मार्तण्डपंचांग ज्योतिष कार्यालय ,

मु. पो. कुराली [रोपड़] पंजाब

फोन : 01888-41277

लेज़र टाईपसैटिंग :- नमिता कम्प्यूटर ग्राफिक्स , कोठी नं० 1530, सैक्टर-11,चण्डीगढ़, Ph.code-0172-779137(PP)


चालीसा पाठ संग्रह
रुचिका पब्लिकेशन्स
श्री मद्भगवद गीता
हिन्दुओं के व्रत और त्यौहार
गरुड़ पुराण
सम्पूर्ण
एकादशी महात्म
23 रंगीन चित्रों सहित
आरती संग्रह
गोस्वामी तुलसीदासकृत
रामायण
आठों काण्ड सटीक
सुन्दर
5731546, 5740507